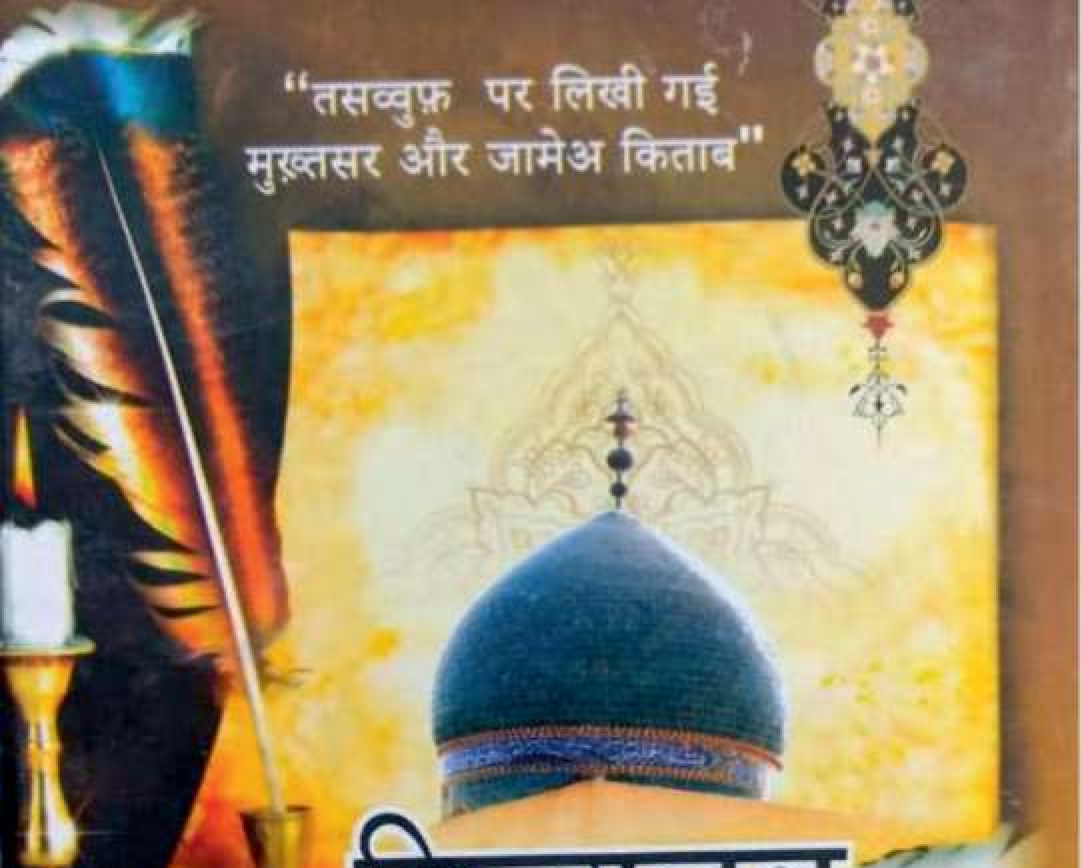


"तसव्वुफ़ पर लिखी गई मुख़्तसर और जामेअ किताब"

मिन्हाजुल आबिदीन

तालीफ़

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली

क़ुद्देस सिर्रुहुल अज़ीज़

नाशिर

आलाहज़रत दारुल कुतुब
इस्लामिया मार्किट, बरेली शरीफ

जीलानी बुक डिपो
1229, सूईवालान, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है

'तसव्वुफ़' पर लिखी गई
मुख़्तसर और जामेअ किताब

मिन्हाजुल आबिदीन

मुसन्निफ़

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली عليه الرحمة

हिन्दी तर्जुमा

सय्यद रहीनुल हसन काज़मी *(चिश्ती ख़लीली)*

Published By

KAZMI PUBLICATIONS

AMROHA (U.P.) INDIA

PH: 9458122742

नाम किताब : मिन्हाजुल आबिदीन

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली عليه الرحمة

उर्दू तर्जुमा : हज़रत अल्लामा मुहम्मद सईद अहमद नक़्शबन्दी عليه الرحمة

हिन्दी तर्जुमा : सय्यद रहीनुल हसन काज़मी *(चिश्ती ख़लीली)*

तसहीह : मुफ़्ती शहज़ाद हुसैन बरकाती

हदिया : दुआए ख़ैर

पब्लिकेशन : काज़मी पब्लिकेशन्स
अमरोहा – 244221
9458122742

फ़ेहरिस्त

9. **सातवीं घाटी** (शुक्र)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

किताब को पढ़ने से पहले इसे ज़रूर पढ़ें

तसव्वुफ़ पर बुज़ुर्गों ने बहुत सी किताबें लिखीं हैं और उन किताबों से आबिदीन (इबादत करने वालों) ने बहुत सबक़ लिए उन पर अमल किए लेकिन तसव्वुफ़ ऐसा मौज़ू है कि आज के दौर का आम आदमी ऐसी किताब पढ़ने से बचने के लिये तरह तरह के बहाने बनाता है और अमल तो करना ही नहीं चाहता बल्कि आजकल तो अमल उठ ही गया है। जो लोग अमल करते भी हैं उनमें भी दुनिया नज़र आती है। तसव्वुफ़ की किताब पढ़ने पर ऐसा लगता है कि यह तो बड़े बड़े अल्लाह वाले लोगों के मतलब की किताबें हैं, कहाँ हम जैसे लोग और कहाँ यह किताबें।

इस किताब के पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि इस किताब को पूरा ज़रूर पढ़ें बीच से न छोड़ें और दूसरों को भी पढ़वायें। पढ़ते हुए कभी-कभी आपको ऐसा लगेगा कि इसे छोड़ो, हम इसके लायक़ नहीं और बाज़ जगह तो यह किताब बहुत मुश्किल लगेगी लेकिन आप से गुज़ारिश है कि जो समझ में न आए उसे छोड़ कर आगे बढ़ जायें बल्कि बेहतर तो यह है कि किसी अच्छे आलिम से समझ लें। जितना समझ में आए उसे ज़हन में महफ़ूज़ कर लें और अगर अमल करें तो क्या ही अच्छी बात है। अमल नहीं भी करेंगे तब भी आपको यह फ़ायदा ज़रूर मिलेगा कि परेशानी बीमारी या मौत के क़रीब या बुढ़ापे में यह एहसास ज़रूर होगा कि इस पर अमल करो। अगर अमल न कर सके और पूरी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ार दी तो कम से कम तौबा तो कर ही लो। अगर सच्ची तौबा नसीब हो गई तो जन्नत में जाने का रास्ता क़रीब और आसान ज़रूर हो जायेगा।

जब आपको यह लगे कि हम इस किताब पर अमल नहीं कर सकते तो सोचिए दुनिया में ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन्होंने बिना जन्नत की लालच के सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए इस जैसी किताबों पर अमल करके दिखा दिया और अमल करके कामयाब होकर जन्नत के दावेदार भी बन चुके हैं। याद

रखिए जब बन्दा थोड़ा सा भी अमल करना चाहता है तो अल्लाह की रहमत उस पर होती है और उसे ज़्यादा अमल की तौफ़ीक़ मिलती है और जब अल्लाह की मदद व तौफ़ीक़ मिल जाए तो फिर सारी बीमारियों और परेशानियों के बावजूद बन्दा अमल करता है और उसे आज़माइशों और परेशानियों में अमल करने का मज़ा अल्लाह की तरफ़ से दिया जाता है क्योंकि उसकी निगाह अज्र पर होती है और परेशानियों में अमल का अज्र दूसरे दिनों के मुक़ाबले ज़्यादा होता है।

दोबारा फिर यह गुज़ारिश है कि इस किताब को पूरा पढ़ें, नाविल की तरह नहीं बल्कि समझ-समझ कर हर एक मज़मून को ज़हन में महफ़ूज़ कर लें और फिर मज़ा देखें क्योंकि यह सब हक़ है, सच है और हक़ हमेशा सही होता है। समझ में आए या न आए, इसी में भलाई, इसी से वास्ता, इसी में जहन्नम से निजात और अल्लाह की रज़ा है।

सय्यदे आलम ﷺ के सदक़ा-ए-तुफ़ैल में ईमान वालों के लिये जन्नत तो पक्की ज़रूर है लेकिन आख़िरत में हज़ारों साल का इन्तिज़ार और हज़ारों मुसीबतों से बचने और जन्नत में जल्दी जाने के लिए अमल ज़रूरी है जिसके लिये यह किताब अबेदीन को मिन्हाज यानी साफ़ और खुला रास्ता दिखा रही है। कहीं ऐसा न हो कि बिना अमल और तौबा किए हुए दुनिया से रुख़्सत हो जायें और हज़ारों साल तक हज़ारों मुसीबतें झेलने के बाद जन्नत नसीब हो। अल्लाह तआला हमें और आपको अपने हबीब ﷺ के सदक़े में इस किताब को पढ़ कर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए - आमीन।

सय्यद रहीनुल हसन काज़मी

हालाते ज़िन्दगी इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه

नाम और नसब

इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه की कुन्नियत 'अबू ह़ामिद' लक़ब 'हुज्जतुल इस्लाम' और नामे नामी, इस्मे गिरामी ''मुह़म्मद'' इब्ने मुह़म्मद इब्ने मुह़म्मद इब्ने अहमद तूसी ग़ज़ाली शाफ़ेई رحمة الله عليه है।

पैदाइश

इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه 450 हिजरी में ख़ुरासान के ज़िला तूस के इलाक़े ताइरान में पैदा हुए।

ज़िन्दगी के शुरू के हालात

इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه के वालिद हज़रत सय्यदना मुह़म्मद इब्ने मुह़म्मद رحمة الله عليه शहर ख़ुरासान ही में ऊन कात कर बेचा करते थे यानी पेशे के लिहाज़ से धागे के ताजिर थे, अरबी में 'काते हुए सूत' को 'ग़ज़्ल' कहते हैं इसी निसबत से आपका ख़ानदान ''ग़ज़ाली'' कहलाता है।

अभी आप और आपके भाई हज़रत सय्यदना अह़मद ग़ज़ाली رحمة الله عليه कम उम्र ही थे कि हिजरी 464 में वालिद का हो विसाल गया। इन्तेक़ाल से पहले उन्होंने अपने एक सूफ़ी दोस्त हज़रत सय्यदना अबू ह़ामिद इब्ने मुह़म्मद को वसीयत की थी कि 'मेरा तमाम सरमाया मेरे इन दोनों बेटों की तालीम व परवरिश पर ख़र्च कर दीजिएगा' वसीयत के मुताबिक़ उनके वालिदे गिरामी का सरमाया उनकी तालीम व परवरिश पर ख़र्च कर दिया गया।

तालीम के लिए सफ़र

शुरू की तालीम आपने अपने शहर तूस ही में हासिल की जहाँ फ़िक़्ह की किताबें हज़रत सय्यदना अह़मद इब्ने मुह़म्मद से पढ़ीं, बीस साल से कम ही के थे कि ईरान के मशरिक़ी शहर जुरजान तशरीफ़ ले गए वहाँ हज़रत सय्यदना इमाम अबू नस्र इस्माईली رحمة الله عليه की ख़िदमत में कुछ वक़्त रहे। फिर अपने शहर तूस लौट आए। हिजरी 483 में ईरान के क़दीम शहर नीशापुर में हज़रत सय्यदना इमामुल हरमैन इमाम अब्दुल मलिक इब्ने अब्दुल्लाह जूनी رحمة الله عليه से उसूले दीन, अख़लाक़ी मसाइल, मुनाज़रा, मन्तिक़ और हिकमत वग़ैरा में महारत हासिल की, हिजरी 478

में हज़रत सय्यदना इमामुल हरमैन इमाम अब्दुल मलिक इब्ने अब्दुल्लाह जूनी رحمۃ اللہ علیہ के विसाल के बाद उनकी जगह आपको सबसे ऊँचे मन्सब पर बिठाया गया। हिजरी 484 में मदरसा निज़ामिया बग़दाद के शैख़ुल जामिया (Vice chancellor) का ओहदा आपको पेश किया गया जिसे आपने क़बूल फ़रमा लिया। चार साल बग़दाद में दर्स देने और लिखने के काम में मशग़ूल रहने के बाद आप हज के इरादे से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो गए।

अल्लामा इब्ने जौज़ी رحمۃ اللہ علیہ के मुताबिक़ 'बग़दाद में आपकी दर्स की मजलिस में बड़े बड़े उलमा-ए-किराम हाज़िर होते जो आपसे फ़ैज़ लेते और आपके बयान पर हैरत का इज़्हार करते और आपके कलाम को अपनी किताबों में नक़्ल करते।

आपने एक अर्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा, फिर दोबारा दमिश्क़ तशरीफ़ लाए और जामेअ दमिश्क़ के मग़रिबी मिनारे पर ज़िक्र व फ़िक्र और मुराक़बे में मशग़ूल हो गए। मुल्के शाम में 10 साल क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान '**इहयाउल उलूम**, **जवाहिरुल क़ुरआन**, **तफ़सीर याक़ूतुत्तावील** और **मिश्कातुल अनवार** वग़ैरा मशहूर किताबें तसनीफ़ फ़रमाईं। फिर हिजाज़, बग़दाद, नीशापुर के दरमियान सफ़र जारी रहा और आख़िर में अपने आबाई शहर तूस वापस आकर इबादत व रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और आख़िरी दम तक वाज़ व नसीहत, इबादत व रियाज़त और तसव्वुफ़ की तदरीस में मशग़ूल रहे।

कामिल शैख़ की बैअत

हज़रत सय्यदना इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ ने तालीम हासिल करने के दौर में हज़रत सय्यदना शैख़ अबू अली फ़ज़्ल इब्ने मुहम्मद इब्ने अ़ली फ़ारामज़ी तूसी رحمۃ اللہ علیہ के हाथ पर हिजरी 488 में 27 साल की उम्र में बैअत की। शैख़ बहुत ऊँचे मरतबे वाले, फ़िक़्ह शाफ़ई के ज़बरदस्त आलिम और बुज़ुर्गों के मज़हब से बाख़बर थे और हज़रत सय्यदना इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी رحمۃ اللہ علیہ के बहुत अच्छे शागिर्दों में से हैं।

बातिनी उलूम की तलाश

हज़रत सय्यदना इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ हिजरी 478 से हिजरी 486 सरताजे मदारिस इस्लामिया मदरसा निज़ामिया नीशापुर में इमामुल हरमैन, फिर हिजरी 484 से हिजरी 488 मरकज़े उलूमे इस्लामिया मदरसा निज़ामिया में मुदर्रिसे आला के

मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। सुल्ताने वक़्त और मुल्क भर के उलमा आपके इल्म के क़ायल हो गए और एक वक़्त ऐसा भी आया कि बादशाहे वक़्त से ज़्यादा इमाम साहब का सिक्का लोगों के दिलों में बैठ गया। सल्तनते सलजूक़िया के वज़ीरे आज़म निज़ामुल मुल्क तूसी मुल्क के कामों में आप से मशवरा करते थे। तमाम इल्म पूरी तरह सीखने के बाद पहले तो इमामुल हरमैन फिर मुदर्रिसे आला जैसे ओहदों पर रहने के बावजूद आपको जिस बातिनी व रूहानी सुकून की तलाश थी वह हासिल न हो सका। बग़दाद उस वक़्त अलग-अलग फ़िरक़ों और बातिल मज़हबों के बेजा मुनाज़रों का दंगल बना हुआ था और फ़ितना व फ़साद की कैफ़ियत तारी थी, आपने उन फ़िरक़ों के उलूम व अक़ाइद की तहक़ीक़ शुरू की। इस तहक़ीक़ व जुस्तजू से बेचैनी और बढ़ गई मगर जब तसव्वुफ़ पर मौजूद किताब का मुताला किया तो मालूम हुआ कि सिर्फ़ इल्म काफ़ी नहीं बल्कि अमल की ज़रूरत है। अलग़र्ज़ रूहानी सुकून की ख़ातिर आपने मन्सबे तदरीस छोड़ दिया। दुनिया की मसरूफ़ियात और रंगारंगी से बिल्कुल किनाराकशी इख़्तियार कर ली हत्ताकि लिबासे फ़ाख़रा के बजाए एक कम्बल ओढ़ा करते थे और लज़ीज़ ग़िज़ाओं के बजाए साग पात पर गुज़र बसर होने लगी। अपने शहर तूस पहुँच कर सूफ़िया के लिए एक ख़ानक़ाह और इल्म का शौक़ रखने वालों के लिए एक मदरसा तामीर किया और फिर पूरी ज़िन्दगी औरादो वज़ाइफ़, रियाज़त व इबादत, गोशा नशीनी, दर्स देने और तसव्वुफ़ में मशग़ूल रहे।

तसनीफ़ व तालीफ़

हज़रत सय्यदना इमाम ग़ज़ाली عليه الرحمة ने कई उलूम व फ़ुनून में सैकड़ों किताबें (लगभग 500) व रसाइल तसनीफ़ किए।

आख़िरी सफ़र

उम्र के आख़िरी हिस्से में अगरचे हज़रत सय्यदना इमाम ग़ज़ाली عليه الرحمة का ज़्यादातर वक़्त इबादत में गुज़रता और शब व रोज़ मुजाहिदात व रियाज़ात में बसर होते मगर तसनीफ़ व तालीफ़ का शौक़ बिल्कुल तर्क न फ़रमाया था। उसूले फ़िक़्ह में आपकी आला दर्जे की तसनीफ़ 'अलमुस्तस्फ़ा' हिजरी 509 की तसनीफ़ है। इसके एक बरस के बाद आपने 55 साल की उम्र में बरोज़ पीर 14 जमादुल आख़िरा हिजरी 505 में बमक़ाम ताबरान (तूस) में इन्तेक़ाल फ़रमाया और वहीं मदफ़ून हुए।

(***इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न***)

मुक़द्दमा

शैख़ सालेह़, ज़ाहिद, अल्लामा अब्दुल मलिक इब्ने अब्दुल्लाह رحمة الله عليه ने फ़रमाया कि मेरे शैख़ इमामे अजल, नेकबख़्त, तौफ़ीक़ याफ़्ता हुज्जतुल इस्लाम दीन की ज़ीनत, उम्मत के लिए शर्फ़, अबू ह़ामिद मुह़म्मद इब्ने मुह़म्मद इब्ने मुह़म्मद ग़ज़ाली तूसी رحمة الله عليه ने मेरे सामने यह किताब पढ़ी और नक़्ल की, अल्लाह तआला उनकी रूह को ख़ुश करे और जन्नत में उनके दरजात व मरातिब बुलन्द फ़रमाए, यह इमाम मौसूफ़ की आख़िरी तसनीफ़ है और मुसन्निफ़ رحمة الله عليه से इस किताब के सुनने का मौक़ा सिर्फ़ उनके ख़ास अहबाब को ही हासिल है।

"सब ख़ूबियाँ अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम कायनात का मालिक है जिसने तमाम मौजूदात को अपनी हिकमते कामिला से तरतीब दिया, जो ह़कीम, जव्वाद (सख़ी), ग़ालिब और करीम जैसे आला सिफ़ाती नामों से पुकारा जाता है जिसने इन्सान को बेहतरीन फ़ितरत पर पैदा फ़रमाया और ज़मीन व आसमान जैसी अ़ज़ीम मख़लूक़ को अपनी कुदरते कामिला से वजूद का जामा पहनाया और जिसने दोनों जहान के कामों को बेहतरीन तरीक़े पर चलाया और इन्सानों और जिन्नों को सिर्फ़ अपनी ही इबादत के लिए पैदा फ़रमाया।

अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करने वालों के लिए उस तक पहुँचने के रास्ते बहुत कुशादह हैं और ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए उसकी हस्ती पर साफ़ साफ़ दलीलें मौजूद हैं लेकिन अल्लाह तआला जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत की राह दिखाए और क़यामत तक हुज़ूर पुरनूर सय्यदुल अम्बिया صلى الله عليه وآله وسلم पर और आपकी आल पर और आपके असहाब पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर थे अल्लाह तआला की रह़मत नाज़िल होती रहे और हमेशा आपकी और आपके मुताल्लेक़ीन की अज़मत क़ायम रहे। अम्मा बअ़द! ऐ अज़ीज़ भाईयों (अल्लाह तआला मुझे और आपको अपनी रज़ा का पाबन्द बनाए जो जन्नते फ़िरदौस की राह है)

ख़ुदावन्द-ए करीम का इरशाद है-

وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝

(और मैं तुम्हारा रब हूँ तो मेरी इबादत करो।)

(सूरह अम्बिया, आयत -92)

क़ुरआन मजीद में एक और जगह फ़रमाया-

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝

(उनसे फ़रमाया जाएगा ये तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी)

(सूरह दहर, आयत-22)

इन आयात से मालूम हुआ जन्नत में जाना उसी को नसीब होगा जिसने दुनिया में कोशिश की और सही मअना में ख़ुदा की बन्दगी में मसरूफ़ रहा, इसलिए हमने इबादतों की हक़ीक़त पर नज़र की, उसके तरीक़े पर ग़ौर किया, उसके बुनियादी कामों और उन मक़सदों पर नज़र दौड़ाई जो आख़िरत के रास्ते पर चलने वाले को पेश आती हैं, तो ग़ौर करने से मालूम हुआ कि इबादत की राहों पर चलना बहुत मुश्किल है, इस राह में बहुत तंग व तारीक घाटियाँ पार करनी होती हैं, बहुत सख़्त मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, बड़ी बड़ी आफ़तें रास्ते में पेश आती हैं और मन्ज़िल तक पहुँचने के लिए बहुत रुकावटें आती हैं और आँखों से न दिखाई देने वाला बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ता है।

ग़ौर करने से मालूम हुआ कि इबादत के रास्ते में तरह तरह की हलाक व तबाह करने वाली चीज़ें छुपी हुई हैं और साथ ही यह रास्ता ख़तरनाक दुश्मनों और डाकुओं से घिरा हुआ है लेकिन इस रास्ते का ऐसा मुश्किल और पेचीदा होना ज़रूरी है क्योंकि यह जन्नत का रास्ता है और जन्नत में पहुँचना कोई आसान नहीं और इबादत का इतना मुश्किल होना हुज़ूर ﷺ के इस इरशाद की तसदीक़ करता है आप ﷺ ने फ़रमाया है:-***"जन्नत ख़िलाफ़े नफ़्स करने से हासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात की पैरवी की वजह से जायेंगे"***

(अज़ ज़हदल हनाद के सिफ़ातु हुर अन्नार के बाब में)

इसी बारे में आपका दूसरा इरशाद है- ***"सुन लो कि जन्नत ऊँचे टीलों पर सख़्त ज़मीन की तरह है और दोज़ख़ सहन में नर्म व हमवार ज़मीन के अन्दर है"***

(अलजामेउस्सग़ीर)

फिर इबादत के मुताल्लिक़ मुश्किलों के साथ-साथ इन्सान एक कमज़ोर मख़लूक़ है और ज़माना तरह-तरह की मुसीबतों से भरा हुआ है और दीन का मामला तरक़्क़ी के बजाए पस्ती की तरफ़ जा रहा है फिर दुनियावी मशग़ूलियतें बहुत हैं और इबादत के वास्ते वक़्त बहुत थोड़ा है, इधर इन्सान की उम्र बहुत कम है और यह कि इन्सान नेक आमाल करने में बहुत लापरवाही करता है यानी ख़ुशू व ख़ुज़ू का ख़्याल बहुत कम रखता है और जिस ज़ात (यानी अल्लाह तआला) ने आमाल को परखना है वह इन्तिहाई बसीर है यानी वह सब कुछ देखता है और उससे कुछ छिपा नहीं। इन तमाम परेशानियों के साथ-साथ मौत हर दम क़रीब आ रही है और इन्सान को जो सफ़र करना है वह बहुत लम्बा है।

ऊपर गुज़री मुश्किलात में घिरे इन्सान को पता होना चाहिए कि इस ख़तरनाक और ज़रूरी सफ़र का तोशा सिर्फ़ इबादत है और सफ़र में सामाने सफ़र का होना ज़रूरी है और इस सामान के इकट्ठा करने का वक़्त बहुत तेज़ी से गुज़र रहा है और कभी वापस नहीं आएगा। जो शख़्स इस थोड़े से वक़्त में अपने आख़िरत के सफ़र का सामान तैयार करने में कामयाब हो गया तो समझो वह निजात पा गया और उसने हमेशा की सआदत हासिल कर ली लेकिन जिस बेवक़ूफ़ ने इन्तिहाई क़ीमती वक़्त को फ़ुज़ूल कामों और खेल कूद में खो दिया और सामाने आख़िरत इकट्ठा न कर सका तो वह बेशक नाकाम व नामुराद रहा और तबाह व बर्बाद लोगों में से हो गया।

ऊपर गुज़री वजहों से यह इबादत जिस क़द्र मुश्किल है उससे कहीं ज़्यादा अहम भी है इसलिए इस सफ़र पर कमर कसने वाले बहुत कम हैं और जम कर चलने वाले उससे भी कम मगर *मंज़िले मक़सूद* तक पहुँचने वाले ही ख़ुदा को प्यारे हैं उन्हीं को अल्लाह ने अपनी मुहब्बत व मारिफ़त के लिए चुना है और उन्हीं लोगों को अल्लाह तआला तौफ़ीक़ व परहेज़गारी के साथ मज़बूत करता है। यही लोग जन्नतुल फ़िरदौस के मुस्तहिक़ हैं और उसकी

रज़ा का मक़ाम पाते हैं तो हम अल्लाह तआला से इल्तिजा करते हैं कि वह हमें और तुम्हें अपनी रहमत से सआदतमन्द करे और कामयाब लोगों में शामिल करे।

जब हमने इबादत व रियाज़त के तरीक़े को ऊपर ज़िक्र की गई ख़ासियत पर पाया और इस राह से भटकने की वजह पर ग़ौर किया और साथ ही उन चीज़ों पर ग़ौर किया जिनका इन्सान इबादत का हक़ अदा करने के लिये मोहताज है, मसलन इबादत के लायक़ होना और उसकी ताक़त रखना, उसे अमली तौर पर अदा करना, उससे मुताल्लिक़ ज़रूरी इल्म हासिल करना और दूसरी तदबीरें इख़्तियार करना जो अल्लाह की तौफ़ीक़ व मदद से ही अमल में लाई जा सकती हैं और ख़ुदा की रहमत से ही बन्दा उस रास्ते की मुश्किल घाटियों को पार करने में कामयाब हो सकता है। हमने आख़िरत के सफ़र को तय करने के बारे में कई किताबें लिखीं जैसे *इहयाउल उलूम*, *अल क़ुर्बतु इलल्लाह*, जिनमें इबादत की बारीकियों पर बहस की गई है। उन किताबों में ऐसी तहक़ीक़ात हैं जिनको आम लोगों के ज़हन नहीं समझ सकते। जब अवाम उन नफ़ीस बहसों को न समझ सके तो उन्होंने अपनी नासमझी से उन पर नुकताचीनी शुरू कर दी और जो बातें उनकी अक़्लों की कमी की वजह से समझ में न आईं तो उन पर फ़ुज़ूल बहसें कीं लेकिन इस क़िस्म की बहस कोई नई बात नहीं कि रब्बुल आलमीन का कलाम फ़साहत व बलाग़त और ऊँचे मसाइल और मियारी मज़ामीन के ऐतबार से बेमिस्ल व बेमिसाल है मगर एतराज़ करने वालों ने उसके मुताल्लिक़ भी कह दिया कि ''ये तो अगले वक़्तों के क़िस्से कहानियाँ हैं''

और क्या आपने हज़रत ज़ैनुल आबिदीनﷺ के ये शेर नहीं सुने जिनका तर्जुमा यह है:-

- *मुझे अपने कई इल्मी जवाहिर-पारे पोशीदा रखने पड़ते हैं। ताकि जाहिल लोग उनकी तह तक न पहुँचें। कि उसकी वजह से कहीं फ़ितने में मुब्तला न हों।*
- *मुझसे पहले मेरे दादा हज़रत अलीﷺ भी इमाम हसन व हुसैनؓ को फ़रमा गए हैं कि ऐ मेरे अल्लाह अगर मैं अपने इल्मी मोती लोगों के सामने ज़ाहिर कर दूँ तो मुझे यह कहेंगे कि तू कोई बुतपरस्त है।*

- *वो ऐसे पुरअसरार उलूम हैं कि उनको सुन कर मुसलमान भी मेरे क़त्ल पर दरपै हो जायेंगे और क़त्ल की इस बदतरीन हरकत को दुरुस्त ख़्याल करेंगे"*

तो बुज़ुर्गाने दीन ने जिनका अल्लाह तआला की बारगाह में बलन्द मक़ाम है फ़ुज़ूल एतराज़ात की परवाह न करते हुए और तमाम उम्मत पर नज़रे करम फ़रमाते हुए इस मौज़ू (शीर्षक) पर कई किताबें लिखीं। मैं ने भी उस ज़ाते अक़दस की तरफ़ इल्तिजा करी जिसके क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में तमाम मख़लूक़ है कि मुझे भी एक ऐसी किताब तसनीफ़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जिस पर सब एक राय हों और जिसको पढ़ने से सबको फ़ायदा पहुँचे तो उस रहीम व करीम ज़ात ने मेरी यह इल्तिजा क़बूल फ़रमाई उसने अपने फ़ज़्ल व करम से इबादत के अजीब व ग़रीब राज़ मुझ पर ज़ाहिर किये और मुझे इस किताब की अजीब तरतीब व तदवीन का इल्हाम फ़रमाया। ऐसी तरतीब मैं किसी और किताब के लिखने में क़ायम न कर सका, यह वह तसनीफ़ है जिसकी मैं ख़ुद तारीफ़ करता हूँ। अब मैं अल्लाह की तौफ़ीक़ से कहता हूँ-

सबसे पहले बन्दे को रब की इबादत की तरफ़ जो चीज़ खींचती है वह अल्लाह की तरफ़ से बन्दे के दिल में इबादत का ख़्याल और उसकी तरफ़ से नेक आमाल की तौफ़ीक़ है, रब तआला के इस क़ौल में इसी तौफ़ीक़ व ख़्याल की तरफ़ इशारा है:-

أَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلٰمِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ط

(तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है।)

(सूरह अज़ ज़ुमर, आयत- 22)

हुज़ूर पुर नूर सय्यदे आलमﷺ ने भी अपने इस इरशाद में इसी की तरफ़ इशारा फ़रमाया है कि- ***"जब बन्दे के दिल में ख़ुदा तआला का नूर पैदा होता है तो दिल में वुसअत और अन्शराह पैदा हो जाता है"*** "सहाबा-ए-किराम ने नबी-ए-करीमﷺ की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!(ﷺ) इस नूर और ख़्याल के बन्दे में आने की क्या अलामत है? तो आपﷺ ने

जवाब दिया कि-*"इस फ़ानी दुनिया से किनाराकशी, आख़िरत की तरफ़ रुजू, मौत आने से पहले मौत की तैयारी"*

तो सबसे पहले बन्दे के दिल में जब यह ख़्याल अल्लाह की तरफ़ से डाला जाता है कि मैं अल्लाह तआला की तरह-तरह की नेअमतों में डूबा हुआ हूँ जैसे ज़िन्दगी की नेअमत, समझ, बोलचाल और दूसरी बेहतरीन ख़ूबियाँ और लज़्ज़तें और उसने मेरे लिए ऐसे असबाब भी मुहय्या फ़रमाए जिनके ज़रिए मैं अपने आपको तकलीफ़ और नुक़सानदेह चीज़ों से महफ़ूज़ रख सकता हूँ और आफ़ात से अपने आपको बचा सकता हूँ और फिर बन्दा जब यह भी सोचता है कि जिस ने मुझे ये नेअमतें अता की हैं वह मुझसे इन नेअमतों का शुक्र और अपनी ख़िदमत का मुतालबा करेगा और अगर मैंने नेअमतों पर शुक्र और उसकी ख़िदमत न की तो वह नेअमतें मुझसे छीन लेगा और इस नाशुक्री वजह से मुझ पर नाराज़ होगा और एक रोज़ सज़ा देगा।

बन्दा जब यह भी ख़्याल करता है कि नेअमत देने वाले ने अपनी मारिफ़त व ख़िदमत के आदाब बताने के लिए हमारी तरफ़ रसूल भेजे जिनको ऐसे ऐसे मोजिज़ात अता किए जो इन्सानी अक़्ल व ताक़त से बाहर थे, उन्होंने आकर बताया कि ऐ बन्दे! तेरा एक परवरदगार है जो हर शय पर क़ादिर है हर शय को जानता है, हमेशा ज़िन्दा है हमेशा से कलाम फ़रमाने वाला है, जो चाहे करता है, उसने मुझे बाज़ काम करने का और बाज़ न करने का हुक्म दिया है, उसे यह भी ताक़त है कि अगर मैंने नाफ़रमानी की तो मुझे अज़ाब देगा और फ़रमाबरदारी का सिला देगा, वह मेरी तमाम पोशीदा बातों को जानता है और मेरे दिल की बात को भी जानता है, और उसने फ़रमाबरदारी करने वालों से सवाब का वादा फ़रमाया है और नाफ़रमानों को अज़ाब से डराया है और उसने शरीअत के अहकाम को बजा लाने का मुझे हुक्म दिया है।

ऊपर गुज़री इन तमाम चीज़ों का ख़्याल करने से बन्दे के दिल में यह बात पुख़्ता हो जाती है कि मैं एक मुमकिन और फ़ानी चीज़ हूँ मेरे अन्दर ख़ुद कोई कमाल नहीं न ही कोई ज़ाती ख़ूबी है। अपने मुताल्लिक़ यह राय क़ायम करने में इन्सान की अक़्ल को ज़्यादा ग़ौर व फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

तो इन तमाम कामों का तसव्वुर करने से बन्दे पर अपने परवरदगार का ख़ौफ़ तारी होता है और वह घबरा उठता है, यही घबराहट बन्दे को ग़फ़लत के ख़्वाब से जगाती है और यही घबरा देने वाला तसव्वुर इतमामे हुज्जत करता है और इन्सान के तमाम बहानों को काट के रख देता है, यही ख़्याल उसे अल्लाह की निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र मरने पर मजबूर करता है चुनांचे इस ख़्याल से एक सही अक़्ल वाला इन्सान चौंक जाता है और उसमें बेचैनी पैदा होती है तो बन्दा अपनी निजात का रास्ता तलाश करता है और अमन का ज़रिया ढूँढता है, कुछ अपने दिमाग़ से सोचता है और कुछ दूसरों से मालूम करने की कोशिश करता है।

तो बन्दा इसके सिवा कोई रास्ता नहीं पाता कि कायनात में ग़ौर व फ़िक्र करे ताकि ख़ालिक़ की मारिफ़त और पहचान हासिल हो और अल्लाह तआला के मुताल्लिक़ जो उससे ग़ायब है उस पर इल्मे यक़ीन हासिल हो और यह जाने कि मेरा एक रब है जिसने उसे *अम्र* व *नही* यानी कुछ कामों को करने और कुछ को न करने का पाबन्द बनाया है।

तो यह ग़ौर व फ़िक्र करना और अपने ख़ालिक़ के मुताल्लिक़ इल्मे यक़ीन हासिल करना **पहली घाटी** है जो इबादत के रास्ते में पेश आती है इसे **इल्म-व-मारिफ़त** के नाम से जाना जाता है। यह इल्म-व-मारिफ़त इसलिए ज़रूरी है ताकि बन्दे को इबादत के मामले में ज़रूरी मालूमात की जानकारी हासिल हो और इस राह को सोच विचार और ग़ौर व फ़िक्र से तय करे। यह सोच विचार और ग़ौर व फ़िक्र की घाटी में दाख़िल है। बन्दे को चाहिए कि आख़िरत की तरफ़ रहनुमाई करने वाले उलमा-ए-किराम से भी इस घाटी के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करे।

हमने उलमा-ए-आख़िरत ख़ास तौर पर इसलिए कहा है कि ऐसे उलमा ही सिराते मुस्तक़ीम की रहनुमाई कर सकते हैं, ऐसे उलमा ही उम्मत के चश्मो चिराग़ हैं यही उम्मते मरहूमा की क़यादत के लायक़ हैं, तो सफ़रे आख़िरत के मुसाफ़िर को चाहिए कि ऐसे ही उलमा से फ़ायदा हासिल करे उनसे सीखे और उन्हीं की नेक दुआयें ले क्योंकि ऐसे पाकीज़ा सीरत लोगों की दुआ की वजह से ही मदद मिलती है और ख़ुदा की रहमत व तौफ़ीक़

मिलती है। ऐसे ही लोग रब की तौफ़ीक़ का ज़रिया हैं और आख़िरत का सफ़र तय करने में मददगार होते हैं।

इस इल्मो मारिफ़त के ज़रिए उन बातों का भी यक़ीन हो जाएगा कि मेरा एक माबूदे बरहक़ है जिसका कोई शरीक़ नहीं, उसी ने मुझे पैदा किया और तरह तरह की नेअमतों से नवाज़ा। बन्दे को इसका भी यक़ीन हो जाएगा कि उस माबूदे बरहक़ ने मुझे इन अता की हुई नेअमतों के शुक्र का हुक्म दिया है और ज़ाहिर व बातिन में ख़िदमत व इबादत का हुक्म फ़रमाया है और कुफ्र व दूसरे गुनाहों से रोका और उनकी सज़ा से डराया है और यह फ़ैसला सुना दिया है कि अगर बन्दा उसकी ख़िदमत व इबादत करेगा तो वह आख़िरत में उसे कभी न ख़त्म होने वाला बदला या सवाब इनायत फ़रमाएगा और नाफ़रमानी व सरकशी करने वाले को हमेशा रहने वाले अज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा।

तो यह यक़ीन व मारिफ़त बन्दे को अपने मालिक व मौला की ख़िदमत और इबादत पर उभारते हैं और उस आक़ा की ख़िदमत की तरग़ीब देते हैं जिसने उसको हर क़िस्म की नेअमतें अता फ़रमाईं। बन्दा अगर ख़ुलूस से उस आक़ा की तलाश करे तो उसे पा भी ले और उसकी पहचान व मारिफ़त हो जाए, हालांकि इससे पहले वह जाहिल होता है।

अगरचे बन्दा इस मारिफ़त व पहचान से रब तआला की इबादत व ख़िदमत की तरफ़ राग़िब होता है लेकिन उसे यह मालूम नहीं होता कि उसकी इबादत कैसे की जाती है और इसके लिए बन्दे के ज़ाहिर व बातिन में क्या क्या चीज़ें ज़रूरी हैं इसलिए ऊपर ज़िक्र हुए इल्म व यक़ीन के साथ साथ उन फ़राइज़ को सीखने की ज़रूरत पड़ती है जिनका तअल्लुक़ बन्दे के ज़ाहिर व बातिन के साथ है, बन्दा जब फ़राइज़ को अच्छी तरह जान लेता है तो उन्हें अमली तौर पर बजा लाने का इरादा करता है। जब अमली तौर पर शुरू करता है तो अपने आपको तरह तरह के गुनाहों में घिरा हुआ पाता है। ज़्यादातर लोगों का यही हाल है।

तो जब बन्दा अपने गुनाहों पर नज़र करता है तो दिल में कहता है कि मैं इबादत की तरफ़ कैसे ध्यान दे सकता हूँ? जबकि मैं गुनाह करने पर अड़ा हुआ हूँ और जब कि मेरा ज़ाहिर व बातिन गुनाहों की गन्दगी से भरा हुआ है,

इबादत की तरफ़ ध्यान देने से पहले मुझ पर लाज़िम है कि गुनाहों से सच्ची तौबा करूँ ताकि गुनाहों की गन्दगी से पाक हो सकूँ और गुनाहों की मन्हूस क़ैद से ख़ुलासी पा सकूँ ताकि ख़ुदावन्द की इबादत के लायक़ हो सकूँ और उसकी बन्दगी की बिसात बिछा सकूँ। तो गुनाहों से पाक होने के लिए इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह होने से पहले तौबा की घाटी पार करना पड़ती है। इस घाटी का नाम हमने '**अक़बतुत्तौबा**' यानी तौबा की घाटी दिया है। इसलिए बन्दे को ज़रूरी तौर पर इस घाटी को पार करना पड़ता है ताकि अस्ल मक़सद की तरफ़ मुतवज्जेह होने के लायक़ हो सके। इसलिए बन्दे पर लाज़िम है कि पूरे अरकान व शर्तों के साथ तौबा करे और पूरी एहतियात के साथ इस घाटी को पार करे। जब सच्ची तौबा नसीब हो जाए और यह मन्ज़िल तय कर ले तो इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह हो। मगर जब बन्दा तौबा से फ़ारिग़ होकर इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह होता है तो इबादत को भी तरह तरह की रुकावटों और मुश्किलों में घिरा हुआ पाता है, हर रुकावट अपनी ख़ासियत के ऐतबार से इबादत से रोकती है और इबादत से रोकने वाली अस्ल में चार चीज़ें हैं ***1. दुनिया, 2. लोगों से मेलजोल, 3. शैतान, 4. नफ़्स***

लिहाज़ा पहले इन चार चीज़ों को राह से हटाना और दूर करना ज़रूरी है वर्ना बन्दा अपने मक़सद में कामयाब नहीं हो सकता, तो इस चार चीजों को चार तरीक़ों से दूर करे ***1. दुनिया से तअल्लुक़ ख़त्म करे, 2. लोगों से मेलजोल तर्क करे, 3. शैतान से जंग करे 4. नफ़्स पर सख़्ती करे।***

मगर नफ़्स पर सख़्ती करना सबसे मुश्किल है, न तो बन्दा उस पर बिल्कुल बेनियाज़ हो सकता है और न ही शैतान की तरह उस पर हद से ज़्यादा सख़्ती की जा सकती है क्योंकि इबादत की मन्ज़िल तय करने के लिए यह नफ़्स ही बन्दे की सवारी, हथियार और ज़रिया है। हालांकि नफ़्स इबादत का हथियार व ज़रिया है मगर इबादात में उसके साथ देने की भी उम्मीद नहीं की जा सकती क्योंकि नेक काम की मुख़ालफ़त नफ़्स की आदत में दाख़िल है, यह तो खेलकूद का शौक़ीन है, इसलिए इससे काम लेने के लिए ज़रूरी है कि इसे तक़वे की लगाम दी जाए ताकि यह बन्दे में रहे तो सही मगर फ़रमाबरदार होकर ना कि सरकश व बाग़ी होकर ताकि ज़रूरत के मुताबिक़

नेक कामों से इससे काम लिया जाए और शर पैदा करने व हलाक करने वाले कामों के वक़्त नफ़्स को क़ैद में रखा जाए।

जब बन्दा इन चार चीज़ों को रास्ते से हटा देता है और ख़ुदा की मदद से इस मन्ज़िल को भी तय कर लेता है और इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह होता है तो अब चन्द और रुकावटें उसे पेश आती हैं जो इबादत के लिए फ़ुर्सत, इत्मिनान और यकसूई पैदा नहीं होने देते और यह रुकावटें भी चार हैं।

पहली रूकावट रिज़्क़ है क्योंकि नफ़्स इसका मुतालबा करता है और बन्दे के दिल में यह वसवसा डालता है कि तेरे लिए रिज़्क़ और ग़िज़ा ज़रूरी है अगर तू दुनिया से किनाराकश हो गया और मख़लूक़ से अलहदगी इख़्तियार कर ली तो तेरी ग़िज़ा और रिज़्क़ कहाँ से आएगा।

दूसरी रुकावट वह ख़तरात और ख़्यालात हैं जो बन्दे के दिमाग़ में हर उस चीज़ के लिए पैदा होते हैं जिससे इन्सान डरता है या जिस चीज़ की उम्मीद रखता है जिसे पसन्द या नापसन्द करता है उसे नहीं मालूम होता कि इस काम में मेरे लिए भलाई है या ख़राबी क्योंकि दुनिया के कामों में नतीजे छुपे हुए हैं तो बन्दा इन्हीं ख़्यालात में खो जाता है और बाज़ वक़्त बुरे ख़्यालात की वजह से हलाकत व तबाही में जा पड़ता है।

यकसूई यानी दिल लगा कर इबादत करने में **तीसरी रुकावट** यह है कि बन्दा जब दिल से इबादत की तरफ़ रुख़ करता है तो चारों तरफ़ से दुनियावी मुसीबतें और तकलीफ़ें उठ खड़ी होती हैं। ख़ास तौर पर जब बन्दा मख़लूक़ से अलग होने, शैतान से जंग और नफ़्स की मुख़ालफ़त करने पर आमादा हो जाए तब उन मुसीबतों को बर्दाश्त करते वक़्त किस क़द्र ग़ुस्सा पीना पड़ता है और कैसी सख़्तियाँ झेलना पड़ती हैं और कितने रंज व ग़म में घुलना पड़ता है और कैसी कैसी भयानक मुसीबतें आती हैं।

इबादत के सिलसिले में **चौथी रुकावट क़ज़ा-ए-ख़ुदावन्दी है**, जो मुख़्तलिफ़ हालतों में बन्दे पर आती है यानी कभी आराम, कभी तकलीफ़ और बन्दे का नफ़्स फ़ितरी तौर पर शरारत व फ़ितने की तरफ़ माइल है। ग़ुस्से में जल्दी आ जाता है, तो इबादत में इत्मिनान पैदा करने के लिए ऊपर गुज़री इन चार बातों से मुक़ाबला चार चीज़ों के ज़रिए होता है-***1. रिज़्क़ के मामले में ख़ुदा तआला पर भरोसा करे, 2. ख़्यालात और फ़िक्रों की ज़्यादती के वक़्त अपने***

मामलात को रब के हवाले करे, 3. तकलीफ़ व मुसीबतों के पेश आने पर सब्र करे 4. क़ज़ा-ए-इलाही यानी अल्लाह के हुक्म पर राज़ी रहे।

जब बन्दा अल्लाह तआला की रज़ा, उसकी हिमायत और मदद से ऊपर गुज़रे चारों रुकावटों का मुक़ाबला करते हुए आगे इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह होता है तो अपने अन्दर नज़र करने से महसूस होता है कि मेरा नफ़्स नेक काम करने में बेहिस, बेरग़बत और बहुत सुस्त है, नेक काम करने की उसमें कभी सच्ची चाहत पैदा नहीं होती और नेकियों की तरफ़ जिस तरह राग़िब होना चाहिए नहीं होता बल्कि ज़्यादातर रुझान ग़फ़लत, नेकियों से नफ़रत, आरामतल्बी, खेलकूद, बेहूदा और जाहिलाना बातों की तरफ़ रहता है, इसलिए एक ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है जो नफ़्स को उन ख़राबियों को रोके और ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है जो उसे नेक कामों की तरफ़ राग़िब करे और इबादत की मुहब्बत और इबादत का शौक़ उसमें पैदा हो।

ख़राबियों से रोकने वाली और नेकियों की तरफ़ मुतवज्जेह करने वाली दो चीज़ें **ख़ौफ़** और **रजा** हैं। '**रजा**' तो यह है कि बन्दा ताक़त व इबादत के बदले में बहुत बड़े सवाब की उम्मीद रखे और अल्लाह तआला ने जो जन्नत की उम्दा उम्दा नेअमतें अता करने के उससे वायदे किए हैं उन पर एतमाद और यक़ीन करे तो बहुत बड़े अज्र की उम्मीद और जन्नत में उम्दा उम्दा नेअमतों का लुत्फ़ उठाने का यक़ीन बन्दे के लिए नेक काम करने का ज़रिया बनता है फ़रमाबरदारी की तरग़ीब देता है और दिल में नेक आमाल और इबादत का जज़्बा बेदार करता है।

ख़ौफ़ यह है कि इन्सान हर वक़्त अल्लाह तआला के दर्दनाक अज़ाब से डरता रहे और सज़ाओं और अज़ाबों का तसव्वुर ज़हन में रखे जो नाफ़रमानी और गुनाह करने वालों को दिए जायेंगे। ऐसा ख़ौफ़ जब बन्दे के दिल में बैठ जाता है तो बन्दा उस ख़ौफ़ की वजह से गुनाहों से बाज़ रहता है और दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है चूंकि ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) बन्दे को इबादत पर उभारते हैं इसलिए इस घाटी का नाम "**अक़बतुल बवाइस**" यानी इबादत पर उभारने वाली घाटी रखा गया है।

जब ख़ौफ़ व रजा की ऊपर ज़िक्र की हुई घाटी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उसकी मदद से पार कर लेता है और अस्ल मक़सद यानी इबादत

की तरफ़ मुतवज्जेह होता है तो अब उसे इत्मिनान और तसल्ली से इबादत करने में कोई चीज़ रुकावट नहीं होती बल्कि वह अपने अन्दर ऐसी ख़ूबियाँ पाता है और ऐसे जज़्बात महसूस करता है जो उसे इबादत की तरफ़ तरग़ीब और ताअत व नेक आमाल की दावत देते हैं तो अब उसे इबादत करते वक़्त ख़ुशी व सुरूर और लज़्ज़त व राहत हासिल होती है और इबादत पर हमेशगी नसीब होती है मगर अचानक इबादत के दौरान दो और बड़ी आफ़तें सिर उठाती हैं, एक रिया (दिखावा) दूसरी उज्ब यानी अपने मुताल्लिक़ नेक और पारसा होने का ख़्याल, लिहाज़ा कभी तो अपनी इबादत को इस तरह ख़राब और तबाह करता है कि दूसरों पर ज़ाहिर करता है और कभी अपने आपको नेक और पाकीज़ा ख़्याल करके अपनी नेकियाँ बर्बाद कर देता है। इसलिए उसे अब यह घाटी पार करनी पड़ती है और इसे "**अक़बतुल क़वादेह**" यानी इबादत में ख़राबी पैदा करने वाली घाटी कहते हैं लिहाज़ा इबादत में ख़ुलूस व रब तआला के अहसानात को ज़हन में रखते हुए बन्दा इस मुश्किल घाटी को भी ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से, उसकी मर्ज़ी, उसकी रहमत से पूरी एहतियात और होशियारी के साथ पार करता है ताकि उसकी नेकियाँ रिया व उज्ब जैसी आफ़तों से बची रहें।

जब बन्दा इन ऊपर ज़िक्र की हुई घाटियों से अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व मदद से गुज़र जाता है तो सही मअना में इबादत बजा लाने के क़ाबिल होता है और अब उसकी बन्दगी तमाम ऐबों से पाक होती है लेकिन फिर जब बन्दा अपने ज़िन्दगी के हालात पर नज़र करता है तो अपने आपको रब तआला के बेशुमार अहसानात, बेशुमार अताओं और क़िस्म क़िस्म की नेअमतों में डूबा हुआ पाता है, मसलन इबादत और इन मुश्किल घाटियों को पार करने की तौफ़ीक़, नुक़सानदेह चीज़ों से हिफ़ाज़त, दूसरी मख़लूक़ पर अज़मत और बुज़ुर्गी वग़ैरा वग़ैरा। इन एहसानात और नेअमतों को याद करके उस के दिल में ख़ौफ़ पैदा होता है कि कहीं मैं इन के शुक्र से ग़ाफ़िल न हो जाऊँ नाशुक्री के गुनाह मे मुब्तला न हो जाऊँ और कहीं नाशुक्री की वजह से मैं रब की बारगाह से दूर न हो जाऊँ और नाशुक्री की वजह से नेअमतें कहीं मुझसे छिन न जायें और अल्लाह तआला की नज़रे करम और मेहरबानियों से महरूम न हो जाऊँ तो इसलिए ह़म्द व शुक्र की तरफ़ मुतवज्जेह होता है

और ख़ूब ज़िक्र व फ़िक्र के ज़रिए उसे "**अक़बतुल ह़म्द व शुक्र**" यानी ह़म्द व शुक्र की घाटी को पार करता है, इससे फ़ारिग़ होने के बाद वह अपने आपको मक़सूद के क़रीब और अपने मतलब को सामने पाता है।

लिहाज़ा इसके सफ़र तय करने के बाद बन्दा अल्लाह तआला के लुत्फ़ व करम की नर्म ज़मीन और शौक़ व मुहब्बत के मैदान में जा पहुँचता है फिर रज़ा के बाग़ात, मुहब्बत का चमन, और रूहानी फ़रहतों के मक़ाम पर पहुँच जाता है, अब उसे ख़ुदा का क़ुर्बे ख़ास अता होता है, और अल्लाह तआला से मुनाजात करने वालों की मजलिस में जगह पा लेता है और उसकी तरफ़ से ख़ास इनामात व करामात का शर्फ़ उसे हासिल होता है तो बन्दा इन नेअमतों का लुत्फ़ उठाता है और अपनी उम्र का बचा हुआ ज़माना रूहानी राहत व सुरूर में बसर करता है, यहाँ तो ज़ाहिरी जिस्म के ऐतबार से आराम पाता है और आख़िरत में रूहानी ऐतबार से।

ऐसा इन्सान हर वक़्त पैग़ामे इलाही यानी इस दुनिया से कूच करने के इन्तेज़ार में रहता है, उसका दिल दुनिया से उचाट हो जाता है, दुनिया को हिक़ारत की नज़र से देखता है, मौत का मुश्ताक़ रहता है लिहाज़ा ख़ुदा के क़ासिद अचानक उसके पास जन्नत की ख़ुशख़बरी और जन्नत के फ़िरिश्ते जन्नत की ख़ुशबुएँ लेकर आना शुरू हो जाते हैं और उसको पाक रूह ख़ुशी देने वाली बशारतें और कामिल मुहब्बत व प्यार के साथ इस फ़ानी दुनिया से जन्नत के बाग़ों की तरफ़ ले जाते हैं, वहाँ यह मोमिन अपनी ज़ईफ़ व हक़ीर जान के लिए हमेशा की नेअमतें और बहुत बड़ा मुल्क पाता है और फ़ज़्ल व करम करने वाला रब मरहबा कहता है, अपना क़ुर्बे ख़ास अता करता है और इनाम व इकराम करते हुए उससे मुलाक़ात करता है, यह मोमिन बन्दा वहाँ ऐसे इनामात से नवाज़ा जाता है जिनका बयान नामुमकिन है और तारीफ़ करने वाले जिनकी तारीफ़ नहीं कर सकते, इसी तरह उसको हमेशा नई-नई और आला नेअमतें अता होती रहेंगी।

ऐसे इन्सान को कैसी बड़ी सआदत नसीब होती है और यह मोमिन कितनी बड़ी दौलत का मालिक बन जाता है और कितनी अज़ीम कामयाबी हासिल कर लेता है और कितनी बुलन्द शान वाला बन जाता है, ऐसे शख़्स को हज़ार-हज़ार मुबारक क्योंकि उसका अन्जाम बहुत अच्छा है हम भी

अल्लाह तआला के दरबार में इल्तिजा करते हैं कि हम पर भी यह एहसाने अज़ीम फ़रमाए और हमें भी इस नेअमते उज़्मा से नवाज़े और रब तआला के लिए यह कोई मुश्किल नहीं।

हम दरबारे ख़ुदावन्दी में यह भी दुआ करते हैं कि वह हमें उन लोगों में से न करे जिनको इस बहुत बड़े एहसान से ज़ुबानी बयान, सिर्फ़ सुनने, सरसरी इल्म और वक़्ती आरज़ू के सिवा हक़ीक़ी तौर पर कोई हिस्सा नहीं मिला। हम दरबारे ख़ुदावन्दी में यह भी दुआ करते हैं कि क़यामत के रोज़ हमारा इल्म हम पर हमारे ख़िलाफ़ दलील न बने और अल्लाह तआला से इल्तिजा करते हैं कि वह हमें इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे और फिर अमल में पाबन्दी अता फ़रमाये, वही सबसे बेहतर रहम व करम करने वाला है और हमारे हुज़ूर दोनों जहान के सरदार मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहﷺ पर बेशुमार सलातो सलाम नाज़िल हो और आपके असहाब और आपकी आल पर भी और अल्लाह तआला उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा शर्फ़ व इज़्ज़त अता फ़रमाए।

यह है इस किताब की तरतीब, जो मेरे मौला ने इबादत के सिलसिले में मुझे इल्हाम फ़रमाई। ऐ अज़ीज़! अब तू अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से यह जान कि कुल सात घाटियाँ बनती हैं:-

1. *पहली घाटी इल्म की,*
2. *दूसरी घाटी तौबा की,*
3. *तीसरी घाटी अवाइक़ व मवानेअ यानी रुकावटों की,*
4. *चौथी घाटी अवारिज़ यानी दुशवारियों की,*
5. *पाँचवीं घाटी बवाइस यानी इबादत पर उभारने वाली चीज़ों की,*
6. *छठी घाटी क़वादेह यानी इबादत में ख़राबी पैदा करने वाली चीज़ों की,*
7. *सातवीं घाटी हम्द व शुक्र की*

इस किताब "**मिन्हाजुल आबिदीन**" में इन्हीं सात घाटियों का ज़िक्र है। अब हम हर एक की इस तरह शरह करते हैं कि लफ़्ज़ तो कम हों मगर सब ज़रूरी नुकते बयान भी हो जायें। हम हर एक की शरह अलग-अलग बाब में करेंगे अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ का देने वाला है और उसके करम से ही बयान व अमल में दुरुस्ती बरक़रार रहती है।

"व ला हौला व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलीय्यिल अज़ीम"।

पहली घाटी इल्म की

मैं (इमाम ग़ज़ाली) अल्लाह की तौफ़ीक़ से कहता हूँ कि ऐ इख़्लास की आरज़ू करने वाले और एक अल्लाह की सच्ची इबादत की चाहत रखने वाले, अल्लाह तआला तुझे नेक कामों की तौफ़ीक़ दे। सबसे पहले तुझ पर लाज़िम है कि शरीअत का इल्म हासिल करे क्योंकि यह इबादत की बुनियाद है और इसी पर इसका दारोमदार है। तू जान ले कि इल्म और उसके मुताबिक़ इबादत दो ऐसे कमाल हैं कि मुसन्निफ़ों की किताबें, उस्तादों की तालीमात, वाज़ कहने वालों की नसीहतें, ग़ौर व फ़िक्र करने वालों की नज़र व फ़िक्र वग़ैरा जो भी तुम देख या सुन रहे हो सब कुछ इस इल्म व अमल में कमाल हासिल करने के लिए है बल्कि आसमानी किताबों का नाज़िल होना नबियों का दुनिया में आना सातों आसमानों और ज़मीनों और उनके दरमियान मख़लूक़ की पैदाइश भी इसीलिए है। तुम क़ुरआन मजीद की इन दो आयतों पर तो ग़ौर करो:-

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ۬ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾

(अल्लाह वह है जिसने सात आसमान बनाए और उन्हीं के बराबर ज़मीनें, अल्लाह का हुक्म उनके दरमियान उतरता है ताकि जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है।)

(सूरह अत्तलाक़, आयत -12)

सिर्फ़ यही एक आयत इल्म की फ़ज़ीलत के सुबूत के लिए काफ़ी है ख़ासकर इल्मे तौहीद के लिए।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

(और मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।)

(सूरह अज़्ज़ारियात, आयत- 56)

यह आयते करीमा इबादत के सुबूत के लिए काफ़ी है, इस आयत से यह मालूम हुआ कि बन्दे पर अपने रब की बन्दगी लाज़िम है, तो इस इल्म व

इबादत को ही सबसे ज़्यादा अज़मत वाली चीज़ तसव्वुर करना चाहिए क्योंकि कायनात की पैदाइश करने का मक़सद इन्हीं दो चीज़ों में कमाल हासिल करना है, इसलिए बन्दे को चाहिए कि इन्हीं दो के साथ मशग़ूल रहे, इन्हीं दोनों को हासिल करने के लिए मशक़्क़तें बर्दाश्त करे और इन्हीं दो में ग़ौर व फ़िक्र करता रहे।

ऐ अज़ीज़! तू यक़ीन कर कि इन दो के सिवा जो कुछ दुनिया में है सब बेकार हैं कि उसमें कोई भलाई नहीं और इसके अलावा जो कुछ भी है फ़ुज़ूल हैं जिससे कुछ हासिल नहीं, जब तेरे ज़हन में इल्म व इबादत की अहमियत आ गई तो अब यह बात समझ कि इल्म इबादत से अफ़ज़ल व अशरफ़ है।

इसीलिए नबी-ए-करीमﷺ फ़रमाया-***"आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी मेरी अपने अदना उम्मती पर।"*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

एक जगह आपﷺ ने फ़रमाया-***"आलिम की तरफ़ एक बार नज़र मेरे नज़दीक सौ बरस रोज़े रखने और सौ बरस रात को नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है"*** (अल मक़ासिदुल हसना)

और आपﷺ ने फ़रमाया ***"क्या मैं तुम्हें सबसे ज़्यादा बुलन्द मरतबे वाला जन्नती न बताऊँ? सहाबा-किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!ﷺ बताईये। तो आपﷺ ने फ़रमाया कि वो मेरी उम्मत के उलमा हैं"***

इन हदीसों से साबित हुआ कि इबादत से इल्म अफ़ज़ल है लेकिन इल्म के साथ साथ इबादत भी ज़रूरी है बग़ैर इबादत इल्म का कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि इल्म दरख़्त की तरह है और इबादत फल और दरख़्त की क़द्र फल से होती है अगरचे दरख़्त अस्ल है लिहाज़ा बन्दे के लिए इल्म व इबादत दोनों का होना ज़रूरी है, इसीलिए हज़रत हसन बसरीؒ ने फ़रमाया ''इल्म को इस तरह हासिल करो कि इबादत को नुक़सान न दे और इबादत इस तरह करो कि इल्म को नुक़सान न हो'' और यह बड़ी पुख़्ता बात है कि इल्म व इबादत दोनों ज़रूरी हैं मगर पहले इल्म हासिल करना ज़रूरी है क्योंकि इल्म इबादत की बुनियाद और उसका रहनुमा है इसीलिए नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया- ***''इल्म अमल की बुनियाद है और अमल उसके ताबे है''***

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

इल्म का इबादत की अस्ल होना और उसे इबादत से पहले हासिल करना दो वजह से ज़रूरी है। एक इसलिए ताकि बन्दा रब की इबादत कर सके और उस इबादत को तमाम ऐबों और बुराइयों से महफ़ूज़ रख सके क्योंकि बन्दे पर लाज़िम है कि पहले अपने माबूदे बरहक़ को पहचाने और फिर उसकी इबादत में मसरूफ़ हो और बन्दा अपने माबूदे बरहक़ की इबादत कर ही कैसे सकता है जबकि उसे यह न मालूम हो कि उस माबूद का नाम क्या है, उसकी सिफ़तें क्या हैं और कौन सी चीज़ें उसकी शान के लायक़ हैं और कौन सी बातें उसकी शान के लायक़ हैं और कौन सी बातें उसकी शान के ख़िलाफ़ हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि बन्दा जहालत की वजह से अपने माबूदे बरहक़ के लिए ऐसी सिफ़तों पर एतक़ाद रखता है जो क़तअन उसकी शान के लायक़ नहीं होतीं और इस ग़लत अक़ाइद की वजह से इबादत बर्बाद हो जाती है, हमने इस बहुत बड़े ख़तरे की पूरी शरह अपनी किताब *इहयाउल उलूम* के बाब *सू ख़ात्मा* में कर दी है।

फिर ऐ अज़ीज़ तुझ पर लाज़िम है कि उन तमाम शरीअत के फ़राइज़ और वाजिब का इल्म हासिल करे जिनका तुझे हुक्म दिया गया है ताकि उन्हें सही तौर पर अदा कर सके और तमाम उन हुक्मों का भी इल्म हासिल करे जो नाजाइज़ और शरीअत के ख़िलाफ़ हैं ताकि उनसे बच सके वरना जब तक फ़रमाबरदारी और इबादत की हक़ीक़त, हालत और उसे अदा करने की सही कैफ़ियत और तरीक़ा मालूम न हो तो उसको सही तौर पर कैसे कर सकता है।

और जब तक यह मालूम न हो कि यह चीज़ें गुनाह हैं उस वक़्त तक कैसे उनसे परहेज़ हो सकता है? इसलिए इबादते शरीआ जैसे पाकी, नमाज़ रोज़ा वग़ैरा की हक़ीक़त उनके सब अहकाम और उनकी तमाम शर्तें मालूम करना ज़रूरी हैं और तब ही सही तरीक़े से उनको अदा किया जा सकता है। इल्म न होने की वजह से बहुत मुमकिन है कि इन्सान बरसों और मुद्दतों एक ऐसे अमल को नेक ख़्याल करके करता रहे जो अस्ल में उसकी पाकी और उसकी नमाज़ों को ख़राब कर रहा हो बल्कि तहारत और नमाज़ें ख़िलाफ़े सुन्नत तरीक़े पर अदा होती रहें और करने वाले को बिल्कुल इल्म न हो और बाज़ वक़्त ऐसा भी हो सकता है कि जब कोई मुश्किल मसअला पेश आए

तो न तो वह ख़ुद जानता हो और न ही उस वक़्त उसे कोई हल करने वाला मिले तो परेशानी होगी।

फिर ज़ाहिरी इबादतों और फ़रमाबरदारी की क़बूलियत का दारोमदार पोशीदा अच्छी आदतों पर है जो दिल से तअल्लुक़ रखती हैं इसलिए उनका जानना भी ज़रूरी है, जैसे *तवक्कुल* यानी अल्लाह पर भरोसे की ह़क़ीक़त, *तफ़वीज़* यानी सब मामलात अल्लाह तआला के सुपुर्द करना, अल्लाह की रज़ा, सब्र, तौबा और इख़लास वग़ैरा का मतलब जिनका तफ़सीली ज़िक्र इन्शाअल्लाह तआला अभी आएगा। इनके साथ-साथ उन चीज़ों का मतलब जानना भी ज़रूरी है जो पोशीदा ऐब हैं और जो तवक्कुल यानी अल्लाह पर भरोसा अल्लाह की रज़ा वग़ैरा की ज़िद हैं जैसे ग़ुस्सा, लम्बी उम्मीदें, रिया यानी दिखावा और तकब्बुर, उज्ब व हसद वग़ैरा क्योंकि इन बुरी आदतों से बचना भी लाज़िम और ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने अच्छे अख़लाक़ पैदा करने और बुरी आदतों को दूर करने का हुक्म अपनी किताब में साफ़ तौर पर दिया है। **तवक्कुल के मुताल्लिक़ फ़रमाता है:-**

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

(और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।)

(सूरह अलमाइदह, आयत-23)

शुक्र के मुताल्लिक़ फ़रमाता है:-

وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ

(और अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-172)

सब्र के मुताल्लिक़ फ़रमाता है:-

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(और ऐ महबूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है।)

(सूरह अन्नहल, आयत-128)

तफ़वीज़ (सुपुर्द करने) के मुताल्लिक़ फ़रमाता है:-

وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا

(और सबसे टूट कर उसी के हो रहो।)

(सूरह अलमुज़्ज़म्मिल, आयत-8)

इसी तरह और भी कई आयतें हैं जिनमें अच्छे अख़लाक़ को अपनी आदत बनाने का हुक्म दिया गया है तो जिस तरह से नमाज़, रोज़ा वग़ैरा ज़ाहिरी अहकाम व फ़राइज़ क़ुरआन की आयतों से साबित हैं उसी तरह तवक्कुल, रज़ा और सब्र वग़ैरा भी क़ुरआन पाक की आयतों से साबित हैं।

जब तवक्कुल वग़ैरा भी लाज़िम हैं तो सिर्फ़ नमाज़, रोज़े पर ही सारा ज़ोर देना, उम्दा अख़लाक़ न अपनाना ठीक नहीं क्योंकि दोनों क़िस्म के ज़ाहिरी व बातिनी अहकाम के मुताल्लिक़ एक ही रब ने एक ही किताब में हुक्म दिया है, मगर तुम छुपी हुई ख़ासियतों से बिल्कुल बेख़बर हो चुके हो और ऐसे लोगों के लिए फ़तवे लिखने में मसरूफ़ हो जिन्होंने दुनिया को ही काबा-ए-मक़सूद ठहरा लिया है यहाँ तक कि उन्होंने नेकी को बुराई और बुराई को नेकी का दर्जा दे दिया है यानी उन लोगों का सब कुछ दुनिया है।

अफ़सोस तुम ऐसे लोगों के लिए फ़तवानवीसी में मशग़ूल होकर उन पाकीज़ा उलूम से बेपरवाह हो गए हो जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी मुक़द्दस किताब में नूर, हिकमत और हिदायत वग़ैरा के अल्फ़ाज़ से बयान फ़रमाया है। तुम उन लोगों के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहते जिन्होंने हराम कमाई को पेशा बना लिया है और जो रात दिन ज़लील दुनिया जमा करने में लगे हैं।

ऐ भलाई के दावेदार! तुम्हें इसका ख़ौफ़ नहीं कि बड़े बड़े फ़राइज़ को तो पीठ के पीछे डाल रहे हो और नफ़्ल नमाज़, रोज़ा वग़ैरा में मशग़ूल हो, फ़राइज़ को तर्क करके नवाफ़िल अदा करने वालो! इन नवाफ़िल की कोई अहमियत नहीं, अक्सर ऐसा भी होता है कि तुम ऐसे गुनाह पर क़ायम होते हो कि जो तुम्हें दोज़ख़ में डाल दे मगर जाइज़ खाने पीने और नींद वग़ैरा से बचते रहते हो जो इबादत में तुमको तक़वियत देते हैं तो तुम्हारा ऐसा परहेज़ बेमतलब और फ़ुज़ूल है और उन सबसे बदतर यह है कि दुनियावी उम्मीदों में घिरे हो हालांकि दुनिया की उम्मीदें सरासर गुनाह हैं और जहालत की बिना

पर तुम उन उम्मीदों को नीयते ख़ैर समझने में इसलिए भी फ़र्क़ नहीं कर सकते क्योंकि ये दोनों ज़ाहिर में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।

कभी-कभी तुम बेचैन होते हो और रोना पीटना वग़ैरा करते हो और उसे अल्लाह तआला के दरबार में गिड़गिड़ाना और आजिज़ी करना ख़्याल करते हो और कभी तुम सिर्फ़ रिया कर रहे होते हो मगर तुम्हारा गुमान यह होता है कि तुम अल्लाह तआला की ह़म्द कर रहे हो और लोगों को नेकी की दावत दे रहे हो, इस तरह तुम गुनाहों को नेकियाँ और अज़ाब को सवाब समझने लग जाते हो और एक बहुत बड़े धोखे में मुब्तला हो जाते हो और सख़्त ख़राबी में पड़ जाते हो, तो ख़ुदा की क़सम! बग़ैर इल्म अमल करने वालों के लिए सबसे बड़ी मुसीबत यही है।

और फिर ज़ाहिरी आमाल का पोशीदा ख़ूबियों के साथ एक ख़ास तअल्लुक़ है अगर बातिन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आमाल भी ख़राब होंगे और अगर बातिन हसद, रिया और तकब्बुर वग़ैरा ऐबों से पाक हो तो ज़ाहिरी आमाल भी सही होते हैं, अगर दिल पाक और साफ़ है तो ज़ाहिरी अमल भी ठीक होगा और अगर बातिन में रिया यानी दिखावा है तो ज़ाहिरी अमल भी सही नहीं होगा। इसी तरह अगर कोई अपने नेक आमाल को रब तआला का फ़ज़्ल व करम समझे तो ठीक और अगर उन्हें अपना ज़ाती कमाल समझे तो अपनी ही तारीफ़ करने की वजह से नेक आमाल बर्बाद हो जाते हैं इसीलिए जब तक छुपे हुए कामों का ज़ाहिरी आमाल से तअल्लुक़, छुपी हुई ख़ूबियों की ज़ाहिरी आमाल में तासीर और छुपी हुई ख़ूबियों के ज़रिए ज़ाहिरी आमाल की हिफ़ाज़त की कैफ़ियत वग़ैरा का पता न चले ज़ाहिरी आमाल भी सही नहीं और जहालत और बेअमली की वजह से न तो ज़ाहिरी आमाल सही हो पाते हैं और न ही दिल में छुपी हुई अच्छी आदतों या दिल में छुपी हुई बुरी आदतों का पता चल सकता है और अमल करने वाले के हाथ में मेहनत और मैल कुचैल के अलावा कुछ नहीं आता और यही सबसे बड़ा नुक़सान है इसीलिए सरकारे दो आलमﷺ ने इल्म की शान में फ़रमाया:-***“आलिम का सोना जाहिल की नमाज़ से बेहतर है”*** क्योंकि इल्म के बग़ैर अमल करने वाले के आमाल अक्सर सही और सवाब देने वाले होने के बजाय ख़राब और अज़ाब देने वाले बन जाते हैं। इल्म की शान

में हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने भी फ़रमाया-***"इल्म सआदतमन्दों को नसीब होता है और शक़ी (बदनसीब) लोग इस नेअमत से महरूम रहते हैं"***

इस इरशाद का यह मतलब है कि बेइल्म की बदनसीबी यह है कि उसने इल्म तो सीखा नहीं ख़ाली इबादत की मशक़्क़त व दिक़्क़त उठाता है तो ऐसी इबादत से सिवाय जिस्मानी मेहनत के कुछ सवाब वग़ैरा नहीं मिलता। बा अमल और ज़ाहिद उलमा में क्योंकि इल्म व अमल दोनों इकट्ठे होते हैं इसलिए उनका दर्जा ख़ुदा तआला के यहाँ बाक़ी तमाम लोगों से ज़्यादा होता है और इल्म ही इस बुलन्द मरतबे की अस्ल है क्योंकि इल्म फ़रमाबरदारी और इबादत की बुनियाद है और इसी पर आमाल का दारोमदार है। वो लोग जिन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ास ताईद व तौफ़ीक़ हासिल है उन्होंने इसी तरह इस मज़मून को बयान फ़रमाया और वो पूरी तरह इस मामले की तह तक पहुँचे हैं।

ऊपर गुज़रे बयान से यह बात साफ़ हो गई कि इबादत न तो इल्म के बग़ैर की जा सकती है और न ही सही हो सकती है तो साबित हो गया कि सही तरीक़े से इबादत करने के लिए पहले इल्म हासिल करना लाज़िम और ज़रूरी है।

इबादत से पहले इल्म के होने की दूसरी वजह यह है कि इल्म से दिल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ पैदा होता है, अल्लाह तआला का इरशाद है:-

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَٰٓؤُا ۗ

(अल्लाह से उसके बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।)

(सूरह फ़ातिर, आयत-28)

यह इसलिए कि जिसको ख़ुदा तआला की पहचान नहीं होती उसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं होता और न ही ऐसा शख़्स सही तरह से रब तआला की ताज़ीम और फ़रमाबरदारी कर सकता है, तो इल्म से ही रब की पहचान होगी और इल्म के ज़रिए ही उसकी अज़मत व ख़ौफ़ दिल में बैठेगी फिर इल्म से ही तमाम इबादत व फ़रमाबरदारी का फल मिलता है और इल्म ही की वजह से आदमी हर क़िस्म के गुनाहों से बच सकता है और या फिर अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से। इबादत का मक़सद भी तो यह दो ही चीज़ें

हैं एक उसकी पहचान दूसरी दिल में उसका ख़ौफ़ और हैबत। इसलिए ऐ आख़िरत के रास्ते पर चलने वाले सबसे पहले तेरे लिए इल्म हासिल करना लाज़िम और अल्लाह ही तौफ़ीक़ का मालिक है हर वक़्त यह दुआ करनी चाहिए कि उसका फ़ज़्ल और उसकी रहमत सबके शामिले हाल रहे।

शायद तुम कहो कि नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया है कि- ***"इल्म की तलाश हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है"*** (सुनन इब्ने माजा)

तो वह कौन सा इल्म है जिसकी तलाश लाज़िम है और इबादत की दुरुस्ती के लिए कितने इल्म की ज़रूरत है? तुम्हारे इस सवाल का जवाब यह है कि जिन उलूम को हासिल करना फ़र्ज़ है वह तीन हैं:-

1. **इल्मे तौहीद**, 2. **इल्मे सिर्र** , 3. **इल्मे शरीअत**

लेकिन इन तीन उलूम में से कम से कम इतना जानना और सीखना लाज़िम और ज़रूरी है कि जिससे लाज़िम व ज़रूरी कामों की पूरी पूरी पहचान और यक़ीन हो जाए।

इल्मे तौहीद से इतना ज़रूरी है कि जिससे दीन के उसूल मालूम हो जायें वह उसूल यह हैं कि तुम्हें यह मालूम हो कि हमारा एक माबूदे बरहक़ है जो हर चीज़ को जानता है और तमाम मुमकिनात पर उसकी क़ुदरत हावी है, जो चाहे करता है, हमेशा ज़िन्दा है, हमेशा से कलाम फ़रमाने वाला है, सब कुछ देखता और सुनता है, एक है उसका कोई शरीक नहीं, वह तमाम मुकम्मल ख़ूबियों के साथ हमेशा से है और हमेशा रहेगा, हर ऐब और कमी से पाक है, उस पर कभी ज़वाल नहीं आ सकता, उसको अक़्ल से नहीं सोचा जा सकता कि वह कैसा है और क़दीम यानी हमेशा से सिर्फ़ वही है।

यह भी यक़ीन करें कि हज़रत मुहम्मदﷺ अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे और रसूल हैं और जो अहकाम आप ख़ुदा की तरफ़ से लाए सब हक़ हैं और आख़िरत के बारे में जो ख़बरें आपने दी हैं सब हक़ हैं फिर उन तमाम अहकाम व मसाइल को भी मालूम करें जो सुन्नत हैं ताकि शरीअत के ख़िलाफ़ कामों और बिदअतों से महफ़ूज़ रहें, इसलिए कि बिदअत में मुब्तला होकर इन्सान सुन्नत की पैरवी से महरूम हो जाता है और दीन ख़तरे में पड़ जाता है।

तौहीद के तमाम उसूल अल्लाह की किताब में मौजूद हैं और हमारे मशाइख़ ने दीनयात के उसूल यानी उसूले अक़ाइद की किताबों में उन दलाइल को वज़ाहत से लिखा है।

ख़ुलासा यह है कि जिस चीज़ से जाहिल रह कर गुमराही में पड़ने का ख़तरा हो उसका इल्म हासिल करना ज़रूरी है। इल्म की अहमियत को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लो और तौफ़ीक़ अल्लाह ही के हाथ में है।

इल्मे सिर्र से इस क़द्र जानना ज़रूरी है जिससे दिल की सफ़ाई के तरीक़े मालूम हो जायें कि किस-किस चीज़ से दिल को पाक करना ज़रूरी है ताकि दिल में अल्लाह तआला की हैबत व ताज़ीम और आमाल में इख़्लास पैदा हो और उन बातों और कामों को जानना भी ज़रूरी है जिनसे नीयत सही रह सके और ज़ाहिरी व बातिनी आमाल व इबादात, ज़ाहिरी व बातिनी आफ़ात से महफ़ूज़ रह सकें और उन सब बातों और कामों का बयान इन्शाअल्लाह तआला हमारी इस किताब में आगे आयेगा।

इल्मे शरीअत से इस क़द्र जानना ज़रूरी है कि जिससे यह मालूम हो जाए कि यह काम ज़रूरी हैं ताकि उन्हें अदा किया जा सके, जैसे नमाज़, रोज़ा वग़ैरा मगर हज, ज़कात व जिहाद वग़ैरा के अहकाम व मसाइल उनको जानने लाज़िम हैं जिन पर यह फ़र्ज़ हों और जिन पर यह चीज़ें फ़र्ज़ नहीं उन पर उनकी बारीकियाँ और तफ़सील जानना लाज़िम नहीं। इन तीन इल्मों से बस इतना जानना लाज़िम व ज़रूरी है जो हमने बयान कर दिया है।

सवाल: क्या इल्मे तौहीद में उन तफ़सील और दलीलों का जानना भी ज़रूरी है जिनसे झूठे मज़हबों की तरदीद हो सके और जिनसे इस्लाम की सच्चाई उन पर साबित की जा सके और जिन दलीलों से तमाम बिदअतों को ख़त्म किया जा सके नबी की सुन्नतों की सच्चाई ज़ाहिर की जा सके?

जवाब: ऐ अज़ीज़! इन तमाम तफ़सीलों का जानना फ़र्ज़े किफ़ाया है यानी बस्ती या पूरे शहर में एक शख़्स सीख ले तो सब पर से उस फ़र्ज़ की ज़िम्मेदारी उठ जाती है। लेकिन तुम पर इतना जानना ज़रूरी है जिससे तुम्हारे अक़ाइद दुरुस्त रह सकें और तुम पर यह लाज़िम नहीं कि इल्मे तौहीद की तमाम फ़ुरूआत और उसकी बारीकियाँ उससे मुताल्लिक़ दूसरे कामों को जानो, हाँ अगर दीन के बुनियादी मसाइल में तुम्हें कहीं शक हो या उसका

ख़ौफ़ हो तो थोड़ी सी बातचीत करके किसी दूसरे शख़्स से यह शक दूर कर सकते हो मगर झगड़े वग़ैरा से हमेशा परहेज़ करो क्योंकि झगड़ा एक जानलेवा मर्ज़ है जिसका कोई इलाज नहीं इसलिए हमेशा इससे बचो क्योंकि जो शख़्स इस मर्ज़ में मुब्तला हो जाता है अगर अल्लाह तआला की रहमत व मेहरबानी शामिले हाल न हो तो उसका महफ़ूज़ रहना मुश्किल हो जाता है।

फिर ऐ अज़ीज़! यह भी जान ले कि जब दुनिया के हर इलाक़े में अहले सुन्नत व जमाअत के उलमा मौजूद हैं जो गुमराह फ़िरक़ों के रद्द में मसरूफ़ हैं और वह इस फ़न में ठोस मालूमात के मालिक भी हैं और गुमराहों के वसवसों व शुब्हात से हक़ वालों के सीनों को पाक करते रहते हैं तो तुम्हारे ज़िम्मे से इन तफ़सीलात में पड़ना ख़त्म हो गया।

इसी तरह इल्मे सिर्र की बारीकियाँ और तफ़सील मालूम करना भी ज़रूरी नहीं और न ही तमाम अजाइबे क़ल्ब की तह तक पहुँचना लाज़िम है सिर्फ़ इतनी मालूमात ज़रूरी हैं जिनसे इबादात को हर क़िस्म के ऐबों से बचाया जा सके और जिनके ज़रिए इबादात को मुकम्मल तरीक़े से अदा किया जा सके जैसे इख़्लास, ह़म्द, शुक्र और तवक्कुल वग़ैरह की हक़ीक़त, इसके अलावा ज़्यादा मालूमात में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

इसी तरह इल्मे शरीअत के अन्दर तमाम ख़रीद व फ़रोख़्त, उजरत के काम, निकाह, तलाक़ और जुर्म वग़ैरा के मसाइल सीखने भी सब पर लाज़िम नहीं बल्कि इन तफ़सीलात का इल्म भी फ़र्ज़े किफ़ाया है।

सवाल: क्या इल्मे तौहीद की ज़रूरी मालूमात उस्ताद से सीखे बग़ैर सिर्फ़ अपनी नज़र व फ़िक्र से हासिल हो सकती है?

जवाब: इस सिलसिले में उस्ताद से मदद लेना ज़रूरी है क्योंकि वह मुश्किल मक़ामात को समझाता है और इल्मी पेचीदगियों को आसान करता है उसकी रहनुमाई में इन्सान उलूम को आसानी से हासिल कर सकता है और जिस शख़्स पर ख़ुदा का ख़ास एहसान होता है उसे ही दीन के मुअल्लिम बनने का शर्फ़ अता होता है।

फिर ऐ अज़ीज़! तू यह भी जान ले कि इल्म की घाटी बहुत सख़्त है मगर उसके बग़ैर अपने मतलब व मक़सद तक पहुँचना नामुमकिन है, हालांकि इसका फ़ायदा बहुत है मगर इस घाटी से गुज़रना भी मुश्किल है और

इसमें बड़े बड़े ख़तरे हैं, कितने ऐसे हैं जिन्होंने इल्म हासिल न किया तो गुमराह हो गए और कितने ऐसे हैं जो इस राह पर चले मगर राह में फिसल गए और इसमें कितने ही घूमने वाले हैरानी का शिकार और हज़ारों इस रास्ते पर चलने वाले लापता हो गए और कितने ही ऐसे हैं जो इस घाटी को तय करने के ख़्वाहिशमन्द हुए तो अल्लाह तआला की मदद से थोड़े से वक़्त में अपनी मन्ज़िल तक जा पहुँचे और बाज़ वह हैं जो सत्तर साल से इस मंज़िल को तय करने में मसरूफ़ हैं और हर चीज़ का इख़्तियार दरअसल अल्लाह तआला ही को है।

लेकिन जैसे कि हम ने बयान किया है इल्म का फ़ायदा बहुत ज़्यादा है क्योंकि बन्दा इबादत के मामले में इल्म का सख़्त मोहताज है और इबादत की दीवार इल्म पर ही क़ायम होती है, ख़ास कर इल्मे तौहीद और इल्मे सिर्र पर। इल्म के मुताल्लिक़ एक रिवायत आई है कि एक दफ़ा अल्लाह तआला ने दाऊदعليه السلام की तरफ़ "*वही*" फ़रमाई – "*ऐ दाऊद! इल्मे नाफ़ेअ हासिल कर, आपने अर्ज़ किया नाफ़ेअ इल्म कौन सा है? तो रब तआला ने फ़रमाया कि इल्मे नाफ़ेअ वह है जिससे तुझे मेरे जलाल, मेरी अज़मत, मेरी बड़ाई और हर शय पर मेरी कमाले क़ुदरत का पता चले क्योंकि ऐसा इल्म ही तुझे मेरे क़रीब कर सकता है*"

सय्यदना हज़रत अ़लीرضي الله عنه से मरवी है कि आपने फ़रमाया मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि मैं नाबालिग़ी ही में फ़ौत हो जाता और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाता और बड़ा होकर ख़ुदा की मारिफ़त (पहचान) हासिल न करता और यह इसलिए कि जिसको अल्लाह तआला की मारिफ़त ज़्यादा होगी उसमें ख़ुदा का ख़ौफ़ भी ज़्यादा होगा वह इबादत ज़्यादा करेगा और जो इबादत ज़्यादा करेगा उसका तअल्लुक़ भी अल्लाह के साथ ज़्यादा ख़ालिस होगा।

लेकिन इल्म हासिल करते वक़्त सबसे ज़्यादा ख़ुलूस को निगाह में रखना चाहिए और *रिवायत* की निसबत *दिरायत* को ज़्यादा तलब करना चाहिए यानी रिवायती तौर पर चल रहे इल्म से ज़्यादा अक़्ल को खोलने वाले इल्म सीखना चाहिए क्योंकि इल्म में ख़तरे भी बहुत हैं, इसलिए जो शख़्स इस ग़र्ज़ से इल्म हासिल करे कि लोग उसकी तरफ़ तवज्जोह करें

और इल्म के ज़रिए अमीरों की हमनशीनी हासिल हो ताकि इल्म के सबब बहस व मुनाज़रा करने वालों के सामने फ़ख़्र व शेख़ी करे और ज़लील दुनिया को जमा करे तो ऐसे शख़्स की नीयत फ़ासिद है और उसकी यह तिजारत तबाह और उसका लेन देन नुक़सानदेह है।

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया:- ***"जो शख़्स इसलिए इल्म हासिल करे ताकि उलमा के सामने फ़ख़्र करे या बेवक़ूफ़ों के साथ इल्म के ज़रिए झगड़े या लोगों की तवज्जोह अपनी तरफ़ फेरे तो ऐसे शख़्स को अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग में डालेगा"।*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी رحمة الله عليه ने फ़रमाया- *"मैंने तीस साल मुजाहिदा किया तो इल्म और उसके ख़तरात से ज़्यादा सख़्त किसी चीज़ को न पाया"*। और इस बात से भी बचना कि शैतान कहीं तुम्हारे ज़हन में यह वहम न डाल दे कि जब इल्म में इतने ख़तरात हैं तो इसे हासिल ही नहीं करना चाहिए, ऐसा वहम दुरुस्त नहीं क्योंकि- हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:-***"मेराज की रात में दोज़ख़ वालों को देखा तो मुझे उनमें फ़क़ीर व मोहताज ज़्यादा नज़र आए। सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया क्या माल व दौलत के मोहताज? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: नहीं बल्कि इल्म के मोहताज"*** (रूहुल बयान)

जो शख़्स इल्म न सीखे वह इबादत और उनके अरकान ठीक तरीक़े से नहीं अदा कर सकता बिलफ़र्ज़ अगर कोई शख़्स तमाम आसमानों के फ़रिश्तों जितनी इबादत करे मगर इल्म न हो तो वह घाटे ही में रहेगा। इसलिए जिस तरह भी हो इल्म ज़रूर हासिल करो। और इसके हासिल करने में परेशान और सुस्त न बनो, वर्ना गुमराही के ख़तरात से दोचार हो जाओगे हर क़िस्म की गुमराही से अल्लाह की पनाह।

फिर जब तुम अल्लाह तआला की कारीगरी में ग़ौर करोगे और ख़ूब गहरी नज़र से देखोगे तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि हमारा एक माबूद है जो सब कुछ कर सकता है, जिसे हर चीज़ का इल्म है, जो हमेशा ज़िन्दा है और जो चाहे करता है, जो हर बात को सुनता और देखता है, जो हमेशा से कलाम फ़रमाता है जिसका इल्म, इरादा और कलाम फ़ना व ज़वाल से पाक है, जो हर ऐब व कमी से पाक है, वो सारी चीज़ें जो अल्लाह पाक ने पैदा कीं उनकी ख़ूबियाँ उसमें न हैं न हो सकती हैं। न तो वह मख़लूक़ के जैसा है और न ही

मख़लूक किसी मामले उस जैसी है। वह मकान और सिम्त की क़ैद से पाक है और आफ़तें व हादसे उस पर नहीं आ सकते, इसी तरह जब तुम सरकारे दो आलमﷺ के मोजिज़ात, आपके तौर तरीक़े और नुबूव्वत की निशानियों पर ग़ौर करोगे तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि सरकारे दो आलमﷺ अल्लाह के रसूल हैं और उसकी ***वही*** पहुँचाने में अमीन हैं, ग़ौर करने से तुम पर इस बात की सच्चाई का भी पता चल जायेगा कि सल्फ़ सालेहीन (बुज़ुर्गों) का अक़ीदा कि जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार बग़ैर सिम्त और मकान के होगा हक़ है और यह कि वह हमेशा से मौजूद है, मगर किसी हद में महदूद नहीं। और तुम पर इस बात की हक़्क़ानियत भी रौशन हो जाएगी कि उसका कलाम ग़ैरे मख़लूक़ है और यह कि वह लफ़्ज़ों से और आवाज़ों से बना हुआ नहीं, क्योंकि अल्फ़ाज़ और आवाज़ से बनना हादिस है (यानी यह सब कुछ पहले नहीं था बाद में हुआ) और हादिस चीज़ क़दीम की सिफ़त नहीं हो सकती।

ग़ौर करने से तुम पर यह भी साफ़ हो जाएगा कि ज़मीनों व आसमानों में जो कुछ होता है वह ख़ुदा की तक़दीर और क़ज़ा से होता है और हर चीज़ का आलमे वुजूद में ज़ुहूर भी उसके चाहने से होता हैं। ख़ैर व शर भी उसकी तरफ़ से हैं और फ़ायदा व नुक़सान का मालिक भी दर हक़ीक़त वही है और कुफ़्र व ईमान भी उसी की जानिब से हैं। और मख़लूक़ के लिए उस पर कोई चीज़ लाज़िम नहीं। वह अगर किसी को सवाब अता फ़रमाए तो उसका फ़ज़्ल है अगर किसी को अज़ाब दे तो यह उसका अद्ल है।

और जब तुम्हें इसका भी यक़ीन हो जाए कि जो इरशादात भी नबी-ए-करीमﷺ की हक़ बयान करने वाली ज़ुबान से निकले हैं सब हक़ और दुरुस्त हैं और हश्र नश्र, अज़ाबे क़ब्र, मुन्कर - नकीर के सवाल व जवाब वग़ैरा के मुताल्लिक़ आपﷺ ने जो ख़बरें भी दी हैं सब सच्ची और हक़ हैं और पहले के बुज़ुर्गों का इन सब बातों पर एतक़ाद था, वो सब उन पर मज़बूती से क़ायम थे और उन सब बातों पर नफ़्सानी इरादे और बिदअतें पैदा होने से पहले ही इत्तेफ़ाक़ व इजमा हो चुका है यानी इस बात में सबकी एक राय है। अल्लाह तआला ख़्वाहिशात की पैरवी और शरअ के ख़िलाफ़ कामों की पैरवी करने से हम सबको बचाए।

फिर जब दिल के आमाल, पोशीदा असबाब और उन चीज़ों पर ग़ौर करोगे जिनका जाइज़ या नाजाइज़ होना इस किताब में ऊपर ज़िक्र हुआ और फिर तुम्हें उन कामों की पहचान भी हो जाए जिनकी तुम्हें इबादत में ज़रूरत है जैसे तहारत, नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा का इल्म।

ख़ुलासा यह है कि जब तुम्हें तमाम ऊपर गुज़री बातों का पूरी तरह इल्म व यक़ीन हो गया तो तुम उम्मते मुहम्मदिया के क़ाबिल उलमा की जमाअत में शामिल हो गए। अब अगर तुमने इल्म के मुताबिक़ पूरी तरह अमल भी किया और अपनी आख़िरत दुरुस्त और आबाद करने में लग गए और दीन के बारे में अब तुम अल्लाह के फ़ज़्ल से जाहिल व ग़ाफ़िल न रहे और न ही किसी के मोहताज रहे। तुम्हें ऐसे शर्फ़ पर मुबारक देनी चाहिए तुम्हारे इल्म की बहुत ज़्यादा क़ीमत है और तुम्हें इस बात पर बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा और तुमने इल्म की घाटी को पार कर लिया और इल्म हासिल करने के बारे में अल्लाह तआला का जो हक़ तुम पर था उसे तुमने अल्लाह तआला की मदद से अदा कर दिया। अल्लाह तआला से इल्तिजा है कि वह हमें और तुम्हें दीन पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(***वहुवा अर्रहमुर्राहिमीन वला हौला क़ुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिइयिल अज़ीम***)

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय:

इमाम साहब ने बताया कि तुम्हें इबादत के लिए अल्लाह पाक ने भेजा है और इबादत के लिए इल्म ज़रूरी है और कितना ज़रूरी है यह भी बताया। हो सकता है कि बग़ैर इल्म के सारी उम्र की मेहनत बर्बाद हो सकती है। यूँ भी ज़रूरत के मुताबिक़ इल्म हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है। आज इल्म सीखने के किए लोग लाखों रुपये ख़र्च करते हैं और ऐसा भी होता है कि सिर्फ़ दुनियावी इल्म सीख कर दुनिया से बैरंग ख़ाली हाथ अल्लाह के पास जाते हैं, लिहाज़ा इबादत को दुरुस्त करने के लिए इल्म ज़रूर सीखा जाए और जो लोग बाक़ायदा उस्ताद के पास इल्म नहीं सीख सकते वो कम से कम दीन का ज़रूरी इल्म लाज़मी सीखें। अल्हम्दुलिल्लाह सच्चे दिल से ईमान लाने पर जन्नत तो पक्की हो जाती है मगर मरने के बाद जन्नत में जल्द जाने और अज़ाबों से बचने के लिए इबादत और इल्म बहुत ज़रूरी है। आपको लगेगा कि ये किताब कुछ मुश्किल है और इस पर अमल नहीं हो सकेगा लेकिन इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें क्योंकि आख़िर तक पहुँचते पहुँचते आपको एहसास होगा कि इबादत के लिए इस किताब पर जहाँ तक हो सके अमल बहुत ही ज़रूरी है। अल्लाह तआला हमें और आपको इस किताब को बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुहम्मद अहमद

दूसरी घाटी
तौबा के बयान में

फिर ऐ इबादत के तालिब! तुझ पर इबादत में मशग़ूल होने से पहले अपने गुनाहों से तौबा करना लाज़िम है और यह दो वजह से लाज़िम है।

एक तो इसलिए ताकि तौबा करने की वजह से तुम्हें ताअत (फ़रमाबरदारी) और इबादत की तौफ़ीक़ नसीब हो क्योंकि गुनाहों की नुहूसत बन्दे को ताअत व इबादत बजा लाने से महरूम कर देती है और उस पर ज़िल्लत व रुसवाई मुसल्लत कर देती है। यक़ीन जानो कि गुनाह एक ऐसी ज़न्जीर है जो बन्दे को ताअत व नेकी की तरफ़ चलने से रोक देती है और गुनाहों के होते हुए नेक कामों में जल्दी नहीं हो सकती क्योंकि गुनाहों का भारीपन और बोझ नेकियों के सूकून को पैदा नहीं होने देता और न ही ताअत व इबादत में ख़ुशी पैदा होने देता है और गुनाहों पर जमा रहना दिल को सियाह कर देता है। इसी तरह इन्सान दिल की सख़्ती और गुनाहों के अंधेरे में मुब्तला हो जाता है, न उसमें ख़ुलूस पैदा हो सकता है और न ही दिल की सफ़ाई और न ही इबादत में लज़्ज़त व मिठास पैदा हो सकती है। जो शख़्स गुनाहों से तौबा करने वाला नहीं होगा, अगर ख़ुदा का फ़ज़्ल शामिले हाल न हो तो धीरे धीरे यह गुनाह उसे कुफ़्र तक पहुँचा देंगे। ऐसे शख़्स पर बदनसीबी ग़ालिब आ जाएगी, तो ऐसे शख़्स पर ताज्जुब है कि उन नुहूसत और सख़्त दिली के होते हुए उसे रब की फ़रमाबरदारी की तौफ़ीक़ किस तरह मिल सकती है और गुनाहों पर डटा रहने वाला शख़्स ताअते ख़ुदावन्दी का दावा कैसे कर सकता है और शरअ के ख़िलाफ़ बातों को अपनाते हुए वह इबादते ख़ुदावन्दी कैसे बजा ला सकता है? इसी तरह जो शख़्स गुनाहों से गन्दा और नापाक हो तो वह अल्लाह की मुनाजात का क़ुर्ब कैसे हासिल कर सकता है? इसीलिए हुज़ूर अकरम ﷺ ने फ़रमाया- ***"जब बन्दा झूठ बोलता है तो दोनों फ़िरिश्ते झूठ की बदबू से उससे अलग हट जाते हैं "*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

झूठ व ग़ीबत के होते हुए ज़बान ज़िक्रे इलाही के लायक़ कैसे हो सकती है इसलिए गुनाहों पर जमे रहने वाले आदमी को नेक काम की तौफ़ीक़ मिलना बहुत मुश्किल है और न ही इबादत करते वक़्त ऐसे शख़्स के

जिस्म में चुस्ती और सुकून पैदा हो सकता है ऐसा शख़्स अगर टूटी फूटी इबादत करेगा तो वह बहुत मशक़्क़त के साथ फिर ऐसी इबादत में लज़्ज़त व सफ़ाई वग़ैरा कुछ न होगी यह सब कुछ गुनाहों की नुहूसत और तौबा के तर्क कर देने से होगा।**"उस शख़्स ने सच फ़रमाया जिसने कहा कि अगर तू रात को नमाज़े तहज्जुद पढ़ने और दिन को रोज़े रखने की क़ुव्वत नहीं रखता तो समझ ले कि तू मनहूस हो चुका है गुनाहों की नुहूसत तुझ पर हावी हो चुकी है।"**

तौबा के ज़रूरी होने की दूसरी वजह यह है कि बग़ैर तौबा के इबादात क़बूल नहीं होतीं, जिस तरह कर्ज़ वाले का क़र्ज़ अदा करने से पहले उसके सामने तोहफ़े कोई अहमियत नहीं रखते और न वह उन्हें क़बूल करता है, इसी तरह पहले गुनाहों से तौबा करना लाज़िम है उसके बाद आम नफ़्ली इबादात, इसी तरह जब फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे लाज़िम हों तो उसके नवाफ़िल वग़ैरा कैसे क़बूल हो सकते हैं यूँही अगर कोई शख़्स हराम व ममनू काम तो तर्क न करे मगर मुबाह व हलाल चीज़ों में एहतियात करे तो उसका ऐसा परहेज़ क्या अहमियत रख सकता है और वह ख़ुदा तआला से मुनाजात, उसकी बारगाह में पसन्दीदा और उसकी सना (तारीफ़) करने वाला कैसे हो सकता है जिस पर ख़ुदा तआला नाराज़ हो, गुनाहों पर जमे रहने वालों का अक्सर यही हाल है।

सवाल: **'तौबतुन्नसूह'** के क्या मअना हैं, उसकी तारीफ़ क्या है बन्दे को क्या करना चाहिए जिससे उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जायें?

जवाब: दिल के कामों में से एक काम तौबा है और आम उलमा ने उसकी तारीफ़ यह की है कि- "*दिल को गुनाहों से पाक करना*" - और हमारे शैख़ ने यह तारीफ़ की है- "*आइन्दा के लिए ऐसे गुनाहों को छोड़ने का इरादा करना जिस दर्जे का पहले गुनाह हो चुका हो और यह छोड़ना सिर्फ़ ख़ुदा की ताज़ीम और उसकी नाराज़गी के डर की वजह से हो*"।

शैख़ की तारीफ़ के मुताबिक़ तौबा की चार शर्तें हैं:-

1. **गुनाह तर्क कर देने का इरादा,** इसका मतलब यह है कि अपने दिल को इस बात पर पुख़्ता व मज़बूत कर ले कि आइन्दा कभी गुनाहों की तरफ़ रुजू नहीं करूँगा लेकिन अगर कोई शख़्स गुनाह करना तो छोड़ दे मगर दिल में ख़्याल यह हो कि फिर कभी करूँगा या शुरू से गुनाह

छोड़ने का इरादा शुबा व शक में हो कि छोड़ूँगा भी या नहीं तो ऐसा शख़्स कभी-कभी फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, ऐसा शख़्स अगरचे वक़्ती तौर पर गुनाहों से रुक जाता है मगर उसे *ताइब* यानी तौबा करने वाला नहीं कहा जा सकता।

2. **दूसरी शर्त यह है कि जिस गुनाह से तौबा कर रहा हो उस मरतबे का गुनाह पहले कहीं उससे न हुआ हो** क्योंकि पहले से ऐसा गुनाह नहीं हुआ सिर्फ़ आइन्दा के लिए उससे बचता है तो ऐसे शख़्स को ताइब नहीं कहेंगे बल्कि परहेज़गार कहेंगे, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि नबी-ए-करीमﷺ को कुफ़्र से बचने वाला तो कह सकते हैं मगर कुफ़्र से तौबा करने वाला नहीं कह सकते क्योंकि कुफ़्र तो मआज़ल्लाह कभी आपﷺ ने किया ही नहीं और हज़रत उमरؓ को कुफ़्र से तौबा करने वाला कहेंगे क्योंकि आप पहले कुफ़्र की हालत में रह चुके हैं।
3. **तीसरी शर्त यह है कि वह गुनाह रुत्बे में पहले गुनाह की तरह हो ना कि सूरत में**। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जिस पुराने बूढ़े ने जवानी के ज़माने में ज़िना किया हो या डाका डाला हो, वह अब बुढ़ापे में तौबा तो कर सकता है क्योंकि तौबा का दरवाज़ा तो बन्द नहीं मगर अब उसे ज़िना या डाकाज़नी का इख़्तियार नहीं क्योंकि वह अमली तौर पर यह गुनाह नहीं कर सकता तो क्योंकि वह अब ज़िना या डाकाज़नी नहीं कर सकता, इसलिए यह नहीं कह सकते कि वह अपने इख़्तियार से उसे छोड़ रहा है या उनसे रुक रहा है क्योंकि अब वह बेबस हो चुका है और उन गुनाहों को करना उसके बस की नहीं, मगर वह इस वक़्त भी ज़िना या डाकाज़नी जैसे दूसरे हराम व ममनू काम कर सकता है जैसे झूठ बोलना, किसी पर ज़िना की तोहमत लगाना, किसी की ग़ीबत या चुग़ली करना वग़ैरा ये सब काम गुनाह के हैं अगरचे हर एक में अपनी-अपनी नौइय्यत के ऐतबार से फ़र्क़ है लेकिन यह तमाम गुनाह एक ही दर्जे के माने जाते हैं मगर ये गुनाह बिदअत की पैरवी से

कम हैं और बिदअत की पैरवी कुफ़्र से कम है तो यह तौबा जो ज़िना या डाकाज़नी से होगी सूरतन तौबा होगी।

4. **चौथी शर्त यह है कि गुनाहों से तौबा अल्लाह तआला की ताज़ीम के लिए और उसके दर्दनाक अज़ाब से डर कर हो**, किसी दुनियावी ग़र्ज़ या लोगों से डर कर या अपनी तारीफ़ हासिल करने के लिए या अपनी मशहूरी या जिस्मानी कमज़ोरी की वजह से या मोहताजी या किसी और रुकावट की वजह से न हो।

जब तौबा के यह अरकान व शर्तें पाई जायेंगी तो तौबा मुकम्मल तौर पर होगी और इसे तौबा-ए-सादिक़ा यानी सच्ची तौबा कहा जाएगा। **तौबा के मुक़द्दमात तीन अम्र हैं यानी जिन चीज़ों का तौबा से पहले होना ज़रूरी है वो तीन बातें है:-**

1. पहली यह कि अपने गुनाहों को बहुत ही बुरे काम तसव्वुर करे।
2. दूसरी यह कि अल्लाह तआला के अज़ाब की शिद्दत और उसके ग़ज़ब की सख़्ती को दिल में हाज़िर करे।
3. तीसरी यह कि अपनी कमज़ोरी और गुनाहों के बारे में अपनी बेहयाई को महसूस करे और उसको तसलीम भी करे।

क्योंकि जो शख़्स सूरज की तेज़ धूप, चौकीदार के थप्पड़ और चींटी के डंक को बर्दाश्त नहीं कर सकता वह दोज़ख़ की सख़्त गर्मी, जहन्नम के फ़रिश्तों की मार और बहुत ही ज़हरीले साँपों के डंक कैसे बर्दाश्त कर सकता है, दोज़ख़ में बिच्छू, ख़च्चर जितने बड़े और वहाँ के साँप ऊँट की गर्दन जितने मोटे होंगे और ये साँप और बिच्छू वग़ैरा दोज़ख़ की आग के होंगे। इस वक़्त वह ग़ज़ब और ग़ुस्से के मकान में रखे हुए हैं। हम बार-बार ख़ुदा के ग़ज़ब और अज़ाब से पनाह माँगते हैं।

तुम अगर इन वहशतनाक बातों को याद रखोगे और हर दिन रात में किसी वक़्त इनकी याद ताज़ा करते रहोगे तो ज़रूर तुम्हें गुनाहों से ख़ालिस तौबा नसीब हो जाएगी। अल्लाह तआला हर एक को अपने फ़ज़्ल से तौबा की तौफ़ीक़ दे।

सवाल: अगर कोई यह कहे कि नबी-ए-करीमﷺ ने तो तौबा के मुताल्लिक़ सिर्फ़ यह फ़रमाया कि- ***"गुनाहों पर पशेमान (शर्मिन्दा) होने***

का नाम तौबा है" (सुनन इब्ने माजा) तौबा के जो अरकान व शर्तें तुमने बयान की हैं उनका हुज़ूरﷺ ने तो कोई ज़िक्र नहीं फ़रमाया?

जवाब: सिर्फ़ नदामत को तौबा नहीं कहा जा सकता क्योंकि गुनाहों पर शर्मिन्दगी बन्दे के इख़्तियार व क़ुदरत में नहीं, तुम इस चीज़ को महसूस करते हो कि बाज़ वक़्त बन्दा एक काम पर शर्मिन्दा हो रहा होता है हालांकि दिल से वह उस शर्मिन्दगी को पसन्द नहीं कर रहा होता तो मालूम यह हुआ कि नदामत व पशेमानी बन्दे के इख़्तियार में नहीं और तौबा तो इख़्तियारी चीज़ है इसलिए तौबा का हुक्म दिया गया है, तो इस तशरीह से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि नदामत व पशेमानी यक़ीनन ऐन तौबा नहीं, इसलिए ऊपर ज़िक्र हुई हदीसे पाक के वह मतलब नहीं जो ज़ाहिर में समझ में आते हैं बल्कि उसका यह मतलब है कि अल्लाह तआला की अज़मत व हैबत का तसव्वुर करके और उसके दर्दनाक अज़ाब के ख़ौफ़ से जो नदामत व पशेमानी बन्दे के दिल में पैदा होती है, वह बन्दे को ख़ालिस तौबा करने पर उभारती है और ऐसी नदामत व पशेमानी सही तौबा करने वालों का हाल और ख़ूबी है क्योंकि बन्दा जब ऊपर लिखे हुए मुक़द्दमात(वह बातें जिनका तौबा से पहले होना ज़रूरी है) को बार-बार ख़्याल में लाएगा तो उसे अपने गुनाहों पर नदामत महसूस होगी और यही नदामत उसको गुनाहों के छोड़ने पर उभारेगी और ऐसी नदामत आइन्दा के लिए भी तौबा करने वाले को गुनाह तर्क करने पर उभारेगी और ऐसी नदामत आइन्दा के लिए ताइब के दिल में क़ायम रहेगी और ख़ुदावन्द तआला के दरबार में आजिज़ी के साथ खड़े होने और उसे राज़ी करने के लिए उभारेगी तो चूँकि ऐसी नदामत तौबा का सबब और ताइब की सिफ़तों में से है इसलिए हुज़ूरﷺ ने ऐसी नदामत को तौबा फ़रमा दिया। इस मतलब को अच्छी तरह समझ लो अल्लाह तआला तुम्हें समझने की तौफ़ीक़ दे।

सवाल: यह कैसे हो सकता है कि इन्सान ऐसा हो जाए कि उससे कोई सग़ीरा (छोटा) या कबीरा (बड़ा) गुनाह हो ही न? हालांकि अम्बिया-ए-किराम जो तमाम मख़लूक़ से यक़ीनी तौर पर अशरफ़ व आला थे उनके मुताल्लिक़ भी इल्म वालों में इख़्तिलाफ़ है कि वह इस मरतबे पर पहुँचे या नहीं?

जवाब: ऐसे दर्जे पर पहुँच जाना कि कोई सग़ीरा या कबीरा गुनाह न हो मुमकिन है मुहाल नहीं बल्कि अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ जिसके शामिले हाल हो जाए उसके लिए आसान है। अल्लाह तआला जिसको चाहे अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है।

फिर यह भी तौबा के शराइत में से है कि जानबूझ कर गुनाह न करे, अगर भूल चूक से कोई लग़ज़िश हो जाए तो ख़ुदा तआला रऊफ़ व रहीम है उसे माफ़ कर देगा और जिसे ख़ुदा की तौफ़ीक़ हासिल हो गई हो वह गुनाहों से आसानी से बचा रह सकता है। अगर तुम तौबा न करने का यह बहाना करो कि हमें अपने नफ़्स पर भरोसा नहीं शायद तौबा के बाद गुनाहों से बाज़ रहें या न रहें और शायद हम तौबा पर मज़बूती से जमे रहें या न रहें, इसलिए तौबा करने से क्या फ़ायदा, तो इस गुमान का जवाब सुन लो कि ऐसा ख़्याल शैतान का सरासर धोखा और फ़रेब है क्योंकि तुम्हें यह कैसे मालूम है कि तौबा के बाद तुम से ज़रूर गुनाह हो जाएगा। यह भी हो सकता है कि तौबा के फ़ौरन बाद ही तुम्हें मौत आ जाए और गुनाह करने का मौक़ा ही न मिले, बाक़ी यह वहम कि शायद गुनाह हो जाए तो ऐसे वहम का कोई ऐतबार नहीं तुम पर सिर्फ़ यह लाज़िम है कि तौबा के वक़्त आइन्दा गुनाह न करने का इरादा पक्का और सच्चा हो, बाक़ी उस इरादे पर जमे रहने की तौफ़ीक़ देना ख़ुदा का काम है फिर अगर इस इरादे पर ख़ुदा के फ़ज़्ल से तुम क़ायम रहे तो यही तुम्हारा मक़सद है और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता तुम क़ायम न रहे तो भी तुम्हारे पिछले गुनाह तो माफ़ हो गए, पिछले गुनाहों के अज़ाब से तो तुम्हें छुटकारा मिल गया और पिछले गुनाहों की आलूदगी से तुम पाक हो गए। तौबा के बाद अगर कोई गुनाह हुआ हो तो बस वही तुम्हारे ज़िम्मे है तो पिछले गुनाहों का माफ़ हो जाना क्या कम फ़ायदा है? इसलिए सिर्फ़ उस वसवसे से तौबा करने से मत रुको कि ख़ुदा न ख़्वास्ता फिर गुनाह हो जाए क्योंकि ख़ालिस तौबा करने से तुम्हें दो बड़े फ़ायदे में से एक फ़ायदा तो यक़ीनी होगा कि या तो हमेशा के लिए **तौबतुन्नसूह** हासिल हो जाएगी या पिछले गुनाह माफ़ हो जायेंगे। अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ व हिदायत का मालिक है।गुनाहों के मुताल्लिक़ यह याद रखो कि गुनाहों की क़िस्में अलग-अलग हैं। गुनाह तीन क़िस्म के हैं:-

1. एक तो यह कि तुमने ख़ुदा के फ़र्ज़ किए हुए अहकाम को अदा न किया हो और उनकी अदाएगी तुम्हारे ज़िम्मे हो जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और कफ़्फ़ारा वग़ैरा तो ये महज़ सिर्फ़ तौबा से माफ़ नहीं होंगे बल्कि जहाँ तक हो सके उसकी क़ज़ा लाज़िम है।
2. दूसरी क़िस्म के गुनाह वह हैं जिनकी अब क़ज़ा तो नहीं हो सकती मगर वो भी तुम्हारे और ख़ुदा के दरमियान ही हों जैसे कहीं शराब पी हो या राग रंग की महफ़िल सजाई हो या सूद खाया हो तो इस क़िस्म के गुनाहों के माफ़ी की सूरत यह है कि गुज़रे हुए गुनाहों पर नदामत व पशेमानी की जाए और आइन्दा के लिए उन्हें छोड़ने का पक्का इरादा कर लिया जाए।
3. तीसरी क़िस्म के गुनाह वह हैं जो तुम्हारे और मख़लूक़ के दरमियान हैं। तमाम गुनाहों से ज़्यादा संगीन यह तीसरी क़िस्म के गुनाह हैं इनकी नौइय्यत मुख़्तलिफ़ होती है बाज़ किसी के माल से तअल्लुक़ रखते हैं और बाज़ किसी की ज़ात से, इसी तरह बाज़ वो होते हैं जिनका तअल्लुक़ किसी की इज़्ज़त व हुरमत से होता है और बाज़ वो होते हैं कि किसी को दीनी तौर पर नुक़सान पहुँचाया होता है।

तो जिनका तअल्लुक़ माल से है उनके मुताल्लिक़ ज़रूरी है कि अगर हो सके तो वह माल वापस कर दिया जाए और अगर ग़रीब होने की वजह से मजबूर है तो जिसका हक़ मारा है उससे माफ़ करा कर जाइज़ व हलाल करा ले अगर वह मर चुका है या वहाँ मौजूद नहीं तो माल की मिक़दार के मुताबिक़ चीज़ सदक़ा कर दे और अगर यह भी मुमकिन न हो तो नेक आमाल ख़ूब ज़्यादा करे और अल्लाह तआला की बारगाह में गिरया व ज़ारी करे ताकि रोज़े क़यामत अल्लाह तआला साहिबे माल को राज़ी कर दे।

वो गुनाह जिनका तअल्लुक़ किसी की जान या ज़ात से हो जैसे किसी को क़त्ल किया हो तो उसके बदले में **क़िसास** (यानी शरीअत के मुताबिक़ ख़ून का बदला) देना लाज़िम है या मक़तूल (जिसका क़त्ल हुआ) उसके वारिसों से माफ़ कराना ज़रूरी है और अगर वारिस मौजूद नहीं तो अल्लाह तआला की बारगाह में गिरया व ज़ारी ज़रूरी है और ख़ुदा से उसकी माफ़ी चाहना लाज़िम है ताकि अल्लाह पाक उस मक़तूल को तुमसे राज़ी कर दे।

किसी की इज़्ज़त व आबरू से मुताल्लिक़ यह गुनाह है कि किसी की ग़ीबत की जाए या किसी पर इल्ज़ाम लगाया या किसी को गालियाँ दीं जायें तो इस क़िस्म के गुनाह की माफ़ी की सूरत यह है कि उसके सामने अपने आपको झूठा कहा जाए और अपनी ज़्यादती और ख़ता का एतराफ़ किया जाए यानी अपनी ग़लती मानी जाए और अगर उसके सामने अपनी ज़्यादती व ग़लती को मानने से फ़ितने और झगड़े का अन्देशा हो तो इस सूरत में भी माफ़ी के लिए ख़ुदा के दरबार में ही गिरया व ज़ारी करे ताकि माफ़ी हो जाए।

किसी की आबरू से मुताल्लिक़ गुनाह यह है जैसे किसी के अहलो-अयाल से ख़यानत की जाए या कोई और बुरी हरकत की जाए तो ऐसे गुनाह को न तो उसके सामने ज़ाहिर किया जा सकता है और न ही माफ़ कराया जा सकता है तो उसकी माफ़ी के लिए भी अल्लाह तआला की बारगाह में गिरया व ज़ारी करनी चाहिए। हाँ अगर फ़ितने का ख़ौफ़ न हो हालांकि ऐसा कम ही होता है तो उसके सामने ज़ाहिर करके माफ़ करा लिया जाए।

वो गुनाह जिसका तअल्लुक़ किसी के दीन से हो, यानी किसी को काफ़िर, बिदअती या गुमराह कहा जाए तो यह भी सख़्त गुनाह है, ऐसे गुनाहों की माफ़ी भी इसी सूरत में हो सकती है कि उसके सामने अपनी ख़ता व ग़लती को माना जाए और अगर वह मौजूद न हो तो दरबारे इलाही में गिड़गिड़ाए और इस्तिग़फ़ार करे और अपने आप पर मलामत करे ताकि रोज़े क़यामत ख़ुदा तआला उस शख़्स को राज़ी कर दे।

ख़ुलासा यह है कि जहाँ तुम गुनाह के साथ तकलीफ़ देने वालों को राज़ी भी कर सकते हो वहाँ उनको राज़ी भी करो, वर्ना माफ़ी व बख़्शिश के लिए ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करो, उसके दरबार में गिरया व ज़ारी करो और सदक़ा व ख़ैरात करो ताकि रोज़े क़यामत अल्लाह तआला तुम्हारे दरमियान रज़ामन्दी करा दे इसलिए कि ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से यह उम्मीद है कि वह सच्ची गिरया व ज़ारी देख तुम्हारे दुश्मन को अपने ख़ज़ानों से अता कर के तुम्हारी तरफ़ से राज़ी कर दे।

तौबा के अरकान व शराइत हमने बयान किए हैं, जब तुम उन पर पूरी तरह अमल करने लगोगे और आइन्दा के लिए अपने दिल को हर क़िस्म के गुनाहों से पाक रखने का अहद कर लोगे तो तुम्हारे पहले गुनाह माफ़ हो

जायेंगे। अब आइन्दा अगर इस अहद पर तो तुम क़ायम रहे मगर पहली क़ज़ायें अदा न कर सके या नाराज़ लोगों को राज़ी न कर सके तो यह बाद के गुनाह ही तुम्हारे ज़िम्मे रहे बाक़ी तमाम बख़्श दिए जायेंगे। इस तौबा के बाब की शरह बहुत लम्बी है जिसकी गुन्जाइश यह छोटी सी किताब नहीं रखती और इसकी ज़्यादा शरह देखना है तो किताब '**इहयाउल उलूम**' के बाबुत्तौबा या '**अलक़ुर्बतु इलल्लाह**' या किताब "**अलग़ायतुल क़ुसवा**" को पढ़ें, यहाँ सिर्फ़ इसी क़द्र बयान किया है जिसकी यहाँ बहुत ज़रूरत थी।

फिर तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तौबा की घाटी बहुत सख़्त घाटी है इसकी अहमियत बहुत ज़्यादा है और इससे ग़फ़लत शदीद नुक़सान है। तौबा की अहमियत व ज़रूरत इस वाक़िये से ज़ाहिर होती है जो उस्ताद अबू इस्हाक़ इस्फ़राइनी ﵀ से नक़ल है, आप बाअमल और रासिख़-फ़िल-इल्म उलमा में से थे। आप ﵀ फ़रमाते हैं:- "*मैंने तीस बरस अल्लाह तआला से तौबतुन्नसूह नसीब होने की इल्तिजा की। तीस बरस के बाद मुझे बहुत ताज्जुब हुआ और दरबारे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ किया 'ऐ परवरदगार! मुझे तीस बरस हुए हैं तुझसे सिर्फ़ एक हाजत के लिए इल्तिजा करते लेकिन तूने अब तक वह भी पूरी न की जब मैं सोया ख़्वाब में एक शख़्स देखा जो मुझे कह रहा था 'तू अपनी तीस साल की दुआ पर ताज्जुब करता है तुझे यह मालूम नहीं कि तू कितनी बड़ी चीज़ का मुतालबा कर रहा है? तू उस चीज़ का मुतालबा कर रहा है कि अल्लाह तआला तुझे अपना दोस्त बना ले, क्या तूने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना-*"

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

(बेशक अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-222)

ऐ ग़ाफ़िल मुसलमानो! ज़रा इन अइम्मा-ए-दीन की हालत पर तो नज़र करो कि वो तौबा के लिए कितना एहतमाम करते थे और दिल की इस्लाह के लिए किस तरह लगातार कोशिश में लगे रहते थे आख़िरत का तोशा तैयार करने की ख़ातिर किस तरह दिलो जान से मसरूफ़ रहते थे।

तौबा में देर करना सख़्त नुक़सानदेह है क्योंकि गुनाह से शुरू में दिल की सख़्ती पैदा होती है फिर धीरे धीरे इन्सान कुफ़्र व गुमराही की तरफ़ पहुँचता है, क्या तुम्हें इब्लीस और बलअम बऊर का वाक़िया याद नहीं?

[**बलअम बऊर का वाक़िया:-** बलअम बऊर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बहुत ही आबिद और ज़ाहिद शख़्स था और मुजीबुद्दावात था यानी वह जो भी दुआ करता था क़ुबूल होती थी लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम से गुस्ताख़ी की वजह से बर्बाद हो गया। मुफ़स्सिरीन इस वाक़िये को इस तरह बयान करते हैं कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब्बारीन से जंग का इरादा किया और शाम (सीरिया) की सरज़मीन में पहुँचे तो बलअम बऊर की क़ौम के लोग उसके पास आये और कहने लगे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बहुत तेज़ मिजाज़ हैं और उनके साथ बहुत बड़ा लश्कर है वह यहाँ आये हैं हमें हमारे शहर से निकालेंगे और हमें क़त्ल करेंगे। हमारी जगह बनी इस्राईल के लोगों को यहाँ आबाद करेंगे, तेरे पास इस्मे आज़म है तेरी दुआ क़ुबूल होती है, तू निकल और अल्लाह तआला से दुआ कर कि अल्लाह तआला उन्हें यहाँ से हटा दे। बलअम बऊर ने कहा तुम्हारा बुरा हो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम नबी हैं और उनके साथ फ़िरिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं कैसे उन पर दुआ करूँ, मैं जानता हूँ जैसा उनका मर्तबा है अगर मैं ऐसा करूँ तो मेरी दुनिया और आख़िरत बर्बाद हो जायेगी। मगर क़ौम उससे इसरार करती रही और अपना सवाल जारी रखा तो बलअम बऊर ने कहा कि पहले में अपने रब की मर्ज़ी मालूम कर लूँ, उसका यही तरीक़ा था कि वह जब कोई दुआ करता पहले अल्लाह की मर्ज़ी मालूम करता ख़्वाब में उसे जवाब मिल जाता था। लिहाज़ा जब उसने अल्लाह की मर्ज़ी जानना चाही तो उसे यह जवाब मिला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके हमराईयों के ख़िलाफ़ दुआ न करना। उसने अपनी क़ौम से कह दिया कि मेरे रब की मर्ज़ी नहीं है इसलिये मैं दुआ नहीं कर सकता। फिर भी उसकी क़ौम के लोगों ने अपना इसरार जारी रखते हुए उसको तोहफ़े और नज़राने देने शुरू कर दिये जो उसने क़ुबूल कर लिये। दूसरी बार जब बलअम बऊर ने अल्लाह की मर्ज़ी जानना चाही तो उसे कोई जवाब नहीं मिला। उसने अपनी क़ौम से कह दिया कि मुझे कोई जवाब ही नहीं मिला तो उसकी क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह को मंज़ूर न होता तो पहले की तरह दोबारा भी मना फ़रमाता। क़ौम का इसरार बढ़ता गया और आख़िरकार उन्होंने उसको फ़ितने में डाल दिया और वह बद दुआ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो दुआ करता था अल्लाह तआला उसकी ज़बान को उसकी क़ौम की तरफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो ख़ैर की दुआ करता था अपनी क़ौम के बजाय बनी इस्राईल का नाम उसकी ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा बलअम यह क्या करता है? बनी इस्राईल के लिये दुआ और हमारे लिये बद दुआ! उसने कहा यह मेरे इख़्तियार की बात नहीं मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और उसकी ज़बान बाहर निकल गई तो उसने अपनी क़ौम से कहा मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो गईं।]

इन से शुरू में एक ही गुनाह हुआ मगर वह बाद में कुफ़्र व गुमराही तक पहुँच गए और हमेशा के लिए तबाह हो जाने वाले लोगों में शामिल हो गए, इसलिए तौबा के बारे में तुम पर बेदारी व कोशिश लाज़िम है अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि जल्द ही गुनाहों पर इसरार करने के मर्ज़ तुम्हारे दिल से ख़त्म हो जाएगा और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गर्दन से उतर जाएगा और गुनाहों की वजह से जो दिल की सख़्ती पैदा होती है उससे हरगिज़ बेख़ौफ़ न हो बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो क्योंकि बाज़ सालेहीन ने फ़रमाया है:- *"बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है"* और दिल की सियाही की अलामत यह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, ताअत के लिए मौक़ा नहीं मिलता, नसीहत से कोई फ़ायदा नहीं होता ऐ अज़ीज़! किसी गुनाह को मामूली न ख़्याल कर और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बावजूद अपने आपको ताइब गुमान न कर।

हज़रत कहमस इब्ने हसन عليه السلام से नक़ल है कि आपने फ़रमाया कि- *"मुझसे एक गुनाह सरज़द हुआ, तो मैं उस पर चालीस बरस रोता रहा। लोगों ने पूछा कि ऐ अबू अब्दुल्लाह वह कौन सा गुनाह था? तो आपने फ़रमाया कि एक दफ़ा मेरा एक दोस्त मेरी मुलाक़ात को आया तो मैंने उसके लिए मछली पकाई, जब वह खा चुका तो मैंने उठ कर अपने पड़ोसी की दीवार से मिट्टी लेकर अपने मेहमान के हाथ धुलाए"*

फिर ऐ लोगों नफ़्स को गुनाहों पर टोकते रहो उसका मुहासबा करते रहो और तौबा करने में सुस्ती और देर न करो क्योंकि मौत का वक़्त पोशीदा है और दुनिया धोखे व फ़रेब में डाल रही है और नफ़्स व शैतान दो ख़तरनाक दुश्मन तुम्हें गुमराह करने की ताक में हैं इसलिए हर वक़्त दरबारे ख़ुदावन्दी में गिरया व ज़ारी करते रहो और अपने वालिदे माजिद हज़रत आदम عليه السلام का हाल अक्सर औक़ात ज़हन में दोहराते रहो जिनको अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और उनमें अपनी रूह फूँकी और फिर फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर जन्नत में ले गए, आप عليه السلام से सिर्फ़ एक लग़ज़िश सरज़द हुई तो अपने आला मक़ाम से गिर गए यहाँ तक कि एक रिवायत में आया है कि लग़ज़िश होने के बाद अल्लाह पाक ने आप عليه السلام से पूछा "ऐ आदम! मेरा जवारे रहमत तेरे लिए कैसा था? आप عليه السلام ने अर्ज़ किया बहुत

अच्छा, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे जवारे रहमत से दूर चला जा और मेरी दी हुई इज़्ज़त का ताज सिर से उतार दे क्योंकि मेरी नाफ़रमानी करने वाला मेरे जवारे रहमत में रहने का अहल नहीं।

एक रिवायत में आया है कि हज़रत आदमعليه السلام दो सौ बरस इस लग़ज़िश पर रोते रहे। तब जाकर अल्लाह तआला ने आपकी तौबा क़बूल फ़रमाई और इस लग़ज़िश को माफ़ फ़रमाया। यह उस कामिल बुज़ुर्ग का हाल है जो उसका नबी और दोस्त था तो आम लोगों का क्या हाल होगा जो बेशुमार गुनाह कर चुके हैं। दो सौ बरस वह इख़लास का पैकर रोया जो वाक़ई ताइब और ख़ुदा की तरफ़ रुजू करने वाला था, तो गुनाहों पर इसरार करने वाले ग़ाफ़िल को किस क़द्र ज़्यादा गिरया व ज़ारी की ज़रूरत होगी। एक शायर ने इसी चीज़ को कितने अच्छे अन्दाज़ में अदा किया है। शेर का तर्जुमा यह है कि-

- *वो डर रहे हैं जो हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार में रहते हैं तो उनका क्या हाल होगा जो सिरे से तौबा ही से ग़ाफ़िल हैं।*

तौबा करने के बाद अगर तौबा तोड़ डालो और फिर गुनाह शुरू करो तो जल्द तौबा की तरफ़ लौटो और नफ़्स को तौबा पर राग़िब करने के लिए यह कहो- ***"ऐ नफ़्स दोबारा ख़ुलूस से तौबा कर ले शायद यह तेरी आख़िरी तौबा हो और उसके बाद गुनाह का जुर्म किए बग़ैर ही तू मर जाए"*** इसी तरह गुनाह के बाद तौबा करते रहो और जिस तरह तुमने गुनाह करना दस्तूर बना लिया है गुनाह के बाद तौबा को भी पेशा बना लो और गुनाह कर के तौबा से आजिज़ न हो जाओ और कभी तौबा से मुँह न मोड़ो और शैतानी धोखे में आकर तौबा से हरगिज न रुको क्योंकि तौबा करना नेक होने की अलामत है।

क्या तूने नबी-ए-करीमﷺ का यह इरशाद नहीं सुना कि- ***"तुममे से बेहतर वह शख़्स है जिससे अगर गुनाह सादिर हों बाद में फ़ौरन तौबा कर ले"*** (शोअबुल ईमान)

ख़ुदा की तरफ़ ज़्यादा रुजू करे और गुनाहों पर पशेमान ज़्यादा हो और ख़ुदा तआला से डर कर इस्तिग़फ़ार ज़्यादा करे। तुम इस आयते क़ुर्आनी के मअना पर तो ग़ौर करो:-

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۞

(और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।)

(सूरह अन्निसा, आयत-110)

फ़स्ल

अलगर्ज़ जब तुम तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रिए अपने दिल को तमाम गुनाहों से साफ़ कर लो और आइन्दा के लिए अपने दिल को गुनाहों से दूर रखने पर पक्का कर लो और इस ख़ुलूस से तौबा कर लो कि अल्लाह तआला तुम्हारे दिल को तौबा में सच्चा और ख़ालिस पाए और जहाँ तक हो सके लोगों को राज़ी कर लो जिन्हें तुम ने माली, बदनी या दीनी क़िस्म की तकलीफ़ें पहुँचाई हों और गुज़रे ज़माने की क़ज़ा नमाज़ें और रोज़े वग़ैरा भी जहाँ तक हो सके अदा कर लो और जो पूरी नहीं कर सकते उनकी माफ़ी के लिए दरबारे ख़ुदावन्दी में गिरया व ज़ारी भी करो जिसके ज़रिए तुम्हारे बाक़ी बचे हुए गुनाह और लग़ज़िशें भी माफ़ हो जायें तो फिर तुम ग़ुस्ल करो और पाक कपड़े पहनो और वुज़ू कर के पूरे ख़ुशू व ख़ुज़ूअ के साथ चार रकअत नमाज़ अदा करो और अपनी पेशानी को ऐसी जगह ज़मीन पर रखो जहाँ तुम्हें अल्लाह के सिवा कोई न देख रहा हो फिर तुम अपने चेहरे पर ख़ाक डालो और अपने चेहरे को ख़ाक से आलूदा करो और हालत यह हो जाए कि आँखों से आंसू बह रहे हों, दिल ग़म के दरिया में तैर रहा हो और शिद्दते ख़ौफ़ की वजह से तुम्हारे रोने की आवाज़ बेसाख़्ता बुलन्द हो रही हो, एक एक करके तुम्हारे गुनाह आँखों के सामने आ रहे हों तो अपने गुनाहों को याद करके अपने नफ़्स को डाँटते हुए ऐसे ख़िताब करो:-

اَمَا تَسْتَحْيِيْنَ يَا نَفْسُ اَمَا اٰنَ لَكِ اَنْ تَتُوْبِيْ اَلَكِ طَاقَةٌ بِعَذَابِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ

اَلَكِ حَاجَةٌ بِسَخَطِ اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ

{ऐ नफ़्स! क्या तुझे ख़ुदा से शर्म नहीं आती? क्या तेरी तौबा का वक़्त अभी क़रीब नहीं आया क्या तुझमें क़ह्हार व जब्बार के दर्दनाक अज़ाब बर्दाश्त करने की ताक़त है? क्या तू अपने ऊपर ख़ुदा को नाराज़ करने का ख़्वाहिशमन्द है?}

इसी तरह चन्द बार गुनाहों को याद करके इन अल्फ़ाज़ की तकरार करो और पूरी मलामत के साथ ख़ूब रोओ और गिरया व ज़ारी करो, फिर सजदे से सिर उठाओ और अपने मेहरबान ख़ुदा के आगे **दुआ के लिए हाथ फैला दो और यह दुआ करो**:-

اِلٰهِیْ عَبْدُكَ الْاٰبِقُ رَجَعَ اِلَيْكَ وَ عَبْدُكَ الْعَاصِیْ رَجَعَ اِلَى الصُّلْحِ وَ عَبْدُكَ
الْمُذْنِبُ اَتَاكَ بِالْعُذْرِ فَاعْفُ عَنِّیْ بِجُوْدِكَ وَتَقَبَّلْنِیْ بِفَضْلِكَ وَ انْظُرْ اِلَیَّ
بِرَحْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا سَلَفَ مِنَ الذُّنُوْبِ وَاعْصِمْنِیْ فِيْمَا بَقِیَ مِنَ الْاَجَلِ
فَاِنَّ الْخَيْرَ كُلَّهٗ بِيَدَيْكَ وَاَنْتَ بِنَا رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۔

"मौला तेरा भागा हुआ बन्दा तेरे दर पर वापस आ गिरा है, तेरा नाफ़रमान बन्दा सुलह की तरफ़ लौट आया है और तेरा गुनाहगार बन्दा उज़्रख़्वाही (मआज़रत/ माफ़ी चाहने) के लिए तेरे दरबार में हाज़िर है, मुझे अपने करम से बख़्श दे और मुझे क़बूल फ़रमा ले और मुझ पर नज़्रे रहमत फ़रमा, या इलाही मेरे गुज़रे हुए तमाम गुनाह बख़्श दे और बाक़ी उम्र में हर गुनाह से मुझे महफ़ूज़ रखवा। तू ही हर भलाई का मालिक है और तू ही हम पर मेहरबान और नर्मी फ़रमाने वाला है।"

फिर यह दुआ करे जिसे दुआए शिद्दत कहते हैं वह दुआ यह है:-

يَا مُجَلِّیَ عَظَائِمِ الْاُمُوْرِ يَا مُنْتَهٰى هِمَّةِ الْمَهْمُوْمِيْنَ يَا مَنْ اِذَا اَرَادَ اَمْرًا فَاِنَّمَا
يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ اَحَاطَتْ بِنَا ذُنُوْبُنَا اَنْتَ الْمَذْخُوْرُ لَهَا يَا مَذْخُوْرَ الْكُلِّ
شِدَّةٍ كُنْتُ اَدَّخِرُكَ لِهٰذِهِ السَّاعَةِ فَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ۔

"ऐ मुश्किलात को हल करने वाले! ऐ ग़मनाक और परेशान हाल लोगों की जाएपनाह (पनाह देने वाले) ऐ वह क़ादिरे ज़ात जिसकी शान यह है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमा ले तो लफ़्ज़े 'कुन यानी हो जा' फ़रमाने से वह चीज़ वजूद में आ जाती है। हमारा हाल यह है कि गुनाहों की कसरत ने हमें घेर लिया है, तू उन सबको जानता

है, ऐ हर मुसीबत व सख़्ती के जानने वाले! मैं इस घड़ी के लिए तुझे ही याद रखता हूँ तू मुझे माफ़ फ़रमा दे, बेशक तू ही तौबा क़बूल फ़रमाने वाला और मेहरबान है।"

फिर जितना ज़्यादा रो सको, रोओ और अपनी ज़िल्लत व आजिज़ी का इज़्हार करो और ज़बान से यह दुआ करो:

يَا مَنْ لَّا يَشْغَلُهٗ شَاْنٌ عَنْ شَانٍ وَلَا سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ يَا مَنْ لَا تَغَالِطُهٗ كَثْرَةُ الْمَسَائِلِ يَا مَنْ لَّا يَبْرَمُهٗ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ اَذِقْنَا بَرَدَ عَفْوِكَ وَ حَلَاوَةَ مَغْفِرَتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

{"ऐ वह ज़ात जिसको एक काम दूसरे काम से मशग़ूल नहीं रख सकता और न एक तरफ़ सुनना दूसरे सुनने से बाज़ रख सकता है। ऐ वह ज़ात जिसे मसाइल की कसरत मुग़ालते में नहीं डाल सकती और न दुआ में इसरार करने वालों का इसरार उसे दो टूक बात करने पर मजबूर कर सकता है हमें अपनी माफ़ी की ठंडक पहुँचा और बख़्शिश की मिठास नसीब फ़रमा, ऐ सबसे बेहतर रहमत करने वाले हम पर रहम फ़रमा, बेशक तू सब कुछ कर सकता है।"}

इस दुआ के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर दुरूद शरीफ़ भेजो और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिए दुआए मग़फ़िरत करो और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करो।

जब यह तमाम ऊपर गुज़री दुआयें दरबारे ख़ुदावन्दी में गिरया व ज़ारी और तौबा व इस्तिग़फ़ार वग़ैरा पूरी तरह कर लो तो बेशक तुम्हें तौबतुन्नसूह हासिल हो गई और तुम गुनाहों से ऐसे पाक हो गए जैसे आज ही पैदा हुए हो, अब तुम्हें अल्लाह तआला दोस्त बना लेगा और तुम्हें बहुत अज्र व सवाब अता करेगा और तुम पर इतनी रहमत व बरकत नाज़िल फ़रमाएगा जिसका बयान नहीं हो सकता। अब तुम्हें हक़ीक़ी अमन व ख़ुलासी हासिल हो गई और तुम अल्लाह तआला के ग़ज़ब व गुनाहों की सज़ा से निजात पा गए और दुनिया व आख़िरत में गुनाहों की आफ़त से छूट गए और तुम्हारी तौबा की घाटी अल्लाह के हुक्म से पार हो गई और अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल व एहसान से हिदायत का मालिक है।

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय

इमाम साहब ने इस बाब में तौबा की ज़रूरत, तौबा का तरीक़ा, तौबा की क़िस्में और चन्द उन बुज़ुर्गों के अक़वाल बताए जिन्होंने तौबा का बहुत बड़ा एहतमाम किया। बाज़ वक़्त शैतान यह वसवसा डाल सकता है कि दुनिया के मज़े ले लो यह सब तुम्हारे बस का नहीं, हरगिज़ इस तरह के वसवसों में मत आना क्योंकि गुनाह होते रहने के बावजूद भी तौबा बहुत ज़रूरी है वह इसलिए कि तौबा से कम से कम पिछले किए हुए गुनाह तो माफ़ हो जाते हैं। इमाम साहब ने यह भी बताया कि हो सकता है कि तौबा के बाद तुम्हें फ़ौरन मौत आ जाए तो कितना बड़ा फ़ायदा हुआ कि साफ़ सुथरे गुनाहों से पाक गए मसलन कोई सख़्त बीमार हुआ या बहुत बूढ़ा है और मक़बूल तौबा हासिल हो गई तो कितना बड़ा फ़ायदा हासिल हुआ यह भी हो सकता है कि मरते ही जन्नत नसीब हो जाए और अगर कुछ दिन और जिए और कुछ गुनाह माज़ल्लाह हुए भी तो यह छोटा सा हिसाब ही है। हाँ बन्दों के हुक़ूक़ से मुताल्लिक़ गुनाहों को बन्दों से माफ़ कराने या उसे अदा करने की ज़रूर कोशिश करो कि अल्लाक पाक ने फ़रमाया कि मैं बन्दों के हुक़ूक़ माफ़ नहीं करूँगा जबकि वह हर चीज़ का मालिक है और रोज़े क़यामत बन्दों के हुक़ूक़ के बदले नेकियाँ छिन जायेंगी या दूसरों के गुनाहों का बोझ भी उठाना पड़ेगा और अगर जिसका हक़ मारा है वह न मिले या फ़ितने की वजह से माफ़ न करा सके तो नेकियों को बढ़ाओ और अल्लाह पाक के सामने ख़ूब गिड़गिड़ाओ कि अल्लाह पाक रोज़े क़यामत अपनी तरफ़ से बदला दिला कर तुम्हारे हुक़ूक़ माफ़ करवा दे। इमाम साहब ने यह भी बताया कि इबादत में मिठास और आगे तौफ़ीक़ हासिल करने के लिए तौबा बहुत ही ज़रूरी है।

अल्हम्दुलिल्लाह सच्चे दिल से ईमान लाने पर जन्नत तो पक्की हो जाती है मगर मरने के बाद जन्नत में जल्द जाने और अज़ाबों से बचने के लिए इबादत, इल्म और सच्ची तौबा बहुत ज़रूरी है। अब अगर फिर भी कुछ लोगों को यह लगे कि ये किताब कुछ मुश्किल है और हम इस पर अमल नहीं कर सकेंगे और घबरा कर आगे पढ़ने से रुकने लगें तो उनसे गुज़ारिश है कि समझ में आए या न आए इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें क्योंकि आख़िर तक पहुँचते पहुँचते बीच ही में आपको एहसास होगा कि इबादत के लिए इस किताब पर पूरी तरह नहीं तो कुछ अमल बहुत ही ज़रूरी है और जन्नत में जल्दी जाने के लिए मेहनत भी बहुत करनी है। अल्लाह तआला हमें और आपको इस किताब को बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इस बाब की 'ज़रूरी राय' ख़त्म।

-मुहम्मद अहमद

तीसरी घाटी
अवाईक़े अरबाअ
चार रुकावटों के बयान में

ऐ इबादत के तलबगार तौबा के बाद रुकावटों को दूर करना भी तुझ पर लाज़िम व ज़रूरी है ताकि तेरी इबादत दुरुस्त व मक़बूल हो सके, हम पहले बयान कर चुके हैं कि रुकावटें चार हैं:-

पहली रुकावट दुनिया और जो कुछ इसमें है

इस रुकावट को दूर करने का यही तरीक़ा है कि तू इससे तन्हाई इख़्तियार कर और इससे अलग होकर दिल से इसकी मुहब्बत निकाल डाल। यह गोशानशीनी और ज़ोहद दो वजह से ज़रूरी है, एक तो इसलिए कि तू इबादत ख़ूब कर सके और उसमें दुरुस्ती पैदा हो सके क्योंकि दुनिया की मशग़ूलियत तेरे ज़ाहिर व बातिन को इबादत से रोकेगी, ज़ाहिर को तो इस तरह कि तू दुनिया की चाहत में मारा मारा फिरेगा और बातिन को इस तरह कि तेरे दिल में बार बार दुनिया को हासिल करने के लिए वसवसे पैदा होते रहेंगे। यह इरादा और वसवसा दोनों इबादत में रुकावट बनेंगे क्योंकि दिल एक है तो वह जब एक चीज़ के साथ मशग़ूल होगा तो वह उसकी ज़िद के साथ मशग़ूल नहीं हो सकता और दुनिया व आख़िरत की मिसाल दो सौतनों की सी है, अगर तुम एक को ख़ुश करोगे दूसरी नाराज़ हो जाएगी और दुनिया व आख़िरत के दरमियान पूरब व पश्चिम जैसा फ़ासला है, जितना एक के क़रीब होते जाओगे दूसरी से दूर होते जाओगे।

हमने यह जो कहा है कि बन्दे का ज़ाहिर दुनिया की तलब में मशग़ूल हो जाता है, इसका सुबूत नीचे लिखी रिवायत से होता है जो हज़रत अबू दरदा ﵁ से मरवी है। आप ﵁ फ़रमाते हैं कि मैंने इबादत व तिजारत को जमा करने का तजुर्बा किया लेकिन दोनों जमा न हो सकीं तो मैंने इबादत को इख़्तियार किया और तिजारत को छोड़ दिया।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म ﵁ से मरवी है कि आप﵇ फ़रमाते हैं कि अगर इबादत व तिजारत मेरे सिवा किसी और में इकट्ठा हो सकतीं तो मुझे दोनों

ज़रूर मिलतीं क्योंकि मुझे अल्लाह तआला ने क़ुव्वत और नरमी दोनों अता फ़रमाई हैं।

तो जब मामला यह है कि दोनों का इकट्ठा होना मुश्किल है तो फ़ना होने वाली चीज़ यानी दुनिया का नुक़सान गवारा कर लो, मगर सलामती व हिफ़ाज़त वाली चीज़ यानी आख़िरत को न छोड़ो, बाक़ी रहा बन्दे के बातिन का दुनिया के साथ मशग़ूल होना तो इसका सुबूत इस रिवायत से मिलता है जो नबी-ए-करीमﷺ से मरवी है आपﷺ फ़रमाते हैं:-***"जिसने दुनिया को पसन्द किया उसने आख़िरत का नुक़सान किया और जिसने आख़िरत को पसन्द किया उसने दुनिया का नुक़सान किया तो उसको इख़्तियार करो जिसका फ़ायदा पायदार और हमेशा के लिए है और उसको छोड़ दो जो सिर्फ़ चन्द दिन है।"***

ऊपर गुज़री रिवायात से तुझ पर यह बात साफ़ हो गई कि जब तक तेरा ज़ाहिर व बातिन दुनिया में लगा रहेगा सही तरह से इबादत नहीं हो सकेगी मगर जब तू दुनिया से लगाव ख़त्म कर देगा और ज़ाहिर व बातिन को दुनिया से ख़ाली कर देगा तो पूरी तरह से इबादत का हक़ बजा लाना नसीब हो जाएगा बल्कि ज़ाहिरी व बातिनी आज़ा तेरे मददगार हो जायेंगे।

हज़रत सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं:- *"जब बन्दा दुनिया से लगाव ख़त्म कर देता है तो उसका दिल हिकमत से रौशन हो जाता है और उसके आज़ा इबादत के सिलसिले में मददगार बन जाते हैं"।*

चारों रुकावटों को दूर करने की दूसरी वजह यह है कि रुकावट ख़त्म हो जाने के बाद तुम्हारे नेक आमाल की क़द्र व क़ीमत बढ़ जाएगी।

नबी-ए-करीमﷺ फ़रमाते हैं कि- ***"ज़ाहिद व आलिम की दो रकअत नमाज़ अल्लाह तआला के यहाँ तकल्लुफ़ यानी हिचकिचाहट से इबादत करने वालों की क़यामत तक की इबादत से अफ़ज़ल और आला है।"*** (रुहुल बयान)

तो जब दुनिया में ज़ोहद इख़्तियार करने से और दुनिया से अलग रहने से इबादत की अज़मत ज़्यादा होती है और उसमें पायदारी और ज़्यादती नसीब होती है, तो इबादत के तलबगार पर लाज़िम है कि ज़ोहद व गोशानशीनी का रास्ता अपनाए।

सवाल: ज़ोहद के क्या मतलब है?

जवाब: उलमा-ए-अहले सुन्नत के नज़दीक ज़ोहद की दो क़िस्में हैं

1. ज़ोहद मक़दूर 2. ज़ोहद ग़ैर मक़दूर

ज़ोहद मक़दूर वह ज़ोहद जो बन्दे के बस में है और वह तीन चीज़ें हैं-

1. **दुनिया की जो चीज़ पास न हो उसकी चाहत न करे।**

2. जो मौजूद हो उसको राहे ख़ुदा में बाँट दे।

3. दुनिया की चीज़ों का इरादा और उसे पसन्द करना छोड़ दे।

जिस शख़्स में ये तीन चीज़ें मौजूद हैं वह ज़ाहिद है। लेकिन **ज़ोहद ग़ैर मक़दूर** यानी वह जो बन्दे के बस में नहीं, वह यह है कि उसका दिल दुनियावी चीज़ों को हासिल करने का शौक़ छोड़ दे। ज़ोहद ग़ैर मक़दूर, ज़ोहद मक़दूर के ज़रिए हासिल होता है क्योंकि ज़ोहद मक़दूर, ज़ोहद ग़ैर मक़दूर का ज़रिया और सबब है, जो चीज़ें बन्दे के पास न हों जब उनकी तलब छोड़ दे और मौजूदा चीज़ों को राहे ख़ुदा में बाँट दे और आख़िरत के सवाब की नीयत से दुनिया और दुनिया की चीज़ों की आफ़तें याद करते हुए बन्दा जब आइन्दा के लिए दुनिया के माल को हासिल करने का इरादा और उसकी चाहत दिल से निकाल दे तो उसके ज़रिए दिल में दुनिया की तलब ख़त्म हो जाएगी और दुनिया और दुनिया की चीज़ों की तलब से दिल ठंडा पड़ जाना ही हक़ीक़ी ज़ोहद है।

फिर यह जानना चाहिए कि ज़ोहद मक़दूर की तीसरी चीज़ यानी दुनिया हासिल करने का इरादा भी दिल से निकाल देना बहुत मुश्किल है क्योंकि बहुत ऐसे हैं जो देखने से तो तारिके दुनिया (दुनिया को छोड़ने वाले) लगते हैं मगर उनके दिलों में दुनिया की मुहब्बत चुटकियाँ लेती रहती है, ऐसा शख़्स इसी कशमकश में मुब्तला रहता है हालांकि ज़ोहद की असल शान इस तीसरी चीज़ से ही पैदा होती है, क्या तुमने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना:-

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ط

(हम आख़िरत का घर सिर्फ़ उन लोगों को अता करेंगे जो दुनिया में सरकशी और फ़साद का इरादा तक नहीं करते।)

(सूरह अलक़सस, आयत- 83)

इस आयत में अल्लाह तआला ने जन्नत में दाख़िले का हुक्म उन लोगों के लिए दिया है जो सरकशी व फ़साद का इरादा भी नहीं करते, उनके लिए नहीं बताया जो सरकशी व फ़साद नहीं चाहते या अमली तौर पर नहीं करते। **एक और मक़ाम पर फ़रमाया:-**

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

(जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिए उसकी खेती बढ़ायें और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।)

(सूरह अश्शूरा, आयत-20)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया:-

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ

(जो यह जल्दी वाली चाहे (यानी दुनिया का तलबगार हो) हम उसे उसमें से जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें)

(सूरह बनी इस्राईल, आयत-18)

एक और जगह फ़रमाया:-

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا

(जिसने आख़िरत को चाहा और उसके लिये कोशिश की।)

(सूरह बनी इस्राईल, आयत-19)

तो तुम इन तमाम ऊपर गुज़री आयतों का मुताला नहीं करते कि इन सभी आयतों में इरादे की तरफ़ इशारा किया गया है तो मालूम हुआ कि इरादा एक बहुत बड़ी चीज़ है लेकिन जब इन्सान पहली दो चीज़ों (मौजूद माल राहे हक़ में सदक़ा करना और ग़ैर मौजूद की चाहत से बेपरवाह होना) पर बिल्कुल पक्के इरादे से अमल शुरू कर दे तो उम्मीद है कि रब तआला अपने फ़ज़्ल व करम से दुनिया हासिल करने के इरादे को भी पूरी तौर पर

दिल से निकाल दे क्योंकि वह ज़ात निहायत फ़ज़्ल व करम फ़रमाने वाली है, फिर जिस चीज़ से राहे ख़ुदा में माल लगाने और दुनिया तर्क करने पर मदद मिलती है और जो चीज़ इस सिलसिले में आसानी पैदा करने की वजह है वह यह है कि दुनिया की आफ़तों और उसके ऐबों को ज़हन में दोहराया जाए।

दुनिया को बुरा जानने के बारे में बुज़ुर्गों के बहुत से क़ौल हैं जैसे कि कुछ ने फ़रमाया है:- *"मुझे दुनिया से नफ़रत होने की वजह यह है कि वह थोड़ा वक़्त इन्सान को दौलतमन्द करती है और जल्दी फ़ना हो जाती है जितने उसके चाहने वाले हैं सब ख़बीस और कमीने हैं"*

मेरे शैख़ ﷬ ने फ़रमाया है कि ऊपर आए क़ौल से भी दुनिया के साथ तअल्लुक़ की बू आती है क्योंकि जो शख़्स किसी चीज़ से जुदाई का शिकवा करता है वह दरहक़ीक़त उसके मिलने का ख़्वाहिशमन्द होता है, इसी तरह जो शख़्स किसी चीज़ से इस वजह पर जुदाई इख़्तियार करता है कि उसमें और भी शरीक हैं वह दर हक़ीक़त इस बात का ख़्वाहिशमन्द होता है कि काश मैं अकेला ही उसका मालिक होता, इसीलिए दुनिया को बुरा जानने के बारे में ज़्यादा सही वही है जो मेरे शैख़ ﷬ ने फ़रमाया है कि *"दुनिया ख़ुदा की दुश्मन है और तू ख़ुदा का दोस्त और क़ायदा यह है कि जो किसी को दोस्त रखता है वह अपने दोस्त के दुश्मन को भी अपना दुश्मन समझता है।"*

मेरे शैख़ ﷬ ने यह भी फ़रमाया है "क्योंकि यह दुनिया दरहक़ीक़त मैले कुचैले मुर्दार की तरह है, तुम देखते नहीं उसके लज़ीज़ खाने थोड़ी देर में बदबूदार गंदगी बन जाते हैं और आख़िरकार उसकी ख़ूबसूरत चीज़ें ख़राब हो जाती हैं मगर उसके ज़ाहिर को ख़ुशबूदार और सँवार दिया गया है। तो ग़ाफ़िल उसके ज़ाहिर को देख कर उसके धोखे में आ गए मगर समझदार लोग उससे अलग हो गये।

सवाल: क्या ज़ोहद इख़्तियार करना फ़र्ज़ है या नफ़्ल?

जवाब: मशाइख़े अहले सुन्नत के नज़दीक ज़ोहद दो चीज़ों से होता है, एक हराम से दूसरा हलाल से। हराम चीज़ों से ज़ोहद फ़र्ज़ है और हलाल चीज़ों से मुस्तहब। फिर जिन लोगों को फ़रमाबरदारी और इबादत में पायदारी हासिल है उनके नज़दीक हराम एक नजिस और मुर्दार चीज़ की तरह है ख़ुदा-

न-ख़्वास्ता अगर उसके इस्तेमाल की ज़रूरत पेश आए तो बहुत मामूली और ज़रूरत के मुताबिक़ इस्तेमाल करने की शरअन इजाज़त है मगर ***अब्दाल*** और ***कामिलीन*** के नज़दीक हलाल भी ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल करना मुर्दार की तरह है, वो हलाल भी ज़रूरत व हाजत के मुताबिक़ इस्तेमाल करते हैं। बाक़ी रहा हराम तो वह उनके नज़दीक आग की तरह है उसके इस्तेमाल का उन्हें वहम तक नहीं आता। दिल से दुनिया का निकल जाने का यही मतलब है कि दुनिया हासिल करने के नापाक ख़्याल से दिल पाक व साफ़ हो जाए और यहाँ तक दुनिया की नफ़रत दिल में बैठ जाए कि वह उसे सख़्त गन्दी और मकरूह चीज़ समझे यहाँ तक कि दुनिया हासिल करने की कोई ख़्वाहिश दिल में न रहे।

सवाल: यह कैसे हो सकता है कि तरह-तरह की आरज़ुओं और लज़्ज़तों से सजी हुई दुनिया को इन्सान आग या एक गन्दे मुर्दार की तरह समझने लगे ख़ास कर हम जैसे कमज़ोर और नाज़ुक तबीयत लोग तो बिल्कुल ऐसे नहीं हो सकते?

जवाब: अल्लाह तआला जिस इन्सान को अपनी ख़ास तौफ़ीक से नवाज़ता है और जो दुनिया की आफ़तों से वाक़िफ़ व ख़बरदार हो जाता है तो दुनिया उसे ऐसी ही हक़ीर व ज़लील मालूम होती है मगर जो बेवक़ूफ़ उसके ऐबों और उसकी आफ़तों से अंधा रहा और उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती से धोखा खा जाता है वह दुनिया के मुताल्लिक़ ऐसे तसव्वुर से ताज्जुब ही करता है और वह दुनिया को हक़ीर व ज़लील समझना नामुमकिन ख़्याल करता है। मैं एक ऐसी मिसाल देता हूँ जिससे दुनिया की हक़ीक़त तुम पर रौशन और वाज़ेह हो जाएगी।

एक शख़्स सारी चीज़ें डाल कर बेहतरीन हलवा तैयार करे मगर तैयार करने के बाद उसमें ज़हरे क़ातिल का एक क़तरा डाल दे। ज़हर डालते वक़्त एक शख़्स तो देख रहा था मगर दूसरा उससे बेख़बर था। जब दोनों के सामने वह बेहतरीन और उम्दा हलवा खाने के लिए रखा जाएगा तो जिसे ज़हर की मिलावट का इल्म है वह हरगिज़ उस खाने की तरफ़ नहीं बढ़ेगा बल्कि खाने का ख़्याल भी नहीं करेगा और उसके नज़दीक यह हलवा पेट में आग डालने से भी ज़्यादा मुश्किल होगा क्योंकि वह उसकी अन्दरूनी हालत से वाक़िफ़ है

और उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती से धोखे में नहीं आएगा मगर दूसरा शख़्स जिसे ज़हर के मिले होने का इल्म नहीं वह उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती से फ़रेब में आ जाएगा वह लालच से उस हलवे पर टूट पड़ेगा और अपने साथी पर उस हलवे से नफ़रत की वजह से ताज्जुब करेगा बल्कि उसे अहमक़ और बेवक़ूफ़ ख़्याल करेगा। दुनिया की हराम चीज़ें भी बिल्कुल इसी तरह है जो आँख वाले मज़बूती के साथ शरीअत के रास्ते पर चलने वाले हैं वो तो इससे सख़्त नफ़रत रखते हैं मगर हराम के नुक़सान से बेख़बर लोग इस पर फ़िदा हो रहे हैं।

और अगर हलवा तैयार करने वाले ने उसमें ज़हर की मिलावट न की हो बल्कि उसमें थूक दिया हो या नाक साफ़ की हो और उस थूक वग़ैरा को हलवे में मिला कर ऊपर से ठीक ठाक कर दिया हो तो जो आदमी उस हरकत को देख रहा हो वह तो उस हलवे से कराहत और नफ़रत का इज़्हार करेगा और बहुत ज़्यादा ज़रूरत पर उसे खाने पर रज़ामन्द होगा लेकिन जो शख़्स उस हरकत से नावाक़िफ़ होगा वह उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती से मुतास्सिर हो कर ख़ुशी ख़ुशी सब चट कर जाएगा बल्कि उसे पसन्द भी करेगा।

यह दुनिया के हलाल की मिसाल है जो नज़र वाले और मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले हैं वह तो इसे सिर्फ़ हाजत के मुताबिक़ इस्तेमाल में लाते हैं मगर ग़फ़लत वाले लोग इसे मन्न व सलवा की तरह उड़ाते हैं, देखिए यहाँ दोनों क़िस्म के लोगों की तख़लीक़ और तबीयत के ऐतबार से तो बराबर है मगर इल्म व निगाह, जहालत व लाइल्मी की वजह से दोनों के कामों में कितना फ़र्क़ है। उस जाहिल व नावाक़िफ़ को ज़हर या थूक की मिलावट का इल्म होता तो ज़रूर उससे बचता और अगर उस वाक़िफ़ आदमी को ज़हर या थूक की मिलावट का इल्म न होता तो वह बेख़बर शख़्स की तरह बिना रुके सब हलवा खा जाता। इस मिसाल से मालूम हुआ कि यह फ़र्क़ तबीयत व तख़लीक़ की वजह से नहीं बल्कि इल्म व नज़र की वजह से है। यह फ़र्क़ एक ठोस और पुख़्ता चीज़ है। हर इन्साफ़ वाला और अक़्लमन्द इसे दुरुस्त मानेगा और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हिदायत व तौफ़ीक़ का मालिक है।

सवाल: कुछ न कुछ तो दुनिया का होना ज़रूरी है जिससे हमारी और हमारे घर वालों की ज़िन्दगी क़ायम रह सके तो दुनिया से पूरी तौर पर अलैहदगी कैसे हो सकती है?

जवाब: ज़ोहद से मक़सूद यह है कि फ़ुज़ूल और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों से परहेज़ किया जाए। ग़र्ज़ यह कि सिर्फ़ इस क़द्र ताक़त और क़ुदरत मौजूद रहे जिससे इबादत व ताअते ख़ुदावन्दी अदा हो सके सिर्फ़ खाना पीना और लज़्ज़त हासिल करना मक़सूद न हो और ख़ुदा तआला को इस पर भी क़ुदरत है कि तुम्हें सबब व ज़रिए से ज़िन्दा रखे या बग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के, जैसे फ़िरिश्ते इन सब ज़ाहिरी असबाब के बग़ैर भी ज़िन्दा हैं। ख़ुदा तआला को इसकी भी ताक़त है कि तुम्हें तुम्हारे पास मौजूद चीज़ों के ज़रिए ज़िन्दा रखे या ऐसी चीज़ मुहय्या फ़रमा दे जिसका तुम्हें वहम व गुमान तक न हो, जैसे कि **रब तआला ने फ़रमाया**:-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(और जो अल्लाह तआला से डरे अल्लाह उसके लिए निजात की राह निकाल देगा और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो।)

(सूरह- अत्तलाक़, आयत- 2,3)

इस लिए अगर तुम तक़वा इख़्तियार कर लो तो तुम्हें ज़िन्दा रहने के लिए दुनिया हासिल करने की हाजत नहीं और अगर ज़ोहद का यह दर्जा तुम्हें हासिल न हो तो आख़िरत का सामान और तक़्वे की नीयत से तलाश करो शहवत और लज़्ज़त की ग़रज़ से तलाश न करो क्योंकि जब तुम्हारी नीयत नेक होगी तो यह आख़िरत की तलब में ही शुमार होगी और इस तरह तुम्हारे ज़ोहद में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा, इस ज़िक्र हुए बयान को अच्छी तरह ज़हन नशीन करो। (और तौफ़ीक़ अल्लाह ही तरफ़ से है).

मुहम्मद अहमद का ज़रूरी मशवरा

हुज्जतुल इस्लाम ने इस रुकावट में दुनिया से दूर रहने और दुनिया की चाहत छोड़ने की रग़बत दिलाई और उसके फ़ायदे गिनाए हैं कि दुनिया हासिल करने में इन्सान का वक़्त बहुत बर्बाद होता है और कुछ दिन बाद सब कुछ छोड़ कर चल देता है और जिस काम के लिए आया है वह छूटता है या कम होता है और आख़िरत का नुक़सान होता है। कुछ लोग इस तरह सोचते हैं कि

पहले ख़ूब पैसा कमायेंगे फिर अल्लाह की राह में ख़र्च करेंगे मगर ख़र्च करने का वक़्त आता है तो ज़्यादातर यह देखा गया है कि उस वक़्त तक पैसे की मुहब्बत इतनी बढ़ जाती है कि सोचा हुआ पूरा नहीं कर पाता है। बहरहाल दुनिया से दूर रहना और गोशानशीनी इख़्तियार करना बहुत मुश्किल ज़रूर हैं मगर नामुमकिन नहीं। अगर इस बात पर ग़ौर किया जाए कि दुनिया किसे कहा गया है तो शायद बात समझने में आसानी होगी। दुनिया वह है जो अल्लाह से दूर करे, इबादत में रुकावट बने, आख़िरत की तैयारी न करने दे। अब ऐसी दुनिया से क्या फ़ायदा जो दुनिया में आने के मक़सद को पूरा ही न होने दे। बाज़ वक़्त शैतान यह वसवसा डाल सकता है कि दुनिया के मज़े ले लो यह सब तुम्हारे बस का नहीं, हरगिज़ इस तरह के वसवसों में मत आना।

अल्हम्दुलिल्लाह सच्चे दिल से ईमान लाने पर जन्नत तो पक्की हो जाती है मगर जन्नत में मरने के बाद जल्द जाने और अज़ाबों से बचने के लिए इबादत, इल्म और सच्ची तौबा, और रुकावटों से मुक़ाबला बहुत ज़रूरी है। अब अगर फिर भी कुछ लोगों को यह लगे कि ये किताब कुछ मुश्किल है और हम इस पर अमल नहीं कर सकेंगे और घबरा कर आगे पढ़ने से रुकने लगें तो उनसे गुज़ारिश है कि समझ में आए या न आए इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें क्योंकि आख़िर तक पहुँचते पहुँचते बीच ही में आपको एहसास होगा कि इबादत के लिए इस किताब पर पूरी तरह नहीं तो कुछ अमल बहुत ही ज़रूरी है और जन्नत में जल्दी जाने के लिए मेहनत भी बहुत करनी है। अल्लाह तआला हमें और आपको यह किताब बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्हम्दुलिल्लाह इस बाब का ज़रूरी मशवरा ख़त्म हुआ।

मुहम्मद अह़मद

दूसरी रुकावट मख़लूक़ से मेल जोल

फिर मख़लूक़ से जुदाई और तन्हाई भी लाज़िम है और उसके दो सबब हैं:-

पहला सबब यह कि तुम मेल जोल में मुब्तला होकर इबादत से महरूम हो जाओगे। एक बुज़ुर्ग رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि मैं एक जमाअत के पास से गुज़रा जो किसी बात पर बहस कर रहे थे और एक शख़्स उनसे थोड़ी दूर हट कर अकेला बैठा हुआ था, मैंने उसके क़रीब जा कर उससे बातचीत करना चाही तो उसने जवाब दिया 'मैं ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रहने को तेरे साथ बातचीत करने से ज़्यादा अच्छा समझता हूँ। मैंने कहा- 'तुम यहाँ अकेला बैठे हुए हो' तो उसने कहा- 'मैं अकेला नहीं बल्कि मेरे साथ मेरा रब है और

किरामन कातेबीन हैं' उसके बाद मैंने उससे सवाल किया बहस करने वालों में बेहतरीन कौन है? तो उसने जवाब दिया - 'जिसको ख़ुदा ने बख़्श दिया हो' मैंने पूछा 'सीधी राह कौन सी है' तो उसने हाथ से आसमान की तरफ़ इशारा किया और वह खड़ा होकर चल पड़ा, चलते वक़्त वह यह कह रहा था- *''ऐ अल्लाह! तेरी अक्सर मख़लूक़ मुझे तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रखने की कोशिश करती है''*

तो मालूम हुआ कि मख़लूक़ के साथ तअल्लुक़ात इबादत से ग़ाफ़िल कर देते हैं बल्कि इबादत से रोक देते हैं जैसा कि हातिम असम رحمة الله عليه ने फ़रमाया ''मैंने मख़लूक़ से पाँच चीज़े तलब कीं मगर न मिल सकीं, मैंने कहा ज़ोहद और फ़रमाबरदारी मेरे लिए मुहय्या करो मगर वह न कर सके। मैंने कहा ज़ोहद और फ़रमाबरदारी में मेरी मदद ही करो मगर वह मदद भी न कर सके। मैंने कहा अगर ज़ोहद और फ़रमाबरदारी के लिए तुमसे किनाराकशी करूँ तो नाराज़ न होना मगर वह किनाराकशी पर नाराज़ हो गए। मैंने कहा ज़ोहद और फ़रमाबरदारी के हासिल करने में तुम रुकावट न बनना मगर वह रोकने से बाज़ न आए। आख़िर मैंने कहा मुझे ख़ुदा की नाफ़रमानी की तरफ़ तो न बुलाओ मगर उन्होंने मेरी इस बात को भी तसलीम न किया। जब लोगों से मेरी कोई मुराद भी पूरी न हुई तो मैं उन से किनाराकश हो गया और अपने नफ़्स की इस्लाह में मशग़ूल हो गया।

ऐ अज़ीज़! नबी-ए-करीमﷺ ने गोशानशीनी की हक़ीक़त, गोशानशीनी के ज़माने और उस ज़माने के लोगों की वज़ाहत फ़रमा दी है और हुक्म दिया है कि जब वह वक़्त और ज़माना आए तो मख़लूक़ से सिरे से किरानाकश हो जाना वर्ना तुम्हारा दीन तबाह और आख़िरत बर्बाद हो जाएगी और यह साफ़ है कि नबी-ए-करीमﷺ उम्मत के फ़ायदे हम से ज़्यादा जानते थे और आपﷺ हम से ज़्यादा हमारे भला चाहने वाले थे और अगर तुम वह ज़माना पाओ जिसमें आपﷺ ने गोशानशीनी का हुक्म दिया है तो आपﷺ के हुक्म की ज़रूर तामील करो और आपﷺ की नसीहत पर अमल करो और ऐसा वहम भी न करो कि हम अपनी भलाइयों को हुज़ूरﷺ से बेहतर जानते हैं। गोशानशीनी को छोड़ने के लिए बेमतलब और बेहूदा तावीलात न करो और मामूली हीलों के ज़रिए अपने दिल को न

बहलाओ,अगर इस नाज़ुक वक़्त में हुज़ूरﷺ के हुक्म की तामील नहीं करोगे तो हलाक व बर्बाद हो जाओगे और आख़िरत में तुम्हारा कोई उज़्र या बहाना न सुना जाएगा।

एक मशहूर हदीस में गोशानशीनी के वक़्त की वज़ाहत है जो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आसरज़ि. से मरवी है, कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं एक दफ़ा हम हुज़ूरﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे फ़ितनों का ज़िक्र हो रहा था तो आपﷺ ने फ़रमाया- ***"जब तुम देखो कि लोग वादाख़िलाफ़ी में मुब्तला हो जायें और अमानत में ख़यानत करने लगें और लोगों में बिला वजह मेल जोल बढ़ जाए (बेजा मेल जोल का ज़िक्र करते हुए आपने दोनों हाथों की उँगलियाँ एक दूसरी में डाल दीं) तो उस वक़्त सख़्त ज़रूरत के बग़ैर घर से बाहर न निकल, अपनी ज़बान क़ाबू में रख, नेक काम इख़्तियार कर, बुराई से बच, गोशानशीनी को अपने ऊपर लाज़िम कर ले और मेल जोल से पूरी तरह परहेज़ कर।"*** (सुनन इब्ने दाऊद)

एक और हदीस में नबी-ए-करीमﷺ गोशानशीनी के ज़माने की यह निशानी बयान फ़रमाई है कि- ***"उस वक़्त गोशानशीनी लाज़िम है जब 'हर्ज' आम हो। हाज़िरीन ने अर्ज़ किया- 'हर्ज' से क्या मुराद है? तो आपﷺ ने फ़रमाया-" जब कोई शख़्स अपने साथी से बेख़ौफ़ और मुतमइन न हो।"*** और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊदरज़ि. से एक हदीस मरवी है कि हुज़ूरﷺ ने हारिस इब्ने उमैरहरज़ि. से फ़रमाया:- ***"अगर तेरी उम्र ने वफ़ा की तो ऐसा ज़माना पाएगा जिसमें ख़तीब बहुत होंगे लेकिन आलिम कम होंगे, मँगते बहुत होंगे लेकिन उन्हें देने वाले बहुत कम होंगे और इल्म ख़्वाहिशात के ताबेअ हो जाएगा।*** हज़रत हारिस इब्ने उमैरहरज़ि. ने अर्ज़ किया ऐसा ज़माना कब आएगा? तो आपﷺ ने फ़रमाया- ***"जब नमाज़ों की परवाह नहीं होगी, रिशवत का लेन देन आम होगा और दीन व मज़हब हक़ीर दुनिया के बदले बेच दिया जाएगा, ऐसे वक़्त में बचना।"*** आपﷺ ने 'बचने' का लफ़्ज़ तीन बार दोहराया।" मैं (इमाम ग़ज़ाली) कहता हूँ हुज़ूरﷺ ने गोशानशीनी की जो निशानियाँ बताई हैं वह सभी हमारे ज़माने में मौजूद हैं

फिर पहले के बुज़ुर्ग ऐसे ख़राब वक़्त के लोगों से अलग रहने की सख़्त ताकीद फ़रमाते वो ख़ुद तमाम उम्र मेल जोल से दूर रहे और दूसरों को इसकी ताकीद फ़रमाते रहे। बिलाशुबह वो लोग हमसे कहीं ज़्यादा निगाह वाले थे उनके बाद का ज़माना उनके ज़माने से बेहतर नहीं बल्कि दीनी ऐतबार से ज़्यादा तल्ख़ और ख़राब है।

हज़रत यूसुफ़ इब्ने असबात ने फ़रमाया कि हज़रत सूफ़यान सौरी ख़ुदा की क़सम खा कर कहा करते थे हमारे ज़माने में गोशानशीनी जाइज़ हो गई है, मैं कहता हूँ अगर उनके ज़माने में जाइज़ थी तो हमारे ज़माने में फ़र्ज़ हो गई है। हज़रत सूफ़यान सौरी से यह भी मन्क़ूल है कि आपने हज़रत अब्बाद अल ख़व्वास यह ख़त लिखा: *''तू ऐसे ज़माने में है जिससे हुज़ूर के सहाबा पनाह माँगते थे हालांकि वो हमसे ज़्यादा आलिम थे। अब हमारा क्या हाल होगा जब कि हम इसी ख़तरनाक ज़माने में हैं और फिर हम इल्म में उनसे कम हैं, सब्र में कम हैं और नेकी पर मदद करने वाले भी अब कम हैं और दुनिया बनिसबत उस वक़्त के इस वक़्त ज़्यादा ख़राब है और लोगों में फ़साद भी ज़्यादा आ गया है इसीलिए हज़रत फ़ारूक़े आज़म ने फ़रमाया- ''बुरे साथी से दूर रहने में राहत है''* अरबी अशआर का तर्जुमा:-

- *हमारा यह ज़माना वही है जिससे हमें हजरत कअब और हज़रत इब्ने मसऊद के क़ौल से डराया गया है।*
- *यह ऐसा ज़माना है जिसमें हक़ मरदूद है और ज़ुल्म व बग़ावत मक़बूल व महबूब है।*
- *इस वक़्त दीन से अंधे और बहरे मुसलमानों में मिल गए हैं और इस वक़्त इब्लीस को सच्चा और बुलन्द ख़्याल कहा जाता है।*
- *अगर इस ज़माने की नाज़ुक हालत यही रही और उसमें कोई बेहतर तब्दीली रूनुमा नहीं हुई तो उसके मरने वालों पर न अफ़सोस का इज़हार लायक़ होगा और न नए पैदा होने वालों पर ख़ुशी का इज़हार मुनासिब होगा।*

मैंने सुना है कि एक दफ़ा हज़रत सुफ़यान इब्ने उयैनह ने हज़रत सुफ़यान सौरी से कहा मुझे कोई नसीहत कीजिए तो आपने फ़रमाया 'लोगों से मेल जोल और तआरुफ़ कम रख' तो हज़रत सुफ़यान इब्ने उयैनह ने कहा आप पर अल्लाह रहम करे हदीस में तो आया है 'लोगों से तआरुफ़ बढ़ाओ क्योंकि हर वाक़िफ़ मोमिन दूसरे मोमिन की शफ़ाअत

करेगा। तो हज़रत सुफ़यान सौरीؒ ने इसके जवाब में फ़रमाया- मेरा ग़ालिब गुमान यह है कि तुझे जो तकलीफ़ पहुँची होगी वह किसी वाक़िफ़कार ही से पहुँची होगी। हज़रत सुफ़यान सौरीؒ ने यह अल्फ़ाज़ कहे और फ़ौत हो गए। हज़रत सुफ़यान इब्ने उयैनहؒ कहते हैं कि मैंने आपको वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा कि आपؒ बुलन्द मरतबे पर हैं। मैंने अर्ज़ किया कोई नसीहत कीजिए तो आपؒ ने फ़रमाया: जहाँ तक हो सके लोगों से तआरुफ़ व वाक़फ़ियत कम रख मख़लूक़ के मेल जोल से छुटकारा पाना सख़्त मुश्किल है। एक अरबी शायर ने इस मज़मून को इस तरह अदा किया है-

- *मैं लोगों के हालात मालूम करने में और उनसे जान पहचान करने में मसरूफ़ रहा यहाँ तक कि मैं बुढ़ापे की उम्र को पहुँच गया।*
- *तो मेरी जिनसे भी वाक़फ़ियत हुई मैंने उनकी बुराई ही की, अल्लाह तआला उनको नेक जज़ा दे जिनको मैं नहीं जानता।*
- *वह ग़लती जिसकी वजह से मेरी मज़म्मत ज़्यादा की जाए यही है कि मैंने उनको दोस्त बनाया जो इन्साफ़ व वफ़ा से अनजान थे।*

एक मकान के दरवाज़े पर यह अल्फ़ाज़ लिखे थे:-

अल्लाह तआला उनको जज़ाए ख़ैर दे जिनको हम नहीं जानते मगर उन्हें न दे जो हमारे दोस्त हैं क्योंकि हमें जो तकलीफ़ पहुँची है वह दोस्तों ही से पहुँची है

यह दो शेर भी इसी सिलसिले में कहे गए हैं जिनका तर्जुमा यह है-

- *अल्लाह तआला उसको जज़ाए ख़ैर दे जिसकी हमसे कोई दोस्ती और कोई पहचान नहीं।*
- *क्योंकि हमें जो भी ग़म या तकलीफ़ पहुँची है वह अपने दोस्तों और पहचान वालों ही से पहुँची है।*

हज़रत फ़ुज़ैलؒ ने फ़रमाया है- *"इस नाज़ुक दौर में ज़बान की हिफ़ाज़त कर अपने मकान को पोशीदा रख अपने दिल की इस्लाह कर, नेक काम इख़्तियार कर और बुराई से बच।"*

हज़रत सुफ़यान सौरी رحمة الله عليه **ने** अपने ज़माने के मुताल्लिक़ फ़रमाया: *"यह ख़ामोशी इख़्तियार करने का ज़माना है, इस वक़्त घर की चारदीवारी में रहने ही में अमन है और मामूली रोज़ी पर गुज़र बसर करना ही बेहतर यहाँ तक कि मौत आ जाए।"*

हज़रत दाऊद ताई رحمة الله عليه **का बयान है-** *"दुनिया में रोज़े से रह, आख़िरत में जा कर यह रोज़ा इफ़्तार कर और लोगों से इस तरह दूर भाग जिस तरह शेर से भागता है।"*

हज़रत अबू उबैदह رحمة الله عليه **ने फ़रमाया**: *"मैंने जिस अक़्लमन्द को भी देखा और उससे गुफ़्तगू की उसने आख़िर यही कहा कि अगर तू इस बात को पसन्द करता है कि लोगों में तेरी जान पहचान न हो तो फिर तेरा अल्लाह के यहाँ कुछ मक़ाम है"।*

इस क़िस्म की रिवायात इस क़द्र ज़्यादा हैं कि इस मुख़्तसर किताब में उनके बयान की गुंजाइश नहीं हमने इस क़िस्म की रिवायात को एक मुस्तक़िल किताब में जमा कर दिया है जिसका नाम '**अख़लाक़ुल अबरार व निजातु मिनल अशरार**' रखा है, उसको पढ़ा करो, तुम्हें उसमें अजीब व ग़रीब मालूमात मिलेगी और अक़्लमन्द को तो इशारा ही काफ़ी है। वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

दूसरा सबब जिसकी वजह से मख़लूक़ से जुदाई ज़रूरी है, यह है कि लोगों में घुल मिल कर रहने से तुम्हारी इबादत व ताअत तबाह व बर्बाद हो जाएगी, इल्ला माशाअल्लाह वह इस तरह कि लोगों में रह कर तुम रिया ख़ुदसिताई और ज़ीनत यानी दिखावा, अपनी तारीफ़ और बनाव सिंगार में मुब्तला हो जाओगे, हज़रत याह्या इब्ने मुआज़ राज़ी رحمة الله عليه ने क्या ही बेहतर फ़रमाया, आप फ़रमाते हैं ***'लोगों का देखना रिया की चटाई है'***

बुज़ुर्गों ने रिया के ख़ौफ़ से लोगों से मुलाक़ात और एक दूसरे की ज़ियारत तर्क कर दी थी। रिवायत में ज़िक्र है कि हरिम बिन हय्यान رحمة الله عليه ने हज़रत उवैस क़रनी رضي الله عنه से अर्ज़ किया 'हमें मुलाक़ात व ज़ियारत के ज़रिए अपने साथ मिलाए रखिए' तो आप ने फ़रमाया *'मैंने तुझे इन दो से भी ज़्यादा नफ़ा देने वाली चीज़ के ज़रिए अपने साथ मिला रखा है और वह तेरी ग़ैर मौजूदगी में तेरे हक़ में दुआए ख़ैर है, मुलाक़ात व ज़ियारत ठीक नहीं क्योंकि इससे रिया व ज़ीनत पैदा होती हैं।'*

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम رحمة الله عليه हज़रत सुलैमान ख़व्वास رحمة الله عليه के शहर में तशरीफ़ लाए तो लोगों ने हज़रत सुलैमान رحمة الله عليه को कहा कि आप हज़रत

इब्राहीम ﷺ से मुलाक़ात को नहीं जाते? तो आपने जवाब दिया 'हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम ﷺ की बजाए मैं सरकश शैतान से मुलाक़ात करने को ज़्यादा पसन्द करता हूँ' लोगों ने ऐसे जवाब पर बुरा माना तो आपने फ़रमाया 'मुझे इस चीज़ का डर है कि जब मैं उनसे मुलाक़ात करूँगा तो उनके साथ बातचीत और सलाम दुआ में तकल्लुफ़ और तज़य्युन (संवरना) करूँगा लेकिन अगर शैतान को देख पाऊँ तो उससे बचने और पनाह की तदबीर करूँगा।'

एक दफ़ा मेरे (इमाम ग़ज़ाली ﷺ के) शैख़ की किसी आरिफ़े कामिल से मुलाक़ात हो गई, देर तक दोनों एक दूसरे से बातचीत करते रहे फिर बातचीत के बाद एक दूसरे के लिए दुआ की। अलैहिदा होते वक़्त मेरे शैख़ ने उस आरिफ़ से मुख़ातिब हो कर कहा 'मैं आज की मजलिस को बेहतरीन मजलिस तसव्वुर करता हूँ' उस आरिफ़ ने जवाब में मेरे शैख़ से कहा 'मैं इसे एक ख़तरनाक मजलिस तसव्वुर करता हूँ क्या बातचीत के दौरान हम अपनी अपनी बातचीत को मुज़य्यन (सजाना) और अपने अपने उलूम को एक दूसरे पर ज़ाहिर करने की कोशिश नहीं कर रहे थे और इस तरह क्या हम रिया व तकल्लुफ़ में मुब्तला नहीं हो गए थे?' यह सुन कर मेरे शैख़ रो पड़े और इतने रोए कि आपको ग़शी आ गई। यह वाक़िया पेश आने के बाद आप अक्सर ये अशआर दोहराया करते थे (जिनका तर्जुमा पेश है)

- *हमारी सोच और रवय्ये पर अफ़सोस कि हक़ीक़ी अद्ल (इन्साफ़) के वक़्त यह इन्तेहाई ख़ौफ़नाक नतीजों का सबब होगा।*
- *मैं अल्लाह तआला की नाफ़रमानी कर के उसके अज़ाब को चैलेंज कर रहा हूँ हालांकि उस ग़फ़ूरुर रहीम के सिवा मुझ पर कोई रहम करने वाला भी नहीं।*
- *अल्लाह मैं अपने गुनाहों की माफ़ी चाहता हूँ अगरचे मैंने गुनाह कर के इन्तेहाई ज़्यादती की है मगर मैं इस पर शर्मिन्दा ज़रूर हूँ।*
- *जब अंधेरी रात कायनात में अंधेरा फैला देती है उस वक़्त मैं दरगाहे ख़ुदावन्दी में आह व ज़ारी शुरू कर देता हूँ जिसने मेरे गुनाहों पर पर्दा डाल रखा है।*

ऊपर गुज़रा ज़िक्र उन लोगों की मुलाक़ात का हाल है जो ज़ोहद व रियाज़त में अपनी मिसाल आप थे, तो दुनियादार फ़ुज़ूल व बेहूदा लोगों की आपस में मुलाक़ात के नताइज जो होंगे उनका अन्दाज़ा तो ख़ुद कर लो।

ऐ अज़ीज़! ज़माना एतक़ादी व अमली फ़सादात का गहवारा बन चुका है, लोग नुक़सान पहुँचाने में हद से गुज़र गए हैं, वो तुझे अज़ाब से बाज़ रहने की पूरी कोशिश करेंगे, उनमें रहते हुए तू आख़िरत के लिए कुछ नहीं कर सकेगा बल्कि तेरी पिछली नेकियाँ भी सब की सब ख़त्म हो जायेंगी, इसलिए गोशानशीनी के अलावा तेरे लिए कोई चारा नहीं। (ख़ुदा इस ज़माने के शर से अपनी पनाह में रखे।)

सवाल: किन किन लोगों पर गोशानशीनी लाज़िम है? और गोशानशीनी के ऐतबार से लोग कितनी तरह के हैं? और गोशानशीनी की हद क्या है जिस पर निगाह रखना ज़रूरी है?

जवाब: ऐ अज़ीज़! तू जान ले कि गोशानशीनी के ऐतबार से लोग दो तबक़ों में तक़सीम हो सकते हैं:-

पहला तबक़ा वह जो न आलिम हैं और न हाकिम ऐसे लोगों की तरफ़ मख़लूक़ मोहताज नहीं, तो ऐसे लोगों को चाहिए कि मख़लूक़ से अलग और अलैहिदा रहें, सिर्फ़ जुमा, जमाअत, ईद, हज या दीनी मजलिस में शिरकत करें या रोज़गार के लिए ज़रूरत के मुताबिक़ मेल जोल करें। इसके अलावा लोगों से दूर रहें किसी से जान- पहचान पैदा न करें और अगर इस क़िस्म का आदमी किसी मसलहत की बिना पर लोगों से बिल्कुल ही अलैहिदा रहना चाहे और किसी दीनी या दुनियावी काम में शिरकत न करना चाहे तो उस शख़्स के गोशानशीनी इख़्तियार करने के लिए नीचे लिखी किसी बात में से किसी एक बात का होना ज़रूरी है।

1. *या तो आबादी से इतना दूर चला जाए कि जुमा व जमाअत वग़ैरा के अहकाम उस पर लाज़िम न रहें जैसे पहाड़ों की चोटियाँ या दूर दराज़ वादियाँ। बाज़ बुज़ुर्ग जो इबादत के लिए दूर दराज़ मक़ामात पर चले गए उनके जाने की एक वजह शायद यही थी।*
2. *दूसरी बात यह है कि ऐसे शख़्स को इस बात का यक़ीन होना चाहिए कि लोगों से मामूली मेल जोल से भी नुक़सान पहुँचेगा तो इस बिना*

पर वह जुमा व जमाअत वग़ैरा में भी शरीक न हो तो वह माज़ूर है और मैंने ख़ुद मक्का मुअज़्ज़मा में (अल्लाह उसे हर हादसे से महफ़ूज़ रखे) बाज़ ऐसे मशाइख़ को देखा है जो बैतुल्लाह शरीफ़ के बिल्कुल क़रीब और तन्दरुस्त होने के बावजूद नमाज़ की जमाअत में शरीक नहीं होते थे।

मैंने एक दिन एक बुज़ुर्ग से इसकी वजह मालूम की तो उसने वही वजह बयान की जिसकी तरफ़ हमने इशारा किया है कि मेल जोल से नुक़सान पहुँचता है। मैं कहता हूँ माज़ूर पर कोई अलामत नहीं और अल्लाह तआला हर एक के उज़्र (मजबूरी) को ख़ूब जानता है क्योंकि वह सीनों के राज़ जानता है लेकिन ज़्यादा बेहतर और मुनासिब यही है कि क़रीब रहते हुए जुमा, जमाअत वग़ैरा में शिरकत करे और उसके अलावा अलैहिदा रहे अगर वह दीनी कामों में भी शरीक होना नहीं चाहता तो आबादी से इतनी दूर रहना इख़्तियार करे कि जुमा व जमाअत वग़ैरा उस पर लाज़िम न रहें, लेकिन जो शख़्स रहता है तो शहर या आबादी में मगर जुमा व जमाअत वग़ैरा में शरीक न हो तो उसका ऐसा करना ठीक नहीं।

दूसरे तबक़े में वो लोग हैं जो दीन के ऐतबार से लोगों के रहनुमा हों, शरीअत के ख़िलाफ़ कामों का रद्द करने और हक़ को साबित करने में मसरूफ़ हों और अपनी बातचीत और किरदार से दीन की तबलीग़ में मशग़ूल हों, तो उन उल्मा-ए-किराम को शरीअत ने गोशानशीनी की इजाज़त नहीं दी बल्कि ऐसे हज़रात पर लाज़िम है कि आम लोगों में रह कर दीन की नश्र व इशाअत करें। इस्लाम की मुख़ालिफ़त करने वालों और झूठे बदमज़हब फ़िरकों के शुबहात के जवाब दें और अल्लाह के अहकाम को फैलाने में जी जान से लगे रहें क्योंकि नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया कि: ***"जब ख़िलाफ़े शरा उमूर (काम) आम हो जायें और आलिमे दीन ख़ामोश रहें तो ऐसे आलिम पर ख़ुदा की लानत"***।

ख़ुलासा यह है कि दीनी पेशवा के लिए किसी सूरत में गोशानशीनी सही नहीं। उस्ताद अबूबक्र इब्ने फ़ौरक رحمة الله عليه के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि जब आपने इबादत की ग़र्ज़ से लोगों से जुदाई का इरादा फ़रमाया और पहाड़ों में पहुँच गए तो एक आवाज़ देने वाले ने ग़ैब से आवाज़ दी "*ऐ अबूबक्र जब तू*

मख़लूक़ के लिए अल्लाह तआला की हुज्जत व दलील है तो तू उन्हें छोड़ कर यहाँ आया है''

और मुझसे मामून बिन अहमद ने बयान किया कि उस्ताद अबू इस्हाक़ इस्फ़राएनी ﷺ ने *लेबनान* के पहाड़ों के गोशानशीनों को फ़रमाया *''ऐ घास फूस पर गुज़ारा करने वालो! तुम सरकारे दो आलम ﷺ की उम्मत को गुमराहों के चंगुल में छोड़ कर ख़ुद यहाँ आ गए हो?'* तो उन्होंने जवाब दिया *'हमें लोगों में रहने की ताक़त नहीं और ख़ुदा ने आपको क़ुव्वत दी है इसलिए आप रह सकते हैं''* इसके बाद आपने एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई जिसका नाम ***'अल-जामे लिल-ख़फ़ी वल-जली'*** रखा।

लेकिन यह उल्मा-ए-किराम जिस तरह इल्म में बेमिसाल थे और आख़िरत की बातों की पहचान भी उन्हें ख़ूब थी। ऐ अज़ीज़ जान ले कि ऐसे आलिम में दो चीज़ों का होना ज़रूरी है एक तो सब्र, हिल्म (बर्दाश्त), अपने नफ़्स का मुहासबा (घिराव) और हमेशा ख़ुदा तआला से सलामती का तलबगार रहना। दूसरा यह कि बातिन के ऐतबार से लोगों से जुदा रहे अगरचे ज़ाहिरी जिस्म के ऐतबार से वह उनके साथ रहे, अगर लोग उससे कलाम करें तो उनसे कलाम करे, वह उसकी ज़ियारत को आयें तो उनके मर्तबे के मुताबिक़ उनका शुक्रिया और एहतराम करे और अगर लोग इससे भी बचें और ख़ामोशी बरतें तो वह इसे ग़नीमत समझे। नेक बात में उनका हाथ बटाये और अगर वो बुराई या शरारत की तरफ़ माइल हों तो उनकी मुख़ालफ़त करे और उनसे अलग रहे और अगर लोग उसकी डाँट डपट से बुराई से बाज़ आ सकते हों तो उन्हें मुनासिब डाँट डपट भी करे और जो हुक़ूक़ उनमें रहने की वजह से उस पर लाज़िम आते हैं उनको अदा करता रहे जैसे कभी कभी उनसे मेल व मुलाक़ात, बीमारों की इयादत और अपनी हैसियत के मुताबिक़ उनकी ज़रूरत पूरी करना मगर उनसे किसी क़िस्म का मुतालबा न करे और हो सके तो उन पर ख़र्च करे उनसे कोई चीज़ न ले, जो तकलीफ़ उनसे पहुँचे उसे बर्दाश्त करे और हर एक से अच्छे तरीक़े से मिले। अपने आपको उनके सामने बेपरवाह ज़ाहिर करे, अपनी हाजत उनसे पोशीदा रखे और उनका ख़ुद इन्तेज़ाम करे, फिर इन बातों के साथ साथ नफ़्ली इबादत के लिए भी चौबीस घंटों में कोई वक़्त ख़ास करे ताकि अपने ज़ाहिर और बातिन की इस्लाह भी

जारी रख सके जैसा कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म ﵁ ने फ़रमाया *"अगर रात को सोता हूँ तो अपनी आख़िरत बर्बाद करता हूँ और अगर दिन को नींद करूँ तो रियाया तबाह होगी, तो इन दो बातों के होते हुए मैं किस तरह आराम का वक़्त निकाल सकता हूँ"।*

इसी मज़मून के मुवाफ़िक़ मैंने चन्द शेर कहे जिनका तर्जुमा पेश है:-

- *अगर तुम अपने अन्दर बुज़ुर्गों की सीरत पैदा करने की आरज़ू रखते हो तो ज़माने की मुसीबतें और तकलीफ़ें बर्दाश्त करके अपने अन्दर नर्मी और तवाज़ो को मज़बूत करो।*
- *हर तकलीफ़ के वक़्त नफ़्स में संजीदगी और बर्दाश्त की ताक़त पैदा करो, दिल को साबिर बनाओ अगरचे वह इससे रोकने वाला है।*
- *तुम्हारी ज़बान मुँह में बन्द रहना चाहिए और तुम्हारी आँखें लगाम में रहनी चाहिए, तुम्हारा मामला लोगों से पोशीदा हो।*
- *तुम्हारा कोई चर्चा न हो, तुम्हारा दरवाज़ा बन्द हो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुश हो और पेट भूखा हो।*
- *तुम्हारा दिल इश्क़े मौला से ज़ख़्मी हो, तुम्हारा बाज़ार बेरौनक़ हो तुम्हारे कमालात छुपे हुए हों और तुम्हारे मुताल्लिक़ तअन (ताना) व तशनी यानी मलामत आम हो।*
- *हमेशा ज़माना और ज़माने वालों से मुसीबतों और तकलीफ़ों के घूँट पीते रहो, तुम्हारा दिल इताअत के शौक़ से लबरेज़ हो।*
- *दिन को बग़ैर एहसान जताए नेक कामों में लोगों के हाथ बटाते रहो और रात दीदारे इलाही के शौक़ में काट दो, और इस ज़ौक़ व शौक़ का किसी को पता न हो।*
- *तुम इन मौजूदा रातों की क़द्र क़रो, उनको उस सख़्त दिन का ज़रिया बनाओ जब हर क़िस्म की कामयाबी के ज़रिये नहीं होंगे।*

तो आलिमे दीन पर लाज़िम है कि ज़ाहिर में तो लोगों से मिला रहे मगर दिल से उनसे बिल्कुल अलग रहे और ख़ुदा की क़सम! यह बहुत मुश्किल और तल्ख़ है, इसी के मुताल्लिक़ हमारे शैख़ ﵀ ने फ़रमाया- *ऐ मेरे अज़ीज़! ज़माने वालों के साथ ज़िन्दगी तो गुज़ार मगर किसी बात में उनकी इक़्तिदा (पैरवी) न कर* फिर मेरे शैख़ ﵀ ने फ़रमाया इस तरह की- *"ज़िन्दगी बहुत मुश्किल और तल्ख़ है।"*

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ﷺ से मरवी है- *"लोगों से ज़रूरत के मुताबिक़ मिलना जुलना और लेन देन रखो मगर अपने दीन को नुक़सान से बचाए रखो।"*

मैं तो कहता हूँ जब फ़ितनों की लहरें बहुत ज़ोरों पर हों, जब हक़ का ज़वाल हो रहा हो, जब लोग दीन से मुँह फेर कर दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह हो जायें और किसी मोमिन की क़ुराबत (नज़दीकी) का लिहाज़ न करें, जब लोग आलिमे दीन से नफ़रत करें उसे न चाहें और दीन के मामले में उसकी मदद न करें और फ़ितने अवाम व ख़वास में फैल जायें, तो ऐसे आलम में आलिम अगर गोशानशीनी व जुदाई इख़्तियार कर ले और अपने इल्म को फैलाना तर्क कर दे तो वह माज़ूर हैं और मैं तो यही कहता हूँ कि हुज़ूर ﷺ ने जिस ज़माने में गोशानशीनी का हुक्म दिया था वह हमारा ही ज़माना है क्योंकि इस ज़माने में वो सब बातें मौजूद हैं जिनकी वजह से गोशानशीनी ज़रूरी हो जाती है और हक़ीक़तन मददगार अल्लाह तआला ही है उस पर भरोसा करना चाहिए।

यह है गोशनशीनी का मुख़्तसर और ज़रूरी बयान, इसको अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लो क्योंकि इसमें ग़लतफ़हमी का बहुत बड़ा ख़तरा है और गोशानशीनी के ज़माने में इससे गुरेज़ करने में सख़्त नुक़सान है। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

सवाल: नबी-ए-करीम ﷺ ने तो यह हुक्म दिया है कि- ***"तुम पर जमाअत में रहना लाज़िम है क्योंकि अल्लाह का दस्ते इनायत जमाअत पर ही है और बिलाशुबा शैतान इन्सान के हक़ में भेड़िये की तरह है जो रेवड़ से जुदा होने वाली या आगे निकल जाने वाली या दूर जाने वाली या अकेली रह जाने वाली बकरी को उड़ा ले जाता है।***

(शोअबुल ईमान)

इसी तरह हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया- ***"तन्हा आदमी के साथ शैतान होता है और जब दो हो जायें तो उनके क़रीब नहीं आता।"*** (सुनने कुबरा)

जवाब: जहाँ सरकारे दो आलम ﷺ ने जमाअत में रहने की ताकीद फ़रमाई है वहाँ यह भी फ़रमाया है कि अपने घर ही में रह कर तन्हाई इख़्तियार कर और आम मेल जोल से सख़्त इज्तेनाब (बचाव) कर। (सुनन

इब्ने दाऊद) -- तो इस हदीस में हुज़ूरﷺ ने अवाम से अलग रहने का हुक्म दिया है और इस हदीस और पहली दो के दरमियान दर हक़ीक़त कोई टकराव या इख़्तिलाफ़ नहीं, हम तौफ़ीक़े इलाही से इनमें मेल अर्ज़ करते हैं:

हुज़ूर ﷺ के इरशाद में तीन एहतेमाल हैं:

1. दीन और अहकाम में जमाअत से अलैहिदा रहने को मना किया गया है क्योंकि तमाम उम्मत गुमराही पर एक राय नहीं हो सकती तो इज्माई मसाइल (वो मसअले जिन पर पूरी उम्मत के मुसलमानों के मुज्तहिदीन एक राय हों) और बुनियादी अहकाम में जम्हूर (उल्मा की अकसरियत) से जुदाई बातिल और गुमराही है लेकिन अगर कोई शख़्स अपने दीन की हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से तन्हाई इख़्तियार करे तो इस हदीस में इसकी मुमानअत नहीं यानी तन्हाई इख़्तियार करना मना नहीं।
2. आम मुसलमानों से जुमा व बाजमाअत नमाज़ वग़ैरा में जुदाई इख़्तियार न की जाए क्योंकि मिल कर नमाज़े जुमा अदा करने में दीन को तक़वियत पहुँचती है, इस्लाम का कमाल ज़ाहिर होता है और कुफ़्फ़ार व मुलहिदीन (बेदीन लोग) मुसलमानों का इज्तिमा देख कर जलते हैं और जुमा व जमाअत वग़ैरा इस्लामी इज्तिमाआत पर अल्लाह तआला की बरकतें और रहमतें नाज़िल होती हैं, इसीलिए हमने कहा है कि गोशानशीन शख़्स पर लाज़िम है कि जुमा व जमाअत वग़ैरा दीनी इज्तिमाआत में आम मुसलमानों के साथ शरीक रहे और इसके सिवा आम ताल्लुक़ात और मेल जोल से परहेज़ करे क्योंकि आम मेल जोल में बहुत आफ़तें और नुक़सानात हैं।
3. तीसरा एहतेमाल यह है कि हुज़ूरﷺ का यह इरशाद नेक ज़माने में कमज़ोर एतेक़ाद वाले शख़्स के लिए है लेकिन मज़बूत एतेक़ाद साहिबे बसीरत शख़्स जब ऐसे ज़माने को पाए जिसमें फ़ितना व फ़साद हो और जिससे हुज़ूरﷺ ने डराया है और जिसमें गोशानशीनी का हुक्म दिया है, तो उसके लिए गोशानशीनी ख़लत मिलत और मेल जोल से बेहतर है ताकि आफ़तों और फ़सादों से महफ़ूज़ रहे लेकिन मुनासिब यह है कि दीनी इज्तिमाआत और ख़ैर के कामों में शरीक होता रहे और अगर लोगों से पूरी तरह अलैहदगी रखना चाहे तो

किसी पहाड़ की चोटी या दूर वीराने में निकल जाए जिससे अपना दीन महफ़ूज़ रख सके।

मैं कहता हूँ कि ऐसे शख़्स को भी चाहिए कि दीनी इज्तिमाआत और ख़ैर के कामों में ज़रूर शरीक हो ताकि उसका यह सवाब बर्बाद न हो और इस्लामी इज्तिमाआत अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत अहमियत रखते हैं अगरचे लोगों में फ़साद और दीन से ऐराज़ (दूरी) पाया जाता हो और हमने अब्दाल (एक बहुत बड़े मर्तबे का वली) के मुताल्लिक़ सुना है कि वो जहाँ भी हों ऐसे इज्तिमाआत में शिरकत करते हैं और ये लोग ज़मीन में चलते फिरते रहते हैं और तमाम ज़मीन उनके लिए एक क़दम है। रिवायात में आया है कि अब्दाल के लिए ज़मीन सिमट जाती है, उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से मुअज़्ज़ज़ ख़िताबात, बरकतें, और तरह तरह की रूहानी नेअमतें अता होती रहती हैं, उन अब्दाल को इस बड़ी कामयाबी पर मुबारक हो, और हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला आख़िरत से ग़फ़लत बरतने वालों के हालात भी अपनी रहमते कामिला से दुरुस्त करे और जो अपनी आख़िरत दुरुस्त करने में मसरूफ़ हैं उन्हें मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचाए, मैंने (यानी इमाम ग़ज़ाली رحمة الله عليه) अपनी हालते ज़ार के मुताल्लिक़ ये अशआर कहे हैं जिनका तर्जुमा पेश है:-

- *जद्दोजहद करने वाले कामयाब हो गए, उनको वस्ल (अल्लाह पाक के क़रीब होने की) की सआदत नसीब हो गई और दोस्त दोस्तों की मदद से मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच गए। और हम इसी तरह तज़ब्ज़ुब व हैरानी के आलम में खड़े हैं और हिज्रो विसाल के दरमियान मुअल्लक़ हैं।*
- *तुम्हारा हाल तो यह है कि रोज़ बरोज़ ख़ुदा से दूर हो रहे हो, और उम्मीद यह रखते हो कि वह तुम्हें अपना क़ुर्ब नसीब करे। इन्सान की अक़्ल ऐसी उम्मीद को अक़्ल में न आने वाली बात समझती है।*
- *ऐ अल्लाह हमें अपना शरबते विसाल चखा यानी हमें अपना क़ुर्बे ख़ास अता फ़रमा जो हर क़िस्म का ग़म दूर करता है और सवाब की तरफ़ रहनुमाई करता है।*
- *ऐ हमारी ज़ाहिरी बातिनी बीमारियों के तबीब! ऐ हमारे ज़ख़्मों के मरहम और ऐ हर क़िस्म की बीमारी से निजात देने वाले।*

- *मैं नहीं जानता कि मेरी बीमारियों की दवा क्या है या किस चीज़ के ज़रिए रोज़े क़ियामत मेरी निजात होगी।*

हम इस बयान को यहीं ख़त्म करते हैं और गोशानशीनी के मसाइल की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं।

सवाल: नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया है कि- ***"मेरी उम्मत की गोशानशीनी यही है कि वो मस्जिदों को अपनी निशस्तगाह (बैठने का ठिकाना) बनाये***। (मअरफ़ते सहाबा)

इस हदीस में लोगों से अलैहिदा होकर किसी पहाड़ या जंगल में सुकूनत इख़्तियार करने से रोका गया है और लोगों से जुदाई इख़्तियार करने पर मलामत की गई है और तुम कहते हो कि लोगों से अलैहिदा होकर कहीं दूर चला जाए?

जवाब: हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का इरशादे गिरामी अच्छे ज़माने के लिए है ना कि फ़ितना व फ़साद के ज़माने के लिए, जैसा कि हम ज़िक्र कर चुके हैं, ऊपर गुज़री हदीस के यह मअना भी हो सकते हैं कि जो शख़्स मस्जिद को अपनी निशस्तगाह बना ले, लोगों से मेल मिलाप छोड़ दे और उनके मामलात में दख़्ल देना छोड़ दे तो वह अगरचे उनमें है मगर हक़ीक़त में उनसे जुदा है, गोशानशीनी का मक़सद भी यही है सिर्फ़ मकान या जिस्म की जुदाई मक़सूद नहीं, इस नुकते को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर ख़ुदा तुझ पर रहम करे। हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम رحمة الله عليه ने नीचे लिखी बात में इसी तरफ़ इशारा फ़रमाया है, आप फ़रमाते हैं *"तुम लोगों से बज़ाहिर मिले जुले रहो मगर तुम्हारी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह तआला के साथ हो, लोगों से तुम्हारा दिली लगाव न हो।"*

सवाल: दीनी मदरसों के मुदर्रिसीन और शहरों में रहने वाले सूफ़ी लोगों के मुताल्लिक़ तुम्हारी क्या राय है क्योंकि वो तो गोशानशीनी पर अमल नहीं करते हैं?

जवाब: मुदर्रिसीन का इल्मे दीन सिखाना और सूफ़ियों की मजलिसें बहुत अच्छी चीज़ें हैं, इसमें दो फ़ायदे हैं। एक क़ल्बी (दिली) तौर पर लोगों से जुदाई पर उनकी मजलिसों और उनके मामलात में शिरकत और इख़्तलात

(मेलजोल) से परहेज़ और दूसरा जुमा जमाअत और दूसरे दीनी कामों में शिरकत। तो इन लोगों को वही सलामती हासिल होगी जो लोगों से बिल्कुल अलैहिदा रहने वालों को नसीब होती है, सलामती के साथ साथ इन हज़रात से एक और बहुत बड़ा फ़ायदा हासिल होता है और वह यह कि अवाम इनकी पैरवी करते हैं, इनकी बरकत से फ़ैज़याब होते हैं और इनसे दीन के मुताल्लिक़ क़ीमती नसीहतें हासिल करते हैं, तो इन हज़रात का हाल दुरुस्त रहता है उनका इल्म व अमल की पुख़्तगी की बदौलत सुकून व इत्मिनान मयस्सर रहता है। इसी फ़ैज़ को हासिल करने के लिए अक्सर आरेफ़ीन (अल्लाह तआला की मारिफ़त रखने वाले औलियाए किराम) लोगों में रहते हैं। लोगों को उनके हुस्ने अख़लाक़ की वजह से कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचती थी बल्कि तकलीफ़ की बजाय उनसे फ़ायदा पहुँचता था, अवाम उनके आदाब व रस्मों की पैरवी करते थे। इस तरह स़ालेह़ीन के अख़लाक़ लोगों में इस्लामी अख़लाक़ को मज़बूत करने का ज़रिया बने रहे।

ज़ाहिर है कि **क़ाल** यानी कहने के बजाय **हाल** यानी नेक आमाल को करके दिखाने की तबलीग़ ज़्यादा असरदार होती है यानी प्रैक्टिकल का ज़्यादा असर होता है, आरेफ़ीन और स़ालेहीन का अवाम में रहना लोगों के किरदार को अच्छा बनाने में ज़्यादा फ़ायदेमन्द होता है।

सवाल: वह मुरीद जो तसव्वुफ़ के ज़्यादातर रास्ते तय कर चुका हो उसे उन मुरीदीन जो अभी तसव्वुफ़ की राह के शुरूआती दौर में हैं, के साथ रहने की इजाज़त है या नहीं?

जवाब: वह मुब्तदी (वह मुरीद जो अभी तसव्वुफ़ की राह के शुरूआती दौर में है) अगर सल्फ़ स़ालेहीन के आदाब, उनकी सीरत और उनकी रस्मों पर दिल से क़ायम हों तो उनके साथ रहने में हर्ज नहीं वह दीन में तुम्हारे भाई और साथी हैं और इबादत के सिलसिले में तुम्हारे मददगार हैं, ऐसों से अलैहिदा होना दुरुस्त नहीं, ऐसे मुब्तदी लेबनान के पहाड़ों के तारिकुद्दुनिया (दुनिया से किनारा कर लेने वाले) ज़ाहिदों की तरह हैं। हमने सुना है कि लेबनान के ज़ाहिदों में कई ऐसे गिरोह हैं जो तक़्वा और नेकी में मदद करते हैं और हक़ व सब्र की तल्क़ीन करते हैं हाँ वह मुब्तदी जो बुज़ुर्गों की सीरत, उनकी पाकीज़ा रस्मों और उनके पसन्दीदा तरीक़े छोड़ चुके हों और नामुनासिब ग़ैर मुताल्लिक़

और बेफ़ायदा कामों को उन्होंने अपनी पहचान बना लिया हो तो उनसे भी जुदाई इसी तरह ज़रूरी है जिस तरह दूसरे आम लोगों से। जाहिलों के तबक़े में घिरे हुए सच्चे मुरीद को चाहिए कि अपने घर के किसी कोने में बैठ जाये, अपनी ज़बान को बुराई से रोके रखे, नेक कामों में उनके साथ शमिल रहे, मगर उनकी हालतों और उनकी आफ़तों से अपने आपको बचाए रखे, इस तरह वह सच्चा मुरीद भी सही मअना में गोशानशीन होगा।

सवाल: अगर कोई रियाज़त व मुजाहिदा करने वाला मुब्तदी उल्मा-ए-किराम के मदरसों और सूफ़िया-ए-किराम की मजलिसों से निकल कर किसी तन्हा मक़ाम पर अपने नफ़्स की इस्लाह और दूसरों की आफ़तों से बचने की ग़र्ज़ से चला जाए तो क्या उसका जाना दुरुस्त है?

जवाब: जानना चाहिए कि बाअमल उल्मा की दीनी दर्सगाहें और आख़िरत के तालिब सूफ़िया-ए-किराम की मुक़द्दस ख़ानक़ाहें ऐसे मुरीद के लिए महफ़ूज़ क़िले की हैसियत रखती हैं मुब्तदी उनमें रह कर दीन के डाकूओं और चोरों से महफ़ूज़ रह सकता है। इन दर्सगाहों और ख़ानक़ाहों के बाहर का ख़ित्ता ऐसे सहरा की तरह है, जहाँ हर वक़्त शैतानी लश्कर घूमते रहते हों जो क़िले से बाहर रहने वाले को हलाक कर देते या गिरफ़्तार कर लेते हों, तो जो रियाज़त व मुजाहिदा करने वाला मुब्तदी महफ़ूज़ क़िले से निकल कर चारों तरफ़ से शैतानी लश्करों के नर्ग़े में आ जाए उसका जो हश्र होगा ज़ाहिर है इसलिए ऐसे मुब्तदी के लिए इन मदरसों व मजलिसों से बाहर क़दम रखना किसी तरह भी ख़तरे से ख़ाली नहीं लेकिन वह शख़्स जो कामिल (मुकम्मल) हो, ख़ूब ईमानी बसीरत रखता हो, दीनी तौर पर पुख़्ता और मज़बूत हो उसके लिए क़िला और सहरा बराबर है, शैतानी लश्कर हरगिज़ उस पर ग़ालिब नहीं आ सकते और न वह उनके शर से रोब में आ सकता है अगरचे ऐसे शख़्स के लिए भी हिफ़ाज़ती क़िले में रहना ही बेहतर है इसलिए कि दुश्मनों के इत्तेफ़ाक़ी और अचानक हमलों से बेख़ौफ़ होना दुरुस्त नहीं ग़र्ज़ यह कि अल्लाह वालों के साथ रहना, उनकी सोहबतों की मशक़्क़तें बर्दाश्त करना ही बेहतर है और हर हाल में उन्हीं से ख़ैर की तलब करना अच्छा है और अपनी नेक हालत पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले पर गोशानशीनी नहीं मगर बेहतर ज़रूर है।

ये बयान किए गए गोशानशीनी के मसाइल पर तुम अमल करोगे तो इन्शा अल्लाह तआला आफ़तों से महफ़ूज़ रहोगे।

सवाल: दीनी भाइयों की ज़ियारत, अपने मुख़्लिस दोस्तों से मुलाक़ात और उनके साथ बातचीत करने का क्या हुक्म है?

जवाब: दीनी भाइयों की ज़ियारत व मुलाक़ात जब कि वो नेक और बुज़ुर्ग हों एक अच्छी चीज़ है ऐसे लोगों की ज़ियारत से इबादत में क़ुव्वत मुआमलात में बरकत, ख़ुदा का क़ुर्ब और दिल की इस्लाह होती है और दूसरे बहुत से फ़ायदे हासिल होते हैं लेकिन दो बातों का लिहाज़ बहुत ज़रूरी है:-

1. हद से ज़्यादा न बढ़ क्योंकि नबी-ए-करीमﷺ ने हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ से फ़रमाया "***हमारी ज़ियारत के लिए नाग़ा करके आया करो ताकि महब्बत ज़्यादा हो***" (शोअबुल ईमान)
2. रियाकारी, अपने आपको आरास्ता करने, लग़व गुफ़्तगू यानी बेकार की बातें ग़ीबत और बेफ़ायदा बातों से पूरे तौर पर बचा जाए, वर्ना फ़ायदे के बजाय नुक़सान होगा।

हिकायत:-*एक दफ़ा हज़रत फ़ुज़ैल और सुफ़यान सौरी रहिमुहुमल्लाहु तआला की आपस में मुलाक़ात हुई, दोनों बुज़ुर्ग देर तक एक दूसरे से बातचीत करते रहे फिर दोनों रो पड़े आख़िर में हज़रत सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ ने कहा: 'मैं आज की इस सोहबत को बेहतरीन सोहबत तसव्वुर करता हूँ' हज़रत फ़ुज़ैल رحمۃ اللہ علیہ ने फ़ामाया 'मैं तो इसे एक ख़तरनाक सोहबत ख़्याल करता हूँ। हज़रत सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ ने कहा क्यूँ? हज़रत फ़ुज़ैल رحمۃ اللہ علیہ ने जवाब दिया 'क्या हम दोनों अपनी बातों को मुज़य्यन और आरास्ता नहीं कर रहे थे। और क्या हम तकल्लुफ़ और रिया में मुब्तला नहीं थे? हज़रत सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ यह सुन कर रो पड़े।*

तो चाहिए कि अहबाब की ज़ियारत व मुलाक़ात में मियानारवी रखे यानी कुछ कुछ दिन बाद मिले रोज़ रोज़ नहीं, एहतियात को मलहूज़ रखे और रिया व तकल्लुफ़ से बचे। ऐसी मुलाक़ात से तुम्हारी गोशानशीनी में फ़र्क़ नहीं होगा बल्कि फ़ायदे की उम्मीद है।

सवाल: किन चीज़ों से गोशानशीनी की रग़बत और उसमें आसानी पैदा होती है?

जवाब: तीन चीज़ों से- **एक** दिन रात के चैबीस घंटों में ज़्यादातर वक़्त इबादत व मशग़ूलियत व मसरूफ़ियत से, क्योंकि अस्ल मसरूफ़ियत यही है और लोगों से बेज़रूरत मेल जोल और महब्बत इफ़लास (मुफ़लिसी) की अलामत है, जब तुम्हारा नफ़्स बिला ज़रूरत व बिला हाजत लोगों से मुलाक़ात, उनकी ज़ियारत और उनसे मेलजोल को चाहे तो समझ लो कि तुम फ़ुज़ूलपन, दीन से ऐराज़ (दूरी) और नफ़्स के धोखे में मुब्तला हो गए हो। एक अरबी शायर ने क्या ख़ूब कहा है (तर्जुमा पेश है)

- *नेकियों से फ़राग़त की बिना पर मैं तुम से सलाम करने आ गया हूँ,वाक़ई बेकार आदमी बहुत से फ़ुज़ूल काम कर बैठते हैं।*

जब तुम सही मअनों में अल्लाह की इबादत में मशग़ूल हो जाओगे और मुनाजाते इलाही का मज़ा पा लोगे तो तुम्हें ख़ुद-ब-ख़ुद अल्लाह की किताब से महब्बत हो जाएगी, तुम्हारा दिल आम लोगों से अलैहिदा रहने में राहत महसूस करेगा और तुम्हें लोगों की आवाज़ और उन से नफ़रत आएगी।

मरवी है कि हज़रत मूसा عليه السلام कोहे तूर से जब वापस आए थे तो आपको लोगों से वहशत आती थी, आप कानों में उंगलियाँ डाल लेते थे ताकि किसी की आवाज़ सुनाई न दे और आप लोगों की आवाज़ को नफ़रत व वहशत के ऐतबार से गधे की मानिन्द ख़्याल करते थे। इसलिए तुम्हें चाहिए कि हमारे शैख़ رحمة الله عليه के इन अशआर पर अमल करो जिनका तर्जुमा यह है:-

- *तुम लोगों से बिल्कुल किनाराकश हो जाओ और सिर्फ़ ख़ुदा ही को दोस्त बनाने में ख़ुशी तसव्वुर करो।*
- *तुम लोगों के चाहे मुख़लिस दोस्त बनो और उनमें रहो या उनसे ग़ायब।*
- *जब तुम्हें उनसे वास्ता पड़ेगा तो अपने हक़ में उनके दिल बिच्छुओं की तरह पाओगे।*

दूसरा गोशानशीनी की रग़बत पैदा करने वाली दूसरी चीज़ यह है कि तुम लोगों से हर क़िस्म का लालच व उम्मीद करना छोड़ दो, इस तरह तुम उनसे बाआसानी किनाराकश हो सकोगे क्योंकि जब तुम्हें किसी शख़्स से किसी क़िस्म का लालच न हो तो तुम्हारे लिए उसका होना न होना बराबर होगा।

तीसरी चीज़ यह है कि तुम लोगों में रहने की आफ़तों पर ग़ौर करो, उनको हर वक़्त याद रखो और दिल में दोहराते रहो।

जब तुम इन तीन बातों पर पाबन्दी करोगे तो ज़रूर मख़लूक़ से अलग हो कर तुम्हारा रुजू ख़ुदावन्द तआला की तरफ़ हो जाएगा और इस तरह तुम्हें गोशानशीनी की सआदत नसीब हो जाएगी और यह कठिन मन्ज़िल तुम्हें दिल पसन्द लगेगी और इसके ज़रिए तुम्हें दरबारे ख़ुदावन्दी में झुकने की तौफ़ीक़ नसीब हो जाएगी। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय

इमाम साहब ने इस रुकावट के बयान में गोशानशीनी इख़्तियार करने की वजह, इसके फ़ायदे और इस पर अमल न करने के नुक़सान बताए, बुज़ुर्गों के अक़वाल बताए और यह भी बताया कि किन किन लोगों को गोशानशीनी इख़्तियार करनी चाहिए यानी आम और ख़ास मुसलमानों के अहकाम बताए और किन लोगों को इससे रोका गया और इसकी क्या हद है। यह भी बताया कि कहाँ इकट्ठे होकर रहना या मिलना जुलना ज़रूरी है। यह भी समझाया कि किन चीज़ों से गोशानशीनी पर अमल आसान होगा। हक़ीक़त में गोशानशीनी का मतलब कुछ इस तरह है कि दुनिया में रह कर भी उन चीज़ों और लोगों से अलग रहे या सिर्फ़ ज़रूरत भर मिले जिनसे उसकी इबादत में ख़लल या कमी आती है। इस मज़मून को पढ़ने से पहले आपको यह वसवसा आएगा कि आज के दौर में गोशानशीनी नामुमकिन सी है और आप इसे पढ़ने से भी बचने का वसवसा दिल में पा सकते हैं। अब अगर फिर भी कुछ लोगों को यह लगे कि ये किताब कुछ मुश्किल है और हम इस पर अमल नहीं कर सकेंगे और घबरा कर आगे पढ़ने से रुकने लगें तो उनसे गुज़ारिश है कि इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें क्योंकि आख़िर तक पहुँचते पहुँचते बीच ही में आपको एहसास होगा कि इबादत के लिए इस किताब पर पूरी तरह नहीं तो कुछ अमल बहुत ही ज़रूरी है और जन्नत में जाने के लिए मेहनत भी बहुत करनी है। अल्हम्दुलिल्लाह सच्चे दिल से ईमान लाने पर जन्नत तो पक्की हो जाती है मगर जन्नत में मरने के बाद जल्द जाने और अज़ाबों से बचने के लिए इबादत, इल्म और सच्ची तौबा और रुकावटों को पार करना बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला हमें और आपको यह किताब बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुहम्मद अहमद

इबादत में तीसरी बड़ी रुकावट शैतान

ऐ ब्रादरे अज़ीज! इबादत में तरक़्क़ी और कामयाबी हासिल करने के लिए शैतान से जंग और उस पर सख़्ती करना भी लाज़िम और ज़रूरी है और यह दो वजह से ज़रूरी है।

एक तो यह कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है और हर वक़्त तुम्हें गुमराह करने के मन्सूबे बनाता रहता है उससे सुलह या रहम की उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती बल्कि वह तुम्हें हलाक कर के ही दम लेगा, इसलिए ऐसे ख़तरनाक दुश्मन से बेख़ौफ़ या ग़ाफ़िल रहना संगीन ग़लती है, तुम ज़रा नीचे लिखी आयते क़ुरआनी में तो ग़ौर करो:-

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۖ

إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾

(ऐ औलादे आदम क्या मैंने तुमसे अहद न लिया था कि शैतान को न पूजना बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।)

(सूरह यासीन, आयत-60)

और फ़रमाया-

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ

(बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो।)

(सूरह फ़ातिर, आयत-6)

दूसरा शैतान पर सख़्ती करने की दूसरी वजह यह है कि उस का तुम से दुश्मनी करना उसकी फ़ितरत में है वह हमेशा तुमसे लड़ाई में मशग़ूल है और चौबीस घंटे अपनी शैतानियत के तीर फेंकता रहता है और तुम उसकी शरारत और फ़ितना अन्दाज़ी से मुतलक़न ग़ाफ़िल हो, उस ग़फ़लत का जो अन्जाम होगा वह ज़ाहिर है।

और शैतान को इन्सान की दुश्मनी के ख़िलाफ़ ज़्यादा भड़काने वाली कुछ वजह ये हैं कि तुम ख़ुद ख़ुदा तआला की इबादत में मसरूफ़ हो और अल्लाह की मख़लूक़ को अपने क़ौल व फ़ेल (यानी अपनी बातों और

कामों) से इस्लाम की दावत देने में लगे हो और यह काम शैतान के पेशे, उसकी हिम्मत, उसकी मुराद और उसके मिशन के क़तई ख़िलाफ़ हैं, लिहाज़ा इस तरह तुम शैतान को ग़ज़बनाक करने, उसकी शरारत, उसकी अदावत और उसकी मुख़ालफ़त को और ज़्यादा भड़काने में मसरूफ़ हो, जब तुम्हारा रवय्या उसके साथ यह है तो वह भी बढ़ चढ़ कर तुम्हारी अदावत तुमसे जंग और तुमसे मकर व फ़रेब करने पर कमर कसे रहता है। यहाँ तक कि वह तुम्हारे हाल को ख़राब कर देता है बल्कि वह यह कोशिश करता है कि वह तुम्हारे ईमान ही का ख़ात्मा कर दे क्योंकि वह तुम से किसी वक़्त भी बेख़ौफ़ नहीं, शैतान तो उनके साथ भी अदावत करने से बाज़ नहीं आता जो उसके साथ अदावत और मुख़ालफ़त नहीं करते, जैसे कुफ़्फ़ार, गुमराह और फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोग। तो उनके साथ उसकी अदावत का क्या हाल होगा जो हर वक़्त उसकी मुख़ालफ़त और उसको ग़ज़बनाक करने और गुमराह करने वाले मन्सूबों को ख़ाक में मिलाने में मसरूफ़ रहते हों? तो ऐ इबादत और हक़ की दावत देने वालो! आम लोगों के साथ उसकी अदावत आम तरह की होगी मगर तुमसे ख़ुसूसी, इसलिए तुम्हारा मामला अहम है।

फिर तुम्हारी अदावत व मुख़ालफ़त में इब्लीस सिर्फ़ अकेला नहीं बल्कि उसके साथ शैतानों की जमाअत है उसकी जमाअत में तुम्हारा नफ़्स और तुम्हारी ख़्वाहिशात भी शामिल हैं जो तुम्हारी इन्तिहाई दुश्मन है और तुम पर ग़ालिब आने के लिए उसके पास हज़ारों असबाब हैं जिनसे तुम बिल्कुल ग़ाफ़िल हो।

हज़रत याहया मुआज़ राज़ी ﷺ ने बहुत ही ख़ूब फ़रमाया है, आप फ़रमाते हैं- *“शैतान फ़ारिग़ और तू मशग़ूल है, वह तुझे देखता है मगर तू उसे नहीं देखता, तूने उसे भुलाया हुआ है मगर उसने तुझे नहीं भुलाया और तेरे अन्दर भी शैतान के यार व मददगार हैं इसलिए उससे मुहारबा (लड़ाई) और उसको मग़लूब करना बहुत ज़रूरी है वर्ना तू उसकी शरारतों और हलाकतों से महफ़ूज़ नहीं रह सकता।”*

सवाल: किस तरह इब्लीस से जंग की जाए, कौन सी चीज़ उसको दबा व हरा सकती है?

जवाब: मुजाहिदा और रियाज़त वालों के यहाँ इसके दो तरीक़े हैं:

एक वह है जो मशाइख़ ने फ़रमाया है कि इब्लीस को दफ़ा करने के लिए सिर्फ़ ह़क़ तआला की पनाह ली जाए इसलिए कि शैतान एक कुत्ता है जिसे ह़क़ तआला ने तुम पर मुसल्लत कर दिया है अगर तुम उससे मुक़ाबला करने और उसको अपने से दूर करने में लग गए तो तंग आ जाओगे और तुम्हारा बहुत सा की़मती वक़्त बर्बाद हो जाएगा और आख़िरकार वह तुम पर हावी हो जायेगा और तुम्हें ज़ख़्मी कर देगा और काट खाएगा इसलिए कुत्ते के मालिक के पास ही पनाह लेनी बेहतर है, जो उसे तुझ से हटा दे।

दूसरा तरीक़ा यह है कि उससे मुक़ाबला किया जाए उसको हटाने और उसकी मुख़ालफ़त के लिए हर वक़्त कमर कस के रखी जाए। मैं (इमाम ग़ज़ाली عليه الرحمة) कहता हूँ कि मेरे नज़दीक ज़्यादा मुनासिब और बेहतर यह है कि दोनों तरीक़ों पर अमल किया जाए अव्वल तो उसकी शरारतों से रब तआला की पनाह माँगी जाए जैसा कि हमको हुक्म है अल्लाह तआला इसकी शरारतों से महफ़ूज़ रखने के लिए काफ़ी है फिर अगर तुम यह महसूस करो शैतान हक़ तआला से पनाह माँगने के बावजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला को हमारे मुजाहिदे, हमारी क़ुव्वत और हमारे सब्र का इम्तिहान मन्ज़ूर है यानी ह़क़ तआला यह देखना चाहता है कि तुम शैतान से मुक़ाबला और लड़ाई करते हो या हार जाते हो जैसा कि उसने हम पर कुफ़्फ़ार वग़ैरा को मुसल्लत कर रखा है हालांकि वह इस पर क़ादिर है कि हमारे जिहाद वग़ैरा के बग़ैर ही उन कुफ़्फ़ार की शरारतों और फ़ितनों को कुचल दे लेकिन वह ऐसा नहीं करता बल्कि बन्दों को उनसे जिहाद का हुक्म करता है ताकि आज़माए कि किसके दिल में जिहाद का जज़्बा और जिहाद की तड़प है और कौन पूरे ख़ुलूस, जांफ़िशानी, मेहनत, कोशिश और सब्र से उनका मुक़ाबला करता है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ

(और इसलिए कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की और तुममे से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा दे।)

(सूरह आले इमरान. आयत-140)

एक मक़ाम पर यूँ इरशाद फ़रमाया:

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ۝

(क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़माइश की।)

(सूरह आले इमरान, आयत-142)

तो इसी तरह शैतान के मुक़ाबले में भी हमें चुस्ती और पूरी कोशिश का हुक्म दिया गया है फिर उल्मा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि शैतान पर हावी होने और उससे मुक़ाबला करने के लिए तीन चीज़ों का होना ज़रूरी है।

पहली चीज़ यह है कि तुम उसके हीलों, बहानों और चालाकियों को मालूम करो और पहचानो, जब तुम्हें उसकी चालाकियों का इल्म हो जाएगा तो फिर वह तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा जैसे चोर को जब मालूम हो जाए कि मकान मालिक को मेरा इल्म हो गया है तो भाग जाता है।

दूसरी चीज़ यह है कि तुम शैतान की गुमराहकुन दावत को हरगिज़ मन्ज़ूर न करो और तुम्हारा दिल क़तअन उससे मुतस्सितर न हो, और तुम उससे मुक़ाबले की तरफ़ तवज्जोह न दो क्योंकि इब्लीस एक भौंकने वाले कुत्ते की तरह है अगर तुम उसको छेड़ोगे तो ज़्यादा शोर मचाएगा और अगर तवज्जोह नहीं करोगे तो वह भी ख़ामोश हो जाएग।

इब्लीस से हिफ़ाज़त की **तीसरी तदबीर** यह है कि अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र करो सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम शफ़ी-ए-मुअज़्ज़म नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया है- “***शैतान के लिए ख़ुदा तआला का ज़िक्र इतना तकलीफ़देह है जिस तरह इन्सान के लिए ख़ारिश यानी खुजली***”

सवाल: शैतान के मकर व फ़रेब किस तरह मालूम हो सकते हैं?

जवाब: शैतान के मकर व फ़रेब कई तरह के हैं, अव्वल तो उसके वसवसे हैं जो उसके तीर हैं जिनके ज़रिए वह लोगों के दिलों को ज़ख़्मी करता है और उन वसवसों का सही राज़ फ़ाश ‘ख़वातिर’ और ख़वातिर की

क़िस्में मालूम करने से हो सकता है। (नोटः यह ख़वातिर के माअना और उसके राज़ से पर्दा हटना आगे आ रही तफ़्सील में आ रहा है)

दूसरी चीज़ उसके हीले बहाने हैं जो बमन्ज़िला जाल के हैं यानी जाल की जगह हैं जिनसे लोगों के दिलों को फंसाता है और उनकी पहचान, शैतान के धोखे, उनके औसाफ़ और उनके रास्ते मालूम करने से होती है, उल्मा-ए-किराम ने इन 'ख़वातिर' व वसवसों की तफ़्सील में कई बाब लिखे हैं हमने (इमाम ग़ज़ाली ﵀) इस सिलसिले में एक मुस्तक़िल किताब 'तलबीसे इब्लीस' के नाम से लिखी है और हमारी यह किताब (मिन्हाजुल आबिदीन) मुख़्तसर होने की वजह से 'ख़वातिर' व 'वसवसों' की तफ़्सील नहीं कर सकती लेकिन हम हर एक चीज़ को इस किताब में इस तरह बयान करेंगे कि अगर उस पर अमल कर लिया जाए तो काफ़ी हो जाए।

ऐ अ़ज़ीज़! दिल में जो ख़तरे (ख़्यालात) आते हैं उनकी अस्ल यह है कि अल्लाह तआला ने हर इन्सान के दिल पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया हुआ है जो उसे नेकियों का इल्हाम (दिल में नेकी का ख़्याल डालना) करता है उस फ़रिश्ते को 'मुल्हिम' (इल्हाम करने वाला) और उसकी दावत को 'इल्हाम' कहते हैं। उसके मुक़ाबले में ख़ुदा की तरफ़ से दिल पर एक शैतान मुसल्लत कर दिया गया है जो बुराई की तरफ़ बुलाता है, उस शैतान को 'वसवास' और उसकी दावत को 'वसवसा' कहते हैं। मुल्हिम इन्सान को नेकियों की तरफ़ बुलाता है और वसवास सिर्फ़ बुराइयों की तरफ़। यह अक्सर उल्मा-ए-किराम की राय है लेकिन मेरे शैख़ ﵀ ने फ़रमाया है कि शैतान कभी कभी बज़ाहिर नेकी की दावत देता है मगर दरअस्ल यहाँ भी उसका मक़सद बुराई की तरफ़ लगाना होता है और वह इस तरह की बड़ी नेकी की बजाए छोटी नेकी की तरफ़ बुलाता है जिससे एक बड़े गुनाह करने का नुक़सान नेकी के सवाब से ज़्यादा हो जैसे उज्ब (ख़ुदपसन्दी) वग़ैरा तो ख़ुदावन्द तआला की तरफ़ से इन्सान के दिल पर दो दाई (दावत देने वाला) मुक़र्रर हैं। हर एक अपनी क़िस्म की दावत में लगा हुआ है और इन्सान अपने दिल से दोनों की दावत को सुनता और महसूस करता है।

रिवायात में आया है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया- ***"जिस किसी इन्सान के घर बच्चा पैदा होता है तो अल्लाह तआला उसके साथ एक***

फ़िरिश्ता लगा देता हैं और शैतान उसके साथ एक शैतान लगा देता है, शैतान उसके बायें कान में फूँकता रहता है और फ़िरिश्ता दायें में। इस तरह दोनों अपनी अपनी दावत में लगे रहते हैं।" (मुसनद इमाम मुहम्मद)

और नबी-ए-करीम ﷺ ने यह भी फ़रमाया- ***"शैतान भी अपनी दावत के लिए इन्सान के पास आता है और फ़िरिश्ता भी।"*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

फिर एक शय और भी ह़क़ तआला ने इन्सान की तबीयत में रखी है जिसकी वजह से वह हर क़िस्म की शहवत (ख़्वाहिश) और लज़्ज़त की तरफ़ माइल हो जाता है, चाहे जाइज़ हो या नाजाइज़, इस तीसरी चीज़ का नाम 'ख़्वाहिशे नफ़्स' है जो इन्सान को आफ़तों में मुब्तला करता है तो ये तीन चीज़ें हैं जो इन्सान को अलग अलग कामों की तरफ़ बुलाती हैं।

फिर इसके बाद जानना चाहिए कि 'ख़वातिर' वह तौर तरीक़े हैं जो बन्दे के दिल में पैदा होते हैं और उसे किसी काम के करने या न करने का हुक्म देता है।

ख़तरे के मअना हैं '***इज़्तिराब***' कि यह भी कभी दिल में आता है और कभी जाता है जिस तरह हवा, कभी आती है कभी जाती है तो इस आने जाने की वजह से इसे ख़तरा कहते हैं।

हक़ीक़त में हर क़िस्म के '**ख़वातिर**' का ख़ालिक़ अल्लाह तआला ही है। असबाब व ज़राए की तरफ़ मजाज़न निसबत होती है और **ख़वातिर कुल चार क़िस्म के हैं**।

एक वह जो शुरू में अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्सान के दिल में पैदा होते हैं उनको सिर्फ़ '**ख़वातिर**' कहते हैं।

दूसरे वो जो इन्सानी तबीयत के मुवाफ़िक़ दिल में पैदा होते हैं उनको '**हवा-ए-नफ़्स**' कहते हैं।

तीसरे वो जो मुल्हिम फ़िरिश्ते की दावत के ज़रिए हक़ तआला की जानिब से दिल में पैदा होते हैं उन्हें '**इल्हाम**' कहते हैं।

चौथे वो जो शैतानी दावत से इन्सान के दिल में आते हैं उन्हें '**वसवसा**' कहा जाता है और शैतान की तरफ़ मन्सूब करते हुए इन्हें 'शैतानी ख़तरात' भी कहते हैं।

ख़ुलासा यह कि ख़वातिर चार क़िस्म के हैं जिनका ज़िक्र हुआ।

फिर यह भी मालूम होना चाहिए कि जो ख़तरा बिला वास्ता रब तआला की जानिब से शुरू में दिल में आता है वह दो तरह का होता है कभी नेक होता है और कभी बुरा, **नेक** (ख़्याल) तो इकराम व इतमामे हुज्जत के लिए होता है और **बुरा** (ख़्याल) आज़माइश और मशक़्क़त में डालने के लिए। जो ख़तरा यानी दिल में आने वाला ख़्याल '**मुल्हिम**' की जानिब से होता है वह ख़ैर यानी भलाई के लिये ही होता है क्योंकि मुल्हिम को नसीहत और इरशाद के वास्ते ही मुक़र्रर किया गया है। जो ख़तरा शैतान की जानिब से होता है वह बुरा ही होता है ताकि बन्दा इसके ज़रिए गुमराही में मुब्तला हो और राहे हक़ से फिसले और कभी ***"इस्तिदराज"*** के तौर पर यानी धोखे में डालने की गर्ज़ से बज़ाहिर नेक भी होता है और जो ख़तरा दिल में हवा-ए-नफ़्स से पैदा होता है वह फ़ुज़ूल और बुरी चीज़ों के मुताल्लिक़ होता है ताकि बन्दा ख़ैर के काम से रुका रहे। और मैंने बाज़ बुज़ुर्गों से सुना है कि हवा-ए-नफ़्स भी बाज़ वक़्त नेक काम की तरफ़ उभारती है मगर इब्लीस की तरह मक़सद इससे भी बुराई की तरफ़ लगाना होता है। ये हैं चार ख़वातिर जिनका लिहाज़ रखना ज़रूरी है। फिर तीन और उमूर को भी जानना बहुत ज़रूरी है जो अस्ल मक़सूद हैं।

एक यह कि ख़तरा-ए-शर और ख़ैर में क्या फ़र्क़ है। **दूसरा** यह कि ख़तरा-ए-शर रहमानी, शैतानी और नफ़्सानी में क्या फ़र्क़ है। **तीसरा** यह कि ख़तरा-ए-ख़ैर इब्तेदाई रहमानी या इल्हमी या शैतानी और नफ़्सानी में क्या फ़र्क़ है ताकि ख़तरा-ए-ख़ैर रहमानी और इल्हामी की पैरवी की जाए और नफ़्सानी और शैतानी से परहेज़ किया जाए।

ख़तरा-ए-ख़ैर और शर में फ़र्क़ का तरीक़ा उल्मा-ए-किराम ने यह लिखा है कि जो ख़तरा दिल में आए उसको शरीअत के पैमाने से परखा जाए, अगर शरीअत के उसूल के मुवाफ़िक़ हो तो वह ख़तरा दुरुस्त और सही है वर्ना ग़लत। अगर इससे मालूम न हो सके तो सल्फ़ स़ालेहीन की सीरत से परखे अगर उनकी सीरत के मुताबिक़ हो तो ख़ैर है वर्ना शर, अगर उनकी सीरत से भी पता न चल सके तो उसको अपने नफ़्स और ख़्वाहिश से परखो, अगर नफ़्स उससे तबीयत में नफ़रत महसूस करे और यह नफ़रत किसी बाहरी ख़ौफ़ व डर की वजह से न हो तो वह नेक है, लेकिन अगर दिल में आने

वाला ख़तरा ऐसा हो कि नफ़्स अपनी तबीयत और मिज़ाज के ऐतबार से उसकी तरफ़ माइल हो अल्लाह तआला से किसी उम्मीद या तरग़ीब की बिना पर माइल न हो तो वह ख़तरा-ए- शर है क्योंकि नफ़्स हमेशा बुराई की ही तरफ़ माइल होता है क्योंकि नफ़्स की फ़ितरत में बुराई है। जब तुम इन ऊपर ज़िक्र हुए तरीक़ों के ज़रिए ख़ूब कोशिश, एहतियात और ध्यान के साथ ज़िक्र किए गए ख़वातिर में फ़र्क़ का इरादा करोगे तो तुम पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से नेक व बद ख़तरे के दरमियान फ़र्क़ पता चल जाएगा।

दूसरे अम्र में फ़र्क़ मालूम करने का तरीक़ा हमारे उल्मा-ए-किराम ने यह बताया है कि अगर तुम यह मालूम करना चाहो कि यह ख़्याल और ख़तरा शैतानी या रहमानी या नफ़्सानी है तो इस ख़्याल को तीन तरह से जाँचो, अगर वह ख़्याल व ख़तरा पुख़्ता और मज़बूत और रासिख़ (अटल) हो तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से या नफ़्स की जानिब से है और अगर रासिख़ न हो बल्कि इसमें इज़्तिराब और शक व शुबह हो तो ऐसा ख़्याल शैतानी है।

बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि हवा-ए-नफ़्स चीते की तरह है जब तक उसे सख़्त शिकस्त न दी जाए और उसके साथ शिद्दत का मामला न किया जाए मग़लूब व मरऊब नहीं होगी या ख़ारजी अक़ीदा शख़्स की तरह है कि जब तक ख़ारजी को मारा या क़त्ल न कर दिया जाए अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता, और शैतान भेड़िये की तरह है अगर तुम उसको एक जानिब से रोको तो दूसरी तरफ़ से आ घुसता है।

ख़्याले शर में फ़र्क़ का दूसरा तरीक़ा यह है कि अगर वह गुनाह करने के बाद दिल में आए तो वह रहमानी होगा ताकि उस गुनाह की ज़िल्लत व हिक़ारत दिल में आए। अल्लाह तआला का इरशाद है:-

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

(कोई नहीं बल्कि इनके दिलों पर जंग चढ़ा दिया है इनकी कमाइयों ने।)

(सूरह अलमुतफ़्फ़िफ़ीन, आयत-14)

मेरे शैख़ رحمة الله عليه फ़रमाया करते थे कि गुनाह धीरे धीरे दिल को सख़्ती में मुब्तला कर देते हैं, शुरू शुरू तो दिल में बुरे ख़तरात आते हैं, फिर कुदूरत

और ज़ंग लग जाता है। और बुरा ख़्याल गुनाह के बाद मुत्तसिल (यानी फ़ौरन) दिल में न आए तो ऐसा ख़्याल शैतानी होता है। गुमराह करने के लिए इब्लीस अक्सर बुरे ख़्यालात दिल में डालता है और अगर ऐसा ख़्याल हो कि ज़िक्रे हक़ से कमज़ोर या कम न हो तो समझ लो कि ऐसा ख़्याल नफ़्सानी है और अगर ज़िक्र से कमज़ोर या कम हो तो ऐसा ख़्याल शैतानी है। जैसा कि क़ुरआन मजीद के इन अल्फ़ाज़ की तफ़सीर में कहा गया है

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۪ۙ

(उसके शर से जो दिल में बुरे ख़तरात डाले और दुबक रहे।)

(सूरह नास, आयत- 4)

----कि इब्लीस इन्सान के दिल के साथ लगा रहता है, बन्दा जब ज़िक्रे ख़ुदा करता है तो वह अलैहिदा हो जाता है और जब ग़फ़लत करता है तो उसके दिल में वसवसा डालता है।

हक़ तआला या फ़िरिश्ते की जानिब से बन्दे के दिल में जो ख़्याल आता है उन दोनों में फ़र्क़ की पहचान यह है कि अगर वह ख़्याल पुख़्ता हो तो ऐसा ख़्याल रहमानी है और इसमें अंदेशा और बेचेनी हो तो फ़िरिश्ते की जानिब से है क्योंकि फ़िरिश्ता नसीहत करने वाला बना है और नेक बातें सामने लाता है ताकि इन्हें क़बूल करे और इन पर अमल करे।

फ़र्क़ की दूसरी सूरत यह है कि अगर ख़्याल ताअत व मुजाहिदे के बाद दिल में आए तो रहमानी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

(और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।)

(सूरह अनकबूत, आयत-69)

और एक मक़ाम पर फ़रमाया:-

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

(और जिन्होंने राह पाई अल्लाह ने उनकी हिदायत और ज़्यादा फ़रमाई।)

(सूरह मुहम्मद, आयत-17)

और अगर नेक ख़्याल ताअत व मुजाहिदे के बाद दिल में पैदा न हो बल्कि इब्तेदाअन (शुरू में) पैदा हो तो वह फ़िरिश्ते की जानिब से है और अगर नेक ख़्याल बातिनी यानी पोशीदा उसूल व आमाल के मुतअल्लिक़ हो तो वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से होगा और अगर ज़ाहिरी फ़ुरूअ व आमाल के मुतअल्लिक़ हो तो फ़िरिश्ते की तरफ़ से है क्योंकि अक्सर उल्मा के नज़दीक फ़िरिश्ते को बातिनी उमूर की मारफ़त नहीं।

और जो नेक ख़्याल इब्लीस की जानिब से होता है और जिससे दरहक़ीक़त उसका मक़सूद गुनाह में मुब्तला करना होता है, तो हमारे शैख़ عليه الرحمه ने उसकी पहचान यह बताई है कि अगर उससे दिल में ख़ुशी पैदा हो ख़ौफ़ पैदा न हो उजलत (जल्दबाज़ी) पैदा हो इत्मिनान पैदा न हो, दिल में बेख़ौफ़ी आए, डर न आए और आख़िरत के मुताल्लिक़ ग़फ़लत पैदा हो, बसीरत पैदा न हो, तो ऐसा ख़्याल शैतानी है इसलिए इससे बचो और अगर इसके ख़िलाफ़ हो यानी इससे दिल में ख़ुशी के बजाय ख़ौफ़ पैदा हो, उजलत के बजाय इत्मिनान पैदा हो, बेख़ौफ़ी के बजाय डर पैदा हो और आख़िरत से ग़फ़लत के बजाय इसकी याद पैदा हो, तो यह ख़्याल रहमानी है। मैं कहता हूँ ख़ुशी से मुराद एक क़िस्म का सुकून है जिसमें बसीरत नहीं होती और बाज़ दफ़ा ज़िक्र से भी ख़ुशी पैदा होती है इस क़िस्म की ख़ुशी बुरी नहीं मगर इसके मौक़े कम हैं।

एक हदीस में नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया है कि पाँच कामों के अलावा बाक़ी तमाम कामों में उजलत शैतानी फ़ेल है, वो पाँच काम ये हैं जब लड़की बालिग़ हो तो जल्दी ब्याह दी जाए, जब क़र्ज़ वाजिब हो तो जल्दी अदा किया जाए, जब कोई मरे जल्दी दफ़न किया जाए, जब मेहमान आए तो उसकी मेहमान नवाज़ी में जल्दी की जाए और गुनाह सरज़द होने पर जल्दी तौबा की जाए।

और ख़ौफ़ से मुराद यह है कि बन्दे के दिल में यह डर हो कि शायद मैं इरादे को अमली तौर पर कमाहक़्क़ुहू (जैसा कि उसका हक़ है) अदा कर सकूँ या न कर सकूँ और शायद अल्लाह के दरबार में यह क़बूल हो या न हो, और बसीरत का मतलब यह है कि इस इरादे में ग़ौर और फ़िक्र कर ले कि अच्छा

और ख़ैर है या कि बुरा है और आख़िरत में इस पर सवाब मिलने की उम्मीद है या नहीं।

ये तीन उमूर (काम) ज़रूरी थे जिनकी पहचान से दिल के ख़वातिर व ख़्यालात में फ़र्क़ मालूम हो सकता है इसलिए इन्हें दिमाग़ में बिठाना ज़रूरी है और जहाँ तक हो सके इनकी तह तक पहुँचना ज़रूरी है क्योंकि इन तीन उमूर की पहचान व वाक़फ़ियत उलूमे लतीफ़ा व असरारे शरीफ़ा में से है। बाक़ी रहे **इब्लीस के धोखे, जिनके ज़रिए बन्दे को ताअत से रोकने की कोशिश करता है, वो सात हैं**:

1. अव्वल ताअत से रोकने की कोशिश करता है तो अगर अल्लाह तआला बन्दे को बचा ले और बन्दा उसके मुतालबे को इस तरह रद्द कर दे कि *"मुझे ताअत व इबादत की सख़्त ज़रूरत है क्योंकि यह आख़िरत के सफ़र का सामान हैं और बग़ैर सामान सफ़र तय नहीं हो सकता"*
2. फिर इब्लीस इस तरह गुमराह करता है- *"कि चलो आज रहने दो, यह काम कर लेना।"* अगर बन्दा इससे भी बच जाता है और इब्लीस की बात को इस तरह ठुकरा देता है कि – *"मेरी मौत मेरे क़ब्ज़े में नहीं और दूसरा यह कि अगर आज का काम कल पर छोड़ा तो कल का काम भी तो है वह किस दिन करूँगा? क्योंकि कल का काम अलैहिदा है।"*
3. जब इब्लीस यहाँ भी नाउम्मीद होता है तो कहता है कि- *"जल्दी जल्दी करो ताकि फ़ुलाँ फ़ुलाँ काम के लिए फ़ारिग़ हो सको।"* अगर बन्दा उसके इस वार से भी बच जाए और इस तरह रद्द कर दे कि- "थोड़ी नेकी इत्मिनान व सुकून के साथ उस नेकी से बेहतर है जो मिक़दार में ज़्यादा मगर नाक़िस (अधूरी) हो।"
4. अगर यहाँ भी वह नाकाम हो तो बन्दे को रिया में मुब्तला करने की कोशिश करता है, अगर इस वक़्त भी बन्दा अल्लाह तआला की इमदाद व हिफ़ाज़त से बच जाए और यह कह कर वसवसा व रिया को रद्द कर दे कि- *"मैं किसी और की नुमाइश के लिए इबादत क्यूँ करूँ क्या सिर्फ़ ख़ुदा तआला का देखना मेरे लिए काफ़ी नहीं है?"*

5. तो फिर वह उज्ब (ख़ुदपसन्दी) में मुब्तला करने की कोशिश करता है, और बन्दे में वसवसा डाल कर कहता है कि- "*तू कितना बाइज़्ज़त और शब्बेदार (रातों को जाग कर इबादत करने वाला) है और तू कितनी फ़ज़ीलत का मालिक है*" अगर हक़ तआला के फ़ज़्ल व करम से बन्दा अब भी महफ़ूज़ रहे और उज्ब में मुब्तला न हो बल्कि इब्लीस के इस वसवसे को इस तरह रद्द कर दे कि "*इसमें मेरी क्या बुज़ुर्गी है यह तो सब अल्लाह तआला का एहसान है जिसने मुझ गुनाहगार को यह तौफ़ीक़ दी और यह भी उसका करम है कि मेरे हक़ीर व नाक़िस आमाल को क़ुबूल फ़रमा लिया अगर उसका फ़ज़्ल व करम न होता तो मेरे बेहद गुनाहों के मुक़ाबले में मेरे इन थोड़े से आमाल की क्या हैसियत थी*"
6. अगर इब्लीस के ये वार नाकाम हो जायें तो फिर एक छटे रास्ते से आता है और यह सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है, बहुत ही होशियार शख़्स के सिवा कोई इसके धोखे से महफ़ूज़ नहीं रह सकता और न ही इससे वाक़िफ़ हो सकता है, चुनाँचे इब्लीस यह कहता है कि- "ऐ नेक बन्दे! तू लोगों से पोशीदा पोशीदा नेक आमाल में कोशिश करता है, अल्लाह तआला ख़ुद-ब-ख़ुद तेरे आमाले ख़ैर को लोगों में मशहूर कर देगा। यह कहने से इसका मक़सद रिया में मुब्तला करना होता है अगर अल्लाह तआला की इनायत से बन्दा इब्लीस के इस धोखे से भी बच जाए और इसके इस वसवसे को इस तरह नाकाम बना दे कि- "*मैं इस चीज़ का ख़्वाहिशमन्द नहीं हूँ कि मेरी नेकियाँ लोगों में मशहूर हों बल्कि जो अल्लाह तआला की रज़ा है वही दुरुस्त और हक़ है, चाहे ज़ाहिर करे चाहे ज़ाहिर न करे, वह मुझे कोई मर्तबा अता करे या न करे सब उसकी मर्ज़ी है। लोगों के सामने इज़हार करना या न करना मेरे नज़दीक दोनों बराबर हैं क्योंकि लोगों के हाथ में मेरा नफ़ा नुक़सान नहीं है।*"
7. इस तरह गुमराह करने से मायूस होने के बाद इब्लीस यूँ गुमराह करता है कि "*इन्सान के नेक व बद होने के मुताल्लिक़ रोज़े अज़ल (शुरू) में फ़ैसला हो चुका है, जो उस रोज़ बुरों में हो गया वह बुरा ही रहेगा और*

जो अच्छों में हो गया वह अच्छा ही रहेगा तुम्हारे आमाल नेक व बद से फ़ैसला-ए-अज़ली में हरगिज़ फ़र्क नहीं आ सकता" अगर अल्लाह तआला बन्दे को इस शैतानी वसवसे से बचा ले और बन्दा इब्लीस लईन का यूँ जवाब दे कि- *"मैं तो ख़ुदा का बन्दा हूँ और बन्दे का काम है अपने मौला के हुक्म की तामील और अल्लाह तआला चूँकि रब्बुल आलमीन है इसलिए जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे और फिर इबादत व ताअत किसी तरह भी नुक़सानदेह नहीं क्योंकि अगर मैं इल्मे इलाही में सआदतमन्द हूँ तो फिर भी और ज़्यादा सवाब का मोहताज हूँ और अगर मआज़ल्लाह इल्मे इलाही में मेरा नाम बदबख़्तों में लिखा हो तो भी नेक आमाल करने से अपने ऊपर यह मलामत तो नहीं करूँगा कि मुझे अल्लाह तआला ताअत व इबादत न करने पर सज़ा देगा और कम से कम यह तो है कि नाफ़रमान बन कर जहन्नम में जाने की निसबत इताअत करने वाला बन कर जाना बेहतर है"*

लेकिन यह तो सिर्फ़ एहतमालात (शक व शुबह की बातें) हैं वर्ना उसका वायदा हक़ है और उसका कलाम क़तअन सच्चा है और अल्लाह तआला ने तो जा-ब-जा ताअत व इबादत की बजाआवरी पर सवाबे जमील यानी बेहतरीन अज्र के वायदे फ़रमाये हैं, तो जो शख़्स ईमान व ताअत के साथ रब तआला के दरबार में हाज़िर होगा, वह हरगिज़ दोज़ख़ में न जाएगा बल्कि ख़ुदा तआला की मेहरबानी और नेक आमाल की वजह से जन्नते फ़िरदौस में इन्शाअल्लाह जगह पाएगा लेकिन हक़ीक़त में यह दाख़िल होना भी ख़ुदा तआला के वायदे से होगा। इसी सच्चे वायदे का इज़हार करने के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में नेक लोगों के इस क़ौल को नक़ल फ़रमाया है:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ

(सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपना वादा हम से सच्चा किया।)

(सूरह अज़्ज़ुमर, आयत-74)

लिहाज़ा ख़ुदा तुम पर रहम करे, तुम्हें इब्लीस के हीले बहानों से बचने में होशियार और चौकन्ना रहना चाहिए क्योंकि मामले की नज़ाकत तुम्हारे

सामने है और इसी पर अपने बाक़ी हालात और कामों का भी अन्दाज़ा कर लो और हर वक़्त अल्लाह तआला से मदद माँगते रहो और उसकी पनाह में रहो क्योंकि हर मामला उसके हाथ में है और तौफ़ीक़ अता करने वाला भी वही है।

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय

इमाम साहब ने इस रुकावट के बयान में शैतान के मक्र व फ़रेब के बारे में बताया और उन सवालों के जवाब भी दिए जो रोज़ ही आपको परेशान करते होंगे। मैं समझता हूँ यहाँ तक पहुँचते पहुँचते अब इस किताब को पढ़ने में दिलचस्पी बढ़ी ज़रूर होगी फिर भी अगर अब भी आप पढ़ने में टाल मटोल कर रहे हों तो गुज़ारिश यह है कि इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें। अल्लाह तआला हमें और आपको यह किताब बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुहम्मद अहमद

चौथी रुकावट (नफ़्स)

फिर ऐ इबादत के तलबगार अल्लाह तआला तुझे और हमें हर ख़ता से महफ़ूज़ रखे। इस **नफ़्से अम्मारा** की शरारतों से बचना भी बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि यह निहायत नुक़सानदेह दुश्मन है और इसकी आफ़त बहुत सख़्त है इसका इलाज बहुत मुश्किल काम है, इसकी बीमारी बहुत ख़तरनाक बीमारी है और इसकी दवा सब दवाओं से मुश्किल है। नफ़्स का इस क़द्र नुक़सानदेह और ख़तरनाक होना दो वजह से है:

पहली वजह यह कि नफ़्स घर का चोर है और चोर जब घर में ही छुपा हो तो उससे महफ़ूज़ रहना बहुत मुश्किल होता है और बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता है। नफ़्स की शरारतों के मुताल्लिक़ किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *नफ़्स मुझे नुक़सानदेह कामों की तरफ़ बुलाता है और मेरी बीमारियों को ज़्यादा करता रहता है।*
- *इस दुश्मन से बचने की क्या तदबीर हो सकती है जो दोनों पहलूओं के दरमियान छुपा बैठा है।"*

दूसरी वजह यह है कि नफ़्स एक महबूब दुश्मन है और इन्सान को जब किसी से मुहब्बत होती है तो उसके ऐब नज़र नहीं आते बल्कि मुहब्बत की वजह से महबूब के ऐब से अंधा रहता है, एक शायर ने इस चीज़ को इस तरह बयान किया है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *जब तेरी किसी से दोस्ती और उससे भाईचारा होता है और तू उससे राज़ी होता है तो तुझे उसका कोई ऐब नज़र नहीं आता।*
- *रज़ा और प्यार वाली आँख हर ऐब से अंधी होती है लेकिन दुश्मन आँख को बुराइयाँ ही बुराइयाँ दिखाई देती हैं।"*

तो जब इन्सान अपनी हर बुराई को अच्छी निगाह से देखे और नफ़्स के ऐब से आगाह न हो जो हर वक़्त इन्सान के साथ अदावत और नुक़सान देने में मसरूफ़ है तो ऐसे शख़्स पर अगर ख़ुदा तआला की रहमत और उसका फ़ज़्ल न हो तो जल्द ही हलाकत और ज़िल्लत के गहरे गढ़े में जा गिरेगा।

ऐ अज़ीज़! तू इस एक नुकते पर ही ग़ौर कर यही तेरे लिए काफ़ी है वह नुकता यह है कि गुज़रे ज़माने पर नज़र करेगा तो तुझे मालूम होगा कि अव्वल रोज़ से जो ज़िल्लत, ख़्वारी, तबाही, गुनाह और जो आफ़त व मुसीबत दुनिया में पड़ी और क़ियामत तक होंगी वो सब नफ़्स की वजह से ही हैं और होंगी। बाज़ बुराइयाँ अकेले नफ़्स की वजह से और बाज़ नफ़्स की मदद व शिरकत के ज़रिए। अल्लाह तआला की सबसे पहले नाफ़रमानी इब्लीस ने की और उसकी वजह तकब्बुर व हसद था, जब इब्लीस ने हुक्मे इलाही के आगे तकब्बुर किया और हज़रत आदम عليه السلام से हसद किया तो उसकी अस्सी हज़ार बरस की इबादत बर्बाद हो गई और वह हमेशा के लिए ज़िल्लत व गुमराही के गहरे समन्दर में डूब गया, उस वक़्त न दुनिया थी न मख़लूक़ और न ही कोई और इब्लीस था जो उस इब्लीस को गुमराह करता, लिहाज़ा इब्लीस के अन्दर तकब्बुर व हसद उसके नफ़्स की वजह से हुआ।

इब्लीस की मरदूदियत के बाद हज़रत आदम व हव्वा عليه السلام से जो लग़ज़िश हुई उसमें भी नफ़्स की चाहत कारगर थी। इब्लीस ने क़सम खा कर कहा कि दाना खा लेने के बाद तुम्हें हमेशा के लिए जन्नत में रहना नसीब हो जाएगा तो दोनों हमेशा जन्नत में रहने को अज़ीज़ समझते हुए फ़िसल गए। तो

यह लग़्ज़िश भी (जो बाद में बिल्कुल माफ़ हो गई) नफ़्स की मदद व शिरकत से हुई और दोनों हज़रात इस बिना पर अल्लाह तआला की रहमत व क़ुर्ब से दूर कर दिए गए और जन्नते फ़िरदौस से इस फ़ानी, हक़ीर व खोटी, हलाकत में डालने वाली दुनिया की तरफ़ भेज दिए गए और इस लग़्ज़िश की वजह से इन्हें बहुत कुछ दिक़्क़तें पेश आईं और इनकी औलाद भी क़ियामत तक दुनिया के फंदों में मुब्तला हो गई।

फिर हाबील (हज़रत आदम व हव्वा के बेटे) का क़त्ल भी लालच व हसद की वजह से ही हुआ, और हारूत व मारूत (दो फ़िरिश्ते) भी शहवत के सबब फ़ितने में मुब्तला हुए और इसी तरह क़ियामत तक नफ़्स की वजह से नाक़बिले बयान वाक़ियात होते रहेंगे। मख़लूक़ में जो ख़राबियाँ, गुमराहियाँ और जो फ़ितने, होते हैं और होते रहेंगे उनकी बुनियाद नफ़्स और नफ़्स की ख़्वाहिश ही होती है, अगर यह न होता तो मख़लूक़ ख़ैरियत और सलामती से रहती। जब नफ़्स की अदावत इस हद तक ख़तरनाक है तो अक़्लमन्द को चाहिए कि नफ़्स की शरारतों से बचाव का एहतेमाम करे। *(वल्लाहुल हादी)*

सवाल: तो ऐसे दुश्मन से हिफ़ाज़त में रहने का हीला और तदबीर क्या है? इसकी वज़ाहत फ़रमाइये ताकि इसके मुताबिक़ अमल किया जा सके?

जवाब: हम बयान कर चुके हैं कि नफ़्स का मामला सबसे ज़्यादा सख़्त है क्योंकि इसे बिल्कुल ख़त्म करना भी अल्लाह की हिकमत के ख़िलाफ़ है क्योंकि यह इबादत के सिलसिले में बन्दों की सवारी और ज़रिया है। कहते हैं कि किसी देहाती ने अपने दोस्त के लिए दुआए ख़ैर की और कहा कि अल्लाह तआला तेरे हर दुश्मन को ज़लील करे, सिवाए नफ़्स के।

क्योंकि न तो इसे बिल्कुल ख़त्म किया जा सकता है क्योंकि इसमें भी नुक़सान है तो दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना ज़रूरी है कि नेकियों के हासिल करने के लिए इसको क़ुव्वत और इसकी तरबियत करो और बुराइयों से महफ़ूज़ रहने के लिए इसको कमज़ोर भी रखो और बन्दिश में भी।

इस बयान से साफ़ हो गया कि नफ़्स का इलाज बहुत मुश्किल काम और बड़ी दिक़्क़ते नज़र (बारीक नज़र) की ज़रूरत है। हम यह भी बयान कर चुके हैं कि इसको तक़वा और वरा (परहेज़गारी) की लगाम दिए रखो, ताकि नेकियाँ हासिल हों और गुनाहों से हिफ़ाज़त हो।

सवाल: नफ़्से अम्मारा (बुराई पर उभारने वाला नफ़्स) तो बहुत ही सरकश, ज़िद्दी और बदफ़ितरत शय है, इसका लगाम से क़ाबू में आना मुश्किल है इसलिए और कौन सा हीला हो सकता है जिससे हम इसको क़ाबू में कर सकें?

जवाब: तुम्हारी यह मुश्किल दुरुस्त है, वाक़ई यह इन्तेहाई सरकश है, मगर इसका हीला यह है कि इसे बहुत ज़लील व ख़्वार करके रखा जाए ताकि लगाम में आ सके।

उल्मा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि नफ़्स को ख़्वार और इसके ज़ोर को तीन चीज़ों से तोड़ा जा सकता है।

पहली तो यह कि इसे शहवात (ख़्वाहिशों) से रोका जाए क्योंकि अड़ियल हैवान को जब चारा कम मिलता है तो नर्म हो जाता है।

दूसरी चीज़ यह कि इबादतों का भारी बोझ इस पर लाद दिया जाए क्योंकि गधे को जब चारा कम दिया जाए और बोझ ज़्यादा लादा जाए तो लाज़िमी तौर पर अपनी शेख़ी छोड़ देता है और फ़रमाबरदार हो जाता है।

तीसरी चीज़ यह है कि हर वक़्त रब तआला से मदद तलब करता रहे कि वह नफ़्स के शर व फ़साद से बचाए रखे, तुमने क़ुरआन-ए-पाक में हज़रत यूसुफ़ عليه السلام का यह इरशाद नहीं पढ़ा:

إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِالسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ ۚ

(बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रहम करे।)

(सूरह यूसुफ़, आयत-53)

जब तुम इन तीन बातों पर कारबन्द हो जाओगे तो इन्शा अल्लाह तआला सरकश नफ़्स फ़रमाबरदार हो जाएगा। इस वक़्त तुम्हें इसको दबाने और लगाम देने में जल्दी करनी चाहिए ताकि आइन्दा के लिए इसकी शरारतों से महफ़ूज़ रह सको।

सवाल: तक़्वे की वज़ाहत भी फ़रमा दें ताकि हम तक़्वे की हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो जायें?

जवाब: ऐ अज़ीज़! अव्वल तुझे यह जानना चाहिए कि तक़वा एक नादिर ख़ज़ाना है अगर तुम इस ख़ज़ाने को पा लेने में कामयाब हो गए तो तुम्हें इसमें बेशक़ीमत मोती व जवाहारात मिलेंगे और इल्म व दौलते रूहानी का बहुत बड़ा ख़ज़ाना हाथ लगेगा, रिज़्क़े करीम तुम्हारे हाथ आ जाएगा, तुम बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर लोगे, बहुत बड़ी ग़नीमत पा लोगे और मुल्के अज़ीम (यानी जन्नत) के मालिक बन जाओगे, यूँ समझो कि दुनिया व आख़िरत की भलाइयाँ तक़वे में जमा कर दी गई हैं। तुम ज़रा क़ुरआन-ए-हकीम में ग़ौर करो कि कहीं इरशाद फ़रमाया ''**अगर तुम तक़वा इख़्तियार करोगे तो हर क़िस्म की ख़ैर व बरकत के मालिक बन जाओगे**'' कहीं तक़वा इख़्तियार करने पर अज्र व सवाब के वादे फ़रमाए गए हैं और कहीं फ़रमाया गया कि सआदत का ज़रिया तक़वा व परहेज़गारी इख़्तियार करना है। मैं यहाँ क़ुरआन हकीम से तक़वे के 12 फ़ायदे बयान करता हूँ:

1. **मुत्तक़ी शख़्स की रब तआला ह़म्द व सना करता है,** इरशादे रब्बानी है:

وَاِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۱۸۶﴾

(और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो यह बड़ी हिम्मत का काम है।)

(सूरह आले इमरान, आयत-186)

2. **मुत्तक़ी शख़्स दुश्मनों से मामून व महफ़ूज़ रहता है,** जैसा कि इरशाद होता है:

وَاِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا لَا يَضُرُّكُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡــًٔا ؕ

(और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किए रहो तो इनका दाँव तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा।)

(सूरह आले इमरान, आयत-120)

3. **मुत्तक़ी शख़्स की अल्लाह तआला ताईद व इमदाद फ़रमाता है,** इरशादे ख़ुदावन्दी है:

وَاللّٰهُ وَلِىُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿﴾

(और डर वालों का दोस्त अल्लाह।)

(सूरह जासिया, आयत-19)

4. **तक़वे वाले आख़िरत की हौलनाकियों और वहाँ की सख़्तियों से बचे रहेंगे और दुनिया में उन्हें रिज़्क़े हलाल नसीब होगा।** इरशादे रब्बानी है:

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके लिए निजात की राह निकाल देगा, और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो।)

(सूरह तलाक़, आयत-2)

5. **उसके आमाल की इस्लाह हो जाएगी,** क़ुरआन पाक में हैः

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٧٠

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ

(ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए सँवार देगा।)

(सूरह अलअहज़ाब, आयत-70, 71)

6. **तक़वे की बरकत से तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं,** क़ुरआन मजीद में है:

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

(और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।)

(सूरह अलअहज़ाब, आयत-71)

7. **मुत्तक़ी शख़्स अल्लाह तआला का दोस्त बन जाता है,** जैसा कि कलामुल्लाह शरीफ़ में है:

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٤

(बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है।)

(सूरह तौबा, आयत-4)

8. तक़वे से आमाल क़ुबूलियत के दर्जे को पहुँचते हैं, इरशाद है:

قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾

(अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।)

(सूरह अलमाइदाह, आयत-27)

9. तक़वे की वजह से बन्दा अल्लाह तआला के यहाँ एजाज़ व इकराम (इनाम) का मुस्तहिक़ हो जाता है, अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है:

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ

(बेशक अल्लाह के यहाँ तुममे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह जो तुममें ज़्यादा परहेज़गार है।)

(सूरह अलहुजरात, आयत-13)

10. मुत्तक़ी लोगों का मौत के वक़्त दीदारे इलाही और आख़िरत में निजात की बशारत दी जाती है, इरशादे ख़ुदावन्दी है:

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ط

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ط

(वो जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं उन्हें ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।)

(सूरह यूनुस, आयत- 63, 64)

11. मुत्तक़ी लोग आतिशे दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहेंगे, रब तआला का इरशाद है:

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

(फिर हम डर वालों को बचा लेंगे।)

(सूरह मरयम, आयत-72)

दूसरी जगह फ़रमाया:-

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾

(और बहुत जल्द उससे दूर रखा जाएगा जो सबसे बड़ा परहेज़गार।)

(सूरह अललैल, आयत 17)

12. अहले तक़वा को हमेशा के लिए जन्नत में रहने की सआदत नसीब होगी। जैसे कि ह़क़ तआला का इरशाद है:

اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾

((जन्नत) परहेज़गारों के लिए तैयार रखी है।)

(सूरह आले इमरान, आयत-133)

तो ख़ुलासा यह निकला कि दुनिया व आख़िरत की तमाम सआदतमन्दियाँ और भलाइयाँ इस एक तक़वे में जमा कर दी गई हैं। इसलिए ऐ अज़ीज़! तू भी तक़वे की राह इख़्तियार कर हस्बे इस्तिताअत (बिसात के मुताबिक़) इससे हिस्सा हासिल कर। ऊपर ज़िक्र हुए फ़ायदे में तीन फ़ायदे ख़ास कर इबादत से तअल्लुक़ रखते हैं।

पहला:- इबादत की तौफ़ीक़ और उसमें मदद व ताईद जैसे फ़रमाया गया:

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

(अल्लाह डर वालों के साथ है।)

(सूरह अलबक़राह, आयत -194)

दूसरा:- यह कि आमाल की इस्लाह व दुरुस्ती और इबादत की ख़ामियों को पूरा करना, यह चीज़ भी तक़वे से हासिल होती है, चुनांचे फ़रमाया:

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ

(तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए सँवार देगा।)

(सूरह अलअहज़ाब, आयत 71)

तीसरा:- यह कि आमाल के क़बूल की फ़ज़ीलत भी तक़वे वाले को ही नसीब होती है, इरशादे इलाही है:

إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

(अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।)

(सूरह अलमाइदह, आयत - 27)

और इबादत का दारोमदार भी इन तीन बातों पर है, पहले तो ख़ुद इबादत की तौफ़ीक़ ताकि उसकी बन्दगी की जा सके फिर उसमें जो कमी रह जाए उसकी इस्लाह और फिर उस इबादत का दरगाहे हक़ तआला में मक़बूल होना, ये तीनों बातें यानी इबादत की तौफ़ीक़, इबादत की इस्लाह और आमाल का क़बूल होना वो चीज़ें हैं जिन्हें आबिद लोग अल्लाह तआला से रो रो कर मांगते हैं और दुआ करते हैं

رَبَّنَا وَفِّقْنَا لِطَاعَتِكَ وَاتِمْ تَقْصِيْرَنَا وَتَقَبَّلْ مِنَّا

"ऐ परवरदिगार! हमें ताअत की तौफ़ीक़ दे और हमारी कोताहियों को पूरा फ़रमा और हमारी ताअत को क़बूल फ़रमा।"

लेकिन अल्लाह तआला ने तक़वे वालों से ख़ुद ही मुतालबे के बग़ैर इन तीनों उमूर का वादा फ़रमा लिया है और तक़वे वालों के एज़ाज़ व इकराम का ज़िक्र फ़रमाया है। इसलिए अगर रब तआला की इबादत व बन्दगी करना चाहते हो बल्कि दुनिया व अख़िरत की तमाम सआदत समेटना चाहते हो तो अपने अन्दर तक़वे की सिफ़त पैदा करो। एक शायर ने तक़वे की क्या ही उम्दा अन्दाज़ में तारीफ़ की है, अशआर का मतलब पेश है:

- *"जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है वही नफ़ा वाली शय हासिल करता है।"*
- *"क़ब्र में इन्सान के साथ सिर्फ़ तक़वा और नेक अमल ही जाते हैं।"*

तक़वे की शान में दूसरे शाइरों ने इस तरह कहा, अशआर का मतलब पेश है:

- *जिस शख़्स को अल्लाह तआला की मारिफ़त हासिल हो और वह उस मारिफ़त को काफ़ी न जाने तो ऐसा शख़्स बदबख़्त है।*
- *दौलत से इन्सान को क्या इज़्ज़त हासिल हो सकती है, इज़्ज़त तो सब तक़वे से वाबस्ता है।*

- *मुत्तक़ी शख़्स को जो चीज़ अल्लाह तआला की इताअत में हासिल होती है वह नुक़सानदेह नहीं बल्कि फ़ायदेमन्द ही है।*

कुछ लोगों ने किसी के मरने के बाद उसकी क़ब्र पर यह लिखा देखा, शेर का मतलब पेश है:

"तक़वा ही आख़िरत का तोशा है, अब तेरी मर्ज़ी है कि उसे हासिल करे या छोड़ दे।"

फिर इस अस्ल पर भी ग़ौर करो कि तुम सारी उम्र इबादत के लिए मशक़्क़तें उठाते और मुजाहिदे व रियाज़तें करते हो, यहाँ तक कि तुम इबादत के मक़सद को पा लेते हो लेकिन ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वह इबादत दरबारे इलाही में मक़बूल न हो तो सारी कोशिशें और मुजाहिदे बर्बाद हो गए, तुम्हें मालूम है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है:

إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

(अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।)

(सूरह अलमाइदह, आयत - 27)

तो ज़ाहिर हुआ कि तमाम मामला तक़्वे ही से मुताल्लिक़ है, इसीलिए हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि – ***"रसूलुल्लाह ﷺ दुनिया की किसी शय पर या किसी इन्सान पर ताज्जुब नहीं फ़रमाते थे मगर तक़्वे वाले पर।"*** (मुसनद इमाम अहमद)

हज़रत क़तादह رضي الله عنه से मरवी है कि तौरात शरीफ़ में लिखा है –***"ऐ इन्सान! तू मुत्तक़ी बन जा, फिर जहाँ चाहे सो"*** (अज़ ज़ोहदुल कबीर, बैहक़ी)

हज़रत आमिर इब्ने क़ैस رحمه الله के मुताल्लिक़ सुना है कि आप मौत के वक़्त रो पड़े हालांकि ज़िन्दगी में आपकी हालत यह थी कि हर दिन रात में एक हज़ार रकअत नफ़्ल पढ़ते थे फिर अपने बिस्तर पर आते थे और बिस्तर को मुख़ातिब होकर फ़रमाते थे- *"ऐ हर बुराई की जगह! क़सम ख़ुदा की मैंने तुझे एक पलक भर भी पसन्द नहीं किया"*

जब आप رحمه الله रोए तो किसी ने पूछा आप क्यूँ रोते हैं? आपने जवाब दिया मैं रब तआला के इस क़ौल को याद करके रोता हूँ कि- **"अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।"** (सूरह माइदह, आयत- 27)

फिर एक और नुकते पर भी ग़ौर करो तो तमाम उसूलों की अस्ल है, वह यह कि बाज़ स़ालेह़ीन ने अपने किसी शैख़ की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुझे कोई वसीयत कीजिये। तो शैख़ ने फ़रमाया कि मैं तुझे अल्लाह तआला की वह वसीयत करता हूँ जो उसने तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को की है, चुनांचे इरशाद फ़रमाया:

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

(और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हमने उनसे जो तुम से पहले किताब दिए गए और तुमको कि अल्लाह से डरते रहो।)

(सूरह अन्निसा, आयत -131)

मैं कहता हूँ बन्दे की बेहतरी और भलाई का इल्म अल्लाह तआला के सिवा और किसे हो सकता है और ख़ुदावन्द तआला बन्दे के लिए सबसे ज़्यादा ख़ैरख़्वाह है ज़्यादा रह़म करने वाला और मेहरबान है तो जहाँ में बन्दे के लिए तक़वे के अलावा अगर कोई चीज़ फ़ायदेमन्द होती, उसमें ज़्यादा भलाई होती, उसका ज़्यादा सवाब होता, इबादत में उसकी ज़्यादा ज़रूरत होती, शान में तक़वे से ऊपर होती और दुनिया व आख़िरत में तक़वे से ज़्यादा वक़अत रखती तो अल्लाह तआला तक़वे के बजाए अपने बन्दों को उसकी नसीहत करता और उसका हुक्म देता और अपने ख़्वास को उसी की ताकीद फ़रमाता, क्योंकि उसकी हिकमत मुकम्मल और उसकी रह़मत वसीअ यानी बहुत ज़्यादा है तो जब रब तआला ने तक़वे की ताईद फ़रमाई और तमाम अव्वलीन व आख़रीन को उसका हुक्म दिया तो साबित हो गया कि तक़वा ही सबसे आला चीज़ है कोई और चीज़ नहीं और न उसके सिवा कुछ और मक़सूद है।

इस तक़रीर से तुम पर भी साफ़ हो गया कि अल्लाह तआला ने हर भलाई, हर रहनुमाई, हर इरशाद, हर तम्बीह व ताईद, हर तालीम व तहज़ीब को तक़वे से ही मुताल्लिक़ किया है और यह उसने अपनी हिकमत व रह़मत के ऐन मुताबिक़ किया है और तुम्हें यह भी मालूम हो गया कि तक़वा ही

दीनी व दुनियावी और आख़िरत की भलाईयों का इकट्ठा करने वाला और तक़वा बन्दगी व इबादत को क़ुबूलियत के दर्जे पर पहुँचाने का ज़िम्मेदार व कफ़ील है। एक शायर ने क्या ख़ूब कहा है जिसका तर्जुमा है:-

- *सुन लो कि तक़वा ही इज़्ज़त व बुज़ुर्गी है, दुनिया की मुहब्बत तो ज़िल्लत व ख़्वारी है।*
- *जब कोई शख़्स अपने अन्दर तक़वे की ख़ासियत पैदा कर ले*
- *तो वह अगर कपड़ा बुनने वाला है या हज्जाम का पेशा इख़्तियार कर ले तो उसमें कोई ऐब नहीं।"*

यह आख़िरी नुकता वह अस्ल है कि इससे आला कोई अस्ल नहीं और नूर व हिदायत वाले के लिए अस्ल काफ़ी है। अब चाहिए कि इस पर अमल करे और दूसरी चीज़ों से बेनियाज़ हो जाए। (*वल्लाहु तआला वलिय्युल हिदायति वत्तौफ़ीक़*)

सवाल: तुम्हारी इस तफ़्सील से मालूम होता है कि तक़वा बहुत आला शय है, इसका मरतबा बहुत बुलन्द है और दुनिया व आख़िरत में इसकी सख़्त ज़रूरत है, और इसकी पहचान करना बहुत ही ज़्यादा ज़रूरी है लिहाज़ा हमें तफ़्सील के साथ उसकी हक़ीक़त बताई जाए?

जवाब: बात यूँ ही है कि तक़वा एक निहायत ही अज़ीम शय है, इसको हासिल करना ज़रूरी है और इसकी मारिफ़त हासिल किए बग़ैर चारा नहीं लेकिन तुम्हें मालूम है कि जिस क़द्र कोई काम आला व फ़ायदेमन्द होता है उसी क़द्र उसका हासिल करना मुश्किल होता है और उसमें उतनी ही ज़्यादा जद्दोजहद व मशक़्क़त होती है और उतनी ही ज़्यादा उसके हासिल करने के लिए हिम्मत की ज़रूरत होती है। लिहाज़ा जिस तरह यह तक़वा एक नफ़ीस व आला चीज़ है उसी तरह उसको हासिल करने के लिए बहुत जद्दोजहद की ज़रूरत है और उसके हुक़ूक़ व आदाब पर भी निगाह रखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि दर्जे मुजाहिदे के मुताबिक़ अता होते हैं और जिस दर्जे की कोशिश की जाती है उसी दर्जे का फल मिलता है,

क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गया है:

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

(और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपना रास्ता दिखा देंगे और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है।)

(सूरह अनकबूत, आयत- 69)

और अल्लाह तआला रऊफ़ और रहीम है, हर मुश्किल को हल करना उसके दस्ते क़ुदरत में है, अब तुम हमारी बातों की तरफ़ कान लगाओ और उनको ज़हन नशीन करने के लिए बेदार हो जाओ और तक़वे की हक़ीक़त को पूरे ग़ौर से समझो, ताकि उसकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ होने के बाद उसको हासिल करने के लिए कमर कस सको और उसकी हक़ीक़त जान लेने के बाद उस पर अमल करने के लिए रब तआला से मदद तलब करो क्योंकि अस्ल चीज़ वही है। अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़्ल व करम से सबको तौफ़ीक़ देता है।ऐ अज़ीज़! (अल्लाह तआला तेरे दीन में बरकत और तेरे यक़ीन में इज़ाफ़ा फ़रमाए) तक़्वे के जो मअना मशाइख़े किराम ने बयान फ़रमाए हैं पहले वह जानें, चुनांचे बाज़ मशाइख़ ने तक़्वे के यह मअना किए हैं:-

उस गुनाह से दिल को बचाना जिस की मिस्ल आगे तुझसे सादिर न हुआ। ताकि तुम्हारे अन्दर गुनाह के तर्क कर देने के इरादे से हर क़िस्म के गुनाह से बचाव व हिफ़ाज़त पैदा हो जाए।

मेरे शैख़ ने तक़्वे की यही तारीफ़ की है क्योंकि लफ़्ज़े 'तक़्वा' अरबी की लुग़त में अस्ल में 'वक़्वा' था और लफ़्ज़ 'वक़्वा विक़ायतुन' की तरह मसदर (मसदर उस इस्म को कहते हैं जिससे दूसरे कलिमे बनते हों और वह ख़ुद किसी से न बना हो) है। कहा जाता है 'वक़ा यक़ेया विक़ायतुन व वक़्वा' फिर 'वाओ' को 'ते' से तबदील किया गया जैसे 'वुकलान' से 'तुकलान' बना दिया गया और 'विक़ायतुन' के मअना हैं बचाव व हिफ़ाज़त का ज़रिया। जब बन्दा गुनाहों के छोड़ देने का पक्का इरादा कर लेता है तो ऐसा इरादा करने वाले को मुत्तक़ी और इन इरादे व मज़बूती को तक़्वा कहते हैं। (नोट: हिन्दी वालों को समझ न आए तो किसी आलिम से समझें)

फिर तक़वे का इस्तेमाल क़ुरआने करीम में तीन चीज़ों के लिए हुआ है-

1. **ख़ौफ़ व हैबते ख़ुदावन्दी:**

وَّاِيَّ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾

(और मुझी से डरो।) (सूरह अलबक़रह, आयत- 41)

दूसरी जगह फ़रमाया:

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ

(और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फिरोगो।)

(सूरह अलबक़रह, आयत- 281)

2. **ताअत व इबादत मे:-** तक़वा का लफ़्ज़ ताअत व इबादत में भी इस्तेमाल होता है, चुनांचे रब तआला का इरशादे गिरामी है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ

(ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का ह़क़ है।)

(सूरह आले इमरान, आयत -102)

यहाँ डर से मुराद ताअत व इबादत है। सय्यदना हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ ने यही मअना किए हैं, आपने तर्जुमा करते हुए यूँ फ़रमाया **'अल्लाह तआला की ऐसी इताअत करो जैसी कि चाहिए'**

और हज़रत मुजाहिद علیہ الرحمہ ने इस आयत की यूँ तफ़सीर फ़रमाई है कि '***इत्तक़ुल्लाहा ह़क़्क़ा तुक़ातिह***' के मअना है **"रब तआला की ऐसी इताअत करना कि फिर नाफ़रमानी न हो और उसकी ऐसी याद का नक़्श दिल में क़ायम करना कि फिर भूल न हो और उसकी इस तरह शुक्रगुज़ारी की जाए कि हरगिज़ नाशुक्री न हो"।** (तफ़सीर अल बहरुल मुहीत)

3. और लफ़्ज़े तक़वा क़ुरआने ह़कीम में तीसरे इस मअना में इस्तेमाल हुआ है कि '***तन्ज़ीहुल क़ल्बि मिनज़्ज़ुनूब***' यानी दिल को गनाहों से दूर रखना। और तक़वा के हक़ीक़ी मअना यही तीसरे मअना हैं पहले दोनों मअना मजाज़ी (फ़रज़ी) हैं, क्या तुमने क़ुरआन मजीद में यह आयते करीमा नहीं पढ़ी:-

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝

(और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं।)

(सूरह अननूर, आयत - 52)

इस आयते करीमा से पहले इताअत और ख़ौफ़ का ज़िक्र फ़रमाया और फिर तक़्वे का, तो मालूम हुआ कि तक़्वा इताअत व ख़शीअत (यानी अल्लाह के डर) के सिवा किसी तीसरी चीज़ का नाम है और वह है *'तन्ज़ीहुल क़ल्बि मिनज़्ज़ुनूब'* यानी दिल को गुनाहों से दूर रखना।

फिर उल्मा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि तक़्वा तीन मरतबों में है:

1. *शिर्क से तक़्वा यानी शिर्क से बचना*
2. *बिदअत से तक़्वा यानी बिदअत से बचना*
3. *गुनाहों से तक़्वा यानी गुनाहों से बचना*

और अल्लाह तआला ने ये तीनों मरतबे इस एक आयत में ज़िक्र फ़रमा दिए हैं, वह आयते मुबारका यह है:

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ

(जो ईमान लाए और नेक काम किए उन पर कुछ गुनाह नहीं है जो कुछ उन्होंने चखा जबकि डरें और ईमान रखें और नेकियाँ करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें।)

(सूरह अलमाइदह, आयत - 93)

इस आयत में पहले तक़्वा से शिर्क से परहेज़ और ईमान से तौहीद मुराद है। दूसरे तक़्वा से बिदअत से परहेज़ और उसके मुक़ाबिल ईमान से अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइद व नज़रियात का इक़रार करना मुराद है और तीसरे तक़्वा से सग़ीरा यानी छोटे गुनाहों से परहेज़ और उसके मुक़ाबिल एहसान से ताअत व इस्तेक़ामत (यानी मज़बूती से उस पर जमे रहना) मुराद है, तो इस वज़ाहत से ज़ाहिर हुआ कि इस आयत में तक़्वा के

तीनों मरतबे बयान कर दिए गए हैं यानी ईमान का मरतबा, मरतबा-ए-सुन्नत और अल्लाह की इताअत पर इस्तेक़ामत (यानी मज़बूती से उस पर जमे रहने) का मरतबा। यह है वह तफ़्सील जो हमारे उल्मा-ए-किराम ने तक़वा के मअना बयान करते हुए इरशाद फ़रमाई है।

मैं (इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह) कहता हूँ कि मैंने तक़वे का एक और मअना भी पाया है और यह मअना हुज़ूर عليه السلام से एक मशहूर हदीस में मरवी है, ***"मुत्तक़ियों को मुत्तक़ी इस लिए कहा गया कि उन्होंने उस काम को भी तर्क कर दिया जिसमें शरअन कोई हर्ज नहीं यह एहतियात करते हुए कि उसके ज़रिए ऐसे काम में न पड़ जायें जिसमें हर्ज व गुनाह हो"*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)'

मैं मुनासिब ख़्याल करता हूँ कि उल्मा-ए-किराम के बयान किए हुए मअना को जमा करूँ ताकि तक़वे के मुकम्मल और पूरे मअना बयान हो जायें। तो तक़वा के जामेअतरीन मअना यह हुए कि "**हर उस शय और काम से बचना जिससे दीन को नुक़सान पहुँचने का ख़ौफ़ हो**" तुम्हें मालूम नहीं कि बुख़ार में मुब्तला शख़्स को जब वह हर उस चीज़ से परहेज़ करे जो उसकी सेहत के लिए नुक़सानदेह हो जैसे खाना पीना और फल वग़ैरा तो उसे अस्ल परहेज़ करने वाला कहते हैं। इसी तरह जो शख़्स हर ख़िलाफ़े शरीअत बात से बचे तो ऐसा शख़्स अस्ल में मुत्तक़ी कहलाने का हक़दार है।

वो चीज़ें जिनसे दीन को नुक़सान पहुँचने का ख़ौफ़ है दो तरह की हैं:

1. **हराम व गुनाह**
2. **हलाल मगर ज़रूरत से ज़्यादा**,

क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा हलाल चीज़ों में मशग़ूल रहना भी धीरे धीरे गुनाह में मुब्तला होने की वजह बनता है और वह इस तरह कि ज़रूरत से ज़्यादा हलाल चीज़ों के इस्तेमाल से और उनकी आदत डालने से नफ़्स की हिर्स, उसकी सरकशी और शहवतें (ख़्वाहिशें) ज़ोर पकड़ जाती हैं और बन्दा गुनाह में मुब्तला हो जाता है, तो जो शख़्स अपने दीन को मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ करना चाहता हो, उसके लिए ज़रूरी है कि हराम और फ़ुज़ूल हलाल से बचे ताकि फ़ुज़ूल हलाल से हराम तक न पहुँच जाए। इसी बात को

रसूलुल्लाहﷺ ने इस इरशादे मुबारक में बयान फ़रमाया है: ***फ़ुज़ूल हलाल से भी परहेज़ करते हैं ताकि हराम में न पड़ जायें*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

तो तक़वा के जामेअतरीन तारीफ़ यह हुई कि "***दीन में हर नुक़्सानदेह चीज़ से बचना व परहेज़ करना***" यह है तक़वे की हक़ीक़त व माहियत का तफ़सीली बयान। वलहम्दुलिल्लाह।

इल्मे सिर्र (राज़ वाले इल्म) के ऐतबार से तक़वे की हक़ीक़त यह है कि "*हर उस बुराई से दिल को दूर रखना जिसकी मिस्ल बन्दे ने पहले बुराई न की हो*" ताकि गुनाहों से दूर रहने का इरादा उनसे हिफ़ाज़त का ज़रिया बन जाए।

फिर शर दो क़िस्म के हैं: एक शर्रे असली, और वह यह है जिससे शरीअत ने बिल्कुल रोका हो, जैसे गुनाह व मआसी। --- दूसरा शर्रे ग़ैरे असली, इससे वह शर मुराद है जिससे शरीअत ने अदब के लिए रोका हो। और वह फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़्यादा हलाल है जैसे आम मुबाह चीज़ें जिनसे शहवत (ख़्वाहिश) को ताक़त मिलती है।

शर्रे असली से बचना फ़र्ज़ है और न बचने की सूरत में अज़ाब का मुस्तहिक़ होगा। शर्रे ग़ैरे असली से बचना बेहतर व मुस्तहब है और न बचने पर क़ियामत के रोज़ हश्र में हिसाब के लिए रोका जाएगा (यानी उसको हिसाब देना पड़ेगा और जन्नत में जाने में देर होगी) और उससे हर चीज़ का हिसाब लिया जाएगा और दुनिया में बिना ज़रूरत कामों के करने पर उसे शर्म दिलाई जाएगी।

शर्रे असली से बचने वाले का तक़वा कम दर्जे का है और यह ताअत पर इस्तेक़ामत (यानी मज़बूती से उस पर जमे रहने) का दर्जा है और शर्रे ग़ैरे असली से बचने वालों का दर्जा बुलन्द है और यह ज़रूरत से ज़्यादा मुबाह व जाइज़ चीज़ों को तर्क करने का दर्जा है और जो शख़्स दोनों क़िस्म का तक़वा अपने अन्दर पैदा कर ले वह कामिल (यानी मुकम्मल) मुत्तक़ी है यही वह शख़्स है जिसने तक़वे के तमाम हक़ों का लिहाज़ रखा, ऐसा शख़्स ही तक़वे के पूरे फ़ायदे हासिल करता है और इसी का नाम कामिल वरा (परहेज़गारी) है जिस पर दीन के कमाल का दारोमदार है। दरबारे इलाही में हाज़िरी के लिए जिन आदाब की ज़रूरत है वह इसी तक़वे से हासिल होते हैं तक़वे के इन मअना को ख़ूब समझो और फिर उन पर अमल करो।

सवाल: यह बयान फ़रमाइये कि इन तक़वे के हासिल करने का क्या तरीक़ा और क्या ज़रिया है और हम अपने नफ़्स को इसका कैसे आमिल बना सकते हैं ताकि यह इल्म हो जाए कि नफ़्स को इस तक़वे से लगाम किस तरह दी जाए?

जवाब: इसकी सूरत यह है कि नफ़्स को पूरे पक्के इरादे से हर गुनाह से रोका जाए और हर तरह के फ़ुज़ूल हलाल से दूर रखा जाए ऐसा करने से बदन के ज़ाहिरी व बातिनी हिस्सों में तक़वे की ख़ूबी आ जाएगी आँख, कान, ज़बान, दिल, पेट, शर्मगाह और तमाम जिस्म के हिस्सों में तक़वा पैदा हो जाएगा और नफ़्स तक़वे की लगाम में अच्छी तरह आ जाएगा।

इस बाब की शरह बहुत लम्बी है, अपनी किताब 'इहयाउल उलूम' में हमने इसकी तफ़्सील की तरफ़ इशारा किया है लेकिन जिस अम्र का बयान यहाँ ज़्यादा ज़रूरी है वह यह है कि पाँच आज़ा की ख़ास तौर पर हिफ़ाज़त की जाए और वह आज़ा ये हैं:

1. **आँख**
2. **कान**
3. **ज़बान**
4. **दिल**
5. **शिकम (पेट)**

दीन को नुक़सान से बचाने के लिए इन ज़िक्र किए गए आज़ा को हर गुनाह, हर हराम, हर फ़ुज़ूल हलाल और हर इसराफ़ यानि फ़ुज़ूलख़र्ची से हिफ़ाज़त में रखना ज़रूरी है। जब इन पाँच आज़ा की हिफ़ाज़त हो गई तो उम्मीद है कि बदन के बाक़ी आज़ा भी महफ़ूज़ हो जायेंगे और बन्दे में पूरे तौर पर तक़वे की सिफ़त आ जाएगी।

हम पाँच फ़स्लों में इन आज़ा से मुताल्लिक़ बातों का बयान करते हैं और तुम्हें बताते हैं कि कौन कौन सी चीज़ उनके लिए हराम है जिनसे उनको हिफ़ाज़त में रखना ज़रूरी है।

पहली फ़स्ल
(आँख के बयान में)

फिर तुम पर अपनी आँख की हिफ़ाज़त भी लाज़िम है (अल्लाह तआला हमें और तुम्हें नज़र की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ दे) क्योंकि आँख हर फ़ितने और हर आफ़त का सबब है और मैं इसके मुताल्लिक़ तीन उसूल बयान करता हूँ, जिन पर अमल करने से नज़र की हिफ़ाज़त पूरी तरह इन्शा अल्लाह तआला पूरी तरह मयस्सर आ जाएगी।

पहला उसूल: वह जो क़ुरआन मजीद की आगे लिखी आयत में बयान किया गया है:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ

ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾

(मुसलमान मर्दों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है।)

(सूरह नूर, आयत -30)

ऐ अज़ीज़! तू जान कि इस मुख़्तसर सी आयत में ग़ौर करने से मुझे तीन अजीब व नादिर माअना मालूम हुए हैं यानी इस आयत में अदब सिखाना, नसीहत करना और आगाही तीनों अम्र जमा कर दिए गए हैं।

अदब सिखाना, तो इस आयत के इस जुमले में लफ़्ज़ 'यग़ुद्दू' आया है जो हुक्म देने का लफ़्ज़ है यानी इसमें बन्दों को हुक्म दिया गया है तो ग़ुलाम पर लाज़िम हो जाता है कि अपने आक़ा के हुक्म की तामील करे और उसके बताए हुए आदाब को बजा लाए वर्ना बेअदबों में शुमार होगा और बेअदब ग़ुलाम को आक़ा की मजलिस में हाज़िर होने की इजाज़त नहीं मिलती और न वह आक़ा के सामने आने के लायक़ होता है। इस नुकते को दिमाग़ में ख़ूब बिठा लो और इसमें ग़ौर करो क्योंकि इसमें बहुत कुछ है। और नसीहत के लिए आया है ***ज़ालिका अज़्का-लहुम*** (तर्जुमा: यह उनके लिए बहुत सुथरा है) इस जुमले के दो मतलब हो सकते हैं:

एक यह कि नज़रों को झुकाए रखना मोमिनों के दिलों को ज़्यादा पाक रखने वाली शय है क्योंकि ज़कात तहारत के मअना में है और तज़किया व ततहीर के एक ही मअना यानी सुथरा है। दूसरा मतलब यह हो सकता है कि नज़रों को झुकाए रखना मोमिनों की नेकियों को बढ़ाने और ज़्यादा करने की वजह है क्योंकि ज़कात के मअना लुग़त में बढ़ने और ज़्यादा होने के भी आते हैं तो मतलब यह हुआ कि नज़र नीची रखना दिल को बहुत ज़्यादा पाक रखता है और ताअत व ख़ैर में इज़ाफ़े का ज़रिया है और यह इसलिए है कि अगर तुम नज़र नीची न रखो बल्कि उसे आज़ादाना हर चीज़ पर डालो तो बाज़ वक़्त तुम बेफ़ायदा और फ़ुज़ूल भी इधर उधर देखना शुरू करोगे और फिर रफ़्ता रफ़्ता तुम्हारी नज़र हराम पर भी पड़ना शुरू हो जाएगी।

अब अगर जानबूझ कर हराम पर नज़र डालोगे तो यह बहुत बड़ा गुनाह है कि तुम्हारा दिल हराम शय पर आ जायेगा और तुम तबाही का शिकार हो जाओगे क्योंकि रिवायात में आया है कि बाज़ वक़्त बन्दा किसी शय पर नज़र डालता है तो उससे इस तरह असर क़बूल करता है जिस तरह चमड़ा दबाग़त से रंग को।

और अगर उस तरफ़ देखना हराम न हो बल्कि मुबाह हो तो हो सकता है कि तुम्हारा दिल मशग़ूल हो जाए और उसके सबब तुम्हारे दिल में तरह तरह के वसवसे और ख़तरे आना शुरू हो जायें और शायद वसवसों की चीज़ तक अमली तौर पर न पहुँच सको और इस तरह वसवसों का शिकार होकर नेकियों से रह जाओगे लेकिन अगर तुम ने किसी तरफ़ देखा ही नहीं तो हर फ़ितने, वसवसे और ख़तरे से महफ़ूज़ रहोगे और अपने अन्दर राहत व ख़ुशी महसूस करोगे।

इस चीज़ को हज़रत ईसा عليه السلام ने इन अल्फ़ाज़ में अदा फ़रमाया है: *“अपने आपको हराम की नज़र से पूरी एहतियात से बचाओ क्योंकि ऐसी बदनज़री दिल में शहवत (ख़्वाहिश) का बीज बोती है और उस गुनाह करने वाले को फ़ितने में मुब्तला कर देती है।”*

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री رحمة الله عليه का इरशाद है कि- *“आँख को नज़रे हराम से रोकना शहवतों से बचने का बेहतरीन तरीक़ा है।”*

किसी शायर ने क्या अच्छा कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- ***अगर तुम अपनी आँखों को खुला छोड़ दोगे तो रंगारंग नज़ारे एक रोज़ तुम्हें मशक़्क़त में डाल देंगे।***
- ***तुम वह चीज़ें देखोगे कि न तो उन तमाम पर तुमको क़ुदरत होगी और न उनमें बाज़ से सब्र हो सकेगा।।***

जब तुम हर वक़्त नज़र नीची रखोगे और उसे बेफ़ायदा और बे मतलब चीज़ों पर नहीं डालोगे तो तुम्हारा सीना वसवसों से साफ़ रहेगा, दिल फ़ारिग़ होगा, और ख़तरात से राहत में रहोगे, तुम्हारा नफ़्स आफ़तों से सलामती में रहेगा और नेकियाँ करने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह दे सकोगे, इस नुकते को ख़ूब समझ लो। (*वल्लाहु तआला अलमुवफ़्फ़िक़*)

और आगाही इस जुमले में है "*इन्नल्लाहा ख़बीरुम बिमा यस़्नऊन*" (तर्जुमा: अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है)।

दूसरी जगह फ़रमाया:-

يَعۡلَمُ خَآئِنَةَ الۡاَعۡيُنِ وَمَا تُخۡفِى الصُّدُوۡرُ ﴿١٩﴾

(अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।)

(सूरह अलमोमिन, आयत-19)

हक़ का ख़ौफ़ रखने वालों के लिए यह तम्बीह (ख़बरदार या होशियार करना यानी नसीहत) और आगाही काफ़ी है।

दूसरा उसूल: इस सिलसिले में दूसरा उसूल वह है जो नबी-ए-करीमﷺ से मरवी है कि आपﷺ ने फ़रमाया:- ***"ग़ैर महरम औरत के हुस्न व जमाल पर नज़र डालना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक है तो जो शख़्स ऐसा करना तर्क कर देगा अल्लाह तआला उसे सुरूरआमेज़ इबादत का मज़ा चखाएगा"।***

इबादत में हलावत (मिठास) और मुनाजात (दुआ) में लज़्ज़त आबिदीन के नज़दीक एक बहुत बड़ी चीज़ है और यह उसूल एक तजुर्बा किया हुआ है जो भी इस पर अमल करेगा उसे ख़ुद इसकी तहक़ीक़ हो जाएगी। बिला शुबा जब कोई शख़्स नज़र को बेकार और बेफ़ायदा कामों से

बाज़ रखेगा तो वह इबादत में लज़्ज़त और ताअत में हलावत और दिल में सफ़ाई महसूस करेगा जिससे वह इससे पहले ख़ाली था।

तीसरा उसूल: ऊपर ज़िक्र किए गए आज़ा की निगाहदाश्त व हिफ़ाज़त का तीसरा तरीक़ा यह है कि इस पर ग़ौर किया जाए कि इन आज़ा से क्या काम लेना है और इन आज़ा को क्या काम करने के लिए बनाया गया है अगर ये आज़ा उस काम करने के क़ाबिल न रहें तो सख़्त हसरत और नुक़सान उठाना पड़ेगा। यह ख़्याल दिल में पुख़्ता हो जाने से भी इन आज़ा की निगहदाश्त हो सकती है।

पाँव फ़िरदौसे बरीं (जन्नत का आला मक़ाम) के बाग़ों व महलों में चलने फिरने के लिए बनाए गए हैं और हाथ जन्नत में शराबे तहूरा (पाकीज़ा शराब) के छलकते जाम पकड़ने और मेवे तोड़ने के लिए दिए गए हैं और आँख दीदारे इलाही से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिए अता हुई हैं और इसी पर हर आज़ा को अन्दाज़ा फ़रमा लीजिए वग़ैरह वग़ैरा यानी बाक़ी आज़ा भी अलग अलग कामों के लिए बनाए गए हैं और ये ज़िक्र हुए मक़सदों से और कोई दूसरा मक़सद आला व अफ़ज़ल नहीं हो सकता। लिहाज़ा जिन चीज़ों को आलातरीन मक़सद के लिए तैयार किया गया हो उन्हें लाज़िमी तौर पर फ़ुज़ूल व नामुनासिब कामों से दूर रखना चाहिए।

अगर तुम ऊपर ज़िक्र किए तीन उसूलों पर कारबन्द हो जाओगे तो इन्शा अल्लाह तआला हर फ़ुज़ूल व हराम चीज़ों से बचे रहोगे। (*वल्लाहु वलीय्युत्तोफ़ीक़ व हुवा हस्बी व नेअमल वकील*)

दूसरी फ़स्ल
(कान के बयान में)

कान को भी बुरी और फ़ुज़ूल बातों के सुनने से महफ़ूज़ रखना ज़रूरी है और उसका ज़रूरी होना दो वजह से है:

एक तो यह कि रिवायत में है कि सुनने वाला भी कलाम करने वाले के साथ शरीक होता है। एक शायर ने इस चीज़ को इस तरह बयान किया है जिसका तर्जुमा पेश है:

- इफ़रात व तफ़रीक़ यानी कमी और ज़्यादती से बच कर दरमियानी राह चलने की कोशिश करो और शुबह वाली जानिब से दूर रहो।
- अपने कान को बुरी बातें सुनने से रोके रखो जिस तरह ज़बान को बुरी गुफ़्तगू से।
- क्योंकि अगर तुम ख़िलाफ़े शरह बातें सुनोगे तो याद रखो कि तुम भी कहने वाले के साथ शरीक समझे जाओगे।

दूसरी वजह यह है कि अगर तुम उन्हें सुनोगे दिल में वसवसे और ख़्यालात पैदा होंगे, इस तरह तुम ख़्यालात में डूब जाओगे और इस सूरत में इबादत में ग़ैर मामूली रुकावट ज़रूर पैदा होगी।

फिर ऐ अज़ीज़! तू जान ले जो गुफ़्तगू इन्सान के दिल और ज़बान तक पहुँचती है उसकी ख़ासियत ऐसी है जैसे पेट में खाना। सब जानते हैं कि बाज़ खाने नुक़सानदेह और बाज़ फ़ायदा देने वाले होते हैं, बाज़ खाने जिस्म की ग़िज़ा बनते हैं और बाज़ ज़हर की तरह बुरा असर करते हैं, ठीक इसी तरह अच्छी और पाकीज़ा गुफ़्तगू से ईमान ताज़ा होता है और बुरी गुफ़्तगू से मुर्दा हो जाता है, बल्कि खाने की निसबत कलाम का असर ज़्यादा होता है और ज़्यादा देर बाक़ी रहता है, इसलिए कि नुक़सानदेह खाना मेदे से नींद वग़ैरा के ज़रिए ख़त्म हो जाता है और बाज़ वक़्त उसका असर कुछ देर रहने के बाद ख़त्म हो जाता है, अगर असर ख़त्म न भी हो तो दवा के ज़रिए ख़त्म किया जा सकता है लेकिन बाज़ बातें बाज़ वक़्त इन्सान के दिल में इस तरह बैठ जाती हैं कि भूलती ही नहीं, अगर वह ख़राब व ना-रवा हों तो इन्सान को हमेशा उनका तसव्वुर ख़राबी में डाले रखता है और उनकी वजह से दिल वसवसों का मैदाने जंग बना रहता है हालांकि उन ख़्यालात से दिल को पाक रखना ज़रूरी होता है, ऐसे वसवसों से दिल को महफ़ूज़ रखने के लिए ह़क़ तआला की मदद तलब करना चाहिए क्योंकि बाज़ वक़्त ये वसवसे किसी बला और आफ़त में मुब्तला कर देते हैं और इन्सान के एहसासात को ख़्वाह मख़्वाह हरकत देते रहते है यहाँ तक कि बन्दा उनके सबब किसी बड़ी आफ़त में मुब्तला हो जाता है, लेकिन अगर इन्सान अपने कानों को फ़ुज़ूल व बेकार बातों के सुनने से महफ़ूज़ रखे तो बहुत सी आफ़तों से बचा रहता है अक़्लमन्द को चाहिए कि इसमें ग़ौर करे। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)।

तीसरी फ़स्ल

(ज़बान के बयान में)

फिर ज़बान की हिफ़ाज़त व निगहदाश्त (निगरानी) और फ़ुज़ूलियात व लग़वियात से उसे बाज़ रखना भी ज़रूरी है क्योंकि ज़्यादा सरकशी व बेदरेग़ी (यानी बिना सोचे समझे बहुत ज़्यादा बोलना) और सबसे ज़्यादा फ़साद व नुक़सान इसी ज़बान से होता है। हज़रत सुफ़यान इब्ने अब्दुल्लाह ﵁ से मरवी है कि- ***मैंने एक दफ़ा दरबारे रिसालत में अर्ज़ किया- "या रसूलल्लाह ﷺ आप मेरे लिए सबसे ज़्यादा ख़तरनाक और नुक़सानदेह किस चीज़ को क़रार देते हैं?" तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी ज़बान मुबारक पकड़ कर इशारा फ़रमाया कि इसे।*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हज़रत यूनुस इब्ने अब्दुल्लाह क़ुद्दिसा सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि 'मेरा नफ़्स बसरा जैसे गर्म शहर में सख़्त गर्मी के दिनों में रोज़ा रखने की ताक़त तो रखता है लेकिन फ़ुज़ूल बातों से रुकने की ताक़त नहीं रखता।'

तो मालूम यह हुआ कि ज़बान सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह और ख़रतरनाक है लिहाज़ा इसकी हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है और इस पर क़ाबू पाने के लिए बड़ी कोशिश और जद्दोजहद की ज़रूरत है। हम यहाँ इसकी हिफ़ाज़त के पाँच उसूल बयान करते हैं।

पहला उसूल: वह जो सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी ﵁ से मरवी है कि इन्सान रोज़ाना सुबह जब बेदार होता है तो तमाम आज़ा ज़बान से मुख़ातिब होकर इस बात की उसे ताकीद करते हैं कि दिन को दुरुस्ती व सच्चाई पर क़ायम रहना और बेहूदा फ़ुज़ूल बातों से बचते रहना क्योंकि अगर तू दुरुस्त व ठीक रहेगी तो हम भी दुरुस्त रहेंगे और अगर तू टेढ़ी राह चलेगी तो हम भी टेढ़े रास्ते पर चल पड़ेंगे।

मैं कहता हूँ कि इस कलाम के मअना यह हैं कि ज़बान की अच्छी बुरी बातें इन्सान के आज़ा (जिस्म के दूसरे हिस्सों) पर असर अन्दाज़ होती हैं, अच्छी बातें तो और अल्लाह की तौफ़ीक़ का ज़रिया बनती हैं और बुरी बातें ज़िल्लत व ख़्वारी की वजह बनती हैं। इस सिलसिले में हज़रत मालिक इब्ने दीनार ﵀ से जो मन्क़ूल है वह भी इस मअना की ताईद करता है। आप

फ़रमाते हैं कि- *जब तुम अपने दिल में क़सावत (सख़्ती) बदन में सुस्ती और रिज़्क़ में तंगी महसूस करो तो समझ लो कि तुमसे कहीं फ़ुज़ूल व बेकार कलिमे निकल गए हैं जिसका यह नतीजा है।*

दूसरा उसूल: वक़्त बहुत क़ीमती चीज़ है उसकी क़द्र करना बहुत ज़रूरी है और ज़िक्रे इलाही के सिवा अक्सर बन्दे से लग़्व व बेकार बातें हो जाती हैं और उनमें पड़ कर वक़्त बर्बाद हो जाता है।

हज़रत हस्सान इब्ने सिनान عليه‌السلام से मरवी है कि आप एक बालाख़ाने के पास से गुज़रे तो उसके मालिक से दरयाफ़्त किया कि यह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अरसा गुज़रा है? यह सवाल करने के बाद आप दिल में बहुत शर्मिन्दा हुए और नफ़्स से मुख़ातिब होकर यूँ फ़रमाया ऐ मग़रूर नफ़्स! तू फ़ुज़ूल व बेकार सवालात में अपने अज़ीज़ वक़्त को बर्बाद करता है फिर उस फ़ुज़ूल सवाल के कफ़्फ़ारे में आपने एक साल रोज़े रखे।

वो लोग किस क़द्र ख़ुशनसीब हैं जो अपने अज़ीज़ वक़्त की क़ीमत जान कर उसकी क़द्र करते हैं और अपने नफ़्स की इस्लाह में मसरूफ़ रहते हैं, कितने बदक़िस्मत और अहमक़ हैं वह लोग जिन्होंने ज़बान की लगाम ढीली छोड़ रखी है और लग़वियात में मशग़ूल रहते हैं। किसी शायर ने क्या अच्छा कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *जब तुम्हारा दिल दुनियावी फ़िक्रों से ख़ाली और राहत में हो तो ऐसे वक़्त को ग़नीमत जानो और रात की तारीकी में नवाफ़िल में मशग़ूल रहो।*
- *और अगर किसी वक़्त लग़्व व बातिल बात ज़बान से निकालने लगो तो ज़बान को उससे रोक लो और उसकी जगह रब तआला की तस्बीह व तक़दीस ज़बान से अदा करो।*
- *क्योंकि लग़्व व बातिल बात से सुकूनत व ख़ामोशी ज़रूरी है अगरचे तुम कितने ही ज़बान के साफ़ क्यूँ न हो।*

तीसरा उसूल: ज़बान की हिफ़ाज़त से नेक आमाल की हिफ़ाज़त होती है क्योंकि जो शख़्स ज़बान की निगहदाश्त नहीं करता बल्कि हर वक़्त बातचीत में मसरूफ़ रहता है तो लामुहाला ऐसा शख़्स लोगों की ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है, मशहूर फ़िक़्रा है ज़्यादा बोलने वाला ज़्यादा ग़लतियाँ करता है।

और ग़ीबत नेक आमाल को इस तरह तबाह करती है जिस तरह आसमानी बिजली। ग़ीबत करने वाले आदमी के आमाल इस तरह बर्बाद होते हैं जिस तरह वह मिन्जनीक़ (पुराने ज़माने में यह तोप की जगह इस्तेमाल किये जाते थे जिसमें बड़े बड़े पत्थर रख कर दुश्मन की तरफ़ फेंके जाते थे) में रख कर चारों तरफ़ में फेंक दिए जायें।

मन्क़ूल है कि हज़रत इमाम बसरी ﵀ को किसी शख़्स ने कहा कि फ़ुलाँ शख़्स ने आपकी ग़ीबत की है तो आपने ग़ीबत करने वाले शख़्स को खजूरों का एक थाल रवाना किया और साथ कहला भेजा कि- *"सुना है तूने मुझे अपनी नेकियाँ हदिया की हैं तो मैंने उनका बदला देना बेहतर जाना।"*

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ﵀ के सामने किसी ने ग़ीबत का ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया अगर मैं किसी की ग़ीबत करना दुरुस्त जानता तो अपनी माँ की ग़ीबत करता क्योंकि सबसे ज़्यादा मेरी नेकियों की मुस्तहिक़ वह है।

नक़ल है कि एक दफ़ा हज़रत हातिम असम ﵀ की नमाज़े तहज्जुद फ़ौत हो गई तो आपकी बीवी ने आपको इस पर शर्म दिलाई, आपने जवाब दिया कि कल रात एक जमाअत सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रही है और सुबह उन्होंने मेरी ग़ीबत की है तो उनकी उस सारी रात की इबादत क़ियामत के रोज़ मेरे नामा-ए-आमाल के तराज़ू में रख दी जाएगी।

चौथा उसूल: ज़बान की हिफ़ाज़त करने से इन्सान दुनिया की आफ़तों से बचा रहता है। हज़रत सुफ़यान सौरी ﵀ का फ़रमान है कि ज़बान से ऐसी बात न निकालो जिसे सुन कर लोग तुम्हारे दाँत तोड़ दें।

एक और बुज़ुर्ग ﵀ फ़रमाते हैं अपनी ज़बान को बेलगाम न छोड़ो, कहीं तुम्हें किसी फ़साद में मुब्तला न कर दे। एक और बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं जिनके शेर का तर्जुमा पेश है:

- *अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो और बेजा बातें न करो क्योंकि बाज़ वक़्त गुफ़्तगू आफ़त में पड़ने की वजह बन जाती है।*

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ﵀ फ़रमाते हैं: *"पूरी एहतियात से ज़बान की हिफ़ाज़त कर क्योंकि यह मामूली सा उज़्व बाज़ दफ़ा बहुत जल्द*

इन्सान को हलाकत में डाल देता है। बेशक ज़बान इन्सान के दिल पर दलील है जो गुफ़्तगू करने वाले की अक़्ल का अन्दाज़ा बताती है।"

हज़रत इब्ने अबी मुतीअ़ ﷺ फ़रमाते हैं: *"ज़बान (तबाह करने में) घात में छुपे हुए शेर की तरह है जो मौक़ा पाने पर हमला करता है। इसलिए इसे ख़ामोशी की लगाम दे कर लग़वियात से बन्द रख, इस तरह तू बहुत सी आफ़तों व बलाओं से बच जाएगा।"*

बहुत से कलिमात ऐसे हैं जो ज़बान से निकालने वाले को कहते हैं कि हमें ज़बान से बाहर न निकाल। अल्लाह तआला ईमान वालों को ज़बान की आफ़तों से महफ़ूज़ रखे।

पाँचवा उसूल: ज़बान की हिफ़ाज़त न करने की वजह से इन्सान आख़िरत में अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा। उस अज़ाब का तसव्वुर ज़हन में रखा जाए और जो आफ़तें वहाँ इस बिना पर पेश आयेंगी उन्हें याद रखा जाए और इस सिलसिले में तुम यह नुकता याद रखो कि तुम जो गुफ़्तगू करते हो वह या तो हराम या नाजाइज़ होगी या फ़ुज़ूल व बेकार, अगर हराम व नाजाइज़ होगी तो ऐसी गुफ़्तगू बेशक अज़ाबे दोज़ख़ का सबब बनेगी जिसे बर्दाश्त करने की ताक़त इन्सान में नहीं है। हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ की हदीस मुबारक है:- ***"मेराज की रात मैंने एक क़ौम देखी जो मुर्दार खा रही थी, मैंने जिब्रील عليه السلام से पूछा ये कौन लोग हैं? जिब्रील عليه السلام ने अर्ज़ किया कि ये वो लोग हैं जो दूसरों का गोश्त खाते थे यानी उनकी ग़ीबत करते थे।"*** (मुसनद इमाम मुहम्मद)

एक दफ़ा हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने हज़रत मुआज़ رضي الله عنه से फ़रमाया- ***"उल्मा और तालिबे इल्मों की ग़ीबत से ज़बान बन्द रखना और आम लोगों को ज़बान से न पीसना (यानी ग़ीबत न करना) ताकि रोज़े क़ियामत दोज़ख़ के कुत्ते तुझे दाँतों से न चबायें।"*** (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

हज़रत मुआज़ رضي الله عنه से फ़रमाया: *"ग़ीबत की वजह से इन्सान का दिल हिदायत से हट जाता है और वीराने में तब्दील हो जाता है"*

यह कलाम तो नाजाइज़ व हराम गुफ़्तगू से मुताल्लिक़ था, अब रही मुबाह यानी ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तगू तो वह भी चार वजह से ठीक नहीं।

पहली वजह: यह फ़ुज़ूल व बेमतलब गुफ़्तगू किरामन कातिबीन (यानी आमाल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को लिखनी पड़ती है, तो इन्सान को चाहिए कि उनसे हया करे और फ़ुज़ूल बातें लिखने की उनको तकलीफ़ न दे। रब तआला का इरशाद है:

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

(कोई बात वह ज़बान से नहीं निकालता कि उसके पास एक मुहाफ़िज़ तैयार न बैठा हो।)

(सूरह क़ाफ़, आयत-18)

दूसरी वजह: यह है कि यह अच्छी बात नहीं कि लग़्व और बेहूदा बातों से भरा हुआ आमालनामा रब तआला के हुज़ूर में पेश हो, इस बिना पर बन्दे को चाहिए कि फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बचे, बाज़ किताबों में आया है कि एक शख़्स ने किसी को फ़ुज़ूल गुफ़्तगू करते देखा तो कहा कि तेरे लिए ख़राबी हो, तेरी ये सब बातें अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होंगी, तो देख ऐसी बातें क्यूँ पेश कर रहा है।

तीसरी वजह: यह है कि बन्दे को क़ियामत के रोज़ कहा जाएगा कि अपने आमाल नामे को अल्लाह तआला के हुज़ूर तमाम मख़लूक़ के रू-ब-रू पढ़ कर सुनाए, उस वक़्त हश्र की ख़ौफ़नाक सख़्तियाँ उसके सामने होंगी, इन्सान प्यास की शिद्दत से मर रहा होगा, जिस्म पर कपड़ा नहीं होगा, भूख से कमर टूट रही होगी, जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राहत उस पर बन्द कर दी गई होगी। ऐसे हाल में अपने ऐसे नामा-ए-आमाल को पढ़ना जो फ़ुज़ूल व बेहूदा गुफ़्तगू से भरा हुआ किस क़द्र तकलीफ़देह चीज़ होगी, इसलिए चाहिए कि ज़बान से सिवाए अच्छी बात के कुछ न निकाले।

चौथी वजह: यह है कि बन्दे को फ़ुज़ूल और बेमतलब बातों पर मलामत की जाएगी और शर्म दिलाई जाएगी और बन्दे के पास उसका कोई जवाब नहीं होगा और अल्लाह तआला के सामने शर्म व नदामत की वजह से इन्सान पानी पानी हो जाएगा।

बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अपनी ज़बान को फ़ुज़ूलियात से रोको, क्योंकि उनका हिसाब तवील (लम्बा) होगा। जो शख़्स नसीहत का आरज़ूमन्द है उसके लिए यह चार उसूल काफ़ी हैं और हमने अपनी किताब "***असरारे मुआमलाते दीन***" में ऐसे उसूल पूरी शरह से लिखे हैं, अगर ज़्यादा तफ़्सील जानना हो तो उसे पढ़ें उसमें तुमको हर शय का तसल्ली बख़्श बयान मिलागा।

चौथी फ़स्ल
(दिल के बयान में)

फिर तुम पर दिल की हिफ़ाज़त, उसकी इस्लाह और उसे दुरुस्त रखने की कोशिश करना भी ज़रूरी है क्योंकि दिल का मामला बाक़ी आज़ा से ज़्यादा ख़तरनाक है और उसका असर बाक़ी आज़ा से ज़्यादा है, इसको दुरुस्ती ज़्यादा दिक़्क़त तलब और उसकी इस्लाह ज़्यादा मुश्किल है और उसका हाल ज़्यादा मेहनत तलब है। मैं दिल की इस्लाह के लिए पाँच जामेअ उसूल बयान करता हूँ जिन पर अमल करने से दिल की इस्लाह इन्शाअल्लाह हो जाएगी।

पहला उसूल: अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

(अल्लाह तआला जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।)

(सूरह मोमिन, आयत-19)

दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ ط

(और अल्लाह तआला जानता है जो तुम सब के दिलों में है।)

(सूरह अलअहज़ाब, आयत-51)

एक और जगह फ़रमाता है:

اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

(बेशक वह दिलों की बात जानता है।)

(सूरह अलअन्फ़ाल, आयत-43)

देखो अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कितनी दफ़ा इस बात को दोहराया और तकरार किया है, अल्लाह तआला का सीने के असरार (राज़ों) पर आगाह होना ही डरने और ख़ौफ़ करने के लिए काफ़ी है क्योंकि अल्लामुल ग़ुयूब (यानी सब छुपी चीज़ों के जानने वाले) के साथ मामला बहुत नाज़ुक है इसलिए तुम्हें ख़्याल होना चाहिए कि तुम्हारे दिलों में किस तरह के राज़ हैं जो अल्लाह तआला जानता है अगर मआज़ल्लाह तुम्हारे ख़्यालात व इरादे गन्दे हों तो तुम्हें शर्म व हया करना चाहिए।

दूसरा उसूल हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ फ़रमाते हैं कि-"***अल्लाह तआला तुम्हारी सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरतों और खालों को नहीं देखता बल्कि वह तुम्हारे दिलों को भी देखता है।***"

इस हदीसे मुबारका से मालूम हुआ कि दिल रब्बुल आलमीन की नज़र का मक़ाम है उस शख़्स पर ताज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतेमाम करे, उसे धोए, मैल कुचैल से सुथरा रखे ताकि मख़लूक़ उसके चेहरे के किसी ऐब को न जान जाए मगर दिल का एहतेमाम न करे यानी दिल साफ़ न करे जिसको रब तआला देख रहा है, चाहिए तो यह था कि दिल को पाकीज़ा रखे, उसे आरास्ता करे और सुथरा रखे ताकि रब्बुल आलमीन इसमें किसी ऐब को न पाए लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि दिल गन्दगी, नापाकी और ग़लाज़त से भरा हुआ है मगर जिस पर मख़लूक़ की नज़र पड़ती है उसके लिए कोशिश होती है कि उसमें कोई ऐब व क़बाहत (बुराई) न पाई जाए।

तीसरा उसूल: दिल एक बादशाह की तरह है जिसकी इताअत की जाती है और जिस्म के बाक़ी हिस्से रिआया की तरह हैं कि सब उसकी पैरवी करते हैं, तो अगर सरदार दुरुस्त हो तो उसके मातहत भी दुरुस्त होते हैं। इसी तरह अगर बादशाह दुरुस्त हो तो रिआया भी दुरुस्त और ठीक होती हैं। इस बयान की वज़ाहत हुज़ूर عليه السلام की नीचे लिखी हदीस से होती है। आपﷺ का इरशाद है- "***इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है अगर वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त होता है और अगर वह ख़राब हो तो सारा जिस्म ख़राब होता है सुन लो कि वह दिल है।***" (सहीह बुख़ारी) जब

तमाम जिस्म की इस्लाह दिल की इस्लाह पर टिकी है तो दिल की इस्लाह बहुत ज़रूरी है।

चौथा उसूल: दिल बन्दे के नफ़ीस व आला जवाहर का ख़ज़ाना है। इन आला जौहरों में से एक आला व उम्दा जौहर मारिफ़ते ख़ुदावन्दी (यानी अल्लाह तआला की पहचान) है, जो दोनों जहान की सआदत का ज़रिया है और वह क़ल्बी बसीरत (दिल के ज़रिए देखना) है जिसकी वजह से दरबारे इलाही में इन्सान को इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल होती है। फिर दिल से तअल्लुक़ रखने वाली उम्दा चीजों में से एक उम्दा चीज़ इबादत व ताअत में ख़ालिस नीयत है जिसके साथ सवाब और जज़ा का तअल्लुक़ है, इसके अलावा दिल से तअल्लुक़ रखने वाली चीज़ें इल्म व हिकमत की बातें हैं जो बन्दे के लिए शर्फ़ व इज़्ज़त की वजह हैं और पाकीज़ा अख़लाक़ व अच्छी आदतें हैं जिनसे इन्सान को फ़ज़ीलत, अज़मत और इज़्ज़त हासिल होती है, हमने अपनी किताब '*असरारे मुआमलाते दीन*' में इस बात को पूरी शरह व तफ़्सील से लिखा है।

तो जब दिल ऐसे गिराँक़द्र (क़ीमती) और बेहतरीन जवाहर का ख़ज़ाना है तो ऐसे ख़ज़ाने की हर क़िस्म के मैल कुचैल, आफ़त और चोरों व डाकूओं वग़ैरा से हिफ़ाज़त व निगरानी ज़रूरी है। यह ऐसा ख़ज़ाना है जिसकी हिफ़ाज़त हर तरह ज़रूरी है ताकि इसके गिराँक़द्र (क़ीमती) मोती ख़राब न हों और न कोई दुश्मन इस पर क़ब्ज़ा कर सके।

पाँचवाँ उसूल: मैंने दिल के हालात पर ग़ौर किया तो मुझे उसके पाँच हालात ऐसे मिले जो दूसरे किसी उज़्व में नहीं पाए जाते:

1. यह कि दुश्मन की तवज्जोह हर वक़्त इसकी तरफ़ है और इसे तबाह करने का इरादा किए हुए है क्योंकि शैतान इन्सान के दिल के साथ हर वक़्त लगा रहता है तो दिल इल्हाम (यानी अच्छे ख़्यालात जो अल्लाह की तरफ़ से दिल में आयें) व वसवसा दोनों की मन्ज़िल है, शैतान और फ़िरिश्ता दोनों उसे अपनी अपनी दावत देने में मसरूफ़ हैं।
2. उसकी दूसरी हालत यह है कि क़ल्ब को मसरूफ़ियत बहुत ज़्यादा है क्योंकि अक़्ल और शहवत (ख़्वाहिश) दोनों अपने अपने लश्कर उसमें दौड़ाते रहते हैं, गोया यह अक़्ल व शहवत दोनों के लश्करों का

मैदाने जंग है, इस तरह दिल दोनों की जंग और मुक़ाबले का मक़ाम बना रहता है तो जो मक़ाम दोनों दुश्मनों के दरमियान हद की हैसियत रखता है उसकी निगहदाश्त बहुत ज़रूरी काम है।

3. उसकी तीसरी हालत यह है कि क़ल्ब के अवारिज़ (दुख) व लवाहिक़ात (रिश्ते) बहुत ज़्यादा हैं, इसलिए कि वसवसे व ख़तरात तीरों की तरह हैं जो हमेशा उस पर बरसते रहते हैं या बारिश की तरह हैं कि हमेशा उस पर गिरते रहते हैं कभी बन्द नहीं होते और इन्सान को यह ताक़त नहीं कि उन्हें रोक या बन्द कर सके और दिल कोई आँख की तरह तो है नहीं कि ख़तरे के वक़्त उसे बन्द कर लिया जाए और अमन के वक़्त खोल लिया जाए और यह क़ल्ब किसी तन्हा मकान में भी नहीं और न यह कहीं रात के अंधेरे में छुपा है कि दुश्मन उसे न पा सके और न यह ज़बान की तरह दाँतों और होठों की हिफ़ाज़त में है कि तू इसे बचा सके और महफ़ूज़ रख सके बल्कि दिल तो ख़तरात व वसवसे का निशाना है, और तुममें उन ख़तरात व वसवसों को रोकने की पूरी क़ुव्वत नहीं कि सही मअना में उसकी निगहदाश्त कर सको लिहाज़ा ख़तरात व वसवसों को और ज़्यादा तक़वीयत (ताक़त) पहुँचाता रहता है। इसी बिना पर दिल से तअल्लुक़ रखने वाले ख़तरात का मुक़ाबला, सख़्त कोशिश और मेहनत चाहता है और उन ख़तरात का बचाव, बहुत जद्दोजहद व मेहनत चाहता है।
4. इसकी चौथी हालत यह है कि इसका इलाज इस बिना पर भी मुश्किल है कि यह इन्सान की नज़र से ग़ायब है। इस बिना पर भी मुश्किल है कि तुम इसकी आफ़तों और इसकी नुक़सानदेह चीज़ों को भाँप सको और उन को समझ सको, इसलिए क़ल्ब की इस्लाह के लिए लम्बे मुजाहिदों, कोशिशों और रियाज़तों की ज़रूरत है।
5. इसकी पाँचवीं हालत यह है कि आफ़तें इस पर जल्दी हमला करती हैं और यह हर वक़्त इन्क़लाब व तबदीली के लिए तैयार रहता है, बाज़ लोगों ने कहा है कि दिल हँडिया के उबलने से भी जल्दी इन्क़लाब में आ जाता है। किसी शायर ने कहा है जिसका तर्जुमा है:-

"क़ल्ब का नाम इस बिना पर क़ल्ब रखा गया है कि यह हर आन अदल बदल होता रहता है, और इसमें मुख़्तलिफ़ रायें पैदा हो जाती हैं।"

अब अगर दिल लग़ज़िश खा जाए तो उसकी लग़ज़िश बहुत बड़ी लग़ज़िश होगी और उसका बिगड़ जाना निहायत परेशान करने वाली बात होगा इसलिए दिल की लग़ज़िश का छोटा दर्जा क़सावत (यानी सख़्ती) और ग़ैरुल्लाह की तरफ़ रुझान है और उसकी लग़ज़िश का आख़िरी दर्जा यह है कि उस पर कुफ़्र की मोहर लग जाती है, क्या तुमने ह़क़ तआला का यह इरशादे गिरामी नहीं सुना:

أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

(मुन्किर हुआ और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया।)

(सूरह अलबक़राह, आयत -34)

उसके दिल में तकब्बुर था जिसकी वजह से वह हुक्मे रब्बी से मुन्किर और काफ़िर हो गया, दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया:

وَلَٰكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ

(मगर वह तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबे हुआ।)

(सूरह अलअअ़राफ़, आयत -186)

तो गुनाहों की तरफ़ रुझान और ख़्वाहिशात की पैरवी चूंकि उसके दिल में थी उसकी वजह से वह एक मन्हूस गुनाह पर आमादा हो गया,
क़ुरआन मजीद में वारिद है:

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

(और हम फेर देते हैं उनके दिलों और आँखों को जैसा वह पहली बार उस पर ईमान न लाए थे और उन्हें छोड़ देते है कि अपनी सरकशी में भटका करें।)

(सूरह अनआम, आयत -110)

ऐ अ़ज़ीज़! अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे इसी बिना पर दिल के मामले में निहायत चौकन्ने रहते हैं और गिरया व ज़ारी (रोना धोना) में मसरूफ़ रहते हैं और अपनी पूरी कोशिश उसकी इस्लाह व दुरुस्ती में लगा देते हैं, क़ुरआन हकीम में वारिद है:

يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

(डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जायेंगे दिल और आँखें।)

(सूरह नूर, आयत 37)

अल्लाह तआला हम सब मुसलमानों को इबरत पकड़ने वालों, हिदायत याफ़्ता लोगों और क़ल्ब की इस्लाह करने वालों की दौड़ करने वालों में क़बूल फ़रमाए। (*वहुवा अर्रहमुर्राहिमीन*)

सवाल: बेशक दिल की इस्लाह का मामला बहुत अहम है, इसलिए हमें वो उमूर (काम, बातें) बताइये जिनको इख़्तियार करने से दिल की इस्लाह हो सकती है और उन आफ़तों की भी निशानदेही कर दीजिए जो दिल की ख़राबी की वजह हैं, मुमकिन है हमें भी अल्लाह तआला उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे इस तरह हम आपके बताए हुए उसूलों की रौशनी में दिल की इस्लाह कर सकें?

जवाब: क़ल्ब की इस्लाह के असबाब व ज़रियों की तफ़्सील तो ख़ासी लम्बी है यह मुख़्तसर किताब में मुमकिन नहीं। उल्माए आख़िरत ने क़ल्ब की इस्लाह की तफ़्सीर बयान करते हुए एक जामेअ नुकते की तरफ़ इशारा फ़रमाया है और उन्होंने दिल को दुरुस्त करने वाली 90 अच्छी आदतें और इतनी ही तादाद में बुरी आदतें बयान की हैं जो दिल में फ़साद की वजह हैं फिर इस्लाह से मुताल्लिक़ अफ़आल व उमूर और इस सिलसिले में कोशिश का तरीक़ा और बचने लायक़ उमूर को तफ़्सील के साथ बयान किया है, अगरचे क़ल्ब से तअल्लुक़ रखने वाली बहसें बज़ाहिर लम्बी मालूम होती हैं मगर ख़ुदा की क़सम! जो शख़्स दीन की अहमियत से वाक़िफ़ है ग़ाफ़िलों की तरह ग़फ़लत के ख़्वाब में नहीं पड़ा हुआ बल्कि बेदार है और अपनी भलाई के उमूर में ग़ौर व फ़िक्र करता रहता है तो ऐसा

शख़्स अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ व मदद से उन तमाम तफ़्सीलों को जानने और उन पर अमल करने को ज़्यादा नहीं समझेगा।

और हमने इन तफ़्सीलात का कुछ थोड़ा हिस्सा अपनी किताब '*इहयाउल उलूम*' के बाब शरह अजाइबे क़ल्ब में बयान किया है, लेकिन पूरी तफ़्सील और कैफ़ियते इलाज वग़ैरा का बयान हमने अपनी किताब '*असरारे मुआमलाते दीन*' में किया है और वह एक मुस्तक़िल किताब है जो बहुत बड़े फ़ायदे पर मुश्तमिल है लेकिन उन तफ़्सीलात से जय्यद और रासिख़ उल्मा ही कमाहक़्क़ुहू (जैसा कि हक़ है) फ़ायदा हासिल कर सकते हैं और इस किताब '*मिन्हाजुल आबिदीन*' में हमने वह उसलूब बयान यानी बयान का तरीक़ा इख़्तियार किया है जिससे हर मुब्तदी (वह जो तसव्वुफ़ में अभी अभी आया है) मुन्तही (वह जो तसव्वुफ़ में काफ़ी आगे बढ़ चुका है), क़वी (ताक़तवर) और ज़ईफ़ (कमज़ोर) नफ़ा हासिल कर सके यानी इसमें हम ज़्यादा गहराई और बारीकी में नहीं गए।

जब हमने उन उसूलों पर ग़ौर किया जो क़ल्ब के इलाज के सिलसिले में काम आते हैं और जिनकी बहुत ज़रूरत है और कोई भी शख़्स उन से बेनियाज़ (बेपरवाह) नहीं हो सकता तो 4 उसूल हमारे सामने आये, इसी तरह क़ल्ब में फ़साद पैदा करने वाले भी 4 उमूर सामने आये जो आबिदीन के लिए सख़्त पेचीदगी पैदा करने वाले मुजाहिदा करने वाले के लिए आफ़त हैं, दिलों के लिए फ़ितना नफ़्स के लिए बला, इस्लाह में रुकावट पैदा करने वाले हैं, दिलों को ऐबनाक और बर्बाद करने वाले हैं और उनके मुक़ाबले में चार और हैं जिनसे इबादत का मामला नज़्म व ज़ब्त यानी बाक़ायदगी इख़्तियार करता है और लोगों के दिल इस्लाह पाते हैं।

क़ल्ब के फ़साद की वजह ये चार चीज़ें हैं:

1. ***तूले अमल यानी दुनिया की लम्बी उम्मीदें***
2. ***इबादत में जल्दबाज़ी***
3. ***हसद***
4. ***तकब्बुर***

इसके मुक़ाबले में इस्लाह करने वाली ये चार चीज़ें हैं:

1. ***उम्मीद कम करना***

2. मुआमलात में तहम्मुल (बर्दाश्त करने का माद्दा) व आहिस्तगी
3. मख़लूक़ के साथ ख़ैरख़्वाही
4. ख़ुशूअ और तवाज़ो से पेश आना।

ये आठ चीज़ें जिनके साथ क़ल्ब की इस्लाह या ख़राबी वाबस्ता है और इन्हीं पर सुलाह व फ़साद का दारोमदार है, इसलिए फ़साद के सबबों से बचो और क़ल्ब के लिए मुफ़ीद बातों को इख़्तियार करो ताकि आख़िरत की मशक़्क़त से महफ़ूज़ रहो और अपने मक़सद को हासिल कर सको, मैं तुम्हारे आगे मुख़्तसर व जामेअ तरीक़े से उन आफ़तों की वज़ाहत करता हूँ।

तूले अमल
(दुनिया की लम्बी उम्मीदों का बयान)

लम्बी उम्मीदें नेकी व ताअत की राह में रुकावट हैं और हर फ़ितने व शर की वजह लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाना एक लाइलाज मर्ज़ है जो लोगों को और बहुत से मुख़्तलिफ़ मर्ज़ों में मुब्तला करता है। ऐ अज़ीज़! तू जब लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाएगा तो उससे चार चीज़ों में इज़ाफ़ा होगा।

एक ताअत के तर्क करने में ज़्यादती और उसकी अदाएगी में सुस्ती में इज़ाफ़ा होगा और इबादत व नेकी बजा लाने के वक़्त तुम अपने दिल में कहोगे अभी थोड़ी देर बाद कर लूँगा, अभी काफ़ी वक़्त है, इबादत का मौक़ा फ़ौत नहीं होने दूँगा। हज़रत दाऊद ताई ﷺ ने बिल्कुल सच फ़रमाया- *"जो अल्लाह तआला की वईद (सज़ा देने का वायदा) से डरता है वह दूर को भी नज़दीक ख़्याल करता है और जो लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाता है तो बदआमाली का शिकार हो जाता है।"*

हज़रत यह्या इब्ने मुआज़ ﷺ ने फ़रमाया है- *"दुनिया की लम्बी उम्मीदें इन्सान को हर नेक काम से काट देती हैं और लालच इन्सान को हर हक़ से रोक देता है और सब्र हर भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता है और नफ़्से अम्मारा हर शर और बुराई की तरफ़ बुलाता है।"*

दूसरी चीज़ जिससे तूले अमल यानी दुनिया की लम्बी उम्मीदों में ज़्यादती होती है वह है तौबा का तर्क होना। तूले अमल की वजह से इन्सान

तौबा करने में टाल मटोल शुरू कर देता है और दिल में कहता है अभी तौबा कर लूँगा, अभी काफ़ी वक़्त है, मैं अभी जवान हूँ, मैं अभी कम उम्र हूँ, तौबा हर वक़्त मेरे इख़्तियार में है, जब चाहूँगा कर लूँगा, इसी तरह के बेहूदा ख़्यालात में पड़ जाता है और अपने हाल की इस्लाह से पहले ही मौत अचानक आकर उचक लेती है और वह [خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ] यानी दुनिया व आख़िरत दोनों का घाटा हो जाता है।

तीसरी चीज़ माल जमा करने की हिर्स है तो तूले अमल से और बढ़ जाती है, इस हिर्स के नशे में इन्सान आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और दुनिया के कामों में डूब जाता है और हिर्स में मुब्तला होकर अपने आप से यूँ कहता है 'शायद मैं बुढ़ापे में जाकर मोहताज हो जाऊँ, कमज़ोरी की वजह से ख़ुद न कमा सकूँ लिहाज़ा मेरे पास ज़्यादा ज़ख़ीरा होना ज़रूरी है ताकि बीमारी या बुढ़ापे या तंगदस्ती के वक़्त काम आ सके, इसी तरह के हज़ारों ख़्यालात उसे दुनिया की हिर्स की तरफ़ और ज़्यादा राग़िब करते हैं, ऐसा इन्सान खाने पीने की चीज़ों का बड़ा एहतेमाम करता है, कभी कहता है कि मैं क्या खाऊँ, कभी कहता है कि क्या पियूँ, कभी लिबास की फ़िक्र में होता है, कभी कहता है कि गर्मी सर्दी सर पर है और मेरे पास कोई शय नहीं, कभी यह सोचता है कि शायद मेरी उम्र लम्बी हो और आख़िरी उम्र में जाकर तंगदस्त हो जाऊँ और आख़िरी उम्र में मोहताजी ज़्यादा ग़लबा करती है, ऐसे नाज़ुक वक़्त के लिए कुछ न कुछ पास होना ज़रूरी है ताकि उस वक़्त लोगों का हाजतमन्द न होना पड़े या किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। ये और इसी क़िस्म की बीसियों वहमी बातें, चाहत और दुनिया का लगाव बुख़्ल करने पर और ज़्यादा जमा करने पर उभारते रहते हैं, इन बेहूदा ख़्यालात का कुछ असर ज़रूर होता है कि ऐसा इन्सान दुनिया की उम्मीदों में फँस जाता है, उसकी क़ीमती उम्र और उसका अज़ीज़ वक़्त उम्मीदों की नज़र हो जाता है, बेफ़ायदा और बेकार की फ़िक्रें हो जाती हैं। हज़रत अबू ग़िफ़ारी ﵁ से मरवी है आने वाले दिन की फ़िक्र ने मुझे परेशान कर रखा है। किसी ने अर्ज़ किया वह कैसे, तो आपने फ़रमाया कि मेरी लम्बी उम्मीदें मेरी मौत से तजावुज़ कर चुकी हैं यानी मौत से आगे बढ़ चुकी हैं।

चौथी चीज़ दिल की सख़्ती और आख़िरत से ग़फ़लत है जिसमें तूले अमल यानी दुनिया की लम्बी उम्मीदों से इज़ाफ़ा होता है क्योंकि जब इन्सान के दिल में ऐश व इशरत की लम्बी उम्मीदें बस जाती हैं तो मौत भूल जाती है क़ब्र याद नहीं रहती, हज़रत अली ﷺ से मरवी है- *तुम्हारे दो चीज़ों में मुब्तला हो जाने का मुझे बहुत ज़्यादा डर है, एक तूले अमल, दूसरी ख़्वाहिशों की इत्तेबा। तूले अमल तो आख़िरत को भुला देती है और ख़्वाहिशों की पैरवी इन्सान को हक़ से रोक देती है।*

तूले अमल का शिकार होने के बाद इन्सान के नज़दीक सबसे अहम दुनिया और दुनिया के ऐश व इशरत के असबाब हो जाते हैं। लोगों से मेल जोल और ख़लत मलत (यानी मर्दों और औरतों का एक साथ इकट्ठा होना) का ग़लबा हो जाता है और इस तरह इन्सान के दिल पर क़सावत (यानी सख़्ती) छा जाती है क्योंकि रिक़्क़त और क़ल्ब की सफ़ाई तो मौत को याद रखने, क़ब्र की वहशत व तन्हाई को याद रखने, आख़िरत के सवाब व अज़ाब और वहाँ के ख़ौफ़नाक मन्ज़र व वाक़ियात याद रखने से होती है और जब इनमें से कोई बात न हो तो सफ़ाई कैसे पैदा हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَطَالَ عَلَيۡهِمُ الۡاَمَدُ فَقَسَتۡ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ

(फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई तो उनके दिल सख़्त हो गए।)

(सूरह अलहदीद, आयत - 16)

तो जैसे जैसे उम्मीदें लम्बी होती जायेंगी इताअत का जज़्बा कम होता जाएगा, तौबा का ख़्याल दिल से निकल जाएगा गुनाहों की कसरत हो जाएगी, हिर्स बढ़ जाएगी, दिल सख़्त हो जाएगा और अपना अंजाम बिल्कुल भूल जाएगा और अगर अल्लाह तआला की रहमत शामिले हाल न हुई तो ऐसे शख़्स की आख़िरत बर्बाद हो जाएगी तो इससे ज़्यादा बदहाली और क्या होगी और इससे बड़ी आफ़त और बला और क्या होगी? और यह सब ख़राबी तूले अमल की वजह से पैदा हुई लिहाज़ा अपनी उम्मीदें कम रखो, अपनी जान को मौत के क़रीब तसव्वुर करो, अपने क़रीबी लोग और साथियों का हाल याद करो जिन्हें मौत ने ऐसे वक़्त आ दबोचा जब कि उन्हें

कोई वहम व गुमान न था और शायद तुम्हारा भी ऐसा ही हाल हो, और अपने घमण्डी नफ़्स को ख़ुदा तआला के अज़ाब से डराओ, और औफ़ इब्ने अब्दुल्लाह ﷺ का यह क़ौल याद करो:- *"कितने ऐसे हैं जो सुबह को पाते हैं मगर शाम से क़ब्ल मौत की आग़ोश में चले जाते हैं और कितने ही आइन्दा कल के इन्तज़ार में होते हैं मगर वह उन्हें नसीब नहीं होता।"*

अगर तुम्हें वाक़ई मौत और उसकी सख़्तियों का एहसास होता तो तुम तूले अमल और उसकी फ़रेबकारियों से ज़रूर नफ़रत करते। तुमने हज़रत ईसा عليه السلام का क़ौल नहीं सुना? आपने फ़रमाया है:- ***"दुनिया तीन रोज़ है एक वह जो गुज़र गया उसका कुछ भी तेरे क़ब्ज़े में नहीं, एक आइन्दा कल जिसके मुताल्लिक़ कोई इल्म नहीं कि वह तुझे नसीब हो या न हो, और एक आज का दिन जिसमें तुम मौजूद हो, तो इसको ग़नीमत जानो।"***

क्या तुमने हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी رضي الله عنه का यह क़ौल नहीं सुना? कि- *"दुनिया सिर्फ़ तीन साअत है एक वह साअत जो गुज़र गई और एक वह साअत जिसमें तुम अब हो और तीसरी वह जो शायद तुम्हें नसीब हो या न हो।"*

तो हक़ीक़त में तुम्हारे पास सिर्फ़ एक ही घड़ी है, मेरे शैख़ क़ुद्दिसा सिर्रुहू का इरशाद है- दुनिया तीन साँस है एक जो गुज़र गया, तुमने जो अमल उसमें कर लिया कर लिया, एक वह जो अब तुम ले रहे हो, और एक आइन्दा उसके पाने का कोई इल्म नहीं क्योंकि कई ऐसे साँस लेने वाले हैं जिनको मौत ने दूसरी साँस लेने की मोहलत न दी, तो हक़ीक़त में इन्सान एक ही साँस का मालिक है, एक दिन या पूरी एक घड़ी का भी मालिक नहीं, लिहाज़ा इस एक साँस में ताअत व इबादत करने में कोताही नहीं करनी चाहिए यानी इबादत को जल्द करने में देर नहीं करनी चाहिए, ऐसा न हो कि यह भी फ़ौत हो जाए और तौबा करने में भी जल्दी करो, ऐसा न हो कि वक़्त हाथ से निकल जाए और मौत आने वाली साँस की फ़ुरसत न दे। आने वाली घड़ी के लिए रिज़्क़ की फ़िक्र न करो, शायद अगली साअत तक ज़िन्दगी वफ़ा न करे और ख़्वामख़ाह रोज़ी की फ़िक्र में मुब्तला होकर यह वक़्त भी बर्बाद हो और कोशिश बेकार जाए लेकिन इन्सान रिज़्क़ की कोशिश में मसरूफ़ अपना अज़ीज़ वक़्त बर्बाद कर देता है, क्या तुम्हें हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ का वह

इरशाद याद नहीं जो आपﷺ ने हज़रत उसामा इब्ने ज़ैद رضي الله عنه के मुताल्लिक़ फ़रमाया- ***"ऐ लोगो! तुम उसामा पर ताज्जुब नहीं करते जो एक माह के लिए ख़रीद रहा है बेशक उसामा लम्बी उम्मीदों का शिकार हो गया है, ख़ुदा की क़सम मैंने जब भी ज़मीन पर क़दम रखा तो मेरा यही गुमान था कि शायद उठाने से पहले मौत आ जाए और मैंने जब भी मुँह में लुक़मा डाला तो यही गुमान था कि शायद हलक़ से उतारना नसीब न हो, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में मेरी जान है बेशक जिन बातों का तुमसे वादा किया जा रहा है वो ज़रूर आकर रहेंगी और तुम अल्लाह तआला को आजिज़ व बेबस नहीं कर सकते।"***

ऐ अज़ीज़! जब तू इन बातों को याद रखेगा और हमेशा ये बातें तेरे ज़हन में मौजूद रहेंगी तो अल्लाह के हुक्म से तेरी दुनियावी उम्मीदें कम हो जायेंगी, इस वक़्त तेरा नफ़्स ताअत की तरफ़ जल्द माइल होगा और तुझे जल्द तौबा करने का ख़्याल पैदा होगा तौबा से गुनाह झड़ जायेंगे और तुझे दुनिया से नफ़रत हो जाएगी और आख़िरत में हिसाब के अन्दर आसानी पैदा हो जाएगी और वहाँ शर्मिन्दगी नहीं होगी तेरा दिल आख़िरत और उसके ख़ौफ़नाक मन्ज़रों के ध्यान में लगा रहेगा, तेरी नफ़्सी हालत तब्दील हो जाएगी, इसी तरह जब तुम एक एक करके आख़िरत के हालात का अपने ज़हन में मुआइना करते रहोगे तो तुमसे दिल की सख़्ती दूर हो जाएगी, सख़्ती के बजाय दिल में नर्मी और सफ़ाई पैदा हो जाएगी और इस रिक़्क़त व सफ़ाई की बरकत से तुम्हारे दिल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और उसका दर्द पैदा हो जाएगा और यूँ इबादत में इस्तेक़ामत (मज़बूती के साथ जमे रहना) नसीब हो जाएगी और अपनी आफ़ियत और आख़िरत में कामयाबी की उम्मीद क़वी हो जाएगी, यह सब कुछ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से और उम्मीदें कम करने से होगा।

रिवायत है कि किसी शख़्स ने हज़रत ज़र्रार इब्ने औफ़ा رحمة الله عليه को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो उनसे पूछा कि ऐ बरज़ख़ में बसने वालो! तुम्हारे नज़दीक कौन सा अमल बेहतर है? तो आपने जवाब दिया रज़ा-ए-इलाही को हासिल करना और उम्मीदों को कम करना।

ऐ अज़ीज़! तू भी अपने हाल पर नज़र कर और यह बुलन्द मक़ाम हासिल करने में पूरी कोशिश कर क्योंकि तूले अमल से बचना बड़ी नेकी की बात है जिससे क़ल्ब और नफ़्स की इस्लाह होती है।(*वल्लाहु तआला वलीयुत्तौफ़ीक़ बिफ़ज़्लिही व रहमतेही*)

दूसरी आफ़त (हसद)

बेशक हसद नेकियों को तबाह करता है, यह बड़ा बुरा मर्ज़ है जिसमें बड़े बड़े उल्मा और क़ारी मुब्तला हैं आम लोगों और जाहिलों का क्या ज़िक्र। इस हसद ने लोगों को हलाक कर दिया और दोज़ख़ की आग में डाल दिया, क्या तुमने हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ का इरशाद नहीं सुना कि आपने फ़रमाया 'छः क़िस्म के लोग छः वजह से दोज़ख़ में जायेंगे अरब असबीयत (अपनों की बेजा हिमायत और दूसरों से नफ़रत) की वजह से, अमीर लोग ज़ुल्म की वजह से, चौधरी लोग तकब्बुर की वजह से, ताजिर लोग ख़ियानत और बेइमानी की वजह से, देहात के लोग जहालत की वजह से, और उल्मा हसद की वजह से, बेशक जो आफ़त उल्मा को भी दोज़ख़ में ले जाने का सबब है उससे बचना बहुत ज़रूरी है।

ऐ अज़ीज़! जान ले कि हसद से पाँच ख़राबियाँ उभरती हैं:

पहली चीज़ ताआत में ख़राबी रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि- ***"हसद नेकियों को इस तरह बर्बाद करता है जिस तरह आग सूखी लकड़ियों को जला देती है।"*** (सुनन इब्ने माजा)

दूसरी चीज़ जो हसद से पैदा होती है वो गुनाह और बुराइयाँ हैं हज़रत वहब इब्ने मुनब्बिह رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि हासिद की तीन निशानियाँ हैं-

1. ***जब सामने आता है तो चापलूसी करता है,***
2. ***पीठ के पीछे ग़ीबत करता है और***
3. ***जब दूसरे पर मुसीबत आती है तो ख़ुश होता है।***

मैं कहता हूँ कि हसद की बुराई का सबसे बड़ा सुबूत यह है कि अल्लाह तआला ने हमें हासिद के शर से पनाह में रहने का हुक्म दिया है।

जैसे कि ख़ुदावन्द तआला ने फ़रमाया है:-

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ

(और हसद वाले के शर से जब वह जले)

(सूरह अलफ़लक़, आयत -5)

अल्लाह तआला ने हसद के शर को शैतान और जादूगर के साथ मिला कर बयान किया और फ़रमाया '**इन सब से पनाह माँगो**। तो ग़ौर कर लो कि हसद कितना बड़ा फ़ितना और उसका शर कितना बड़ा है, इसीलिए फ़रमाया कि उससे बचने के लिए मुझसे मदद तलब करो और मेरी पनाह में आओ।

तीसरी चीज़ हसद से बेचैनी और बेमक़सद ग़म व फ़िक्र लाहक़ होता है बल्कि ग़म व फ़िक्र के साथ तबीयत पर बोझ व गुनाह की रग़बत भी पैदा होती है, हज़रत इब्ने सम्माक ﷺ ने फ़रमाया:- "*मैंने हासिद के सिवा किसी ज़ालिम को मज़लूम के साथ ज़्यादा मुशाबिहत वाला नहीं देखा बेचारा हर वक़्त उदास तबीयत रहता है, परेशान ख़्याल रहता है और हर वक़्त ग़म में मुब्तला रहता है।*"

चौथी ख़राबी जो हसद से पैदा होती है वह यह कि दिल अन्धा हो जाता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला के किसी हुक्म को समझने की सलाहियत ख़त्म हो जाती है।

हज़रत सुफ़यान सौरी ﷺ ने फ़रमाया:- "*हमेशा ख़ामोश रहना इख़्तियार कर इससे तेरे अन्दर वरह (तक़्वा) पैदा होगा, लालची न बन ताकि फ़ितनों से महफ़ूज़ रहे, नुक्ताचीन न बन ताकि लोगों के तानों से महफ़ूज़ रहे, हासिद न बन ताकि तुझे फ़हम (समझ) की तेज़ी नसीब हो।*"

पाँचवीं ख़राबी जो हसद से पैदा होती है वह यह कि इन्सान ज़िल्लत और महरूमी की लानत में गिरफ़्तार हो जाता है अपनी किसी मुराद में कामयाब नहीं होता और न अपने किसी दुश्मन पर ग़ालिब आ सकता है। हज़रत हातिम असम ﷺ ने फ़रमाया:- "*बुग़्ज़ रखने वाला दीनदार नहीं होता, लोगों के ऐब निकालने वाला इबादतगुज़ार नहीं हो सकता, चुग़लख़ोर को*

अमन नसीब नहीं हो सकता और हासिद शख़्स अल्लाह तआला की मदद से महरूम रहता है।"

मैं कहता हूँ हासिद शख़्स अपनी मुराद में कैसे कामयाब हो सकता है क्योंकि उसकी मुराद तो यह है कि अल्लाह तआला के तमाम बन्दों से ख़ुदा तआला की दी हुई नेमते छिन जायें और मुझे मिल जायें और हासिद आदमी अपने दुश्मनों पर कैसे ग़ालिब आ सकता है क्योंकि उसके दुश्मन अल्लाह तआला के नेक बन्दे होते हैं। हज़रत अबू याक़ूब ﵀ ने क्या ख़ूब फ़रमाया:- *"ऐ अल्लाह तूने अपने बन्दों पर जो नेमतें की हैं हमें उनके हसद से महफ़ूज़ रख बल्कि उनके हालात मज़ीद (और) बेहतर कर।"*

और हसद एक ऐसी बीमारी है जो इबादत के अज्र व सवाब को तबाह करती है शर व गुनाह का बीज बोती है, आराम व सुकून को ख़त्म कर देती है, दीन की समझ से महरूम करती है, इसके होते हुए इन्सान अपने दुश्मन पर ग़ालिब नहीं आ सकता और न अपनी मुराद में इन्सान कामयाब हो सकता है। तो साबित हुआ कि हसद से ज़्यादा कोई ख़तरनाक बीमारी ऐसी नहीं जिसके इलाज की फ़ौरन ज़रूरत हो लिहाज़ा इस मर्ज़ के इलाज से ग़फ़लत न करो बल्कि जल्द इस हसद के मर्ज़ को दूर करने की फ़िक्र करो। *(वल्लाहु तआला वलियुत्तौफ़ीक़ि बिमन्निही व करामिही)*

उजलत यानी जल्दबाज़ी के नुक़सान

जल्दबाज़ी नेक मक़सदों को ख़त्म करती है और गुनाहों में डाल देती है, इससे चार ख़राबियाँ पैदा होती हैं:

उजलत की पहली आफ़त यह है कि आबिद शख़्स जब ख़ैर व इस्तेक़ामत हासिल करने का इरादा करता है और उसे हासिल करने की कोशिश करता है तो बाज़ वक़्त उसके हासिल करने में जल्दबाज़ी से काम लेता है हांलाकि अभी उस मरतबे के हासिल करने का वक़्त इल्मे इलाही में नहीं होता (यहाँ मतलब यह है कि मरतबा हासिल करने का वक़्त अभी आया ही नहीं अगर वक़्त होता तो इल्मे इलाही में ज़रूर होता कि अभी मिलना है) तो फ़ौरी तौर पर वह मरतबा व मक़ाम हासिल न होने की वजह

से या तो वह सुस्त व मायूस होकर मुजाहिदे की कोशिश छोड़ देता है और इस तरह से उस मरतबे से महरूम हो जाता है या वह बहुत ज़्यादा रियाज़त व मुजाहिदा करता है और इस इफ़रात (ज़्यादती) की वजह से उस मरतबे को हासिल नहीं कर सकता और ये दोनों ख़राबियाँ जल्दबाज़ी का नतीजा हैं, हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ से रिवायत है "***हमारा यह दीन बड़ा मज़बूत दीन है इसको नर्मी और संजीदगी से हासिल करो जिस तरह फ़सल हासिल करने वाला किसान न तो ज़मीन को बिल्कुल उखेड़ ही देता है और न उसकी ज़ाहिरी सतह को ही पहली हालत में बाक़ी रहने देता है***" और अरबी की मशहूर कहावत है कि अगर तुम जल्दबाज़ी नहीं करोगे तो अपनी मन्ज़िले मक़सूद को पहुँच जाओगे। एक अरबी शायर कहता है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *बुर्दबार (बर्दाश्त करने वाला शख़्स) शख़्स तो अपने मक़ासिद पा लेता है मगर जल्दबाज़ अक्सर औक़ात फिसल जाता है।*

उजलत की दूसरी ख़राबी और आफ़त यह है कि जब आबिद शख़्स को कोई हाजत और ज़रूरत पेश आती है तो वह अल्लाह तआला के हुज़ूर में दुआ व इल्तिजा करता है और दुआ में बहुत कोशिश करता है और बाज़ वक़्त उसकी क़ुबूलियत में उजलत करता है हांलाकि इल्मे इलाही के अन्दर उस दुआ की क़ुबूलियत में अभी कुछ देर होती है तो फ़ौरन दुआ क़बूल न होने की वजह से उसका दिल टूट जाता है और कोशिश तर्क कर देता है और दुआ करना छोड़ देता है और इस तरह अपने मक़सद और अपनी हाजत को नहीं पा सकता।

उजलत की तीसरी ख़राबी और आफ़त यह है कि अगर कोई मुसलमान उस आबिद पर ज़ुल्म करता है तो ग़ज़बनाक होकर बद्दुआ करता है तो वह ज़ालिम मुसलमान उस बद्दुआ के असर से हलाक हो जाता है और इस तरह बद्दुआ करने वाला आबिद हद से बढ़ जाता है और हलाकत व गुनाह में पड़ जाता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾

(और आदमी बुराई की दुआ करता है जैसे भलाई माँगता है और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है।)

(सूरह बनी इस्राईल, आयत-11)

उजलत की चौथी ख़राबी और आफ़त यह है कि इबादत का अस्ल और उसका दारोमदार परहेज़गारी पर है और परहेज़गारी हर चीज़ की तह तक पहुँचने से पैदा होती है और हर चीज़ मसलन खाने, पीने, गुफ़्तगू करने की हक़ीक़त के ज़ाहिर होने के बाद नसीब होता है और जब इन्सान जल्दबाज़ हो, बुर्दबार न हो और न सब्र करने वाला हो तो वह किसी काम के अन्दर इत्मिनान, सब्र, बुर्दबारी और ज़रूरी ग़ौर व फ़िक्र से काम नहीं लेगा बल्कि हर काम को अन्जाम देने में जल्दबाज़ी करेगा तो इस तरह ज़रूर लग़ज़िश खाएगा और खाने पीने के मामले में भी यही जल्दबाज़ी का तरीक़ा इख़्तियार करेगा इस तरह बाज़ औक़ात हराम ग़िज़ा भी पेट में डाल लेगा तो इस जल्दबाज़ी और उजलत की वजह से उसकी परहेज़गारी ख़त्म हो जाएगी और इस इबादत व बन्दगी में कोई ख़ूबी नहीं जिसमें परहेज़गारी का ख़्याल न रहे, तो जिस आफ़त की वजह से इन्सान मरतबों और ख़ैर की मन्ज़िलों से रह जाए, अपनी ज़रूरी हाजतों के हासिल करने में महरूम रहे, अपने आप और दूसरे मुसलमानों की हलाकत की वजह हो और फिर परहेज़गारी के ख़त्म होने का भी ख़तरा हो जो इबादत का मक़सद है तो ऐसी आफ़त को दूर करना और दूर करने के बाद नफ़्स की इस्लाह निहायत ज़रूरी है। (*वल्लाहु तआला वलियुत्तौफ़ीक़ि बिमन्निही व फ़ज़्लिही*)

किब्र (तकब्बुर) का बयान

किब्र एक ऐसी आफ़त है जो नेकी का नामो निशान ही मिटा देती है, क्या तुमने अल्लाह तआला का यह क़ौल नहीं सुना:-

أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

(मुन्किर हुआ और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया।)

(सूरह अलबक़राह, आयत 34)

आमाल और फ़ुरूआते दीनिया को नुक़सान देने वाली तमाम आफ़तें इतनी नुक़सानदेह और ख़राब नहीं जितना तकब्बुर है क्योंकि यह तो दीन की बुनियाद और एतेक़ाद में ख़लल पैदा करता है और जब तकब्बुर का मर्ज़ बढ़ जाता है तो इसका इलाज मुश्किल हो जाता है फिर इससे और हज़ारों तरह की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, चार ख़राबियाँ तो ज़रूर पैदा होती हैं:-

एक हक़ से महरूम हो जाना, दिल का अल्लाह तआला की पहचान करने वाली आयात से अन्धा हो जाना और अल्लाह के अहकाम को समझने से ज़हन का कुंद हो जाना है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ

(और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में अपनी नाहक़ बड़ाई चाहते हैं।)

(सूरह अलअअ़राफ़, आयत -146)

दूसरी जगह फ़रमाता है:-

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝۳۵

(अल्लाह यूँ ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के दिल पर।)

(सूरह अलमोमिन आयत 35)

दूसरी ख़राबी तकब्बुर की यह पैदा होती है कि अल्लाह तआला तकब्बुर करने वाले पर ग़ज़ब फ़रमाता है और उससे नाराज़ हो जाता है, चुनांचे फ़रमाया:-

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝۲۳

(बेशक वह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।)

(सूरह नहल, आयत-23)

मरवी है कि- हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने अल्लाह तआला से दरयाफ़्त किया ऐ ख़ुदाए क़ुद्दूस! तू सबसे ज़्यादा किस पर नाराज़ होता है, तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया-

- ***जिसके दिल में तकब्बुर हो,***
- ***जिसकी ज़बान तुर्श (कड़वी) हो,***
- ***जिसकी आँखों में हया न हो,***
- ***जिसके हाथ बख़ील (कंजूसी वाले हाथ) हों और***
- ***जो बदअख़लाक़ हो।***

तीसरी ख़राबी जो तकब्बुर से पैदा होती है वह दुनिया व आख़िरत में ज़िल्लत व ख़्वारी है, हज़रत हातिम असम ﷺ ने फ़रमाया है:- *तीन हालतों पर मौत आने से बच तकब्बुर पर, हिर्स पर, शेख़ी पर इसलिए कि मुतकब्बिर शख़्स को अल्लाह तआला उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे अपने रज़ील अहल व अयाल और ख़ादिमों से ज़लील व ख़्वार न कर ले और हरीस को उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे रोटी के एक टुकड़े और पानी के एक घूँट के लिए न तरसा ले, और शेख़ी बघारने वाले को उस वक़्त मौत नहीं देता जब तक उसे उसके पख़ाना व पेशाब में आलूदगी की ज़िल्लत न दिखाए।* रिवयात में यह भी आया है कि- *मुतकब्बिर को अल्लाह तआला ज़रूर ज़लील व ख़्वार करता है।*

चौथी मुसीबत व आफ़त मुतकब्बिर शख़्स पर यह टूटती है कि वह आख़िरत में दोज़ख़ की आग में जलेगा, एक हदीसे क़ुदसी में यूँ वारिद हुआ है:- "***बड़ाई मेरी चादर है और अज़मत मेरी इज़ार है तो जो शख़्स इनमें से मुझसे एक भी लेने की कोशिश करेगा उसे दोज़ख़ की आग में दाख़िल करूँगा।***" (मुसनद इमाम अहमद)

मतलब यह है कि बड़ाई और अज़मत अल्लाह तआला की *सिफ़ाते मुख़तस्सह* (ऐसी ख़ूबियाँ जो उसी के साथ ख़ास) हैं किसी दूसरे को लायक़ नहीं, तो जो चीज़ तुमसे ख़ुदा तआला की मारिफ़त ज़ाइल करे, ख़ुदा के अहकाम की समझ से महरूम करे (जो तमाम नेकियों का अस्ल है) फिर जिसकी वजह से अल्लाह तआला नाराज़ हो, दुनिया में ज़िल्लत व ख़्वारी और आख़िरत में अज़ाबे दोज़ख़ हिस्से में आए, ऐसी ख़तरनाक और हलाकत मे डालने वाली आफ़त से बचना और दूर रहना निहायत ज़रूरी है,

किसी अक़्लमन्द को ज़ेबा नहीं कि ऐसी नुक़सानदेह चीज़ से ग़फ़लत बरते बल्कि इससे परहेज़ करके और अल्लाह तआला की पनाह में आकर इससे अपने आपको बचाए। (*वल्लाहु तआला वलिय्युल इस्मति वत्तौफ़ीक़ि बिमन्निही व फ़ज़्लिही*)

यह उन चार आफ़तों की तफ़्सील का कुछ हिस्सा है और अक़्लमन्द आदमी जो अपने क़ल्ब की इस्लाह की अहमियत को जानता है उसके नज़दीक तो इन चारों आफ़तों में से हर एक आफ़त बहुत ही ख़तरनाक है। (*वल्लाहु मुवफ़्फ़िक़*)

सवाल: जब आफ़तों व मर्ज़ों की नज़ाकत व ख़तरे का यह आलम है और जब इनसे बचना इस क़द्र ज़रूरी है, और जब हमारे लिए इन आफ़तों की हक़ीक़त से वाक़िफ़ होना निहायत ज़रूरी है तो बराए मेहरबानी इन की हक़ीक़त और तफ़्सील बयान कीजिए और वो तदबीरें और रास्ते भी बताइये जिनको इख़्तियार करके हम इनसे महफ़ूज़ रह सकें?

जवाब: इन आफ़तों व मर्ज़ों का पूरा बयान बड़ी लम्बी तफ़्सील चाहता है, हमने इनकी पूरी तफ़्सीलात अपनी किताब '*इहयाउल उलूम*' और "*असरारे मुआमलाते दीन*" में लिख दी हैं और इस किताब में हम सिर्फ़ ज़रूरी गुफ़्तगू ही करेंगे। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

अमल की हक़ीक़त का बयान

हमारे अक्सर उल्मा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि अमल इस पुख़्ता ख़्याल का नाम है कि मैं देर तक ज़िन्दा रहूँगा और अगर ऐसा न हो बल्कि दिल में यह बात हो कि मेरी ज़िन्दगी और हयात अल्लाह तआला की मर्ज़ी के साथ वाबस्ता है और इस दुनिया में मुझे नेक काम करने के लिए रहना चाहिए तो इस तरह की नीयत व इरादे का नाम क़सरे अमल है यानी उम्मीदों को कम रखना, तो यह शख़्स यह अक़ीदा रखे मुझे इस साँस के बाद दूसरी साँस का ज़रूर मौक़ा मिलेगा, या आने वाली घड़ी तक मैं ज़रूर ज़िन्दा रहूँगा तो ऐसे शख़्स को आमिल कहेंगे यानी लम्बी उम्मीदों में गिरफ़्तार। ऐसा अक़ीदा और ख़्याल गुनाह है क्योंकि यह एक पोशीदा मामले पर हुक्म लगाना है लेकिन अगर कोई अल्लाह तआला के इल्म और उसकी मर्ज़ी को शामिल कर के यूँ

कहे कि मैं इन्शाअल्लाह ज़िन्दा रहूँगा, या अल्लाह तआला के इल्म में अगर मेरी ज़िन्दगी बाक़ी है तो मै ज़िन्दा रहूँगा, तो ऐसे शख़्स को आमिल नहीं कहते बल्कि ऐसे शख़्स को तारिके अमल (उम्मीदों को तर्क करने वाला) कहा जाएगा, यूँही अगर कोई नेक इरादों के साथ ऐसी उम्मीद रखे तो उसे तूले अमल में गिरफ़्तार नहीं कहेंगे बल्कि ऐसा शख़्स क़ासिरुल अमल (उम्मीदों को कम रखने वाला) कहलाएगा क्योंकि ऐसा शख़्स किसी मामले में भी कोई क़तई फ़ैसला नहीं कर रहा। तुम भी यही तरीक़ा इख़्तियार करो और हर वक़्त तूले अमल के बुरे नतीजों पर निगाह रखो और दिल को उम्मीदें कम रखने पर मज़बूत और क़ायम रखो। फिर उम्मीदें दो क़िस्म की है:

1. ***आम लोगों की उम्मीदें***
2. ***ख़ास लोगों की उम्मीदें***

आम लोगों की उम्मीदें ये हैं कि दुनिया का सामान जमा करने के लिए ज़िन्दगी की आरज़ू, और यहाँ लम्बी उम्र तक ज़िन्दा रहने का इरादा, इस तरह की उम्मीदें सरासर गुनाह हैं इसके ख़िलाफ़ सवाब यह है कि इन्सान दुनिया से मुताल्लिक़ मामलात में अपनी उम्मीदें कम करे, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣

(उन्हें छोड़ो कि खायें और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं।)

(सूरह हिज्र, आयत-3)

और ख़ास क़िस्म की उम्मीद यह है कि इन्सान ऐसे नेक कामों को करने के लिए दुनिया में रहने की आस व उम्मीद लगाए जिनमें ख़तरे का अन्देशा हो और दुरुस्ती की उम्मीद कम हो, बाज़ वक़्त ऐसा होता है कि एक मुअय्यन (तय की हुई) नेकी इसके सामने होती है लेकिन उसे पूरा करने की सलाहियत उसमें नहीं होती वह इस तरह कि उसे अमल में लाने की सूरत में इन्सान उज्ब (ख़ुदपसन्दी) या रिया (दिखावे) में पड़ जाता है और इस नेकी का अज्र व सवाब महफ़ूज़ नहीं रख सकता। इसीलिए यह दुरुस्त नहीं कि जब इन्सान नमाज़ या रोज़ा या कोई और नेक काम शुरू करे तो वह दिल में यह यक़ीन व

एतेक़ाद रखे कि मैं इसे ज़रूर पूरा करूँगा क्योंकि यह एक पोशीदा चीज़ पर हुक्म लगाना है जो ठीक नहीं इस क़िस्म का कोई क़तई इरादा कर लेना बन्दे के लिए ठीक नहीं बल्कि दुरुस्त बात यह है कि हर नेक काम शुरू करते वक़्त यह ख़्याल करे कि अगर यह काम मेरे लायक़ और मेरे हक़ में बेहतर हो तो ख़ुदा तआला मुझे इसे करने की तौफ़ीक़ व हिम्मत दे या मैं उस काम को इन्शाअल्लाह तआला पूरा करूँगा या यह एतेक़ाद रखे कि मैं इस काम को उसी सूरत में पूरा कर सकता हूँ अगर अल्लाह तआला की मर्ज़ी हो, ये क़ायदे व शर्तें इसलिए मलहूज़ रखे ताकि लम्बी उम्मीद के ऐब से बच सके, अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में अपने हबीबे पाक ﷺ को हुक्म दिया:

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۡ

(और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल यह कर दूँगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे।)

(सूरह अलकहफ़, आयत-24)

उल्मा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि तूले अमल के मुक़ाबले में मजाज़ी तौर पर अच्छी नीयत को क़रार दिया गया है क्योंकि अच्छी नीयत वाला इन्सान उमूमन लम्बी उम्मीदों से बचा होता है, चूंकि अच्छी नीयत की बहुत ज़रूरत है और इसकी मारिफ़त और पहचान के बग़ैर चारा नहीं इसलिए उल्मा-ए-किराम ने इसकी एक जामेअ और मुनासिब तारीफ़ बयान की है और वह तारीफ़ यह है:- *"किसी नेक काम को शुरू करने का पुख़्ता इरादा करना और साथ यह ऐतक़ाद भी रखना कि इसका पूरा होना और ख़त्म होना अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर है।"*

सवाल: काम शुरू करने का इरादा तो पुख़्ता किया जाए मगर फिर इसके पूरा होने और ख़त्म होने को अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ करना क्यूँ ज़रूरी है, जबकि इसका मुकम्मल होना अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर है तो चाहिए कि काम के शुरू के वक़्त भी ख़ुदा की मर्ज़ी ही मलहूज़ रहे नाकि अपनी तरफ़ से पुख़्ता इरादा कर लिया जाए?

जवाब: काम के शुरू में पुख़्ता इरादा कर लेना इसलिए दुरुस्त और ठीक है कि इस वक़्त काम वुजूद में नहीं आया होता लिहाज़ा शुरू में रिया व

उज्ब वग़ैरा का ख़तरा नहीं मगर मुकम्मल होने व ख़त्म होने के वक़्त चूंकि काम का वुजूद है इसलिए इस वक़्त दो ख़तरे हैं एक यह कि शायद यह काम मुझसे पूरा होकर आख़िर तक पहुँचता है या नहीं, दूसरा यह कि दरमियान मे रिया व उज्ब आ जाए और वह अमल बर्बाद हो जाए, इसलिए इसके अच्छी तरह मुकम्मल होने के लिए *इन्शाअल्लाह* कहना और अल्लाह तआला के हवाले करना ज़रूरी है। *इन्शाअल्लाह* तो इसलिए कि यह काम आख़िर तक पहुँचे और अल्लाह के हवाले इसे इसलिए करे कि रिया व उज्ब वग़ैरा आफ़तों से महफ़ूज़ रह सके, हर अमले ख़ैर के लिए इस क़िस्म के इरादे का नाम *नियते महमूदा* (यानी नेक नीयत) है, इस मज़मून को ख़ूब ग़ौर से समझो।

ऐ अज़ीज़! जान ले कि उम्मीदें कम रखने का क़िला मौत की याद है और मौत को याद रखने का ज़रिया अचानक मौत आ जाने का ख़्याल है साथ ही यह ख़्याल रखना कि मौत कहीं ग़फ़लत, बेख़बरी और ग़ुरूर की हालत में न आ जाए इस बात को दिमाग़ में रखना बहुत ज़रूरी है ताकि तुम्हारा अज़ीज़ वक़्त फ़ुज़ूल बातों या गपशप में न गुज़रे और लोगों से बेमक़सद मेल व मुलाक़ात की वजह से बर्बाद न हो।(*वल्लाहु मुवफ़्फ़िक़ु बिफ़ज़्लिही*)

हसद की हक़ीक़त

अपने मुसलमान से ऐसी नेमत छिन जाने के इरादे का नाम ***हसद*** है जिसमें उस मुसलमान के लिए बेहतरी और भलाई हो, और अगर छिन जाने का इरादा न हो बल्कि यह इरादा हो कि ऐसी ही नेमत मुझे भी मिल जाए तो इसे हसद नहीं बल्कि ***ग़िबता*** कहते हैं और हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ के इस क़ौल में कि- "***हसद जाइज़ नहीं मगर दो चीज़ों में*** "(सहीह बुख़ारी) हसद से मुराद ग़िबता है, आप ﷺ ने मजाज़न ग़िबता को हसद से ताबीर कर दिया क्योंकि दोनों मअना के लिहाज़ से क़रीब हैं।

और अगर ऐसी नेमत के ज़वाल (यानी ख़त्म हो जाने) का इरादा हो तो जिसमें मुसलमान के लिए बेहतरी न हो तो ऐसे इरादे का नाम 'ग़ैरत' है, हसद, ग़ैरत और ग़िबता में यही फ़र्क़ है जो हमने बयान कर दिया है।

हसद के मुक़ाबले में 'नसीहत' है। मुसलमान के लिए ऐसी नेमत के बाक़ी रहने के ख़्याल का नाम नसीहत है।

सवाल: हम कैसे जान सकते हैं कि मुसलमान के लिए इस नेमत में भलाई है? ताकि उससे नसीहत का इज़हार करें या हसद करें?

जवाब: बाज़ वक़्त हमें यह ग़ालिब गुमान होता है कि इस काम में मुसलमान के लिए भलाई है, ऐसी सूरत में नसीहत पर अमल करना चाहिए और हसद से बचना चाहिए और अगर उस नेमत की भलाई और बेहतरी में शक व शुबह हो तो उसके ख़त्म होने या बाक़ी रहने का इरादा नहीं करना चाहिए बल्कि उसे अल्लाह तआला के इल्म और उसकी मर्ज़ी के सुपुर्द करना चाहिए ताकि हसद से परहेज़ और नसीहत पर अमल हो सके।

हसद से दूर रखने वाली चीज़ (नसीहत व ख़ैरख़्वाही) के जज़्बे को बरक़रार रखने की सूरत यह है कि इन्सान मुसलमानों के साथ दोस्ती व मेलजोल की ताकीदों को याद करे जो इस मामले में अल्लाह तआला की तरफ़ से बताई जा चुकी हैं और उस याद को पुख़्ता करने वाली चीज़ यह है कि इन्सान मोमिन भाई के हुक़ूक़ का तसव्वुर करे, उसके मरतबे की बुलन्दी और उसके माल की हुरमत (इज़्ज़त) जो अल्लाह तआला के यहाँ हैं, निगाह में रखे और मोमिन की उन बुज़ुर्गियों और अज़मतों का तसव्वुर करे जो आख़िरत में अल्लाह तआला उसको अता करेगा और इस बात का ख़्याल करे कि मुझे दुनिया में मोमिनों के साथ तआवुन, उनकी मदद, और उनके साथ जुमा व जमाअत में शिरकत के अन्दर क्या-क्या अज़ीम फ़ायदे हैं फिर ईमान वालों के साथ तआवुन और उनकी मदद का एक फ़ायदा यह है कि वो आख़िरत में तुम्हारी शफ़ाअत करेंगे।

तो इस क़िस्म के ख़्यालात व तसव्वुरात इन्सान को अपने दूसरे मुसलमान भाईयों के साथ ख़ैरख़्वाही पर उभारते हैं और हसद से बचाते हैं। (*वल्लाहु वलिय्युत्तौफ़ीक़ि बिफ़ज़्लिही*)

उजलत यानी जल्दबाज़ी की हक़ीक़त

उजलत दरअसल दिल में एक क़ायम मअना का नाम है जो इन्सान को बिना सोचे समझे और बिला ग़ौर व फ़िक्र काम करने पर आमादा करता है और

अमल में जल्दबाज़ी की वजह बनता है और इस उजलत के मुक़ाबिल सिफ़त अनाअत है यानी सब्र व बुर्दबारी से काम करना और अनाअत दिल में मौजूद एक ऐसे मअना का नाम है जो बन्दे के कामों में एहतियात, ग़ौर व फ़िक्र और तहम्मुल (बर्दाश्त) व बुर्दबारी पैदा करता है और तवक़्क़ुफ़ (ठहराव) की ज़िद सिफ़त तअस्सुफ़ है यानी बिना सोचे समझे काम शुरू कर देना।

फिर मेरे शैख़ ने तवक़्क़ुफ़ (ठहराव) व अनाअत में यह फ़र्क़ बताया है कि काम शुरू करने से पहले इसके मुताल्लिक़ ग़ौर व फ़िक्र और सोच विचार करने को तवक़्क़ुफ़ कहते हैं और काम शुरू करके उसमें आहिस्तगी इख़्तियार करने को ताकि काम बेहतर तरीक़े से अन्जाम को पहुँचे अनाअत कहते हैं।

फिर अनाअत और तहम्मुल पैदा होने का यह तरीक़ा है कि इन्सान जल्दबाज़ी की आफ़तों और नुक़सानात व ख़राबियों को ख़्याल में हाज़िर करे और तअस्सुफ़ यानी बे सोचे समझे काम करने और जल्दबाज़ी करने से जो शर्मिन्दगी होगी उसे ज़हन में लाए इस तरह करने से ज़रूर इन्शाअल्लाह तआला बन्दे में तवक़्क़ुफ़ (ठहराव) व तहम्मुल (बर्दाश्त) की सिफ़त (ख़ूबी) पैदा होगी और तअस्सुफ़ यानी बिना सोचे काम करने और उजलत यानी जल्दबाज़ी से भी निजात हासिल होगी। (*वल्लाहु तआला वलिय्युल इसमह*)

किब्र (तकब्बुर) की हक़ीक़त

नफ़्स की बुलन्दी व अज़मत के ख़्याल को किब्र (तकब्बुर) कहते हैं, इस ख़्याल से किब्र (तकब्बुर) पैदा होता है और अपने आपको हक़ीर व कम तर ख़्याल करने का नाम ***फ़रौतनी*** है और फ़रौतनी से ***तवाज़ोअ़*** (यानी इन्केसारी व आजिज़ी) पैदा होती है फिर तवाज़ोअ़ व तकब्बुर हर एक की दो दो क़िस्में हैं **तवाज़ोअ़ आम** व **तवाज़ोअ़ ख़ास** और **तकब्बुरे आम** व **तकब्बुरे ख़ास**

तवाज़ोअ़ आम तो यह है कि बन्दा एक मामूली हैसियत के लिबास, रहने की जगह और सवारी को काफ़ी समझे और **तकब्बुरे आम** यह है कि

इन्सान मामूली हैसियत के लिबास, मकान और सवारी वग़ैरा को काफ़ी न समझे बल्कि उसमें ऊँची हैसियत का तलबगार हो।

तवाज़ोअ़ ख़ास यह है कि हर दर्जे का इन्सान अपने नफ़्स को हक़ के ताबे करने की कोशिश करे और **तकब्बुरे ख़ास** यह है कि इस तरह की कोशिश न करे ऐसा तकब्बुर गुनाहे कबीरा और बुराई है।

तवाज़ोअ़ आम को अपने अन्दर मज़बूत करने का तरीक़ा यह है कि बन्दा अपनी शुरूआती हालत, पैदाइश, मौत और इस मौजूदा वक़्त की परेशानियों और आलूदगियों को याद करे, एक बुज़ुर्ग ﷫ का इरशाद है:- *"तेरी इब्तिदा तो रहम (बच्चेदानी) में पड़ा हुआ क़तरा है और तेरी इन्तेहा नापाक मुर्दार है और इस वक़्त तू उन दोनों हालतों के दरमियान अपने पेट में पाख़ाने का बोझ उठाए फिरता है।"*

तवाज़ोअ़ ख़ास को अपने अन्दर मज़बूत करने का तरीक़ा यह है कि बन्दा हक़ से मुँह फेर ले और बातिल में मुन्हमिक होने (यानी लग जाने) वाले शख़्स के अन्जाम और उसके अज़ाब व सज़ा को याद करे, एक साहिबे बसीरत (निगाह वाला) इन्सान के लिए दिल की आफ़तों के जानने के लिए इस क़द्र वज़ाहत ही काफ़ी है।

(वल्लाहुल अल मुवफ़्फ़िक़ु वलिय्युत्तौफ़ीक़)

पाँचवी फ़स्ल

(शिकम (पेट) की हिफ़ाज़त के बयान में)

ऐ इबादत के तालिब! तुझ पर अपने शिकम की हिफ़ाज़त भी लाज़िम व ज़रूरी है, पेट की इस्लाह और हिफ़ाज़त एक निहायत मुश्किल काम है लिहाज़ा उसकी इस्लाह व हिफ़ाज़त के लिए ज़्यादा मेहनत व मशक़्क़त की ज़रूरत है इसके बिगाड़ का असर बहुत गहरा और उसकी ख़राबी का नुक़सान बहुत ज़्यादा है क्योंकि पेट तमाम जिस्मानी ताक़तों का ठिकाना है। इसी शिकम से ही जिस्म में कमज़ोरी या क़ुव्वत, पाकीज़गी या सरकशी वग़ैरा ज़ाहिर होती है, इसलिए अगर तुम सही मक़सद वाली इबादत का पक्का इरादा अपने अन्दर पैदा करना चाहते हो तो तुम पर हराम ग़िज़ा, खाने की वह

चीज़ें जिन में शक व शुबह हो और फ़ुज़ूल हलाल से अपने पेट की हिफ़ाज़त करना निहायत ज़रूरी है। हराम व शुबह की चीज़ों से तीन वजहों से बचना ज़रूरी है:-

पहली वजह दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहने के लिए है अल्लाह तआला फ़रमाता है-

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝۱۰

(वो जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं, और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जायेंगे।)

(सूरह निसा, आयत -10)

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया:- "***जो गोश्त हराम की ग़िज़ा से तैयार हुआ हो उसके लिए आग में जलना ही बेहतर है।***"(अल मोजमुल औसत)

दूसरी वजह यह है कि हराम व शुबह की ग़िज़ा खाने वाला मरदूदे बारगाहे ख़ुदावन्दी है, ऐसे शख़्स को रब तआला की सही और कामयाब इबादत की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती क्योंकि एक पाक इन्सान ही अल्लाह तआला की इबादत के लायक़ है, मैं कहता हूँ कि क्या अल्लाह तआला ने एक *जुनुबी* (यानी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) इन्सान का अपने घर यानी मस्जिद में दाख़िल होने और बेवुज़ू शख़्स को क़ुरआन मजीद को छूने और हाथ लगाने से मना नहीं किया? ज़रूर मना किया है जैसा कि क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:-

وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۭ

(और नापाकी की हालत में बेनहाये नमाज़ के पास न जाओ।)

(सूरह अननिसा, आयत - 43)

और दूसरी जगह फ़रमाया:-

لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلۡمُطَهَّرُونَ ۝٧٩

(इसे न छुएँ मगर बावुज़ू।)

(सूरह अलवाक़िआ, आयत - 79)

जुनुबी (यानी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) और बेवुज़ू होना शरअन मुबाह है, ग़ौर करो जब एक मुबाह काम की वजह से मस्जिद में क़दम रखना या क़ुरआन करीम को हाथ लगाना मना है तो वह शख़्स मस्जिद में कैसे आ सकता है जो हराम और शुबह की गन्दगी से आलूदा है और ऐसा शख़्स किस तरह इबादतगुज़ारी का दावा कर सकता है, या उसके ज़िक्र और उसकी याद से लुत्फ़अन्दोज़ हो सकता है ऐसे शख़्स को यह तौफ़ीक़ नसीब नहीं हो सकती।

हज़रते इब्ने मुआज़ राज़ी ﷫ ने फ़रमाया है कि- *"इताअत अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और इस ख़ज़ाने की चाबी दुआ है और चाबी के दंदाने रिज़्क़े हलाल हैं तो जब चाबी के दंदाने न हों तो दरवाज़ा नहीं खुल सकता और जब तक दरवाज़ा न खुले ख़ज़ाने तक पहुँचना नामुमकिन है।"*

तीसरी वजह यह है कि हराम व शुबह की ग़िज़ा खाने वाला शख़्स नेक काम करने से महरूम होता है और अगर इत्तेफ़ाक़न कोई नेकी उससे हो जाए तो वह अल्लाह के नज़दीक मक़बूल व मन्ज़ूर नहीं होती बल्कि रद्द कर दी जाती है तो ऐसा शख़्स नेक काम को अन्जाम देने में जो वक़्त और ताक़त ख़र्च करता है उससे बेफ़ायदा मशक़्क़त, फ़ुज़ूल रंज व मेहनत और वक़्त बर्बाद करने के सिवा उसे कुछ हासिल नहीं होता, हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ का इरशादे गिरामी है- "***बहुत से रात इबादत में काटने वाले ऐसे होते हैं जिनको जागने की मशक़्क़त के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और बहुत से रोज़ादार ऐसे होते हैं जिनको दिन भर के रोज़े से सिवा भूख व प्यास के कुछ हासिल नहीं होता***।" (सुनन दारमी)

हज़रत इब्ने अब्बास ﵄ से रिवायत है कि- "***अल्लाह ऐसे शख़्स की नमाज़ क़बूल नहीं करता जिसके शिकम में हराम ग़िज़ा पड़ी हो***।"

बाक़ी रहा फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़्यादा हलाल तो उसका इस्तेमाल आफ़त है और मुजाहिदे वाले के लिए बला है मुझे इसमें ग़ौर करने से दस आफ़तें मालूम हुई हैं जिनको उसूल की जगह दी जा सकती है।

पहली आफ़त हलाल खाना ज़्यादा खाने से दिल की सख़्ती पैदा होती है और नूर ख़त्म हो जाता है। हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया- "***हाजत और ज़रूरत से ज़्यादा खाने पीने से गुरेज़ करो क्योंकि इससे दिल मुर्दा हो जाता है जिस तरह ज़रूरत से ज़्यादा पानी से खेती तबाह हो जाती है***।" बाज़ सालेहीन ने इसकी मिसाल यूँ दी है कि मेदा दिल के नीचे एक उबलती हुई हंडिया जैसा है तो मेदे से बुख़ारात दिल को चढ़ते हैं और इनकी वजह से दिल मैला और ख़राब हो जाता है।

दूसरी आफ़त यह कि ज़्यादा खाने से आज़ा में फ़ितना पैदा होता है, फ़साद बरपा करने और बेहूदा कामों की रग़बत पैदा होती है क्योंकि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाना खाता है तो उसके जिस्म में तकब्बुर आँखों में बद नज़री की ख़्वाहिश पैदा होती है, कान बुरी बातें सुनने के ख़्वाहिशमन्द होते हैं, ज़ुबान बेहूदा बातों पर आमादा होती है, शर्मगाह शहवत का तक़ाज़ा करती है और पाँव नाजाइज़ मक़ाम की तरफ़ हरकत करने के लिए बेक़रार होते हैं इसके ख़िलाफ़ अगर इन्सान पेट ग़िज़ा से पुर न करे बल्कि भूख बाक़ी रहने दे तो तमाम आज़ा सुकून व आराम इख़्तियार करेंगे न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न बुराई को देख कर ख़ुश होंगे। उस्ताद अबू जाफ़र رحمة الله عليه ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि- "***शिकम एक ऐसा उज़्व है कि अगर वह भूखा हो तो जिस्म के बाक़ी आज़ा सेर होते हैं यानी सुकून में होते हैं किसी शय का मुतालबा नहीं करते और अगर शिकम सेर हो तो दूसरे आज़ा भूखे होते हैं यानी मुख़्तलिफ़ बुराइयों की तरफ़ रुजू करते हैं***"। ख़ुलासा यह है कि इन्सान जो बोलता है जो करता है, उसके आमाल की अच्छाई बुराई का दारोमदार ग़िज़ा पर है अगर पेट में हराम ग़िज़ा जाएगी तो हराम कामों की सूरत में ही ज़ाहिर होगी और अगर फ़ुज़ूल और ज़रूरत से ज़्यादा ग़िज़ा पेट में जायेगी तो वह बेकार के कामों की सूरत में ही बरामद होगी, यानी ग़िज़ा बीज है और अफ़आल (यानी काम) व अक़्वाल (यानी बोल) उस बीज के पौधे हैं जो बीज के मुताबिक़ उगते है।

तीसरी आफ़त यह है कि ज़रूरत से ज़्यादा खाने से इल्म व फ़हम (समझ) में कमी आ जाती है क्योंकि शिकमपुरी (यानी ज़्यादा पेट भरना) दानाई (समझदारी) और अक़्लमन्दी को ख़त्म कर देती है। हजरत दारानी رحمة الله عليه ने बिल्कुल ठीक फ़रमाया है कि- ***"अगर तू दुनिया और आख़िरत की हाजत व ज़रूरत पूरा करने का ख़्वाहिशमन्द है तो ख़ाली पेट उसे पूरा करने की कोशिश कर, पेट भर कर खा लेने के बाद अक़्ल व फ़हम में ख़राबी पैदा हो जाएगी यह बात हर तजुर्बेकार पर ज़ाहिर है।"***

चौथी आफ़त यह कि पेट भर कर खाने से इबादत में कमी आती है क्योंकि इन्सान जब ख़ूब सेर होकर खा लेता है तो उसका बदन बोझल हो जाता है, आँखों में नींद भर जाती है और आज़ा सुस्त पड़ जाते हैं, कोशिश के बावजूद कोई काम नहीं कर सकता, हर वक़्त ज़मीन पर मुर्दार की तरह पड़ा रहता है, कहा गया है कि- ***जब तू पेटू बन जाए तो फिर अपने आपको ज़न्जीर से पाँव बँधा समझ।***

मरवी है कि- ***"एक दफ़ा हज़रत यह्या عليه السلام ने इब्लीस को देखा कि बहुत से जाल उठाए हुए है, आप عليه السلام ने उनकी तरफ़ इशारा करके पूछा कि यह क्या है? इब्लीस ने जवाब दिया कि ये शहवात के जाल हैं जिनसे मैं लोगों को शिकार करता हूँ, आप عليه السلام ने पूछा कि - क्या मुझे फँसाने के लिए भी इसमें कोई जाल है? तो उसने कहा कि- नहीं सिर्फ़ एक रात आपने पेट भर कर खाना खाया तो मैंने उस रात आप पर नमाज़ को भारी कर दिया। हज़रत यह्या عليه السلام ने यह सुन कर फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की आइन्दा मैं कभी पेट भर कर नहीं खाऊँगा। तो इब्लीस ने कहा कि मैं भी आइन्दा कभी किसी को ऐसी बात नहीं बताऊँगा।"***

यह उस हस्ती का हाल है जिसने सारी उम्र में एक दफ़ा सेर होकर खाया तो उसका क्या हाल होगा जिसने सारी उम्र में सिर्फ़ एक दफ़ा शिकम को भूखा रखा हो? क्या ऐसा शख़्स इबादत की उम्मीद कर सकता है?

हज़रत सुफ़यान सौरी رحمة الله عليه ने फ़रमाया है कि – *"इबादत एक फ़न है जिसके सीखने की जगह तन्हाई और ख़िलवत है और उसका हथियार भूख है।"*

पाँचवीं आफ़त यह है कि पेट भर कर खाने से इबादत की हलावत (मिठास) ख़त्म हो जाती है। हज़रत सिद्दीक़े अकबर ﷺ ने फ़रमाया- "***जब से मुसलमान हुआ हूँ कभी पेट भर कर नहीं खाया कि इबादत की हलावत (मिठास) नसीब हो और जब से मुसलमान हुआ हूँ कभी सेर होकर नहीं पिया, रब तआला की मुलाक़ात के शौक़ से***।"

और ये सिफ़ात *कश्फ़* वालों की हैं, हज़रत सिद्दीक़े अकबर ﷺ भी मुकाशेफ़ीन (यानी कश्फ़ वाले लोगों) में से थे इसी मुकाशफ़ा की तरफ़ हुज़ूर عليه السلام ने अपने इस क़ौल में इशारा फ़रमाया है- "***अबूबक्र नमाज़ रोज़े की वजह से तुम से अफ़ज़ल नहीं बल्कि उनके अन्दर एक शय है जो उनकी अफ़ज़लियत की वजह है***।"

हजरत दारानी رحمة الله عليه ने फ़रमाया है कि- "*मैं इबादत में हलावत (मिठास) सबसे ज़्यादा उस वक़्त महसूस करता हूँ जब भूख की वजह से मेरा पेट पीठ से लगा हो*।"

छटी आफ़त यह है कि ख़ूब पेट भर कर खाने में हराम या शुबह वाली चीज़ के खाने का ख़तरा है क्योंकि हलाल इतना ज़्यादा नहीं मिलता बल्कि मामूली गुज़ारे के लायक़ मिलता है।

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ से रिवायत है कि आप ﷺ ने फ़रमाया- "***हलाल ग़िज़ा तुझे मिलेगी मगर मामूली गुज़ारे के मुवाफ़िक़ और हराम तेरे पास बेतहाशा आएगा***।"

सातवीं आफ़त फ़ुज़ूल हलाल को जमा करने, फिर उसे तैयार करने और फिर खाने में दिल और बदन मशग़ूल रहता है, फिर उससे फ़ारिग़ होने और ख़लासी पाने में मसरूफ़ रहता है फिर उससे पैदा होने वाली ख़राबियों से सलामती की कोशिश करता है क्योंकि ज़्यादा खाने से बदन में ख़राबी पैदा हाती है बल्कि दीनी लिहाज़ से तो उससे हज़ारों ख़राबियाँ और आफ़तें पैदा होती हैं। हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ का इरशादे गिरामी है:- "***हर बीमारी की अस्ल बदहज़मी है और हर इलाज की अस्ल भूख और कम ख़ुराक है***।" (जामे सग़ीर)

हजरते मालिक इब्ने दीनार رحمة الله عليه फ़रमाया करते थे "*ऐ लोगों मुझे बैतुलख़ला की तरफ़ ज़्यादा आना जाना पड़ता है यहाँ तक कि ज़्यादा खाने*

से मुझे अपने रब से शर्म आई, काश अल्लाह तआला मेरी रोज़ी कंकरियों में कर देता कि मैं उन्हें चूस लिया करता यहाँ तक कि मुझे मौत आ जाती।"

फिर इस मर्ज़ की रू से दुनिया की तलब करनी पड़ती है, लोगों से लालच करना पड़ता है और इसी खाने पीने की फ़िक्र में अज़ीज़ वक़्त बर्बाद हो जाता है।

आठवीं आफ़त आख़िरत में हिसाब किताब की हौलनाकियाँ और सुकराते मौत (नज़ा की हालत) की सख़्ती की वजह भी पेट भर कर खाना है, रिवायत में आया है कि- "***बेशक सुकराते मौत (नज़ा की हालत) की सख़्ती दुनिया की लज़्ज़तों के मुताबिक़ है तो जिसने ज़्यादा लज़्ज़तें उठाईं उसे मौत की तकलीफ़ ज़्यादा होगी।***"

नवीं आफ़त इससे आख़िरत के सवाब में कमी होती है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۝٢٠

(तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुनिया ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उसकी कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उसकी कि हुक्मउदूली करते थे।)

(सूरह अहक़ाफ़ आयत 20)

तो जिस क़द्र तुम दुनिया की लज़्ज़तें हासिल कर लोगे उतना हिस्सा आख़िरत से कम हो जाएगा, इसीलिए जब रब तआला ने अपने हबीबे पाक عليه السلام पर दुनिया पेश की तो फ़रमाया कि अगर तू इसकी लज़्ज़त उठा ले तो इसके बदले तेरी लज़्ज़तें आख़िरत में कम नहीं करूँगा।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि यह हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ की ख़ुसूसियत थी दूसरे यहाँ लज़्ज़तें हासिल करेंगे तो उसके बदले उनको

आख़िरत का हिस्सा काट लिया जाएगा, हाँ अल्लाह तआला का फ़ज़्ल हो जाए तो दूसरी बात है।

मरवी है कि – “*एक मरतबा ख़ालिद इब्ने वलीद ﷺ ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म ﷺ की दावत की, जब आप खाने लगे तो खाने को देख कर फ़रमाया कि यह तो हमारे लिए है, उन फ़ुक़रा मुहाजेरीन के लिए क्या है जो फ़ौत हो चुके और जौ की रोटी से भी सेर न हुए, हज़रत ख़ालिद इब्ने वलीद ﷺ ने अर्ज़ किया कि उनके लिए जन्नते फ़िरदौस है, हज़रत फ़ारूक़े आज़म ﷺ ने फ़रमाया अगर वह जन्नत पाने में कामयाब हो गए हैं और हमने उसके बदले अपना हिस्सा यहाँ दुनिया में ले लिया तो उनके और हमारे मरतबे में बहुत फ़र्क़ है।*”

मन्क़ूल है कि- “*एक दफ़ा हज़रत फ़ारूक़े आज़म ﷺ को प्यास महसूस हुई आपने एक शख़्स से पानी माँगा, उस शख़्स ने आपको एक बर्तन दिया जिसमें खजूरों का पानी था, जब आपने उससे मुँह लगाया तो उसे ठंडा और मीठा पाया, आप रुक गए और आह खींची, उस शख़्स ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैंने इसे मीठा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी तो आपने फ़रमाया इसी मिठास ने ही तो मुझे पीने से बाज़ रखा अगर आख़िरत का ख़्याल न होता तो हम भी तुम्हारी इस ऐश व इशरत में शरीक होते।*”

दसवीं आफ़त: ज़रूरत से ज़्यादा ग़िज़ा इस्तेमाल करने वाले शख़्स को क़ियामत के दिन हश्र के मैदान में रोका जाएगा, पूरी तरह हिसाब लिया जाएगा और ज़रूरत से ज़्यादा ग़िज़ा इस्तेमाल करने पर शर्म दिलाई जाएगी और शहवतों की तलब पर कोसा जाएगा, बुरा कहा जाएगा दुनिया में हलाल चीज़ों के इस्तेमाल का हिसाब और ख़्वाहिशात की पैरवी करने पर धुत्कारा जाएगा और हराम पर अज़ाब और उसकी ज़ीनत इख़्तियार करने पर हलाकत व बर्बादी पेश आएगी। ये दस आफ़तें जिनमें से नज़र वालों के लिए नुक़सान पहुँचाने में सिर्फ़ एक भी काफ़ी है।

ऐ इबादत में कोशिश करने वाले! तुझ पर हराम और शुबह वाली ग़िज़ा से परहेज़ करना ज़रूरी है और रिज़्क़ के मामले में सख़्त एहतियात की ज़रूरत है ताकि दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहे, इसी तरह ज़रूरत से ज़्यादा हलाल के इस्तेमाल से भी बचना लाज़िम है ताकि बन्दा शर्र और बुराई में मुब्तला न हो और क़ियामत के दिन हिसाब के लिए महशर में रोक न लिया जाए।

सवाल: जब हराम और शुबह वाली चीज़ों से बचना इतना ज़रूरी है तो हमें हराम व शुबह के हुक्म और उसकी हक़ीक़त से भी पूरे तौर पर आगाह कीजिए?

जवाब: मैं कहता हूँ (अल्लाह तआला तेरी उम्र दराज़ करे) कि मैंने हराम और शुबह वाली चीज़ों की तफ़्सीलात पूरे तौर पर अपनी किताब "*असरारे मुआमलाते दीन*" में बयान कर दी हैं और किताब "*इहयाउल उलूम*" में भी इन तफ़्सीलात में एक मुस्तिक़ल बाब लिखा है लेकिन इस किताब "*मिन्हाजुल आबिदीन*" में हम ज़रूरी बातें लिखते हैं ताकि "*मुब्तदी*" यानी वह शख़्स जो अभी तसव्वुफ़ के रास्ते पर चलना शुरू कर रहा है और अमल में भी कमज़ोर है इन बातों को आसानी से ज़हन में बिठा सके क्योंकि इस छोटी सी किताब से हमारा मक़सद यही है कि मुब्तदी को ख़ास तौर पर फ़ायदा हो और इसी तरह आख़िरत की राह के हर तालिब को इससे फ़ायदा हो।

बाज़ हुक्मा ने हराम के मुताल्लिक़ यह कहा है कि- "***हर वह चीज़ जिसके मुताल्लिक़ तुझे यक़ीन हो कि यह ग़ैर की मिल्क है और बग़ैर शरीअत की इजाज़त के तुझे इसके इस्तेमाल की इजाज़त नहीं तो ऐसी चीज़ हराम है लेकिन अगर उसका यक़ीन न हो तो बल्कि ग़ालिब गुमान हो कि यह ग़ैर की मिल्क है तो ऐसी चीज़ शुबह वाली चीज़ है।***"

और बाज़ ने हराम के मुताल्लिक़ यह कहा है कि- "***हर वह शय जिसके मुताल्लिक़ यक़ीन हो या ग़ालिब गुमान हो कि यह ग़ैर की है तो उसका इस्तेमाल हराम है क्योंकि शरीअत ने बहुत जगह अहकाम में ग़ालिब गुमान को भी यक़ीन ही कहा है और अगर किसी शय के हराम या हलाल होने में शक हो और उसके जाइज़ या नाजाइज़ होने का ख़्याल दोनों तरफ़ बराबर हों यहाँ तक कि तुम इस हद तक शक में पड़ जाओ हलाल व हराम न समझ सको तो यह शुबेह की ग़िज़ा है क्योंकि इसमें यह भी शुबह है कि हराम हो, लिहाज़ा ऐसी ग़िज़ा का मामला मुश्तब्बह (जिसमें में शक हो) और उसका हाल साफ़ नहीं, फिर जिसका हराम होना साफ़ है उससे बचना फ़र्ज़ और जिसके हराम होने में शुबह हो उससे परहेज़ करना तक़वा है***" हमारे नज़दीक इन दोनों क़ौलों में से इस दूसरे क़ौल को फ़ौक़ियत हासिल है।

सवाल: इस ज़माने के बादशाहों के इनामात व तोहफ़े क़बूल करने का क्या हुक्म है?

जवाब: इस मसअले में उल्मा का इख़्तिलाफ़ है, बाज़ कहते हैं कि जिस माल का हराम होना यक़ीनी नहीं उसके लेने और क़बूल करने में हर्ज नहीं।

इसके ख़िलाफ़ बाज़ दूसरे उल्मा-ए-किराम यह फ़रमाते हैं कि जिस माल का हलाल होना वाज़ेह और यक़ीनी न हो उसे लेना और क़बूल करना दुरुस्त नहीं क्योंकि इस ज़माने के सलातीन (हुक्मरान) के पास ज़्यादातर हराम माल होता है उनके पास हलाल माल या तो बिल्कुल नायाब है या बिल्कुल नादिर है यानी न के बराबर है।

और उल्मा की तीसरी जमाअत यह कहती है कि सलातीने वक़्त का माल ग़नी व फ़क़ीर सब के लिए क़बूल करना दुरुस्त है जब कि उसके हराम होने का यक़ीन न हो, अगर उस माल में कोई ख़राबी होगी तो इसका गुनाह देने वाले के सर है। इनकी दलील यह है कि हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने हाकिमे इसकन्दरिया ***मक़्क़िस*** का हदिया क़बूल फ़रमाया हालांकि वह ग़ैर मुस्लिम था। (मोअजमुल कबीर)

और यह कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मदीने के यहूदियों से क़र्ज़ माल लिया (नसाई) हालांकि अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में यहूदियों के लिए फ़रमाया:-

اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ

(बड़े हरामख़ोर)

(सूरह अलमाइदह, आयत-42)

इन हज़रात की यह भी दलील है कि बहुत से सहाबा ने ज़ालिम हाकिमों का ज़माना पाया और उनसे हदिये तोहफ़े वग़ैरा क़बूल होते रहे, इस सिलसिले मे हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ, हज़रत अब्बास رضی اللہ عنہ और हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ वग़ैरा का नाम पेश किया जा सकता है।

इसके बरअक्स दूसरे उल्मा यह कहते हैं कि ज़ालिम हाकिमों से माल क़बूल करना किसी ग़नी व फ़क़ीर को दुरुस्त नहीं क्योंकि ज़ुल्म करने की

वजह से ही उनका नाम ज़ालिम पड़ चुका है और उनका माल ग़ालिबन हराम ही होता है और ग़ालिब का ऐतबार किया जाता है लिहाज़ा उनके माल से बचना ज़रूरी है।

बाज़ दूसरे यह कहते हैं कि माल की हुरमत (हराम होना) यक़ीनी न हो तो उसका इस्तेमाल फ़क़ीर के लिए दुरुस्त है, ग़नी के लिए दुरुस्त नहीं, हाँ इस सूरत में फ़क़ीर के लिए लेना भी दुरुस्त नहीं जबकि यक़ीन हो कि ग़सबशुदा यानी माल ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा किया हुआ है, सिर्फ़ इस नीयत से यह माल लेना दुरुस्त है कि उससे लेकर मालिक को दे दे।

इन उल्मा ने यह भी कहा है कि फ़क़ीर के लिए वक़्त के सुल्तानों का माल क़बूल करना और इस्तेमाल में लाना दुरुस्त है क्योंकि वह माल या तो सल्तनत का अपना ज़ाती होगा तो इसके क़बूल में हर्ज नहीं और अगर ***माले फइ*** (वह माल जो कुफ़्फ़ार से बग़ैर जंग के हासिल हो) ***ख़राजी*** (ज़मीन का टैक्स) या उश्र का हो तो उसमें भी शरअन फ़क़ीर का हक़ है, यूँही अहले इल्म भी सलातीने वक़्त का दिया हुआ माल अपने तसर्रुफ़ में ला सकते हैं।

हज़रत अली ﵁ फ़रमाते हैं कि – "***जो शख़्स इस्लाम में बख़ुशी दाख़िल हुआ फिर क़ुरआन करीम की तिलावत ऐलानिया करता हो वह मुसलमान "बैतुलमाल" (सरकारी ख़ज़ाना या वह माल जिसमें आम लोगों का हिस्सा हो और जिससे मुस्तहिक़ मुसलमानों की मदद की जाए) से सालाना दो सौ दिरहम लेने का हक़दार है। एक रिवायत में दो सौ दीनार आए हैं, अगर दुनिया में उसे नहीं मिलेगा तो आख़िरत में मिलेगा।***"

और जब मामला यह है तो फ़क़ीर और आलिम ऐसे माल के हक़दार हैं तो वह अपना हिस्सा ले सकते हैं बाज़ ने यह भी कहा है कि अगर किसी का माल ग़सब के माल से इस तरह घुल मिल चुका हो कि तमीज़ मुश्किल हो या किसी सुल्तान के पास ग़सब का ऐसा माल हो जिसके मालिक और मालिक की औलाद मर चुकी हो और वापस करने की कोई सूरत न हो तो सुल्तान ऐसे माल से इसी सूरत में छुटकारा पा सकता है कि उसे सदक़ा कर दे, तो इस सूरत में यह नहीं कि अल्लाह उस सुल्तान को सदक़े का हुक्म दे और फ़क़ीर को उसके क़बूल करने से मना करे या फ़क़ीर को वह माल क़बूल करने की

इजाज़त न दे हालांकि वह माल उसके लिए हराम हो तो ऐसे माल में फ़क़ीर को लेना या न लेने का इख़्तियार है।

मगर ऐसे मसाइल में उल्मा का तमाम जुज़्यात बयान किए बग़ैर और पूरी तफ़्सील बयान किए बग़ैर फ़तवा देना जाइज़ नहीं। अगर हम इस किताब में यहाँ इसी मसअले की तफ़्सील बयान करना शुरू कर दें तो हम अपने मक़्सद से दूर जा पड़ेंगे, जो शख़्स इसकी पूरी तफ़्सीलात मालूम करने का ख़्वाहिशमन्द हो वह हमारी किताब "***इहयाउल उलूम***" के बाब हलाल व हराम को पढ़े, उसमें इस मसअले की पूरी वज़ाहत मिल जाएगी।

सवाल: अमीर लोग और ताजिरों के तोहफ़े लेने का क्या हुक्म है? फ़ुक़रा और उल्मा को उनके हदिये व तोहफ़े क़बूल करने जाइज़ हैं या नहीं? बावजूद कि ये लोग माल के हासिल करने में बेएहतियाती और उसकी ***हिल्लत*** व ***हुरमत*** में यानी हराम व हलाल होने में पूरे ग़ौर व एहतियात से काम नहीं लेते और इसी तरह आम दोस्तों के तोहफ़े लेना दुरुस्त है या नहीं?

जवाब: जब किसी इन्सान का ज़ाहिर हाल ठीक हो और उसमें कोई शरई ख़राबी मालूम न हो तो ऐसे शख़्स का अतिया या सदक़ा क़बूल करने में कोई हर्ज नहीं और इस तरह की खोद कुरेद शरई तौर पर लाज़िम नहीं कि ज़माना बिगड़ चुका है और लोगों में हलाल व हराम का फ़र्क़ उठ गया है इसलिए यह सदक़ा भी हराम माल से हो क्योंकि ऐसा ख़्याल सदक़ा देने वालों के हक़ में बदगुमानी है जो दुरुस्त नहीं बल्कि मुसलमानों के मुताल्लिक़ नेक गुमान रखने का हुक्म है। फिर तोहफ़े और सदक़े के बारे में उसूली चीज़ यह है कि हर चीज़ के मुताल्लिक़ एक शरई हुक्म और ज़ाहिर शरीअत का फ़ैसला होता है दूसरा तक़वे का हुक्म और उसका हक़।

शरई हुक्म तो यह है कि हर वह सदक़ा या अतिया क़बूल कर लिया जाए जिसका ज़ाहिर दुरुस्त हो और उसके बाद कोई तफ़्तीश न की जाए, हाँ अगर इस माल के हराम या ग़सब होने का यक़ीन हो तो फिर लेना जाइज़ नहीं।

मगर तक़वा यह है कि पूरी तहक़ीक़ व तफ़्तीश के बग़ैर क़तअन कोई चीज़ न ली जाए अगर इसमें ज़र्रा बराबर भी शुबेह का गुमान हो तो रद्द कर दिया जाए इसलिए कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﵁ से रिवायत है कि-

"एक दफ़ा आपका ग़ुलाम आपकी ख़िदमत में दूध लाया, आपने उसे पी लिया, ग़ुलाम ने अर्ज़ की मैं पहले जब भी कोई चीज़ आप के पास लाता था तो आप उसके मुताल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया करते थे लेकिन इस दूध के मुताल्लिक़ आप ने कुछ नहीं पूछा तो इस वक़्त आपने पूछा यह दूध कैसा है? ग़ुलाम ने जवाब दिया कि मैंने जहालत के ज़माने में मन्तर फूँका था जिसके मुआवज़े में यह दूध आज उन्होंने दिया है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ﷺ ने यह सुन कर अपने हलक़ में उंगली डाली और उसे क़ै कर दिया, क़ै के बाद आपने निहायत आजिज़ी से दरबारे इलाही में अर्ज़ किया कि ऐ मेरे मौला जिस पर मैं क़ादिर था वह मैंने कर दिया, इसका थोड़ा बहुत हिस्सा जो रगों में रह गया है वह माफ़ फ़रमा दे।

यह रिवायत इस बात की मज़बूत दलील है कि तक़्वे पर नज़र रखने वाले हर शख़्स के लिए ज़रूरी है कि ग़िज़ा की पूरी तरह छान बीन करे और फिर उसे इस्तेमाल में लाए।

सवाल: तुम्हारे इस बयान से साबित होता है कि तक़्वा हुक्मे शरह के ख़िलाफ़ है?

जवाब: जानना चाहिए कि ज़ाहिर शरह की बुनियाद आसानी व सहूलियत पर है इसलिए नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया कि:-"***मैं आसान और हर बातिल से जुदा मज़हब देकर भेजा गया हूँ।***" (मुसनद इमाम अहमद)

तक़्वा सख़्ती और एहतियात पर टिका है यानी कहा गया है कि मुत्तक़ी का मामला दूसरी हज़ारों पेचीदगियों (मुश्किलों) में फँसने से ज़्यादा सख़्त है, फिर यह ख़्याल न करो कि तक़्वा शरह से कोई अलग चीज़ है बल्कि असल में दोनों एक हैं लेकिन शरह के हुक्म दो हैं, एक जवाज़ यानी जाइज़ का हुक्म दूसरा एहतियात व अफ़ज़लियत का हुक्म। जाइज़ हुक्म को ***हुक्मे शरह*** और अफ़ज़ल व ज़्यादा एहतियात के हुक्म का नाम ***तक़्वा*** है, तो ये दोनों हुक्म एक दूसरे से जुदा होने के बावजूद अस्ल में एक हैं, इस फ़र्क़ को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लें।

सवाल: जब हर शय की तफ़्तीश और छानबीन ज़रूरी है तो इस ज़माने में किसी चीज़ को इस्तेमाल करना तक़्वे वाले के लिए मुश्किल और फ़साद से ख़ाली नहीं हालांकि ज़रूरी चीज़ों का इस्तेमाल इसके लिए लाज़िमी है?

जवाब: जानना चाहिए कि तक़वा एक सख़्त रास्ता है जो शख़्स इस पर चलने का इरादा करे उसके लिए ज़रूरी है कि अपने नफ़्स और दिल को मुसीबतें और मुश्किलें बर्दाश्त करने पर मज़बूत करे, वर्ना तक़वे का रास्ता तय नहीं कर सकता। इसी दिक़्क़त की वजह से बहुत से तक़वे वाले और पहले के सूफ़िया शहरों व आबादियों को छोड़ कर लेबनान के पहाड़ पर चले गए और सारी उम्र घास व जंगली फल वग़ैरा खा कर गुज़ारी जिनमें किसी क़िस्म का शुबह नहीं। तो तक़वे का मरतबा हासिल करने की हिम्मत जिसमें हो उसे चाहिए कि मुश्किलों, मुसीबतों और हादसों को बर्दाश्त करे और आफ़तों के पेश आने पर सब्र करे और उन ऊपर ज़िक्र हुए लोगों का तरीक़ा इख़्तियार करे लेकिन जो लोगों में रहने और वही चीज़ें इस्तेमाल करने पर मजबूर हो जो वो इस्तेमाल करते हैं तो उसे चाहिए कि इतना थोड़ा इस्तेमाल करे जितना सख़्त ज़रूरत के वक़्त मुर्दार इस्तेमाल करने की इजाज़त है सिर्फ़ इतना ही इस्तेमाल करे जिससे अल्लाह तआला की इबादत क़ायम रख सके इस क़द्र इस्तेमाल पर उसे माज़ूर (मजबूर) समझा जाएगा और यह अन्दाज़ा उसके लिए नुक़सानदेह नहीं होगा अगरचे उसमें किसी क़िस्म का शुबह हो, इसलिए हज़रत हसन बसरी عليه رحمة الله ने फ़रमाया कि- "*चूंकि बाज़ारों में हराम व हलाल में तमीज़ उठ चुकी है इसलिए सिर्फ़ ज़रूरी रोज़ी को ही काफ़ी समझना लाज़िम है।*"

मैंने सुना है कि हज़रत वहब इब्ने वर्द عليه رحمة الله एक एक या दो दो या तीन तीन दिन भूखे रहते थे फिर एक रोटी लेते थे और दुआ करते थे- "*ऐ अल्लाह तू जानता है कि मैं बग़ैर ग़िज़ा के तेरी इबादत की ताक़त नहीं रखता और मुझे कमज़ोरी का डर है अगर ऐसा न होता तो मैं यह भी न खाता। ऐ अल्लाह अगर इस रोटी में कोई ख़राबी या हराम हो तो मुझे इस खाने पर न पकड़ना।*" इस दुआ के बाद आप रोटी को पानी में भिगोते थे और खाते थे।

मैं कहता हूँ कि ये दो तरीक़े तक़वे वाले लोगों में सबसे बुलन्द तक़वे वालों के हैं लेकिन जो लोग इन से तक़वे में कम हैं उनके लिए जहाँ तक हो सके एहतियात ज़रूरी है, जितनी उनमें एहतियात होगी उसी क़द्र उन्हें तक़वे से हिस्सा मिलेगा। मशहूर मिसाल है कि तुम जितनी मेहनत व कोशिश करोगे उतनी ही तुम्हें अपनी मुराद में कामयाबी होगी और अल्लाह तआला किसी

नेक अमल करने वाले के अमल को बर्बाद नहीं करता और लोग जो कुछ भी करते है वह सब कुछ जानता है।

सवाल: ऊपर ज़िक्र हुआ बयान तो हराम के मुताल्लिक़ था, ज़रा हलाल के मुताल्लिक़ भी बयान कर दीजिए कि किस हद तक उसका इस्तेमाल फ़ुज़ूल में दाख़िल नहीं और किस हद पर जा कर फ़ुज़ूल के हुक्म में दाख़िल हो जाता है जिसकी वजह से बन्दे को क़ियामत के दिन हिसाब के लिए रोका जाएगा और हिसाब लिया जाएगा और हलाल के इस्तेमाल की मुस्तहब और मुनासिब मिक़दार क्या है जो फ़ुज़ूल में दाख़िल नहीं और जिसका हिसाब वग़ैरा नहीं होगा?

जवाब: मुबाह **तीन** क़िस्म के हैं:- **पहला** वह जो शानो शौकत, बड़ाई और नुमाइश के तौर पर इस्तेमाल किया जाए ऐसे इस्तेमाल का ज़रूर क़ियामत के दिन हिसाब होगा और उसके हिसाब के लिए ज़रूर वहाँ रोका जाएगा और इस्तेमाल करने वाले को मलामत और शर्म दिलाई जाएगी, ऐसा इस्तेमाल ख़ुदा तआला को नापसन्द और बुरा है और ऐसा इस्तेमाल बन्दे के दिल में बुराई पैदा करता है यानी शानो शौकत और बड़ाई वग़ैरा जो अज़ाबे दोज़ख़ का सबब हैं और इस तरह के इस्तेमाल का इरादा गुनाह है क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में एक जगह फ़रमाया:-

أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِينَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

فِي الْاَمْوٰلِ وَالْاَوْلٰدِ ؕ

(कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराईश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना।)

(सूरह अलहदीद, आयत- 20)

और हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का इरशाद है:- “***जो बड़ाई, फ़ख़्र और नुमाइश की ग़र्ज़ से हलाल की तलब करेगा क़ियामत के दिन ख़ुदा को अपने ऊपर ग़ज़बनाक पाएगा।***” (शोअबुल ईमान)

तो ऊपर गुज़री आयत व हदीस में ऐसे मक़सद व इरादे पर ***वईद*** (अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ करने पर सज़ा) सुनाई गई हैं।

मुबाह की दूसरी क़िस्म वह जिसका इस्तेमाल सिर्फ़ शहवत के तौर पर हो, ऐसा इस्तेमाल भी बुरा है जिस पर रोज़े क़ियामत ***हब्स*** (हब्स यह है कि हिसाब लेने के लिए जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया जाएगा) व हिसाब होगा क्योंकि रब तआला का फ़रमान है:-

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝٨

(फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुमसे नेमतों की पुरसिश होगी।)

(सूरह तकासुर आयत 8)

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया:- "***और हलाल के इस्तेमाल पर रोज़े क़ियामत हिसाब होगा।***" (मुसनदुल फ़िरदौस)

तीसरी क़िस्म हलाल व मुबाह की यह है कि मजबूरन ज़रूरत के लायक़ चीज़ इस्तेमाल की जाए, जिससे रब तआला की इबादत बजा लाई जा सके, इतना अन्दाज़ा ही बेहतर, मुस्तहब और मुनासिब है, इतने इस्तेमाल पर कोई हिसाब व अज़ाब नहीं होगा बल्कि इतना थोड़ा इस्तेमाल सवाब व तारीफ़ की वजह है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ

(ऐसों को उनकी कमाई से हिस्सा है।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-203)

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया:- "***जिसने सवाल से बचने के लिए और अपने पड़ोसी की मदद के लिए और अपने घर वालों की परवरिश के लिए हलाल दुनिया तलब की, क़ियामत के रोज़ उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहा होगा।***" (शोअबुल ईमान)

ऐसे बन्दों की यह शान व फ़ज़ीलत इसलिए है कि उसका इरादा नेक और ख़ालिस अल्लाह के लिए होता है।

सवाल: मुबाह और हलाल चीज़ों का इस्तेमाल किन शर्तों से नेकी और ख़ैर बन जाता है?

जवाब: मुबाह और हलाल चीज़ों का इस्तेमाल दो शर्तों से नेकी और ख़ैर बनता है-

1. ***एक हाल***
2. ***दूसरा क़स्द व इरादा।***

हाल से मुराद यह है कि हलाल व मुबाह उज़्र व मजबूरी के वक़्त इस्तेमाल किया जाए, उज़्र व मजबूरी की सूरत यह है कि ऐसा मौक़ा हो कि अगर हलाल को इस्तेमाल में न लाया जाए तो शरअन गिरफ़्त हो वह इस तरह कि मुबाह चीज़ के इस्तेमाल न करने की वजह से बदन इतना कमज़ोर हो जाए कि फ़र्ज़, सुन्नत या नफ़्ल अदा न कर सके, तो ऐसी सूरत में मुबाह का इस्तेमाल मुबाह के तर्क कर देने से अफ़ज़ल है अगरचे दुनिया के मुबाह को इस्तेमाल में न लाना बेहतर और अफ़ज़ल है मगर उज़्र की सूरत में इस्तेमाल ही बेहतर व अफ़ज़ल है।

क़स्द व इरादे से मुराद यह है कि हलाल के इस्तेमाल का मक़सद आख़िरत के सफ़र का तोशा तैयार करना और ख़ुदा की इबादत के लिये क़ुव्वत व सलाहियत हासिल करना हो, इस तरह कि इस्तेमाल के वक़्त दिल में यह बात लाए कि अगर मेरा मक़सद ख़ुदा तआला की इबादत न होता तो मैं इसको इस्तेमाल न करता, यह इसके इस्तेमाल की दूसरी वजह है तो जिस मुबाह के इस्तेमाल में ये दोनों अम्र पाये जायेंगे ऐसा इस्तेमाल मुस्तहब, नेकी और ख़ैर शुमार होगा और अगर किसी मक़ाम पर उज़्र या मजबूरी की हालत तो हो मगर ऊपर गुज़रा इरादा न हो यहाँ इरादा तो है मगर उज़्र की हालत न हो तो वहाँ मुबाह का इस्तेमाल नेकी या मुस्तहब में शुमार न होगा।

फिर इस नेकी और बेहतरी का दर्जा हासिल करने और उस पर जमे रहने के लिए नज़र और नेक इरादे की ज़रूरत है यानी जब भी हलाल या मुबाह चीज़ को इस्तेमाल में लाने लगे तो यह इरादा कर ले कि मैं इबादत के लिये ताक़त हासिल करने की ग़र्ज़ से इसको इस्तेमाल करने लगा हूँ, अगर कहीं ख़ुदा न ख़्वास्ता इस इरादे में भूल हो जाए तो याद आने पर कर ले हमारे शैख़ ने फ़रमाया है कि यहाँ तीन उमूर हो गए जिनका ऐतबार करना ज़रूरी है, दो तो इस इस्तेमाल को नेकी में दाख़िल करने के लिए यानी इरादा और उज़्र

की हालत और तीसरा हमेशा उस इरादे को इस्तेक़ामत के लिए लिहाज़ में रखना। इस बात को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लो।

सवाल: हलाल का वह इस्तेमाल जो शोहरत की ग़र्ज़ से हो गुनाह या अज़ाब की वजह है या नहीं? और उज़्र की हालत में मुबाह का इस्तेमाल फ़र्ज़ या ज़रूरी है या नहीं?

जवाब: उज़्र की हालत में मुबाह का इस्तेमाल अफ़ज़ल, ख़ैर और मुस्तहब है, फ़र्ज़ और वाजिब नहीं और सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिश की ग़र्ज़ से जो इस्तेमाल हो वह बुरा और नापसन्दीदा है और उससे मुमानअत ख़बरदार करने और बेहतरी के तौर पर है। यह गुनाह या अज़ाब की वजह नहीं, हाँ रोज़े क़ियामत इसके हिसाब के लिए बन्दे को रोका जाएगा और उसे मलामत की जाएगी और शर्म दिलाई जाएगी।

सवाल: ये हब्स व हिसाब क्या चीज़ें हैं जिनका बन्दे को सामना करना पड़ेगा?

जवाब: हिसाब यह है कि क़ियामत के दिन तुमसे पूछा जाएगा कि तुमने यह शय किस तरह हासिल की और उसे कहाँ ख़र्च किया और किस नीयत से ख़र्च किया? और ***हब्स*** यह है कि हिसाब लेने के लिए जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया जाएगा और हब्स मैदाने महशर में होगा जब तमाम मख़लूक़ पर वहशत छाई होगी और लोग तंगी और प्यास की हालत में खड़े होंगे और यह बहुत बड़ी आज़माइश का वक़्त होगा।

सवाल: जब अल्लाह तआला ने हलाल के इस्तेमाल की इजाज़त दी है तो मलामत और शर्म दिलाना क्यूँ होगा?

जवाब: यह मलामत और शर्म दिलाना तर्के अदब की वजह से होगा, जैसे वह शख़्स जो बादशाह के दस्तरख़्वान पर बैठे और अदब न करे तो उसे मलामत की जाती है और शर्म दिलाई जाती है अगरचे वह खाना उसके लिए मुबाह व जाइज़ होता है। मुख़्तसर यह कि अल्लाह तआला ने बन्दे को इबादत और बन्दगी के लिए पैदा फ़रमाया है इसलिए बन्दे पर लाज़िम है कि हर ऐतबार से उसका बन्दा इताअत गुज़ार होकर रहे और हर काम को ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ करे, अगर वह इबादत या उसकी रज़ा का ख़्याल न रखे बल्कि अपनी शहवत की पैरवी करे और अपने रब की इबादत या इताअत से

मुँह फेरने वाला हो जाए हांलाकि उसमें रब की बन्दगी व इबादत की ताक़त भी मौजूद हो, किसी उज़्र की वजह से रुकावट भी न हो और यह दुनिया है भी इबादत और इताअत की जगह तो जो शख़्स इन तमाम चीज़ों के होते हुए शहवत की पैरवी करे वह ज़रूर अपने मालिक व मौला की तरफ़ से मलामत व शर्म दिलाने के लायक़ है। *(वल्लाहु वलिय्युल इस्मति वत्तौफ़ीक़ु बिफ़ज़्लिही)*

फ़स्ल

तो ऐ अज़ीज़! तुझ पर लाज़िम है कि इस लम्बी और सख़्त घाटी को पार करने में पूरी तरह कोशिश करे क्योंकि इसे पार करना ज़्यादा मुश्किल है और मेहनत चाहता है और यह घाटी फ़ितनों से भरी हुई है क्योंकि जो भी हक़ के रास्ते से हट कर हलाक व तबाह हुआ है वह दुनिया या मख़लूक़ से मेलजोल या नफ़्स या शैतान की वजह से ही हुआ है और हमने अपनी किताब "***इहयाउल उलूम***" और "***किताबुल असरार***" और "***अल क़ुरबतु इलल लाह***" वग़ैरा में इस क़िस्म के वाक़िआत व मसाइल तहरीर किए हैं जो इस घाटी को पार करने में काफ़ी मदद देते हैं।

और इस किताब "***मिन्हाजुल आबिदीन***" में मेरा मक़सद यह था कि अल्लाह तआला मुझे नफ़्स के इलाज के राज़ और मेरी इस्लाह और मेरे ज़रिए इस्लाह के तरीक़ों से आगाह कर दे इसलिए मैंने इस किताब में मुख़्तसर मगर तमाम मअना के जामेअ यानी मुकम्मल नुकतों को ही लिया है, जो शख़्स भी इनमें ग़ौर करेगा वह इन्हें काफ़ी पाएगा और ये नफ़ीस नुकते *इन्शा अल्लाह तआला* ज़रूर उसे हक़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करेंगे। --- और यह फ़स्ल दुनिया, मख़लूक़, नफ़्स और शैतान से छुटकारा दिलाने वाले नुकतों के साथ ख़ास है, तो ऐ अज़ीज़! दुनिया से तअल्लुक़ रखने वाली चीज़ों से बचना और ज़ोहद इख़्तियार करना तुझ पर लाज़िम और ज़रूरी है क्योंकि तू तीन हाल से ख़ाली नहीं।

1. **या तो तू साहिबे बसीरत और अक़्ल वाला है** तो तेरे लिए यही काफ़ी है कि दुनिया अल्लाह तआला की दुश्मन है और अल्लाह तेरा दोस्त और ह़बीब है और यह कि दुनिया तेरी अक़्ल को बखेरने वाली है हांलाकि अक़्ल ही इन्सान का अस्ल जौहर है।

2. **और अगर तू हिम्मत वाला और इबादत में कोशिश करने वाले लोगों में से है** तो तेरे लिए यही काफ़ी है कि दुनिया अपनी नहूसत में इस हद तक पहुँच चुकी है कि वह इबादत के इरादे से बाज़ रखती है और इसकी फ़िक्र तुझे बन्दगी व आमाले ख़ैर से रोकती है, जब दुनिया की फ़िक्र रुकावट है तो ख़ुद दुनिया किस क़द्र रुकावट की वजह होगी।
3. **और अगर तू ग़फ़लत वालों में से है** यानी तुझमें हक़ को देखने की नज़र ही नहीं और न तुझमें नेकी करने की हिम्मत, इस सूरत में तेरे लिए यही काफ़ी है कि तुझे एक दिन इस दुनिया से जुदा होना पड़ेगा या यह दुनिया तुझसे अचानक जुदा हो जाएगी, जैसा कि हज़रत हसन बसरी ﵀ ने फ़रमाया है- "*अगर दुनिया तेरे लिए बाक़ी रहेगी तो तू उसके लिए बाक़ी नहीं रहेगा, इसलिए तलबे दुनिया में क्या फ़ायदा या अपनी अज़ीज़ उम्र इसकी तलब में बर्बाद करने से क्या हासिल होगा।*

   एक अरबी शायर ने क्या ख़ूब फ़रमाया है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *"मान लिया कि दुनिया बहुत ज़्यादा मिक़दार में तेरी तरफ़ खिंची चली आ रही है लेकिन क्या यह एक दिन फ़ना नहीं होगी।*
- *तुझे इस ऐश से हक़ीक़ी उम्मीद क्या हो सकती है जो चन्द दिन के बाद फ़ना हो जाएगी और जिसका आराम अनक़रीब तकलीफ़ और रंज में तब्दील हो जाएगा।*
- *इस दुनिया की मिसाल बिल्कुल साये जैसी है जिसमें तू ज़रा आराम करता है और फिर वह साया वहाँ से ख़त्म हो जाता है।*

तो अक़्लमन्द को हरगिज़ मुनासिब नहीं कि इस दुनिया के धोखे में आए, एक अरबी शायर ने बिल्कुल दुरुस्त कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- दुनिया ख़्वाब की तरह है या ज़ाएल और फ़ना हो जाने वाले साये की तरह और बेशक अक़्लमन्द ऐसी नापाएदार और फ़ानी शय से धोखा नहीं खाता।

इब्लीस के शर से बचना ज़रूरी है

बाक़ी रहा शैतान, तो उसके शर से अपने आपको महफ़ूज़ रखने के लिए सिर्फ़ यही दलील काफ़ी है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ को फ़रमाया-

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

(और तुम अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वसवसों से और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वह मेरे पास आये।)

(सूरह मोमिनीन आयत 97, 98)

तो हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ जो सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा आलिम, सबसे ज़्यादा अक़्लमन्द और अल्लाह तआला के यहाँ सबसे ज़्यादा बलन्द रुतबे वाले हैं वह इस चीज़ के मोहताज हैं कि शैतान से पनाह माँगें। तो तू जो जहालत, ऐबों और ग़फ़लत का मजमूआ है शैतान से पनाह माँगने का मोहताज नहीं? ज़रूर मोहताज है और सख़्त मोहताज है।

लोगों से मेलजोल की मज़म्मत (बुराई)

लेकिन लोगों से मेलजोल के मामले में जो ख़राबी है तो इसके सुबूत को सिर्फ़ यही काफ़ी है कि अगर तू उनसे मेलजोल करेगा और उसकी ख़्वाहिशात की पैरवी करेगा तो गुनाहगार हो जाएगा और अपनी आख़िरत के मामले को ख़राब कर देगा और अगर उसकी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करेगा तो उनकी तकलीफ़ें सहने और उनकी ज़्यादतियों से रंजीदा होगा और तेरी दुनिया की ज़िन्दगी ख़राब हो जाएगी फिर उनसे यह भी उम्मीद है कि तेरे जानी दुश्मन हो जायें और इस तरह तू उनके फ़ितने में मुब्तला हो जाए और अगर तू उनसे मेलजोल अच्छा रखेगा तो वो तेरी तारीफ़ व ताज़ीम करेंगे और कोई शक नहीं कि तू ***उज्ब*** और ख़ुदपसन्दी में मुब्तला हो जाएगा और अगर वह तेरी बुराई करेंगे और तुझे कमतर व ज़लील ख़्याल करेंगे तो इस सूरत में तू कभी ग़मनाक होगा और कभी नाजाइज़ ग़ुस्सा करेगा और यह तारीफ़ व तौहीन दोनों हलाक करने वाली आफ़तें हैं।

फिर तुम ज़रा यह तो याद करो कि जब तुम्हें क़ब्र में दफ़्न हुए सिर्फ़ तीन दिन होंगे तो यह लोग तुम्हें बिल्कुल भुला देंगे, वहाँ सिर्फ़ ख़ुदा तआला की ज़ात मौजूद होगी तो क्या यह वाज़ेह नुक़सान नहीं कि तू ऐसे लोगों के साथ

बैठ कर अपने अज़ीज़ वक़्त को बर्बाद कर दे जिनसे न तुझे फ़ना की उम्मीद है और न जिनके साथ ज़्यादा देर तुझे रहना है और अपने प्यारे की इबादत व पैरवी को छोड़ दे जिसकी तरफ़ आख़िर तुझे पलटना है मरने के बाद सिर्फ़ वही हमेशा के लिए तेरा साथ देगा और हक़ीक़त में सब का वही हाजत रवा (यानी ज़रूरतें पूरी करने वाला) है। हर बात में सिर्फ़ उसी पर भरोसा होना चाहिए और हर हाल में हर सख़्ती व मुश्किल के वक़्त उसी की तरफ़ रुख़ करना चाहिए वह अकेला है कोई उसका शरीक नहीं।

ऐ अज़ीज़ इन्सान! मेरी इन बातों और नसीहतों को ग़ौर से सुन, शायद तुझे अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी से हिदायत की राह दिखा दे और अल्लाह तआला ही हिदायत का मालिक है।

नफ़्स की मज़म्मत (बुराई) का बयान

नफ़्स के बुरा होने का यही सुबूत काफ़ी है कि जो तू दिन रात इसके हालात, इसके बुरे इरादे और इसके बहुत से काम या बातें ख़िलाफ़े शरह देख रहा है। यह नफ़्स शहवत के वक़्त हैवान जैसे काम करता है, ग़ुस्से के वक़्त दरिन्दा बन जाता है और मुसीबत व तकलीफ़ के वक़्त छोटे बच्चे की तरह रोना धोना करता है और आराम के वक़्त फ़िरऔन बन जाता है, जब भूखा होता है तो पागल हो जाता है और जब सेर होता है तो सरकश बन जाता है, अगर तू इसे सेर करे तो सरकशी करता है और अगर भूखा रखे तो चीख़ता है और बेसब्री दिखाता है। यह बिल्कुल इसी तरह जैसा शायर ने कहा है:

- *यह नफ़्स मन्हूस गधे की तरह है जो सेरी की हालत में ख़रमस्ती (गधे की जैसी मस्ती) में आकर लोगों को तबाह करता है और जब भूखा होता है तो हाँकता है।*

बाज़ स़ालेहीन (नेक लोगों) ने बिल्कुल सही फ़रमाया है कि इस ख़बीस नफ़्स का कमीनापन और जहालत का यह आलम है कि जब किसी गुनाह का इरादा करे या शहवत पर उठ खड़ा हो तो तू इसे रोकने की कोशिश करे या ख़ुदा, रसूल, तमाम नबी, कलामे पाक और नेक लोगों का वास्ते पेश करे या इसके सामने मौत, क़ब्र, क़ियामत, जन्नत और दोज़ख़ तक पेश करे तब भी गुनाह से बाज़ नहीं आएगा और अपनी शहवत को तर्क नहीं करेगा फिर

अगर एक रोटी खा कर दूसरी से इसे रोके ताकि यह ठहरे और खाने की हिर्स को छोड़ दे तो तुझे उसकी कमीनगी और जहालत का अन्दाज़ा हो जाएगा।

इसलिए ऐ अज़ीज़! इससे ग़फ़लत न करना क्योंकि इसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया है जो इसकी हक़ीक़त सबसे बेहतर जानता है:-

إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ

(बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है।)

(सूरह यूसुफ़, आयत-53)

हज़रत अहमद इब्ने अरक़म बल्ख़ी عليه الرحمة से मन्क़ूल है कि- *"एक दफ़ा मेरे नफ़्स ने जिहाद में शरीक होने पर मुझे मजबूर किया। मैंने दिल में कहा सुब्हानल्लाह! क़ुरआन में तो आया है कि नफ़्स बुराई की तरग़ीब देता है और मेरा नफ़्स मुझे नेक काम की तरग़ीब दे ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता बल्कि इसका अस्ल मक़सद यह है कि लोगों से मेल जोल करके तन्हाई और गोशानशीनी की वहशत को दूर करे और लोगों से ख़लत मलत होकर राहत हासिल करे और उनके सामने अपनी गोशानशीनी और बुज़ुर्गी का चर्चा करके अपनी ताज़ीम और अपना ऐहतराम और इकराम कराए। चुनांचे मैंने नफ़्स को जवाब दिया कि मैं तुझे हरगिज़ आबादी में नहीं ले जाऊँगा और किसी जान पहचान की जगह तुझे नहीं ले जाऊँगा तो वह इस जवाब पर राज़ी हो गया लेकिन मुझे फिर गुमान हुआ कि यह अपने ख़िलाफ़ बात पर कैसे रज़ामन्द हो सकता है और मैंने अपने दिल में कहा कि ख़ुदा का कलाम सच्चा है (कि नफ़्स बुराई की तरफ़ ही जाता है) तो मैंने उससे कहा कि मैं दुश्मन से जिहाद व क़ताल करने को तैयार हूँ लेकिन मेरा अव्वलीन दुश्मन तू है इसलिए पहले मुक़ाबला तुझसे होगा। मेरे इस जवाब पर भी नफ़्स ने बुरा न माना, मैंने चन्द चीज़ें और शुमार कीं जो इसके ख़िलाफ़ थीं वह इस पर भी ग़ुस्सा न हुआ, मैं दिल में हैरान हुआ और दरबारे ख़ुदावन्दी में दुआ करने लगा कि ऐ बारी तआला! मैं नफ़्स को बहरहाल झूठा समझता हूँ और तुझे सच्चा, मुझे इसकी अस्ल हक़ीक़त बता, तो कश्फ़ की हालत में मैंने सुना कि नफ़्स कह रहा था 'ऐ अहमद! तू मुझे हर रोज़ शहवतों से रोक कर क़त्ल करता है और हर बात में मेरी मुख़ालफ़त करके तू मुझे तंग और परेशान*

करता है और मेरे इस क़त्ल और तकलीफ़ का किसी को पता नहीं होता अगर तू जिहाद में शिरकत करेगा तो सिर्फ़ एक बार ही मुझे क़त्ल करेगा बाद में मुझे तुझसे हमेशा के लिए निजात मिल जाएगी और मैं लोगों में इस बात का चर्चा करूँगा कि अहमद ने शहादत का दर्जा पाया इस तरह मेरा ही चर्चा होगा और मुझे ही शर्फ़ हासिल होगा।" हज़रत अहमद इब्ने अरक़म बल्ख़ी عليه الرحمة फ़रमाते हैं कि इसके इस जवाब से मैंने पुख़्ता इरादा कर लिया कि हरगिज़ जिहाद में शिरकत नहीं करूँगा। चुनांचे मैंने इस साल जिहाद में शिरकत न की।

ऐ अज़ीज़! ज़रा ग़ौर कर कि नफ़्स कितना धोखेबाज़ और मक्कार है कि मौत के बाद भी तेरे अच्छे आमाल को रिया के ज़रिए बर्बाद करता है, एक अरबी शायर ने बहुत ही अच्छा कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *अपने नफ़्स की अय्यारियों से बच और उसकी धोखेबाज़ियों से बेख़ौफ़ न हो क्योंकि नफ़्स की ख़बासत सत्तर शैतानों की ख़बासत से भी ज़्यादा है।*

इसलिए इस धोखेबाज़, गुनाहों में मुब्तला करने वाले नफ़्स ख़बीस से चौकन्ना रह और हर वक़्त और हर हाल में अपने नफ़्स को उसकी मुख़ालफ़त पर मज़बूत रख इन्शाअल्लाह तआला तू इसकी आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा और तुझे दुरुस्त रास्ता नसीब होगा फिर ऐ अज़ीज़! तुझ पर लाज़िम है कि इसे शहवातों और गुनाहों से बाज़ रखने के लिए तक़्वे की लगाम दे इस लगाम के सिवा इसका कोई इलाज नहीं।

ऐ अज़ीज़! तू जान मैं नफ़्स को बाज़ रखने का एक नफ़ीस क़ायदा बयान करता हूँ वह यह है कि इबादत दो क़िस्म की है एक "***मामूरात***" (यानी जिनके करने का हुक्म है) दूसरे "***मनहिय्यात***" (यानी वह चीज़ें जिनसे बचना ज़रूरी है) और मामूरात के बजा लाने और मनहिय्यात से बचने का नाम तक़्वा है।

लेकिन मनहिय्यात से बचना बन्दे के लिए हर हाल में अफ़ज़ल, ज़्यादा हिफ़ाज़त का सबब, ज़्यादा बेहतर व आला है, मामूरात के मुक़ाबले में इस पहलू की अहमियत ज़्यादा है। इसीलिए मुजाहिदा व रियाज़त के मुब्तदी शुरू

शुरू में मामूरात पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं वह दिन को रोज़े से होते हैं और रात को नवाफ़िल में खड़े रहते हैं।

और कामिल व अहले बसीरत (निगाह वाले) हज़रात मनहिय्यात (शरीअत में मना किए गये कामों) से बचने की ज़्यादा पाबन्दी करते हैं चुनांचे वह अपने दिलों को ग़ैरुल्लाह के ख़्याल से महफूज रखने की कोशिश करते है, अपने शिकमों को ज़रूरत से ज़्यादा ख़ुराक से महफ़ूज़ रखते हैं, अपनी ज़बानों को लग़वियात और बेहूदा गुफ़्तगू से बचाते हैं और अपनी नज़रों को बे मतलब चीज़ों से बचाते हैं इसीलिए आबिद सानी ने हज़रत सय्यदना यूनुस आबिद ﷺ को कहा (और उन आबिदों की तादाद सात थी) कि ऐ यूनुस! बाज़ लोग वो हैं जिनको सब से ज़्यादा प्यार नमाज़ों से है, चुनांचे वह नमाज़ों पर किसी और अमल को तरजीह नहीं देते, वह इबादत के सुतून हैं, वो पूरी तरह सिद्क़ व तवक्कुल पर क़ायम रहते हैं और हर वक़्त दरबारे ख़ुदावन्दी में गिरया व ज़ारी व दुआ में मशग़ूल रहते हैं और बाज़ वो हैं जिन्हें सबसे ज़्यादा रोज़े से मुहब्बत है चुनांचे वो रोज़े पर किसी और अमल को तरजीह नहीं देते और बाज़ वो हैं जो सदक़े को सबसे ज़्यादा अज़ीज़ ख़्याल करते हैं, ऐ यूनुस! मैं तुझे इन तीनों नमाज़, रोज़ा और सदक़ा की तफ़्सील बताता हूँ कि इनसे क्या मुराद है? **नमाज़** से मुराद यह है कि तू हमेशा तकलीफ़ें और मुसीबतें पेश आने पर सब्र की नमाज़ अदा करता रहे और हमेशा ख़ुदा के अहकाम को बजा लाने में क़ायम रहे। **रोज़े** से मुराद यह है कि तू हर बुराई से अपने आपको रोके रखे। **सदक़े** से मुराद यह है कि तेरी तरफ़ से किसी को तकलीफ़ न पहुँचे क्योंकि तू इससे आला चीज़ का सदक़ा नहीं कर सकता, किसी को तकलीफ़ न देना ही बहुत बड़ा सदक़ा है और सबसे ज़्यादा पाकीज़ा काम है।

ऊपर गुज़रे बयान से जब तुझ पर रौशन हो गया कि मनहिय्यात से बचना ज़्यादा अहम और उसकी रियायत और कोशिश ज़्यादा बेहतर व मुनासिब है तो अगर तुझे दोनों क़िस्म की इबादतें यानी अवामिर (यानी जिन कामों का करने के लिए कहा गया है) को बजा लाना और मनहिय्यात से बचाव, हासिल हो जायें और तू दोनों का पाबन्द हो जाए, तो तू इबादत के मामले में कमाल तक पहुँच गया और तेरी मुराद हासिल हो गई और आफ़तों

से महफ़ूज़ हो गया और अस्ल ग़नीमत तेरे हाथ आ गई। और अगर दोनों किस्म की इबादतें तुझे हासिल न हो सकें तो चाहिए कि तू गुनाहों से बचना इख़्तियार करे। यह करने से तू माफ़ी और गुनाह से महफ़ूज़ रहेगा और अगर तू यह इख़्तियर न करे और गुनाहों व बुराइयों से न बचे तो सारी रात नवाफ़िल अदा करने, दिन को रोज़ा रखने और दूसरे मुस्तहब कामों में मशगूल होने से तुझको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा, तेरी यह रात को जागने की मशक़्क़तें बेकार होंगी क्योंकि गुनाहों और बुराइयों से न बचने की वजह से तेरी नेकियाँ साथ साथ बर्बाद होती जायेंगी और दिन को रोज़ा रख कर जब तू ग़ीबत, झूठ और दूसरी बेहूदा गुफ़्तगू से परहेज़ न करेगा तो तेरे इस रोज़े का क्या फ़ायदा पहुँचेगा।

हज़रत इब्ने अब्बास ﵁ से किसी ने पूछा कि इन दो आदमियों में अफ़ज़ल कौन है एक वह जो नेकियाँ भी ज़्यादा करे और गुनाह भी ज़्यादा करे, दूसरा वह जो नेकियाँ भी कम करे और गुनाह भी कम करे? आपने जवाब दिया दोनों बराबर हैं। हमने यह जो कहा है कि ज़्यादा नेकियाँ करने के बजाये गुनाहों से बचना ज़्यादा ज़रूरी व अहम है तो इसकी मिसाल मरीज़ की सी है कि उसके इलाज के दो पहलू हैं एक पहलू मरीज़ को दवा देना दूसरा पहलू मरीज़ का नुक़सानदेह चीज़ों से परहेज़ करना, तो अगर दोनों चीज़ें मरीज़ के लिए हासिल हो जायें तो बीमार जल्द सेहतमन्द और तन्दरुस्त हो जाएगा और अगर दोनों पहलू मौजूद न हों तो परहेज़ बेहतर व अफ़ज़ल है और ऐसी दवा क़तई कोई फ़ायदा नहीं देती जिसके साथ बदपरहेज़ी को भी जारी रखा जाए लेकिन दवा न हो मगर परहेज़ हो तो यह ज़रूर फ़ायदेमन्द है, नबी-ए-करीम ﷺ का इरशाद है कि- "***हर बीमारी की अस्ल परहेज़ है***।" हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ के इरशाद का मतलब यह है कि परहेज़ बजाये ख़ुद एक बेहतरीन इलाज है इसके होते हुए किसी और इलाज की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसीलिए सुना गया है कि हिन्दुस्तान के लोगों के नज़दीक बीमार का सबसे बड़ा बेहतर इलाज बीमार का खाने पीने और काम काज से परहेज़ कराना है, इनके यहाँ सिर्फ़ परहेज़ से ही अक्सर मरीज़ सेहत पा जाता है।

हमारे इस ऊपर गुज़रे बयान से तुझ पर रौशन और साफ़ हो गया कि तक़वा ही अस्ल जौहर है और आख़िरत की निजात का ज़रिया है, इन्सानों में

मुत्तक़ी लोगों का दर्जा ही सबसे ऊँचा और बुलन्द है, इसलिए ऐ अज़ीज़ तुझ पर लाज़िम है कि अपने अन्दर तक़्वा पैदा करने के लिए पूरी कोशिश और जद्दोजहद करे। (*वल्लाहु सुब्हानहू वलिय्युत्तौफ़ीक़ि बिरह़मह*)

फ़स्ल

फिर तुझ पर चार आज़ा (जिस्म के हिस्सों) की देखभाल भी लाज़िम व ज़रूरी है क्योंकि जिस्म में यही चार उज़्व बड़े और अस्ल हैं।

आँख की हिफ़ाज़त

सबसे पहले आँख, इसकी देखभाल इसलिए ज़रूरी और लाज़मी है कि दीन व दुनिया के कामों का दारोमदार दिल पर है और दिल की ख़राबी और इसमें वसवसे वग़ैरा अक्सर आँख ही की वजह से पैदा होते हैं इसलिए हज़रत अली ﵁ ने फ़रमाया है कि- ***"जो शख़्स अपनी आँख की हिफ़ाज़त नहीं करता उसका दिल बेक़ीमत होता है यानी उसमें कोई कमाल व नूर वग़ैरा नहीं आ सकता।"***

ज़बान की हिफ़ाज़त

दूसरा उज़्व ज़बान, इसकी हिफ़ाजत और ध्यान रखना इसलिए ज़रूरी और अहम है कि तुम्हारी इबादत और ताअत का नफ़ा, फल और सिला इसी की हिफ़ाज़त से वाबस्ता है और इबादत में वसवसे इबादत का ख़राब होना भी अक्सर इसी ज़बान की वजह से होता है क्योंकि बना और सजा कर बातचीत और ग़ीबत वग़ैरा अगर एक लफ़्ज़ ही हो तेरी साल की बल्कि पन्द्रह साल की इबादत व रियाज़त को तबाह व बर्बाद कर देती है इसीलिए बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि- ***"सबसे ज़्यादा क़ैद व बन्द में रखना जिस चीज़ को ज़रूरी है वह ज़बान है*** (शोबुल ईमान)

रिवायत है कि सात आबिदों में से एक आबिद ने कहा ऐ यूनुस ﵇ जो लोग पूरी मेहनत और कोशिश से इबादत में मशगूल रहते हैं उनको इबादत पर जो इस्तिक़ामत (मज़बूती) नसीब होती है वह ज़बान की पूरी तरह निगहदाश्त का नतीजा है। फिर उस आबिद ने कहा ज़बान की हिफ़ाज़त से

पसन्दीदा तेरे नज़दीक कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए क्योंकि दिल को हर क़िस्म के वसवसों से पाक रखने का ज़रिया यही है।

फिर तू ज़रा ज़िन्दगी के वह क़ीमती लम्हे तो याद कर जो तूने बेहूदा बातों में बर्बाद किए हैं अगर तू उन अज़ीज़ लम्हात में तौबा व इस्तिग़फ़ार करता तो शायद किसी नेक घड़ी में तेरी तौबा क़बूल हो जाती और तेरे गुनाह बख़्श दिए जाते और तुझे नफ़ा होता, या उन लम्हात में "*ला इलाहा इल्लल्लाह*" का विर्द ही करता रहता तो तुझे बेहिसाब अज्र व सवाब मिलता, या उन लम्हों में यह दुआ करता '*ऐ अल्लाह मैं तुझसे आफ़ियत और सलामती का सवाल करता हूँ*' --- शायद किसी मुबारक घड़ी में यह अल्फ़ाज़ तेरे मुँह से निकलते और तेरी दुआ क़बूल हो जाती, इस तरह तू दुनिया व आख़िरत की आफ़तों से छुटकारा पा जाता, तो क्या बेहूदा बातों में ज़िन्दगी के लम्हात का बर्बाद करना साफ़ तौर पर नुक़सान की बात नहीं? इन वक़्तों में अगर ज़बान को औराद व वज़ाइफ़ में अपने आपको मशग़ूल रखता तो बड़े बड़े फ़ायदे हासिल होते। और अपने नफ़्स और वक़्त को फ़ुज़ूल कामों में न लगा, ताकि रोज़े क़ियामत तुझे शर्मिन्दगी न हो और मैदाने महशर में हिसाब के लिए ज़्यादा देर न रुकना पड़े, इस मज़मून को एक शायर ने अच्छे पैराए में अदा किया जिसका तर्जुमा पेश है:

- *जब तू ज़बान से किसी बातिल बात कहने का इरादा करे तो इस बातिल से ज़बान को रोक और उसकी जगह ख़ुदा की तस्बीह कर।*

पेट की हिफ़ाज़त

तीसरा उज़्व जिसकी हिफ़ाज़त और निगहदाश्त ज़रूरी है वह पेट है, उसकी निगहदाश्त इस वास्ते ज़रूरी है कि बन्दा दुनिया में इबादत के लिए आया है और ग़िज़ा अमल के लिए बीज व पानी की तरह है जैसा बीज और जिस हिसाब से उसे पानी दिया जाएगा वैसा ही बीज उगेगा और जब बीज ख़राब हो तो उससे खेती अच्छी नहीं होगी बल्कि ऐसे बीज से यह ख़तरा है कि शायद वह तेरी ज़मीन ही हमेशा के लिए ख़राब कर दे और आइन्दा खेती के क़ाबिल न रहे इसीलिए हज़रत मारूफ़ कर्ख़ी ﷺ ने फ़रमाया है कि- "*जब*

तू रोज़े रखे तो इस बात का ख़्याल रख कि किस चीज़ से इफ़्तार करता है और किसके पास इफ़्तार करता है और किसके खाने से इफ़्तार करता है क्योंकि बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मे से दिल की कैफ़ियत ख़राब हो जाती है और फिर सारी उम्र वह अपनी असली हालत पर नहीं आ सकता और बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मा पेट में जाने से एक साल तक नमाज़े तहज्जुद नमाज़ अदा करने से इन्सान महरूम हो जाता है और बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि सिर्फ़ एक दफ़ा बदनज़र देखने से बन्दा एक अर्से तक तिलावते क़ुरआने पाक से महरूम हो जाता है, और बन्दा कभी ऐसा लुक़्मा खा लेता है कि जिसके सबब एक साल तक इबादत से महरूम हो जाता है।"

इसलिए ऐ अज़ीज़! अगर तू इस्लाहे क़ल्ब और इबादत की तौफ़ीक़ चाहता है तो तुझ पर लाज़िम है कि अपनी ग़िज़ा के बारे में सख़्त एहतियात करे, यह अस्ल ग़िज़ा के मुताल्लिक़ हुक्म है, फिर इसमें *दर्जा-ए-इस्तेहबाब* (पसन्दीदा दर्जे) पर भी निगाह रखना ज़रूरी है वर्ना तू ग़िज़ा उठाने वाला टट्टू हो जाएगा और ज़माने का ग़ुलाम हो जाएगा क्योंकि हमें यक़ीन है बल्कि हमने कई बार मुशाहिदा किया है कि पेट भर कर खाने से इबादत क़तअन नहीं हो सकती और अगर नफ़्स का मजबूर करके और हीले बहाने से इबादत की तरफ़ लगाया भी जाए तो ऐसी इबादत में बिल्कुल लज़्ज़त व मिठास नहीं होती। इसीलिए बाज़ नेक लोगों ने फ़रमाया है कि अगर तू पेट भर के खाने का आदी है तो इबादत की मिठास की उम्मीद न रख और दिल में बग़ैर इबादत नूर कैसे आ सकता है या उस इबादत से भी कैसे नूर आ सकता है जो बेलज़्ज़त और बेज़ौक़ है।

इसीलिए हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम عليه ने फ़रमाया है कि- *"मैं लेबनान के पहाड़ में बहुत से अल्लाह वालों की सोहबत में रहा हूँ उनमें से हर एक यही वसीयत किया करता था कि ऐ इब्राहीम! जब तू अहले दुनिया के पास जाए तो उनको चार बातों की नसीहत करना*

1. *जो पेट भर कर खाएगा उसे इबादत में लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।*
2. *जो ज़्यादा सोएगा उसकी उम्र में बरकत नहीं होगी।*
3. *जो लोगों की ख़ुशनूदी चाहे वह अल्लाह की ख़ुशनूदी से नाउम्मीद हो जाए।*

4. जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल बातें ज़्यादा करेगा वह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

हज़रत सहल इब्ने तुसतरी अब्दुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि- "*तमाम नेकियाँ इन्हीं चार बातों में बन्द हैं-*

1. *शिकम को ख़ाली रखना*
2. *ख़ामोशी*
3. *मख़लूक़ से किनाराकशी*
4. *शब बेदारी*

बाज़ सालेहीन ने फ़रमाया है कि-"***भूख हमारा सरमाया है।***" इस क़ौल के मअना यह हैं कि हमें जो फ़राग़त, सलामती, इबादत, हलावत (मिठास), इल्म और अमले नाफ़ेअ (फ़ायदा देने वाला अमल) नसीब होता है वह सब भूख के सबब और सब्र की बरकत से होता है।

दिल की हिफ़ाज़त

चौथा उज़्व जिसकी हिफ़ाज़त और निगहदाश्त बहुत ज़रूरी है वह दिल है क्योंकि यह तमाम जिस्म का अस्ल है, चुनांचे अगर तेरा दिल ख़राब हो तो तेरे तमाम आज़ा ख़राब होंगे और अगर तू इसकी इस्लाह कर ले तो बाक़ी सब आज़ा की इस्लाह हो जाएगी क्योंकि दिल दरख़्त के तने की तरह है और बाक़ी आज़ा शाख़ों की तरह और शाख़ों की इस्लाह या ख़राबी दरख़्त के तने पर मौक़ूफ़ है तो अगर तेरी आँख, ज़बान, पेट वग़ैरा दुरुस्त हों तो इसका मतलब यह है कि तेरा दिल दुरुस्त है और इसकी इस्लाह हो चुकी है और अगर आँख, ज़बान, पेट वग़ैरा गुनाहों की तरफ़ राग़िब हों तो समझ ले कि तेरा दिल ख़राब है।

फिर तुझे यक़ीन करना चाहिए कि दिल का फ़साद और संगीन है इसलिए क़ल्ब की इस्लाह की तरफ़ पूरी तवज्जोह दे ताकि तमाम आज़ा की इस्लाह हो जाए और ताकि तू रूहानी राहत महसूस करे।

फिर क़ल्ब की इस्लाह निहायत मुश्किल और दुशवार है क्योंकि इसकी ख़राबी ख़तरे व वसवसे हैं जिनका पैदा होना बन्दे के इख़्तियार में नहीं, इसलिए इसकी इस्लाह में पूरी होशयारी, बेदारी और बहुत ज़्यादा जद्दोजहद की ज़रूरत है, ऐसी ही वजहों की वजह से मुजाहिदा करने वाले

रियाज़त इस्लाहे क़ल्ब को ज़्यादा दुशवार ख़्याल करते हैं और निगाह वाले इसकी इस्लाह का ज़्यादा एहतेमाम करते हैं, चुनांचे हज़रत बायज़ीद बिस्तामी رحمة الله عليه से मन्कूल है कि आपने फ़रमाया कि- *"मैंने अपने दिल, ज़बान और नफ़्स की इस्लाह पर दस दस बरस ख़र्च किए, उनमें दिल की इस्लाह मुझे सबसे ज़्यादा मुश्किल मालूम हुई।"*

फिर क़ल्ब की इस्लाह के सिलसिले में चार चीज़ें जो हम पीछे ज़िक्र कर आयें हैं यानी **लम्बी उम्मीदें, आमाल में जल्दबाज़ी, हसद** और **तकब्बुर** से बचना और किनाराकश होना लाज़िम है।

इस मक़ाम पर इन चार चीज़ों से बचने को ख़ास हमने इसलिए कहा है कि अगरचे आम लोग भी इनमें मुब्तला हैं मगर इबादत गुज़ार लोग ख़ास तौर पर इनमें मुब्तला हैं इसलिए ये चार चीज़ें ज़्यादा बुरी हैं, ऐसा आम तौर पर होता है कि इबादत करने वाला किसी लम्बी उम्मीद में मुब्तला रहता है और वह उसे एक अच्छी नीयत ख़्याल कर रहा होता है और आख़िर में वह उसकी वजह से अमल में सुस्ती और काहिली में गिरफ़्तार हो जाता है और कभी ऐसा होता है कि वह बलन्द रुतबा हासिल करने में जल्दबाज़ी से काम लेता है और जल्द हासिल न होने की वजह से हमेशा के लिए उसका दिल सर्द पड़ जाता है और बाज़ दफ़ा किसी बुज़ुर्ग से दुआ कराता है जल्द क़बूल न होने की वजह से भी ग़मगीन होता है या बाज़ दफ़ा किसी के हक़ में बद दुआ करता है और बाद में पशेमान रहता है और बाज़ दफ़ा अपने हम उम्रों से माल औलाद वग़ैरा पर हसद करता है और बाज़ वक़्त हसद की आफ़त में गिरफ़्तार हो कर ऐसे ऐसे बुरे काम कर गुज़रता है जिनके करने की एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर आदमी को भी जुरअत नहीं होती, इसी बिना पर हज़रत सुफ़यान सौरी رحمة الله عليه ने फ़रमाया है कि- *"मुझे अपनी जान के मुताल्लिक़ सबसे ज़्यादा ख़तरा उल्मा और इबादतगुज़ार लोगों से है।"* लोगों ने आपकी इस बात का बुरा माना तो आपने जवाब दिया कि यह बात मैंने अपनी तरफ़ से नहीं कही बल्कि यह हज़रत इब्राहीम नख़ई رحمة الله عليه ने फ़रमाया है।

हज़रत अता رحمة الله عليه से मरवी है कि एक दफ़ा हज़रत सुफ़यान सौरी رحمة الله عليه ने मुझे कहा कि- *"इबादतगुज़ार लोगों से ख़तरे में रहो और उनकी तरह मुझ से भी ख़तरे में रहो क्योंकि बाज़ वक़्त मैं एक अनार के मुताल्लिक़ कहूँगा यह*

मीठा है, दूसरा कहेगा कि नहीं यह तुर्श है, इसी मामूली बात से हमारा तकरार बढ़ जाएगा और कोई बईद नहीं कि एक दूसरे के क़त्ल तक की नौबत पहुँच जाए।"

हज़रत मालिक इब्ने दीनार ﷺ फ़रमाते हैं कि- *"मैं इबादतगुज़ार की गवाही दूसरे के हक़ में तो क़ुबूल करने को तैयार हूँ लेकिन उनके अपने अन्दर एक दूसरे के मुताल्लिक़ उनकी शहादत क़ुबूल करने को तैयार नहीं क्योंकि मैंने उन्हें एक दूसरे के मुताल्लिक़ हसद से भरा हुआ पाया है।"*

मज़कूर है कि हज़रत फ़ुज़ैल ﷺ ने अपने लड़के को फ़रमाया कि मुझे इबादतगुज़ार और रस्मी सूफ़ियों से दूर कोई मकान ख़रीद दे क्योंकि मुझे इस क़ौम में रहने से क्या फ़ायदा जो मेरी लग़ज़िश देख कर उसका चर्चा करें और मुझे आराम में देख कर हसद करें।

तुमने भी देखा होगा कि ख़ुश्क आबिद और रस्मी सूफ़ी तकब्बुर से पेश आते हैं, दूसरे को हक़ीर ख़्याल करते हैं, तकब्बुर की वजह से अपने रुख़सारे को टेढ़ा रखते हैं और लोगों से मुँह बिसूरे रखते हैं गोया कि दो रकअत नमाज़ पढ़ कर लोगों पर एहसान करते हैं या शायद उन्हें दोज़ख़ से निजात और जन्नत के दाख़िले का परवाना मिल चुका है, या उनको यक़ीन हो चुका है कि हम ही नेकबख़्त हैं बाक़ी सब बदबख़्त व शक़ी हैं फिर वो उन तमाम बुराइयों के होते हुए लिबास आजिज़ और मुतवाज़ेअ लोगों जैसा पहने हैं जैसे सूफ़ (मोटा ऊनी कपड़ा जो सूफ़ी लोग पहनते हैं) वग़ैरा और बनावट से ख़ामोशी व कमज़ोरी का इज़हार करते हैं हांलाकि ऐसे लिबास और ख़ामोशी वग़ैरा का तकब्बुर और ग़ुरूर से क्या तअल्लुक़ बल्कि ये चीज़ें तो तकब्बुर व ग़ुरूर के उलट हैं लेकिन इन अन्धों को समझ नहीं।

मज़कूर है कि एक दफ़ा फ़रक़द संजी, हज़रत हसन बसरी ﷺ के पास आया वह उस वक़्त एक दुरवेशाना गुदड़ी पहने हुए था और हज़रत हसन बसरी ﷺ नया जोड़ा पहने हुए थे। वह बार बार हज़रत हसन बसरी ﷺ के कपड़ों को देखता था और हाथ लगाता था। आपने फ़रमाया तू बार बार मेरे लिबास को क्या देखता है सुन ले मेरा लिबास अहले जन्नत का लिबास है और तेरा लिबास दोज़ख़ियों का लिबास है। हज़रत हसन बसरी ﷺ ने फ़रमाया मुझ तक बात पहुँची है कि अक्सर अहले दोज़ख़ गुदड़ी पहने होंगे

फिर हज़रत हसन बसरी ﷺ ने फ़रमाया कि इन लोगों ने कपड़ों में तो ज़ोहद इख़्तियार किया है मगर सीनों में तकब्बुर और ग़ुरूर को जगह दे रखी है, क़सम ख़ुदा की ख़ुशपोश (अच्छे कपड़े पहने हुए) मगर साफ़ दिल वाले लोग रस्मी गुदड़ी पहनने वालों से हज़ार दर्जा बेहतर हैं। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री ﷺ के नीचे लिखे अशआर भी इसी मज़मून की तरफ़ इशारा करते हैं जिनका तर्जुमा पेश है:

- *बाज़ लोग सूफ़ियों का सा लिबास पहनते हैं और अज़राहे जहालत दूसरों को हिक़ारत की नज़र से देखते हैं और बाज़ लोग तो फ़ुज़ूल ही सूफ़ का लिबास पहनते हैं।*
- *ऐसे जाहिल सूफ़ी दूसरों के सामने अपने आपको कमज़ोर व नातवाँ ज़ाहिर करते हैं और दूसरों को तकब्बुर से देखते हैं हांलाकि आजिज़ी करने वालों में तकब्बुर नहीं होता।*
- *ऐसे सूफ़ी यह लिबास सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से पहनते हैं ताकि अवाम इन्हें अमीन और नेक ख़्याल करें मगर दरहक़ीक़त इनकी इस सूफ़ियाई का मक़सद नेकी और शराफ़त नहीं होता।*
- *दुरवेशाना लिबास से इन्हें ख़ुशनूदिए ख़ुदा मक़सूद नहीं होती बल्कि वो इस तरह अवाम को धोखादेही और उनके साथ ख़यानत की राह हमवार करते हैं।*

तो ऐ अज़ीज़! तू इन चार हलाक करने वाली आफ़तों से बच ख़ास कर तकब्बुर से इसलिए कि दूसरी तीन आफ़तें तो ऐसी आफ़तें हैं जिनसे तू सिर्फ़ गुनाह और नाफ़रमानी में मुब्तला होगा मगर तकब्बुर ऐसा ख़तरनाक मर्ज़ है जो बाज़ वक़्त इन्सान को कुफ्र व गुमराही तक पहुँचा देता है।

तकब्बुर के सिलसिले में तो इब्लीस और उसकी गुमराही को हरगिज़ न भूल उसकी गुमराही का आग़ाज़ इसी से हुआ कि उसने तकब्बुर किया और ख़ुदा के हुक्म का इन्कार किया, और अल्लाह ही की बारगाह बेकस पनाह में दुआ करनी चाहिए कि हमें अपने फ़ज़्ल से हर गुमराही और लग़ज़िश से बचाए।

फ़स्ल

ख़ुलासा यह है कि जब तू अक़्ल व समझदारी से देखेगा तो तुझे मालूम हो जाएगा कि दुनिया फ़ानी है और इसमें मशग़ूल होने का नुक़सान, नफ़ा से

ज़्यादा और दुनिया में पेश आने वाली परेशानियाँ उसकी राहत से ज़्यादा हैं, जैसे दुनिया के हासिल करने के लिए जिस्म का थका डालना और दिल का दुनिया के कामों में गिरफ़्तार रहना और फिर आख़िरत में हर हर चीज़ का हिसाब और ऐसा दर्दनाक अज़ाब जिसके बर्दाश्त की तुझमें हरगिज़ ताक़त नहीं। तो जब तुझे अच्छी तरह मालूम हो गया कि दुनिया और सामाने दुनिया में घाटा ही घाटा है तो तुझ पर लाज़िम है कि इसकी चीज़ें सिर्फ़ इसी क़द्र इस्तेमाल में लाए जिससे ख़ुदा तआला की इबादत बजा लाता रहे और नेमतें और लज़्ज़तें हासिल करने के लिए हमेशा रहने वाली जन्नत का इन्तज़ार करता रहे जहाँ अल्लाह पाक का क़ुर्ब भी हासिल होगा।

और जब तुझे यह भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि मख़लूक़ में वफ़ादारी नहीं और इसकी तरफ़ से मदद के बजाए तकलीफ़ और दुख ज़्यादा पहुँचता है तो तुझे चाहिए कि लोगों से सिवाए सख़्त ज़रूरत के मेलजोल न करे, नेक बातों में उनसे नफ़ा हासिल कर मगर नुक़सानदेह चीज़ों में उनसे बच और उस ख़ुदा से दोस्ती लगा जिसकी दोस्ती हर क़िस्म के ख़सारे से पाक है और उस ख़ुदा की ताअत कर जिसकी ताअत से तुझे पशेमानी नहीं होगी और इस किताबे मुक़द्दस को ***मश्अले राह*** बना ले और इसके अहकाम को पूरी पाबन्दी से बजा लाता रह, ऐसा करने से ज़रूर वह तेरी हर हाल में दस्तगीरी करेगा, तुझ पर तेरे वहम व गुमान से ज़्यादा इनाम व इकराम की बारिश करेगा और दुनिया व आख़िरत में हर मुश्किल वक़्त में तेरी फ़रयादरसी करेगा, जैसा कि नबी-ए-करीम रऊफ़ो रहीम ﷺ का इरशादे गिरामी है- ***"हमेशा ख़ुदा ही की याद में डूबा रह ताकि जिधर तू मुतवज्जेह हो उधर ही तुझे उसके जलवे नज़र आयें।"*** (तिर्मिज़ी शरीफ़)

और जब कि तुझे यह भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि शैतान ख़बीस है और तेरी अदावत पर हर वक़्त कमर कसे हुए है तो इस लईन कुत्ते से बचने के लिए हर वक़्त ख़ुदा से पनाह माँगता रह और किसी वक़्त भी उसकी मक्कारियों और अय्यारियों से ग़ाफ़िल न हो बल्कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र से इस कुत्ते को भगा दे, जब तू मर्दाने ख़ुदा जैसा इरादा व यक़ीन अपने अन्दर पैदा कर लेगा तो बफ़ज़्ले ख़ुदा उस लईन के दाँव तुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे।

जैसा कि रब तआला ने ख़ुद फ़रमाया है:-

إِنَّهُۥ لَيْسَ لَهُۥ سُلْطَٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

(बेशक शैतान का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।)

(सूरह अन नहल, आयत-99)

अबू हाज़िम رحمة الله عليه ने बिल्कुल दुरुस्त फ़रमाया है कि दुनिया की हक़ीक़त तो यह है कि जो गुज़र गई वह गोया एक ख़्वाब था और जो बाक़ी है वह नफ़्सानी ख़्वाहिशात में ख़र्च हो रही है और शैतान की हक़ीक़त यह है कि जब तक वह ख़ुदा का फ़रमाबरदार रहा तो उससे ख़ुदा का नफ़ा न हुआ और जब नाफ़रमान हुआ तो उसका कुछ बिगाड़ न सका।

और जब तूने जान लिया कि यह नफ़्स इन्तेहाई नादान है और नुक़सानदेह चीज़ों पर फ़रेफ़्ता है और तूने अक़्लमन्द और नतीजों पर नज़र रखने वाले उल्मा की तरह नफ़्स के हालात पर ग़ौर किया, इन लोगों की तरह ख़ातिर न की जो जाहिल हैं और सिर्फ़ ज़माना-ए-हाल यानी मौजूदा पर ही नज़र रखते हैं, इसके मर्ज़ों और ऐबों को नहीं देखते और ज़ोहद व तक़्वे की कड़वी दवा से भागते हैं, तो जब तूने नफ़्स को तक़्वे की लगाम दे दी इस तरह कि फ़ुज़ूल चीज़ों से उसे रोका जैसे फ़ुज़ूल कलाम, नाजाइज़ नज़र, ज़रूरत से ज़्यादा खाना और उसे उन क़वी चीज़ों से रोका जिनमें यह गिरफ़्तार है जैसे लम्बी उम्मीदें, जल्दबाज़ी, मुसलमान के साथ हसद, तकब्बुर और शहवत व हिर्स के तौर पर खाना और सिर्फ़ वही चीज़ें उसे दीं जो ज़रूरी हैं, बेकार बातों से उसे बचाया क्योंकि जब इन्सान ज़ोहद व तक़्वे की ज़िन्दगी इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआला अपने मक़बूल बन्दों की तरह इस इन्सान को भी अपनी रहमत अपने फ़ज़्ल से उसके ईमान को नुक़सान देने वाली चीज़ों से बचा लेता है, जब ख़ुदा ज़ोहद व तक़्वा इख़्तियार करने से इन्सान के कामों का ख़ुद कफ़ील बन जाता है तो फ़ुज़ूल और बेकार चीज़ों में मशग़ूल होने की क्या हाजत है।

बाज़ नेक लोगों ने फ़रमाया है कि- *"मेरे लिए तक़्वा आसान है क्योंकि मुझे किसी चीज़ के जाइज़ व नाजाइज़ होने में शक होता है तो मैं उसे तर्क कर*

देता हूँ क्योंकि मेरा नफ़्स मेरा फ़रमाबरदार हो चुका है और जो आदत मैं उसे डालूँ वह उसका आदी बन जाता है" और बेशक नफ़्स की हालत यही है जो एक अरबी शायर ने इस शेर में बयान की जिसका तर्जुमा पेश है:

- *नफ़्स को जब तू किसी तरफ़ राग़िब करे तो राग़िब हो जाता है और जब थोड़ी चीज़ पर किफ़ायत करने का उसे आदी बना ले तो वह उसी पर साबिर हो जाता है।*

एक और शख़्स ने कहा है कि- "*इस नफ़्स को तू जिस चीज़ का आदी बनाएगा वह उसी का आदी बन जाएगा।*"

एक शायर ने यूँ कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *मैंने दुनियावी लज़्ज़तों से अपने आपको रोका यहाँ तक कि वह मुझसे अलाहिदा हो गईं और मैंने नफ़्स को सब्र का आदी बनाया तो वह उसका आदी बन गया।*

- *नफ़्स वही हालत इख़्तियार करता है जिस पर इन्सान उसे रखे, अगर इसे ख़ूब ख़िलाया जाए तो इसकी शहवतें जोश में आती हैं और अगर ज़रूरत के मुताबिक़ इसे ग़िज़ा दी जाए तो इसी पर मुतमइन हो जाता है।*

तो जब तुझे वो तमाम बातें मालूम हो गईं और तू उनका आमिल भी बन गया जो हमने बयान की हैं तो बेशक तू ज़ाहिदों में शामिल हो गया और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जेह होने वाले लोगों में से हो गया।

ऐ अज़ीज़! तू जान ले जिस पर ज़ाहिद का लफ़्ज़ बोलना दुरुस्त हो गया गोया उसमें हज़ारों अच्छी सिफ़तें आ गईं। इसी तरह जब तू ज़ाहिदों में शमिल हो गया तो तू भी मख़लूक़ से किनाराकशी करने वाले और सबसे मुहब्बत का रिश्ता जोड़ने वाले और उसकी सच्ची ताअत करने वाले लोगों में शामिल हो गया और तू भी उन लोगों में से हो जाएगा जिनकी तारीफ़ एक अरबी शायर ने अपने शेर में यूँ की है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *एक क़ौम वह है जो दुनियावी ऐश व इशरत में मसरूफ़ है और एक वो ख़ालिस बन्दे हैं जो सबसे अलैहिदा हो कर सिर्फ़ अपने मौला के हो गए।*

- *ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें अपने आस्तान-ए-रज़ा पर जगह दे दी है और तमाम मख़लूक़ से उन्हें बेपरवाह कर दिया है।*

- *रात को सफ़ें बनाए अपने मौला के दरबार में इबादत की हालत में ख़ड़े रहते हैं और रब तआला की नज़रे इनायत उनकी निगहबानी करती रहती है।*
- *उन्हें उस वक़्त की मुबारक हो जब उनका मौला उन्हें अपने इनाम व इकराम से नवाज़ेगा।*

तो जब तू हमारे बयान किए हुए ज़ोहद व तक़वे के तमाम तक़ाज़ों पर पूरी तरह अमल करने लगेगा तो ख़ुदा की राह में नफ़्स से जिहाद करने वाले ज़ाहिदों और ख़ुदा के उन ख़ास बन्दों में से हो जाएगा जिनकी सिफ़त में रब तआला ने यूँ इरशाद फ़रमाया है:

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَکَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ

(बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं।)

(सूरह अलहजर, आयत-42)

अब तेरा उन परहेज़गार लोगों में नाम दर्ज हो जाएगा जिनको दोनों जहान की सआदत हासिल है और अब तू बहुत से मुक़र्रबीन फ़िरिश्तों से भी अफ़ज़ल हो जाएगा क्योंकि फ़िरिश्ते शहवतों और ख़बीस नफ़्स से पाक हैं इसलिए उनका गुनाहों से बचे रहना ज़्यादा कमाल नहीं

और जब तू हमारी बयान की गई हिदायात का आमिल हो गया तो तूने ये तीसरी लम्बी और मुश्किल घाटी भी पार कर ली और तू तमाम रुकावटों से आगे निकल कर अपने अस्ल मक़सद के क़रीब हो गया और जब ख़ुदा तआला की मदद शामिले हाल हो तो फिर कोई मुश्किल नहीं।

हम ख़ुदा ही से सवाल करते हैं वह बेहतर मुश्किलों को हल करने वाला है कि वह हमें और तुम्हें अपनी मदद और तौफ़ीक़ के क़िले में महफ़ूज़ कर ले क्योंकि वह हर मुश्किल में आसानी अता फ़रमाने के लिए काफ़ी है और हर मुश्किल में दर हक़ीक़त उसी से मदद तलब करनी चाहिए क्योंकि वही हर शय का ख़ालिक़ है और उसी के दस्ते क़ुदरत में हक़ीक़तन इख़्तियार है और वह सब कुछ कर सकता है। इस तीसरे बाब में जो ज़रूरी उमूर हमने बयान करने थे वो यही थे।

(वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अ़लीय्यिल अ़ज़ीम)

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय

इमाम साहब ने इस रुकावट के बयान में बताया कि नफ़्स की वजह से ही गुनाह हो रहे हैं और क़ियामत तक गुनाह होते रहेंगे क्योंकि यह हमेशा बुराई का हुक्म देता है तो नफ़्स पर क़ाबू करना बहुत ज़रूरी है और यह काम कैसे किया जा सकता है वह आपको इमाम साहब ने बताया अब अमल करना हमारा काम है और दोज़ख़ के अज़ाब से बचने के लिए अमल बहुत ज़रूरी है लिहाज़ा नफ़्स की इस्लाह के लिए इस बयान को बार बार पढ़िए।

मुहम्मद अहमद

चौथी घाटी
अक़ाबतुल अवारिज़
(दुशवारियों की घाटी)

फिर ऐ इबादत के तालिब! तुझे अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे इन दुशवारियों से बचना और उनके रास्ते बन्द करना भी तुझ पर लाज़िम और ज़रूरी है ताकि तुझे अस्ल मक़सूद से न रोकें और हम पहले बयान कर चुके हैं कि अवारिज़ (दुशवारियाँ) चार हैं।

पहला आरिज़ा (दुशवारी)
रिज़्क़ और नफ़्स का रिज़्क़ के मुताल्लिक़ सवाल

इस परेशानी से निजात की यह सूरत है कि तू रिज़्क़ के बारे में ख़ुदाए तआला पर तवक्कुल और भरोसा करे यह तवक्कुल दो वजह से लाज़िम व ज़रूरी है।

पहली वजह तो यह है कि तू इबादत के वास्ते फ़ारिग़ हो सके और जैसा कि उसका हक़ है नेक काम कर सके इसलिए जो शख़्स रिज़्क़ के बारे में ख़ुदा तआला पर भरोसा करने वाला न हो ज़रूर ख़ुदा तआला की इबादत छोड़ कर रोज़ी की तलाश और रिज़्क़ के हासिल करने के ज़रिए में मशग़ूल होगा, या तो ज़ाहिरी जिस्म से मशग़ूल होगा या ख़्यालात के तौर पर।

ज़ाहिरी जिस्म के ऐतबार से तो इस तरह, कि रोज़ी की तलाश में मारा मारा फिरेगा और बदन से मेहनत व मज़दूरी करके कमाने की कोशिश करेगा जैसे आम लोगों का हाल है। और ख़्यालात के तौर पर इस तरह, कि रिज़्क़ के तलाश करने की तदबीरें सोचेगा, तरह तरह के इरादे करेगा और अलग-अलग तरह के वसवसे उसके दिल में आयेंगे जैसे वो लोग जो रिज़्क़ की तदबीरें सोचने में गिरफ़्तार हैं।

और इबादत जैसे कि उसका हक़ है उस वक़्त हो सकती है जब दिल और बदन उसके लिए फ़ारिग़ हों और ऐसी फ़राग़त सिर्फ़ ***मुतवक्किलीन*** (ख़ुदा पर भरोसा करने वाले लोगों) को ही आ सकती है बल्कि मैं कहता हूँ

कि बहुत से कमज़ोर एतेक़ाद के लोग उस वक़्त तक मुतमइन नहीं होते जब तक उन्हें रिज़्क़ या कुछ रुपया पैसा हाथ न आ जाए तो ऐसे कमज़ोर एतेक़ाद के लोग दुनिया व आख़िरत में अपने अस्ल मक़सूद से रह जाते हैं। मैंने बहुत दफ़ा अपने शैख़ अबू मुहम्मद ﷺ से सुना कि आप फ़रमाया करते थे:- *"जहान में दो शख़्स ही कामयाब होते हैं, एक हिम्मत वाला आदमी और दूसरा मुतवक्किल (ख़ुदा पर भरोसा करने वाला)"*

मैं कहता हूँ कि यह एक जामेअ फ़िक़रा है क्योंकि हिम्मत वाला शख़्स अपने इरादे की क़ुव्वत और दिल की हिम्मत से जिस काम का इरादा करता है उसे कर गुज़रता है और कोई चीज़ उसके रास्ते में रुकावट नहीं बनती और मुतवक्किल (ख़ुदा पर भरोसा करने वाला) शख़्स इसलिए कामयाब है कि वह वादा-ए-ख़ुदावन्दी पर अपनी बसीरत और कामिल यक़ीन से भरोसा रखता है और हर काम करते वक़्त अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा होता है वह अपना इरादा पूरा करने में किसी इन्सान से नहीं डरता और न शैतानी वसवसे उसके लिए रुकावट बन सकते हैं इसलिए वह अपने मक़सद और मतलब में कामयाब हो जाता है।

लेकिन कमज़ोर तबीयत और कमज़ोर एतेक़ाद का आदमी हमेशा ख़ुदा तआला पर तवक्कुल और भरोसा करने में कशमकश में रहता है। और हमेशा उसके दिमाग़ में फ़ुतूर और तबीयत पर परेशानी मुसल्लत रहती है और बंधे हुए गधे या पिंजरे में बन्द परिन्दे की तरह इन्तेज़ार करता रहता है। इसी बुरे ख़्याल में उम्र गुज़र जाती है ऐसा शख़्स कोई बड़ा तारीफ़ के क़ाबिल और अच्छा काम नहीं कर सकता। अगर कहीं करने का इरादा भी करे तो उसमें नाकाम रहता है और उसे पूरा नहीं कर सकता। तुम देखते नहीं कि दुनियवी बुलन्द मरातिब हासिल करने वाले भी बड़ी पोस्ट और बुलन्द रुतबा उस वक़्त तक हासिल नहीं कर सकते जब तक अपनी जान, माल, और अपने घरवालों से तवज्जोह हटा कर अपने मक़सद की तरफ़ मुतवज्जेह न हों।

मसलन वो लोग जो किसी ज़मीन के बादशाह बनते हैं उन्हें इसके लिए जंग करनी पड़ती है, दुश्मनों को कुचलना पड़ता है यानी या तो दुश्मनों को हलाक करना पड़ता है या अपना फ़रमाबरदार बनाना पड़ता है तब जाकर वह बादशाह बनते हैं या इक़्तिदार हासिल करते हैं।

मन्क़ूल है कि जब हज़रत अमीर मुआविया ने जंगे सफ़्फ़ीन के दिन अपने और हज़रत अली की सफ़ों को एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़े देखा तो फ़रमाया 'जो बड़ी चीज़ का इरादा करता है उसे बड़ी बड़ी मुश्किलात पेश आती हैं'

और ताजिर लोग ख़ुश्की और तरी के निहायत ख़तरनाक सफ़र इख़्तियार करते हैं, अपनी जानों और अपने मालों को पूरब से पश्चिम और पश्चिम से पूरब तक ले जाते हैं और दिलों को नफ़ा या नुक़्सान पर क़ायम करते हैं तब जाकर बड़े मुनाफ़े, बहुत माल और बड़ी बड़ी आला क़ीमती चीज़ों के मालिक बनते हैं। बाक़ी रहा छोटे दर्जे के आम दुकानदार जो दिल के कमज़ोर और इरादे के कच्चे हैं वह इतनी हिम्मत नहीं करते कि दूर दराज़ का सफ़र इख़्तियार करें बल्कि हक़ीर माल के साथ ही दिल लगाए रखते हैं ऐसे लोग सारी उम्र मकान से दुकान तक और दुकान से मकान तक ही महदूद रहते हैं इसी बिना पर वह बादशाहों जैसे बड़े मरतबे पर नहीं पहुँच सकते और न ही वो बड़े ताजिरों की तरह काफ़ी सरमाया हासिल कर सकते हैं ऐसे आदमियों को शाम को अगर एक दरहम ही नफ़ा हो तो उसे काफ़ी समझते हैं। ये लोग इतने कम नफ़े पर इसलिए ख़ुश हो जाते हैं कि उनकी हिम्मत और नज़र की वुसअत ही इतनी होती है, यह दुनिया और दुनिया वालों का हाल है लेकिन वो मुक़द्दस लोग जो आख़िरत की निजात चाहते हैं उनका अस्ल सरमाया यही तवक्कुल और दिल को ख़ुदा के सिवा दूसरी चीज़ों से हटा लेना है।

जैसा कि हक़ है वैसा ही जब यह लोग तवक्कुल की सिफ़त अपने अन्दर हासिल कर लेते हैं और उस पर मज़बूती से क़ायम हो जाते हैं तो वह ख़ुदा की इबादत में हर चीज़ से फ़ारिग़ होकर मशग़ूल हो जाते हैं, मख़लूक़ से किनाराकशी को अपना दस्तूर बना लेते हैं, वीरान सहराओं में, पहाड़ों की चोटियों पर और ख़तरनाक घाटियों में ज़िन्दगी बसर करना उनके लिए आसान हो जाता है तो ऐसे लोग सबसे ताक़तवर और हिम्मत वाले हो जाते हैं दरहक़ीक़त यही हिम्मत वाले लोग दीन के सुतून, तमाम लोगों में इज़्ज़त वाले और ख़ुदाई ज़मीन के बादशाह कहलाने के हक़दार होते हैं क्योंकि यह लोग जहाँ चाहते हैं जाते हैं जहाँ चाहते हैं क़याम करते हैं और इल्म व अमल

की मुश्किल तरीन मन्ज़िलों को तय करते हैं कोई चीज़ इनके मक़सद में रुकावट नहीं हो सकती सारी ज़मीन इनके सामने होती है और माज़ी (यानी गुज़रा ज़माना), हाल (मौजूदा ज़माना) और मुस्तक़बिल (आने वाला ज़माना) इनके लिए एक होता है, नबी-ए-करीम ﷺ ने इरशाद में इसी तरफ़ इशारा फ़रमाया है चुनांचे आप ﷺ फ़रमाते हैं- ***"जो शख़्स यह चाहे कि सबसे ज़्यादा ताक़तवर हो जाए तो उसे चाहिए कि अल्लाह पर तवक्कुल करे और जो चाहे कि सबसे बाइज़्ज़त हो जाए तो उसे चाहिए कि तक़वा इख़्तियार करे और जो चाहे कि सब लोगों से ज़्यादा दौलतमन्द हो तो उसे चाहिए कि अपने पास मौजूद चीज़ से ज़्यादा उस चीज़ पर एतेमाद करे जो ख़ुदा के दस्ते क़ुदरत में है।"***

हज़रत सुलैमानुल ख़व्वास رحمة الله عليه ने फ़रमाया- *"अगर कोई शख़्स सच्ची नीयत से अल्लाह सुब्हानहु तआला पर तवक्कुल करे तो अमीर और ग़ैर अमीर सब उसके मोहताज हो जायेंगे और वह किसी का मोहताज नहीं होगा कि उसका मालिक तमाम ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों का मालिक है।"*

हज़रत इब्राहीम ख़व्वास رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि- *एक दफ़ा मैंने एक जंगल में एक ख़ूबसूरत ग़ुलाम देखा तो मैंने उससे कहा ऐ ग़ुलाम ! तू कहाँ जा रहा है? उसने जवाब दिया मक्का। मैंने कहा बग़ैर सफ़र ख़र्च और बग़ैर सवारी के? तो उसने कहा ऐ कमज़ोर एतेक़ाद वाले! वह ज़ात जो सात आसमानों और सात ज़मीनों की मुहाफ़िज़ है उसे ताक़त नहीं कि बग़ैर सफ़र के सामान और बग़ैर सवारी के मुझे मक्का पहुँचा दे? हज़रत इब्राहीम ख़व्वास رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि मैं जब मक्का-ए-मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुआ तो देखा कि वह ग़ुलाम तवाफ़ कर रहा है और ये अशआर पढ़ रहा है* जिनका तर्जुमा पेश है:-

- ऐ मेरी जान! हमेशा सैर व सियाहत में रह और ख़ुदा के सिवा किसी को अपना दोस्त न बना और ऐ नफ़्स! ग़मे आख़िरत में अपनी जान दे दे।

जब उसने मुझे देखा तो कहने लगा 'ऐ शैख़! तू अभी तक ***ज़ईफ़ुल एतेक़ादी*** (एतेक़ाद की कमज़ोरी) में गिरफ़्तार है'

हज़रत अबू मुतीअ رحمة الله عليه ने हज़रत हातिम असम رحمة الله عليه को फ़रमाया कि मैंने सुना है कि आप निहायत ख़ौफ़नाक जंगलों में बग़ैर ख़र्च के सिर्फ़ ख़ुदा

के तवक्कुल पर फिरते रहते हैं और तय करते रहते हैं। तो हज़रत हातिम असम ﷺ ने फ़रमाया कि *"मेरा सफ़र का सामान व ख़र्च चार चीज़ें हैं। हज़रत अबू मुतीअ ﷺ ने पूछा वो कौन सी हैं? तो हज़रत हातिम असम ﷺ ने जवाब दिया कि-*

1. *एक यह कि मुझे यक़ीन है कि दुनिया व आख़िरत ख़ुदा की मिल्क है*
2. *दूसरी यह कि तमाम मख़लूक़ ख़ुदा की मुतीअ व फ़रमाबरदार है*
3. *तीसरी यह कि रिज़्क़ और रिज़्क़ के तमाम असबाब ख़ुदा के हाथ में हैं*
4. *चौथी यह कि ख़ुदा की क़ज़ा तमाम दुनिया में नाफ़िज़ यानी जारी है।"*

एक शायर ने बहुत अच्छा कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *मैं देखता हूँ जाहिद लोग आराम व राहत में हैं, उनके दिल दुनिया की मुहब्बत से हट चुके हैं।*
- *जब मैं उन्हें देखता हूँ तो एक ऐसी क़ौम को देखता हूँ जो ज़मीन की बादशाह है उनकी निशानी सख़ावत है।*

तवक्कुल करने की दूसरी वजह यह है कि उसके तर्क करने में बड़ा ख़तरा और बहुत नुक़सान है, मैं कहता हूँ कि क्या ख़ुदा तआला ने इन्सान की पैदाइश के साथ उसके रिज़्क़ का ज़िक्र नहीं किया? यानी किया है चुनांचे इरशाद फ़रमायाः-

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ

(तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी।)

(सूरह रूम, आयत-40)

इससे मालूम हुआ कि जिस तरह वह ख़ालिक़ है राज़िक़ भी है, फिर सिर्फ़ इसी क़द्र पर किफ़ायत न की बल्कि साफ़ तौर पर रिज़्क़ का वादा फ़रमाया चुनांचे फ़रमाया:-

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ

(बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला है।)

(सूरह ज़ारियात, आयत-58)

फिर सिर्फ़ वायदा ही न किया बल्कि साफ़ तौर पर रिज़्क़ का ज़िम्मा अपने पर लिया और फ़रमाया

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

(और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे करम पर न हो।)

(सूरह हूद, आयत-6)

फिर सिर्फ़ ज़िम्मा लेने को ही काफ़ी नहीं रखा बल्कि उस पर क़सम खाई चुनांचे इरशाद फ़रमाया:-

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾

(तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक यह क़ुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो।)

(सूरह ज़ारियात, आयत-23)

फिर सिर्फ़ क़सम ही काफ़ी नहीं बल्कि निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में तवक्कुल का हुक्म दिया और तवक्कुल करने की तम्बीह फ़रमाई (यानी ख़बरदार किया), चुनांचे फ़रमाया:-

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ

(और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा।)

(सूरह फ़ुरक़ान, आयत-58)

दूसरी जगह फ़रमाया:-

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

(और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।)

(सूरह अलमाइदह, आयत-23)

तो जो शख़्स ख़ुदा के क़ौल पर ऐतबार न करे उसके वायदे को काफ़ी न समझे और उसके ज़िम्मा लेने पर मुतमइन न हो फिर उसके वादे, वईद और हुक्म की कोई परवाह न करे, तो ऐसे शख़्स के मन्हूस और बुरे होने में क्या शक हो सकता है और ऐसा शख़्स जिन तंगियों और परेशानियों में गिरफ़्तार

होता है वह किससे छुपी है, यह एक बहुत सख़्त बात है जिससे आम दुनिया ग़ाफ़िल है।

एक दफ़ा सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضي الله عنه से फ़रमाया कि- ***"ऐ इब्ने उमर तेरा उस वक़्त क्या हाल होगा जब तू ऐसी क़ौम में होगा जो कमज़ोर यक़ीन की वजह से क़हत (सूखा) के ख़ौफ़ से रिज़्क़ का ज़ख़ीरा बनाएगी।"***

हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि- *"लानत हो उस क़ौम पर जिसे ख़ुदा की क़समों पर भी ऐतबार न आया जब (आयत जिसका तर्जुमा है-तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम) नाज़िल हुई तो फ़िरिश्तों ने कहा हलाकत हो इब्ने आदम के लिए कि उसने रब को नाराज़ किया यहाँ तक कि उसने रिज़्क़ देने पर क़सम खाई।"*

हज़रत उवैस क़रनी رضي الله عنه ने फ़रमाया- *"कि अगर तू ख़ुदा की इतनी इबादत करे जितनी ज़मीन व आसमान की तमाम मख़लूक़ तो भी वह तेरी इबादत क़बूल नहीं करेगा जब तक कि तू उसकी तसदीक़ न करे। किसी ने सवाल किया तसदीक़ से क्या मुराद है? तो आपने जवाब दिया कि तू उसके मुरब्बी (पालने वाला), राज़िक़ और कफ़ील होने पर मुतमइन हो जाए और जिस्म को उसकी बन्दगी के लिए फ़ारिग़ कर दे।"*

जब हरिम इब्ने हइयान عليه الرحمة की मुलाक़ात हज़रत उवैस क़रनी رضي الله عنه से हुई तो हज़रत हरिम ने पूछा कि मैं कहाँ इक़ामत इख़्तियार करूँ? तो उवैस क़रनी رضي الله عنه ने अपने हाथ से मुल्के शाम की तरफ़ इशारा फ़रमाया। तो हज़रत हरिम عليه الرحمة ने कहा मुल्के शाम में गुज़र औक़ात किस तरह होगी? तो आपने जवाब दिया कि अफ़सोस उन पर जो शक में मुब्तला हो गए है, अब इन्हें कोई नसीहत फ़ायदा नहीं देती।

मन्क़ूल है कि एक कफ़न चोर ने हज़रत बायज़ीद बिसतामी عليه الرحمة के हाथ पर तौबा की। हज़रत बायज़ीद बिसतामी عليه الرحمة ने क़ब्रों के मुताल्लिक़ उससे सवाल किया तो उसने जवाब दिया कि मैंने तक़रीबन हज़ार क़ब्रों से कफ़न चुराए, दो मुर्दों के अलावा बाक़ी तमाम के मुँह क़िब्ले की जानिब से फिरे हुए थे। तो आपने फ़रमाया इन लोगों को रिज़्क़ के बारे में तवक्कुल नहीं था इसलिए क़ब्र में उनके चेहरे फिरे हुए थे।

मेरे एक दोस्त ने मुझसे ज़िक्र किया कि मेरी एक नेक आदमी से मुलाक़ात हुई तो मैंने पूछा कि क्या हाल है? उसने जवाब दिया हाल तो उनका है जिनका ईमान महफ़ूज़ है और वो सिर्फ़ मुतवक्किलीन (तवक्कुल करने वाले) ही हैं। हम दुआ करते हैं कि ख़ुदा तआला अपने फ़ज़्ल से हमारे और तुम्हारे हाल की इस्लाह फ़रमाये। और हमारे बुरे आमाल की सज़ा में हमें न पकड़े बल्कि हमारे साथ रोज़े हश्र वह सुलूक करे जो उसकी रहमत और शान के लायक़ है, वह सबसे बेहतर रहम और करम करने वाला है।

सवाल: अगर तुम कहो तवक्कुल की हक़ीक़त और उसका हुक्म क्या है और रिज़्क़ के बारे में किस हद तक तवक्कुल लाज़िम व ज़रूरी है?

जवाब: तो इस सवाल का जवाब समझने के लिए चार चीज़ों का समझना ज़रूरी है:-

1. ***लफ़्ज़े तवक्कुल के मअना***
2. ***तवक्कुल के इस्तेमाल का मक़ाम***
3. ***तवक्कुल की तारीफ़***
4. ***तवक्कुल पैदा करने के असबाब व ज़रिए***

लफ़्ज़े तवक्कुल के मअना:- लफ़्ज़े '***तवक्कुल***' '***तफ़अ़ुल***' के वज़न पर मसदर (मसदर उस इस्म को कहते हैं जिससे दूसरे कलिमे बनते हों और वह ख़ुद किसी से न बना हो) है जिसका माद्दा '***वकालतुम***' है, तो मुतवक्किल उसे कहते हैं जो किसी दूसरे को बमन्ज़िल वकील के तसव्वुर करे जो उसकी तरफ़ से उसके काम काज को अन्जाम दे और जो उसके मामलात की दुरुस्ती का ज़िम्मेदार हो और जो बग़ैर तकल्लुफ़ और बग़ैर एहतमाम इसकी मुश्किलों के लिए काफ़ी हो।

तवक्कुल के इस्तेमाल का मक़ाम:- इस लफ़्ज़ '***तवक्कुल***' का इस्तेमाल तीन मक़ाम पर किया जाता है-

1. **एक तो क़िस्मत पर**, क़िस्मत पर तवक्कुल करने के मअना यह हैं कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी क़िस्मत में जो लिख दिया है उस पर इत्मिनान किया जाए क्योंकि इसका हुक्म तब्दील नहीं हो सकता और शरह की तरफ़ से यह इत्मिनान लाज़िम व ज़रूरी है

2. **दूसरा मक़ाम नुसरत है**, नुसरत (मदद) में तवक्कुल करने के यह मअना हैं कि अल्लाह तआला की मदद पर ऐतमाद और यक़ीन किया जाए क्योंकि जब तुम उसके दीन की मदद और उसकी शोहरत करने और फैलाने में कोशिश करोगे तो वह भी ज़रूर तुम्हारी इमदाद करेगा क्योंकि **अल्लाह तआला ने फ़रमाया है-**

فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ

(और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो।)

(सूरह आलेइमरान, आयत-159)

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया:-

إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ

(अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।)

(सूरह मुहम्मद, आयत-7)

एक और जगह फ़रमाया:-

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

(और हमारे ज़िम्मे करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।)

(सूरह रूम, आयत-47)

तो इमदाद के सिलसिले में भी अल्लाह तआला के वादे के मुतअल्लिक उस पर तवक्कुल व भरोसा ज़रूरी है।

3. **तीसरा मक़ाम जहाँ तवक्कुल करना चाहिए वह रिज़्क़ और रोज़मर्रा की हाजतें हैं** क्योंकि अल्लाह तआला इस चीज़ का ज़ामिन और कफ़ील है जिससे तुम्हारा जिस्म क़ायम रहे और जिसके ज़रिए तुम उसकी इबादत पर क़ादिर रहो क्योंकि ख़ुदा तआला का इरशाद है:-

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ط

(और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसे काफ़ी है।)

(सूरह तलाक़, आयत-3)

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया है कि- ***"अगर तुम ख़ुदा पर कमाहक़्क़ुहू (यानी जैसा कि उसका हक़ है) तवक्कुल करते तो वह तुम्हें परिन्दों की तरह रिज़्क़ देता जो सुबह ख़ाली पेट घोंसलों से जाते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आते हैं।"*** (इब्ने माजा)

और रिज़्क़ के सिलसिले अक़्ल व शरीअत के मुताबिक़, ख़ुदा पर ही तवक्कुल करना लाज़िम है। और रिज़्क़ के सिलसिले में ही ख़ुदा पर तवक्कुल करना सूफ़िया-ए-किराम के नज़दीक आम तौर पर लफ़्ज़ तवक्कुल से मुराद होता है और इस किताब में इसी तवक्कुल की बहस मक़सूद है लेकिन रिज़्क़ के बारे में ख़ुदा पर तवक्कुल करने के मफ़हूम की उस वक़्त वज़ाहत होगी जब रिज़्क़ की तमाम क़िस्में बयान की जायेंगी। तू जान ले रिज़्क़ की चार क़िस्में हैं:1. ***रिज़्क़े मज़मून, 2. रिज़्क़े मक़सूम, 3. रिज़्क़े ममलूक, 4. रिज़्क़े मौऊद***

रिज़्क़े मज़मून से मुराद वह ग़िज़ा और वह चीज़ें हैं जिनसे इन्सान का बदन क़ायम रहे, इससे दुनिया के तमाम असबाब मुराद नहीं और यह तवक्कुल शरअन व अक़लन वाजिब है क्योंकि जब ख़ुदा ने हमें उसकी इबादत का मुकल्लफ़ बनाया तो ज़रूर वह हमारी इन चीज़ों का कफ़ील व ज़ामिन होगा जिनके ज़रिए हमारे बदन क़ायम रहें और हम उसकी इबादत बजा ला सकें और बाज़ मशाइख़ ने अपने मसलक के मुताबिक़ इस तवक्कुल के मुताल्लिक़ अच्छी गुफ़्तगू की है चुनांचे उन्होंने कहा है कि ख़ुदा तआला का बन्दों के रिज़्क़ का ज़ामिन होना तीन वजह से ज़रूरी है।

एक इसलिए कि हम उसके ग़ुलाम हैं और वह हमारा आक़ा व मालिक है, तो जिस तरह ग़ुलामों पर आक़ा की ख़िदमत व इताअत लाज़िम है इसी तरह आक़ा पर लाज़िम है कि वह ग़ुलामों के रिज़्क़ और उनकी दूसरी हाजतों का कफ़ील हो।

दूसरे इसलिए कि ख़ुदा तआला ने बन्दे को रिज़्क़ का मोहताज पैदा किया है लेकिन उन्हें रिज़्क़ की तलाश का कोई यक़ीनी ज़रिया नहीं बताया, क्योंकि बन्दे नहीं जानते कि उनका रिज़्क़ कौन सी चीज़ है और कहाँ है और कब मयस्सर आएगा, इसलिए रब तआला पर लाज़िम है कि वह उनके रिज़्क़ का कफ़ील हो और उनके लिए रिज़्क़ मुहय्या करे।

तीसरे इसलिए कि ख़ुदा ने बन्दों को हुक्म दिया है कि वह उसकी इबादत व ताअत में मशग़ूल रहें, तो अगर वह रिज़्क़ की तलाश में सरगरदाँ (दौड़ भाग करते) रहें तो वह उसकी इबादत के वास्ते फ़ारिग़ नहीं हो सकते, इस वजह से भी चाहिए कि रब तआला उनके रिज़्क़ का कफ़ील बने ताकि फ़राग़त से वह उसकी इबादत व ताअत बजा सकें।

लेकिन ***कर्रामिय्याह*** का यह मसलक दुरुस्त नहीं इसलिए कि यह कहना कि बन्दों को रिज़्क़ देना ख़ुदा पर वाजिब है ग़लत है और ऐसी गुफ़्तगू ***असरारे रुबूबियत*** (यानी अल्लाह के रब होने के भेद) के वाक़िफ़ न होने की वजह से है और हमने इल्मे कलाम की किताबों में ऐसे मज़हब की निहायत मुदल्लल (दलील के साथ) तरीक़े से रद्द किया है। हमने अभी बयान किया है कि रिज़्क़ की चार क़िस्म हैं पहली रिज़्क़े मज़मून, इसकी मुख़्तसिर तशरीह तुम सुन चुके हो।

दूसरी क़िस्म रिज़्क़े मक़सूम है, इससे मुराद वह रिज़्क़ है जो ख़ुदा ने बन्दों की क़िस्मत में कर दिया है और लौहे महफ़ूज़ में लिख दिया है कि बन्दा यह खाएगा, यह पियेगा, यह पहनेगा, इस रिज़्क़े मक़सूम की मिक़दार और उसका वक़्त तय है, इसमें कमी बेशी नहीं हो सकती और इसमें जल्दी व देरी नहीं हो सकती जैसा कि हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया- "***रिज़्क़ रोज़े अव्वल से तक़सीम कर दिया गया है और क़लमे क़ुदरत इसे तहरीर करके फ़ारिग़ हो चुका है अब किसी परहेज़गार की परहेज़गारी इसे ज़्यादा नहीं कर सकती और न किसी फ़ाजिर के फ़िस्क़ व फ़ुजूर से वह कम हो सकता है।***" (मक़ासिदे हस्ना)

तीसरी क़िस्म रिज़्क़े ममलूक है, इससे मुराद वह रिज़्क़ और वह माल व असबाब है जिसका बन्दा ***बिलफ़ेल*** दुनिया में मालिक होता है यानी काम करने से मालिक होता है और जो उसके क़ब्ज़े में होता है और क़ुरआन मजीद की आयत में यही रिज़्क़ मुराद है:-

اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰکُمۡ

(अल्लाह की राह में हमारे दिए में से ख़र्च करो।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-254)

इस आयत में लफ़्ज़ "*मिम्मा रज़क़नाकुम*" के मअना हैं मिम्मा मलकनाकुम यानी जिसका हमने तुम्हें मालिक बनाया है।

चौथी क़िस्म रिज़्क़े मौऊद है, इससे मुराद वह रिज़्क़े हलाल है जिसका ख़ुदा तआला ने परहेज़गार लोगों से वादा फ़रमाया है कि वह उन्हें बग़ैर मेहनत व मशक़्क़त के दिया जाएगा, जैसा कि इरशादे बारी तआला है-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

(और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके लिए निजात की राह निकाल देगा और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो।)

(सूरह तलाक़, आयत 2,3)

ये हैं रिज़्क़ की **चार क़िस्में** उनमें से पहली क़िस्म तवक्कुल वाजिब है।

तवक्कुल की तारीफ़

तवक्कुल की तारीफ़ में तरीक़त के मशाइख़ों का इख़्तिलाफ़, आम मशाइख़ तो कहते हैं कि सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा करने और मख़लूक़ से हर तरह की उम्मीदें ख़त्म करने का नाम तवक्कुल है और बाज़ मशाइख़ कहते हैं कि ग़ैर से तअल्लुक़ तोड़ कर दिल को सिर्फ़ ख़ुदा की हिफ़ाज़त में देने का नाम तवक्कुल है। और इमाम अबू उमर ﷫ ने फ़रमाया है कि- *ख़ुदा के सिवा हर शय से तअल्लुक़ तर्क करने का नाम तवक्कुल है*" और तअल्लुक के तर्क करने से इमाम साहब यह मुराद लेते हैं कि बन्दा अपने बदन के निज़ाम और तंगी व तकलीफ़ का ख़ुदा के सिवा किसी से ज़िक्र तक न करे।

और मेरे शैख़ ने फ़रमाया है कि- "*अपनी हर तंगी और तकलीफ़ का ज़िक्र सिर्फ़ ख़ुदा से करने का नाम तवक्कुल है और मख़लूक़ से तंगी और तकलीफ़ का ज़िक्र ग़ैर से तअल्लुक़ रखता है*।"

मेरे नज़दीक मशाइख़ के क़ौलों का ख़ुलासा यह है कि तवक्कुल उसका नाम है कि बन्दे को इस बात का यक़ीन हो जाए और उसका दिल इस पर मज़बूती से क़ायम हो जाए कि मेरे जिस्म और ढांचे को बाक़ी रखना, मेरी हाजतों को पूरा करना और हर तंगी और तकलीफ़ से बचाना सिर्फ़ ख़ुदा के क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है किसी दूसरे के हाथों में नहीं और न ही असबाब व

दुनिया के वसीलों के सबब से है, ख़ुदा अगर चाहे तो मेरे जिस्म को रखने और दूसरी हाजतों के लिए किसी मख़लूक़ को वसीला बना देता है या दुनिया की किसी और चीज़ को ज़रिया बना देता है और अगर चाहे वह तो बग़ैर ज़ाहिरी असबाबे दुनिया और बग़ैर किसी मख़लूक़ के आसरे के मुझे ज़िन्दा रख सकता है, वह सबबों व ज़रियों का मोहताज नहीं।

जब तेरा एतेक़ाद तवक्कुल के इस मफ़हूम पर हो जाए और तेरा दिल इस अक़ीदे पर मज़बूती से क़ायम हो जाए और तेरा दिल मख़लूक़ और दुनिया के सबबों से बेनियाज़ हो जाए तो समझ ले कि कमाहक़्क़ुहू (जैसा कि हक़ है) तुझे तवक्कुल की सिफ़त हासिल हो गई और तू मुतवक्किलीन में शामिल हो गया।

तवक्कुल पैदा करने का तरीक़ा

तवक्कुल इस तरह पैदा होता है कि बन्दा रिज़्क़ और दूसरी ज़रूरियात के मुताल्लिक़ ख़ुदा तआला के ज़ामिन और कफ़ील होने का तसव्वुर रखे और ख़ुदा के कमाले इल्म, उसकी कमाले क़ुदरत का तसव्वुर करे और इस बात पर यक़ीन रखे कि ख़ुदा तआला ख़िलाफ़े वादा, भूल, इज्ज़ और हर नक़्स से पाक है। जब हमेशा ऐसा तसव्वुर रखेगा तो ज़रूर उसे रिज़्क़ के बारे में रब तआला पर तवक्कुल की सआदत नसीब हो जाएगी।

सवाल: क्या बन्दे पर रिज़्क़ की तलाश लाज़िम है या नहीं?

जवाब: रिज़्के मज़मून की तलाश बन्दा नहीं कर सकता क्योंकि इससे जिस्म की तरबियत और उसको नश्व व नुमा देना मुराद है और यह ख़ुदा का काम है, जिस तरह मौत व ज़िन्दगी अता करना रब तआला का काम है और ज़ाहिर है कि इन्सान इन कामों पर क़ादिर नहीं जो ख़ुदा की सिफ़ात हैं।

और रिज़्क़े मक़सूम की तलाश भी इन्सान को लाज़िम नहीं क्योंकि वह तो मज़मून का मोहताज है और रिज़्क़े मज़मून का ज़ामिन और कफ़ील ख़ुदा है और ख़ुदा तआला ने यह जो फ़रमाया है कि-"***और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो***" तो इससे मुराद रिज़्क़ की तलाश नहीं बल्कि इल्म का तलब करना और सवाब को तलब करना मुराद है और अगर यह कहा जाए कि रिज़्क़े मज़मून असबाब के साथ वाबस्ता है यानी जुड़ा हुआ है तो क्या

असबाब की तलाश भी लाज़िम है या नहीं? तो इसका जवाब यह है कि असबाब की तलाश भी लाज़िम नहीं क्योंकि ख़ुदा तआला जब रिज़्क़े मुक़र्रर सबब के साथ या बग़ैर सबब के मुहय्या कर सकता है तो सबबों के तलाश की क्या ज़रूरत है? मुतलक़न फ़रमाया है कि हम रिज़्क़ के ज़ामिन हैं यह क़ैद नहीं लगाई कि नफ़्से रिज़्क़ के हम ज़ामिन हैं। और इसके असबाब व ज़रिये फ़राहम करना बन्दों के ज़िम्मे है चुनांचे फ़रमाया:-

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا

(और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे करम पर न हो।)

(सूरह हूद, आयत-6)

फिर इन्सान वह शय तलाश भी कैसे कर सकता है जिसकी जगह का उसे पता न हो, क्योंकि यक़ीन से इन्सान को यह मालूम नहीं कि इस ज़रिए से रिज़्क़ हासिल होगा या यह चीज़ मेरी ग़िज़ा है और इससे मेरी नश्वो नुमा है कोई एक आदमी भी यह नहीं जानता कि मेरा रिज़्क़ इस ज़रिए से हासिल होगा।

इस सिलसिले में तेरे इत्मिनान के लिए यही काफ़ी है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और औलिया अलैहिर्रहमां रिज़्क़ के मामले में ख़ुदा पर तवक्कुल करते थे और बहुत कम ही रिज़्क़ की तलाश करते थे बल्कि अपने बदन को ख़ुदा की इबादत के लिए फ़ारिग़ रखते थे और इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि उन्होंने रिज़्क़ की तलाश को तर्क करके ख़ुदा तआला के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं की और न ही वह किसी हुक्मे ख़ुदावन्दी के तर्क करने वाले हुए, तो इस बयान से साफ़ हो गया कि रिज़्क़ व असबाबे रिज़्क़ की तलाश कोई ज़रूरी नहीं।

सवाल: तलाश से रिज़्क़ ज़्यादा और तलाश न करने से रिज़्क़ कम होता है या नहीं?

जवाब: लौहे महफ़ूज़ में रिज़्क़ की मिक़दार और उसका वक़्त मुअय्यन तौर पर लिखा हुआ है और ख़ुदा के हुक्म में कोई तब्दीली नहीं हो सकती है और न उसकी तक़सीम में कोई बदलाव हो सकता है और यही उल्मा-ए-

अहले सुन्नत के नज़दीक सही है। सिर्फ़ हातिम और शफ़ीक़ के पैरोकार इसके ख़िलाफ़ हैं, वह यह कहते हैं कि रिज़्क़ तो तलाश करने या न तलाश करने से ज़्यादा कम नहीं हो सकता मगर माल में तलाश करने या न तलाश करने से ज़्यादती या कमी हो सकती है और यह बेकार है जिस तरह रिज़्क़ में कमी ज़्यादती नहीं हो सकती इसी तरह माल में भी नहीं हो सकती क्योंकि दोनों की दलील एक है, ख़ुदा तआला ने आयत में इसी तरफ़ इशारा फ़रमाया है:

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ

(इसलिए कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए और ख़ुश न हो उस पर जो तुमको दिया।)

(सूरह अलहदीद, आयत-23)

अगर तलाश से रिज़्क़ में ज़्यादती होती और तलाश न करने से कमी तो अल्बत्ता ग़मी या ख़ुशी का मक़ाम होता क्योंकि सुस्ती और लापरवाही से जब कोई चीज़ बर्बाद हो जाए तो उस पर इन्सान ग़मनाक होता है और कोशिश कमरबस्ता होने से जब कोई चीज़ हासिल हो तो उस पर इन्सान को ख़ुशी होती है, हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने एक साइल को फ़रमाया कि- ''***सुन ले तू अगर रोज़ी की तलाश न भी करता तो भी जो तेरे मुक़द्दर में है तुझे मिल जाती।***'' (अल एहसान)

सवाल: सवाब और अज़ाब भी तो लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है फिर भी हमें हुक्म है कि सवाब की तलब की जाए और जो चीज़ें अज़ाब की वजह बनती हैं उनसे बचा जाए, तो क्या तलब से सवाब ज़्यादा हो सकता है या अज़ाब का सबब बनने वाली चीज़ों से बचना अज़ाब में कमी की वजह बन सकता है?

जवाब: जान ले कि ख़ुदा तआला ने सवाब के तलब का हुक्म क़तई और साफ़ तौर पर हमें दिया है और इसके तर्क करने पर अज़ाब का डर सुनाया है और ख़ुदा ने यह ज़िम्मा नहीं लिया कि बन्दा नेक आमाल न करे तब भी वह उसे अच्छा अज्र देगा, इसलिए अज़ाब व सवाब की ज़्यादती बन्दे के काम पर है और रिज़्क़ व सवाब व अज़ाब में फ़र्क़ है जो बाज़ उल्मा ने बयान किया है कि रिज़्क़ और मौत के मुताल्लिक़ लौहे महफ़ूज़ में बग़ैर

किसी शर्त और किसी दूसरी चीज़ पर मुअल्लक़ किये एक क़तई फ़ैसला लिखा हुआ है, तुमने क़ुरआन मजीद में देखा नहीं? कि ख़ुदा ने किस तरह रिज़्क़ के मुताल्लिक़ बग़ैर किसी शर्त के फ़रमाया है, इरशाद है:-

وَمَا مِنۡ دَآبَّةٍ فِى الۡاَرۡضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزۡقُهَا

(और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे करम पर न हो।)

(सूरह हूद, आयत-6)

और मौत के मुताल्लिक़ फ़रमाया:-

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۳۴﴾

(तो जब इनका वादा आएगा तो एक घड़ी पीछे हो न आगे।)

(सूरह अलअअ़राफ़, आयत -34)

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया कि- ***"चार चीज़ों से फ़राग़त हो चुकी हुई है, इन्सान के ढांचे की बनावट से, उसकी आदत व तबीयत से, उसकी मौत और उसके रिज़्क़ से।*** (मोअ़जम औसत)

और अज़ाब व सवाब की तहरीर लौहे महफ़ूज़ में मुअल्लक़ व मशरूत है (शर्त के साथ) यानी अगर बन्दा नेकी करेगा तो सवाब पाएगा और गुनाह करेगा तो अज़ाब का सज़ावार होगा, जैसा कि क़ुरआन मजीद की नीचे लिखी आयत में ज़िक्र हुआ:-

وَلَوۡ اَنَّ اَهۡلَ الۡكِتٰبِ اٰمَنُوۡا وَاتَّقَوۡا لَكَفَّرۡنَا عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ

وَلَاَدۡخَلۡنٰهُمۡ جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ﴿۶۵﴾

(और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उनके गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते।)

(सूरह अलमाइदह, आयत-65)

सवाल: हमने देखा है जो लोग रिज़्क़ की तलाश व कोशिश करते हैं उनके पास रिज़्क़ और माल ज़्यादा होता है और जो तलाश व कोशिश नहीं करते वह कंगाल और मोहताज होते हैं?

जवाब: ऐसा नहीं बल्कि देखा गया है कि बाज़ तलाश व कोशिश करने वाले रिज़्क़ से महरूम होते हैं और बाज़ तलाश व कोशिश न करने वाले दौलतमन्द और नेमत वाले होते हैं, हाँ ज़्यादातर यह है कि कोशिश करने वाले फ़क़ीर व मुफ़लिस नहीं होते और कोशिश न करने वाले अक्सर व बेशतर फ़क़ीर होते हैं, यह इसलिए ताकि तुम्हें मालूम हो कि इज़्ज़त व हिकमत वाले ख़ुदा की तक़दीर व तदबीर इसी तरह जारी है। अबूबक्र मुहम्मद इब्ने साबिक़ सक़ल्ली ने क्या ख़ूब फ़रमाया है जिसका तर्जुमा हाज़िर है:-

- *बहुत से क़वी लोग जो तदबीर में बहुत होशियार व चालाक होते हैं रिज़्क़ से महरूम होते हैं।*
- *और बहुत से कमज़ोर बदन तदबीर में निकम्मे दुनिया उनके पास इस तरह आती है जैसे वह समन्दर की गहराई से दोनों हाथों से हीरे और जवाहारात निकाल रहे हैं।*
- *यह इस बात की दलील है कि रिज़्क़ के बारे में मख़लूक़ के साथ ख़ुदा तआला का एक मख़फ़ी (छुपा हुआ) तअल्लुक़ है जिसे समझने से इन्सानी दिमाग़ मजबूर है।*

सवाल: क्या किसी जंगल में बग़ैर ज़ादे राह (सफ़र के ज़रूरी सामान) के दाख़िल होना दुरुस्त है? और बग़ैर किसी साज़ो सामान के उसे तय करने का इरादा ठीक है?

जवाब: जान ले कि अगर तेरा दिल तवक्कुल में मज़बूत हो और तुझे ख़ुदा के वादे पर मुकम्मल यक़ीन हो तो तेरे लिए बग़ैर ज़ादे राह (सफ़र के सामान) जंगलों में फिरना दुरुस्त है वर्ना अवाम की तरह तू भी ज़ादे राह ले कर चल।

और मैंने इमाम अबुल मआली رحمة الله عليه से सुना कि आप फ़रमाते थे-"*जो शख़्स अल्लाह के साथ इसी दस्तूर से पेश आए जो उसका लोगों के साथ है तो ख़ुदा भी उसके साथ उसी तरह पेश आता है जिस तरह लोग उससे पेश आते हैं*' आपका यह इरशाद बहुत दुरुस्त है और ग़ौर करने वाले को इससे बहुत फ़ायदे हासिल हो सकते हैं।

सवाल: तुम्हारा यह कहना कि बग़ैर ज़ादे राह सिर्फ़ ख़ुदा के तवक्कुल पर इख़्तियार करना दुरुस्त है ठीक नहीं क्योंकि अल्लाह तआला ने साफ़ अल्फ़ाज़ में हुक्म दिया है:

وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى

(और तोशा (सफ़र का ख़र्च) साथ लो कि सबसे बेहतर तोशा परहेज़गारी है।)

(सूरह, अलबक़राह, आयत-197)

जवाब: इस आयत की तफ़सीर में दो क़ौल हैं। एक यह कि ज़ाद से मुराद ज़ादे आख़िरत यानी आख़िरत का सामान है इसीलिए इसके साथ फ़रमाया '*ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा* (सबसे बेहरत तोशा परहेज़गारी है) नाकि दुनियावी असबाब और मामूली सफ़रे ख़र्च वग़ैरह। --- दूसरा क़ौल यह है कि जब बाज़ लोग हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ के ज़माने में हज को रवाना होते थे तो बग़ैर सफ़रे ख़र्च रवाना होते थे, रास्ते में लोगों से माँगते थे और अपनी मोहताजी का शिकवा शिकायत करते थे, लोगों को तंग करते थे और इसरार के साथ उनसे माँगते थे, तो ऐसे लोगों को हुक्म दिया गया कि ज़ादे राह लेकर हज को जायें और उन्हें तम्बीह की गई कि ख़ुद कमाये हुए माल के साथ हज करना ही अस्ल हज है, लोगों के सहारे पर घर से निकल खड़ा होना और रास्ते में हर एक से हज का ज़िक्र करके माँगते फिरना और फिर इस ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ हज करना बेफ़ायदा है।

सवाल: क्या मुतवक्किल शख़्स भी सफ़र में ज़ादे राह लेकर चलता है?

जवाब: बाज़ वक़्त मुतवक्किल आदमी भी ज़ादे राह अपने साथ लेकर रवाना होता है लेकिन उसका दिल इस बात पर जमा नहीं होता कि यही मेरा रिज़्क़ है और सफ़र में इसी पर मेरा सहारा है बल्कि उसका दिल ख़ुदा के साथ जमा होता है और उसका भरोसा ख़ुदा पर होता है और वह दिल में कह रहा होता है कि मेरा रिज़्क़ रोज़े अज़ल से मेरे हिस्से में लिखा जा चुका है और फ़िरिश्ते मेरे हिस्से का रिज़्क़ लिख कर फ़ारिग़ हो चुके हुए हैं और अल्लाह तआला अगर चाहे तो इस रिज़्क़ के ज़रिए मेरे बदन को क़ायम रखे या सफ़र में कोई और ज़रिया पैदा कर दे। और बाज़ वक़्त मुतवक्किल शख़्स अपने साथ ज़ादे राह इस नीयत से भी ले लेता है कि इससे किसी मुसलमान की मदद करेगा या किसी और चीज़ को फ़ायदा पहुँचाएगा। लेकिन दरहक़ीक़त ज़ादे राह लेकर चलने में अस्ल चीज़ दिल की हालत है, तेरे दिल

में यह बात होनी चाहिए कि ख़ुदा ने हर हाल में मुझे रिज़्क़ देने का वादा फ़रमाया है और वह मेरा कफ़ील और ज़ामिन है, इसलिए कि बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो ख़र्च तो लेकर चलते हैं मगर उनका तवक्कुल मुकम्मल तौर पर ख़ुदा पर होता है नाकि इस ख़र्च पर और बहुत से ज़ाहिर में तो ख़र्च लेकर नहीं चलते लेकिन उनका दिल इसी में गिरफ़्तार होता है ख़ुदा पर उन्हें कोई भरोसा नहीं होता, तो मालूम हुआ कि अस्ल बात दिल की है। इस उसूल को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर ले क्योंकि यह बहुत फ़ायदेमन्द है।

सवाल: हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ व सहाबा-ए- किराम ﷺ और पहले के बुज़ुर्गाने दीन हमेशा ज़ादे राह लेकर सफ़र करते थे, तुम कैसे कहते हो कि ज़ादे राह (सफ़र के सामान) की ज़रूरत नहीं?

जवाब: हमने कब कहा है कि सफ़र में ज़रूरी खाने पीने का सामान ले कर चलना हराम है बल्कि हराम यह चीज़ है कि मुसाफ़िर उस हक़ीर सामान को ही अपना सहारा समझे और ख़ुदा तआला पर तवक्कुल न करे, फिर रसूलुल्लाहﷺ के बारे मे क्या ख़्याल है? ख़ुदा ने क़ुरआन मजीद में आपको हुक्म दिया:-

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ

(और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा।)

(सूरह अलफ़ुरक़ान, आयत- 58)

क्या आपﷺ जो खाना या पानी या दिरहम या दीनार साथ लेकर सफ़र इख़्तियार करते थे तो अपने ख़ुदा के इस ऊपर गुज़रे हुक्म की नाफ़रमानी की? हरगिज़ नहीं आपﷺ से क़तअन नाफ़रमानी सादिर नहीं हुई, बल्कि दिरहम व दीनार के होते हुए भी यक़ीनन आपﷺ का दिल ख़ुदा के साथ था और यक़ीनन आपﷺ का तवक्कुल ख़ुदा पर ही था, जैसा कि उनके रब ने उन्हें हुक्म दिया था क्योंकि आपﷺ ही वह बेमिस्ल ज़ात हैं जिसने दुनिया की किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं फ़रमाया, और तमाम ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियों की तरफ़ जब कि आपको पेश की गई नज़र उठा कर नहीं देखा बल्कि आपﷺ का और सल्फ़े स़ालेहीन का सफ़रे ख़र्च लेकर चलना दूसरों की मदद व दस्तगीरी की नीयत से था इसलिए नहीं था कि वह ज़ादे राह को

ही मआज़ल्लाह अपना सहारा समझते थे और ख़ुदा पर उन्हें कोई भरोसा नहीं था।

तो मालूम हुआ कि अस्ल ऐतबार इरादे का है इसको ख़ूब ज़हन नशीन कर और ख़्वाबे ग़फ़लत से जाग और बात को पूरी तरह ज़हन में बिठा ताकि ख़ुदा तुझे नेकी की राह दिखाए।

सवाल: क्या ज़ादे राह लेकर चलना अफ़ज़ल है या न लेकर?

जवाब: ज़ादे राह सफ़र में लेकर चलना या न लेकर चलना हालात व लोगों की बिना पर मुख़्तलिफ़ है, अगर एक क़ौम का रहनुमा ज़ादे राह इस इरादे से लेकर चले कि लोगों पर इसका जवाज़ व जाइज़ होना रौशन हो या सफ़र में दूसरे मुसलमान भाई की मदद की नीयत हो, या किसी ख़स्ताहाल की फ़रयादरसी करना मक़सद हो, या इसी क़िस्म का कोई और नेक इरादा हो तो ज़ादे राह लेकर चलना अफ़ज़ल है और अगर कोई शख़्स अकेला सफ़र को रवाना हो जिसका तवक्कुल ख़ुदा तआला पर मज़बूत हो और उसे यह ख़दशा हो कि ज़ादे राह ख़ुदा से ग़ाफ़िल न कर दे तो ऐसे शख़्स के लिए ज़ादे राह का तर्क करना बेहतर है। इस फ़र्क़ को अच्छी तरह मालूम कर ले। ख़ुदा तुझे नेकी की तौफ़ीक़ इनायत करे।

दूसरा आरिज़ा (दुशवारी)
सफ़र के ख़तरात का तसव्वुर और ख़्याल

इस आरिज़े से महफ़ूज़ रहने की सूरत यह है कि तू अपना मामला पूरे तौर पर ख़ुदाए तआला के हवाले कर दे और यह दो वजह से बेहतर है। एक तो उसी वक़्त दिल को इत्मिनान और चैन नसीब हो जाएगा इसलिए कि वह उमूर (काम) जो अहम हों और उनकी अच्छाई या बुराई तुम पर वाज़ेह (साफ़) न हो तो ऐसे उमूर की फ़िक्र में परेशान रहोगे।

और जब तुमने अपने हर मामले को ख़ुदा के हवाले कर दिया तो तुम्हें यक़ीन हो जाएगा कि इन्शाअल्लाह तआला ख़ैर ही नसीब होगी, तो अपने मामलात अल्लाह के सुपुर्द करने में तुम ख़तरे और हर क़िस्म की फ़िक्र से महफ़ूज़ हो जाओगे और चैन व इत्मिनान मयस्सर आ जाएगा, और यह

अमन व राहत और दिल का इत्मिनान बहुत बड़ी नेमत है, मेरे शैख़ अक्सर मजलिस में फ़रमाया करते थे कि- *"अपनी तदबीर उस ज़ात के सुपुर्द कर दे जिसने तुझे पैदा फ़रमाया तू राहत में हो जाएगा"*। मेरे शैख़ ने नीचे लिखे अशआर भी इसी सिलसिले में कहे हैं जिनका तर्जुमा पेश हैः

- *जो शख़्स यह न जानता हो कि मेरा नफ़ा मेरी महबूब शय में है या उसमें जो मुझे नापसन्द है।*
- *तो चाहिए कि उस काम को जिसे वह हल करने से आजिज़ है उस ज़ात के हवाले करे जो हर हाजत में काफ़ी है।*
- *यानी ख़ुदा तआला के सुपुर्द करे जो एहसान फ़रमाने वाला है।*

तफ़वीज़ इलल्लाह (यानी अपने मामलात अल्लाह पाक के सुपुर्द करने) का दूसरा फ़ायदा यह है कि आइन्दा भी तुम ख़ैर में रहोगे और यह इसलिए कि मामलात व हालात, नतीजों और आइन्दा आने वाले हालात के ऐतबार से छुपे हुए हैं क्योंकि बहुत सी बुराइयाँ ऐसी हैं जो अच्छी सूरत मालूम होती हैं और बहुत से ऐसे नुक़सानदेह काम हैं जो बज़ाहिर फ़ायदे वाले दिखाई देते हैं और बहुत से ऐसे हैं जो देखने में शहद मालूम होते हैं और तुम इनके राज़ और आइन्दा आने वाले हालात से बेख़बर हो तो जब तुम किसी काम को अपने इरादे और इख़्तियार से शुरू करोगे तो बहुत जल्द हलाकत व तबाही में पड़ जाओगे और तुम्हें शऊर तक नहीं होगा।

हिकायतः- *एक आबिद के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि वह रब तआला से यह सवाल किया करता था कि उसे इब्लीस लईन दिखाया जाए। अल्लाह तआला की तरफ़ से यही जवाब मिलता था कि इस ख़्याल को छोड़ और आफ़ियत व अमन की दुआ किया कर, मगर वह अपने इसी ख़्याल पर अड़ा रहता था। आख़िर एक रोज़ अल्लाह तआला ने इब्लीस को उस आबिद पर ज़ाहिर कर दिया। जब आबिद ने इब्लीस को देखा तो उसे मारने का इरादा किया। इब्लीस ने कहा कि अगर तूने 100 साल ज़िन्दा न रहना होता तो मैं तुझे हलाक कर देता और तुझे सख़्त सज़ा देता। आबिद अपनी उम्र 100 साल सुन कर मग़रूर हो गया और दिल में कहने लगा कि मेरी उम्र बहुत है, अभी आज़ादी से गुनाह करता हूँ आख़िर वक़्त पर तौबा कर लूँगा। चुनांचे वह फ़िस्क़ व फ़िजूर में मुब्तला हो गया इबादत तर्क कर दी और हलाक हो गया।*

ऐ मुख़ातिब! तेरे लिए इस हिकायत में इस काम पर ख़बरदार किया गया है कि तू अपने इरादे की पैरवी न करे और अपने नफ़्स के मतलब को हासिल करने में इसरार से काम न ले और इस हिकायत से तुझे यह सबक़ भी मिलता है कि तूले अमल (लम्बी उम्मीदों) से बचे क्योंकि तूले अमल बहुत बड़ी आफ़त है, एक शायर ने क्या अच्छा कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *लालच और लम्बी उम्मीदों से बचो क्योंकि बहुत उम्मीदें ऐसी होती हैं जिनके पीछे इन्सान मौत का निवाला बन जाता है।*

लेकिन जब तुम अपना मामला अल्लाह पाक के सपुर्द कर दोगे और उससे सवाल करोगे कि वह तुम्हारे लिए ऐसी चीज़ को चुने जिसमें तुम्हारी बेहतरी हो तो ज़रूर तुम्हें ख़ैर और दुरुस्ती ही नसीब होगी और तुम नेक काम ही करोगे। अल्लाह तआला ने अपने एक नेक बन्दे हज़रत मूसा عليه السلام के अल्फ़ाज़ नक़्ल करते हुए फ़रमाया:-

وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَی اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰىہُ اللّٰہُ

سَیِّاٰتِ مَا مَکَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿۴۵﴾

(और मैं अपने काम अल्लाह को सौंपता हूँ बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उनके मकर की बुराइयों से और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा।)

(सूरह अलमोमिन, आयत-44, 45)

तुम देखते नहीं कि रब तआला ने किस वज़ाहत से अपने मामलात उसके हवाले करने पर हिफ़ाज़त, दुश्मनों के ख़िलाफ़ मदद और बन्दे का अपनी मुराद में कामयाब होने का ज़िक्र फ़रमाया है? इसमें ख़ूब ग़ौर करो। अल्लाह तआला तुम्हें भलाई की तौफ़ीक़ बख़्शे।

सवाल: तफ़वीज़ का मआना और उसका हुक्म वाज़ेह फ़रमाया जाए?

जवाब: जानना चाहिए कि यहाँ दो चीज़ें हैं जिनके समझ लेने से बात साफ़ हो जाएगी। एक तो तफ़वीज़ का मक़ाम और उसका हुक्म और दूसरे तफ़वीज़ का मअना और उसकी तारीफ़ और तफ़वीज़ की ज़िद का बयान। **तफ़वीज़** के मक़ाम की तफ़्सील यह है कि मुरादें तीन क़िस्म की हैं-

एक वह मुराद जिसको तुम यक़ीनन और क़तअन बुरी और ख़राब समझते हो, तुम्हें इसके बुरा होने में ज़रा शक नहीं होता जैसे जहन्नम और अज़ाब और अफ़आल में कुफ़्र और बिदअत और गुनाह वग़ैरह। इन ऊपर गुज़रे उमूर का इरादा करने की तो बिल्कुल कोई गुंजाइश और इजाज़त नहीं।

दूसरी वह मुराद जिसके अच्छा और बेहतर होने का तुम्हें मुकम्मल यक़ीन है जैसे जन्नत, ईमान और सुन्नत वग़ैरह। इन उमूर का इरादा करना ज़रूरी और लाज़िम है यहाँ तफ़वीज़ जाइज़ नहीं, इसलिए कि इन उमूर में कोई ख़तरा नहीं और न ही इनके बेहतर और अच्छा होने में कोई शक व शुबह है।

तीसरी वह चीज़ है जिसके मुताल्लिक़ तुम यक़ीनी तौर पर नहीं जानते कि इसमें तुम्हारे लिए भलाई है या ख़राबी, फ़ायदा है या नुक़सान, जैसे नवाफ़िल और मुबाह उमूर। इन उमूर का तुम यक़ीनी और क़तई इरादा नहीं कर सकते तो ऐसे उमूर का इरादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह ज़रूर कहा जाए, बग़ैर इन्शाअल्लाह इन उमूर का इरादा दुरुस्त नहीं बग़ैर इन्शाअल्लाह इन उमूर का इरादा बुरा होगा, जिससे शरअन रोका गया है तो इस तहक़ीक़ की रू से तफ़वीज़ का मक़ाम हर वह शय है जिसके अन्दर तुम्हारे लिए कोई ख़तरा हो और तुम्हें इसके बेहतर होने का यक़ीने कामिल न हो।

तफ़वीज़ के मअना

हमारे बाज़ मशाइख़ ने तफ़वीज़ के यह मअना किए हैं : ***"तफ़वीज़ के मअना हैं हर वह शय जिसमें ख़तरा हो उसमें अपने इरादे और इख़्तियार को तर्क कर देना और मुदब्बिरे कायनात (तमाम कायनात में तदबीर करने वाला यानी अल्लाह तआला), मुख़्तारे मुतलक़ (हर बात का इख़्तियार रखने वाला यानी अल्लाह पाक) और मख़लूक की बेहतरी जानने वाले अल्लाह के सुपुर्द कर देना।"*** और शैख़ अबू मुहम्मद सिजज़ी عليه الرحمة ने तफ़वीज़ के यह मअना किए हैं कि- ***"तफ़वीज़ तेरा ख़तरे की शय में अपने इख़्तियार को तर्क कर देना और मुख़्तारे मुतलक़ के हवाले कर देना है ताकि वह मुख़्तारे मुतलक़ तेरे लिए ऐसी चीज़ पसन्द फ़रमाए जिसमें तेरी भलाई और बेहतरी हो"***।

और शैख़ अबू उमर ﷺ ने तफ़वीज़ की यह तारीफ़ की है कि- "***तफ़वीज़ तमअ के तर्क कर देने का नाम है और तमअ ऐसी शय के इरादे का नाम है जिसमें ख़तरा हो।***"

तफ़वीज़ के मअना में ये मशाइख़े किराम की इबारते थीं जो नक़्ल की गईं और हमारे नज़दीक तफ़वीज़ के यह मअना हैं: जिन उमूर में तुमको ख़तरे का ख़ौफ़ हो ऐसे उमूर में यह इरादा कर लेना कि अल्लाह तआला तुम्हारी मसलहतों और बेहतरियों की हिफ़ाज़त करे। ऐसे इरादे का नाम तफ़वीज़ है। और तफ़वीज़ की ज़िद तमअ (आस/उम्मीद) है

और तमअ दो तरह का है एक वह जो रजा के मअना में है यानी ऐसी शय का इरादा करना जिसमें कोई ख़तरा न हो या अगर ख़तरा हो भी तो इन्शाअल्लाह कह लिया जाए। यह तमअ जो रजा के मअना में है अच्छी है और बुरी नहीं जैसा कि परवरदिगारे आलम ने तमअ को इस मअना में क़ुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया है। इरशाद होता है:-

وَالَّذِىٓ اَطۡمَعُ اَنۡ يَّغۡفِرَ لِىۡ خَطِيۡٓـَٔتِىۡ يَوۡمَ الدِّيۡنِ ؕ﴿۸۲﴾

(और वह जिसकी मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा।)

(सूरह शोअरा, आयत-82)

दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया:-

اِنَّا نَطۡمَعُ اَنۡ يَّغۡفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ

(हमें तमअ है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे।)

(सूरह शोअरा, आयत-51)

और हम यहाँ इस *तमअे महमूद* (अच्छी आस) में बात नहीं करते। दूसरा *तमअ मज़मूम* (लालच) है जिसके मुताल्लिक़ नबी-ए-करीम ﷺ का इरशादे गिरामी है कि- "***अपने आपको तमअ से बचाओ क्योंकि वह एक बिलफ़ेल मोहताजी और तंगदस्ती है।***" और कहा गया है कि- "***दीन की हलाकत और उसका फ़साद तमअ में है और दीन की हिफ़ाज़त और पुख़्तगी परहेज़गारी और तक़्वा में है।***"

और हमारे शैख़ ने फ़रमाया है कि- *"लालच दो तरह से है, एक ऐसी शय से सुकूने क़ल्ब हासिल करना जिसका नफ़ा शक वाला हो, दूसरी ऐसी चीज़ों का इरादा करना जिसमें ख़तरा हो। और याद रखो कि तमअ मज़मूम में जो इरादा पाया जाता है यही तफ़वीज़ के मुख़ालिफ़ है।"*

उन उमूर का बयान जिनका तसव्वुर तफ़वीज़ इलल्लाह (यानी तमाम काम अल्लाह के सुपुर्द कर देने) का सबब है:-

1. *उमूर और मामलात में ख़तरा*
2. *हलाकत का इमकान*
3. *फ़साद और ख़राबी का ख़ौफ़*
4. *इन्सान का ख़तरे की चीज़ों से महफ़ूज़ रहने से आजिज़ होना*
5. *इन्सान की गफ़लत और नादानी की वजह से ख़तरे की चीज़ों से न बच सकना*

अगर तुम इन पाँचों उमूर को संजीदगी से ज़हन में रखोगे तो तुम्हारे दिल में बिला वजह इरादा पैदा होगा कि अपने तमाम उमूर व मामलात अहकमुल हाकिमीन के हवाले कर देना चाहिए और बग़ैर इन्शाअल्लाह तआला कहे इनका इरादा नहीं करना चाहिए, हाँ अगर इन उमूर में ख़ैर का यक़ीन पूरा पूरा हो तो बिना तशवीश यानी बेख़ौफ़ इरादा करने में कोई हर्ज नहीं। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

सवाल: तुम जिस ख़तरे का बार बार ज़िक्र करते हो कि उसकी वजह से तमाम उमूर अल्लाह तआला के सुपुर्द करना ज़रूरी है आख़िर वह ख़तरा क्या है?

जवाब: जान लो कि यह ख़तरा **दो** तरह का है:

एक तो शक का ख़तरा कि शायद यह काम होगा या नहीं और शायद मैं उस तक पहुँच सकूँ या नहीं, इसी शक के ख़तरे की वजह से इन्शाअल्लाह कहना ज़रूरी है।

दूसरा ख़तरा फ़साद, कि तुम्हें यह यक़ीन न हो कि इसमें तुम्हारे लिए बेहतरी है इस ख़तरे की बिना पर तफ़वीज़ ज़रूरी है।

फिर ख़तरे की तारीफ़ में अइम्मा-ए-किराम की इबारतें अलग हैं। बाज़ अइम्मा-ए-किराम ने यह तारीफ़ की है-*'ख़तरा वह शय है जिसके ग़ैर में निजात हो और उसके करने से गुनाह करने का इमकान हो'*

इस मअना की रू से ईमान, इस्तिक़ामत और सुन्नत में कोई ख़तरा नहीं क्योंकि इनके बग़ैर निजात नामुमकिन है और यह भी ज़ाहिर है कि शरीअत पर इस्तिक़ामत किसी गुनाह करने की वजह नहीं है लिहाज़ा ईमान, इस्तिक़ामत और सुन्नत का इरादा यक़ीनन होना चाहिए। हमारे शैख़ ने 'ख़तरा फ़िल फ़ेल' की यह तशरीह फ़रमाई है कि- *"ख़तरा वह शय और वह अम्रे आरिज़ (जो अस्ल काम न हो) है जिसे बाज़ वक़्त अस्ल फ़ेल तर्क करके अदा करना पड़े और उस वक़्त अस्ल फ़ेल की बजाय इस अम्रे आरिज़ (जो अस्ल काम न हो) को अदा करना ज़्यादा बेहतर हो।'*

ख़तरे की यह तारीफ़ मुबाहात, सुन्नतें और फ़र्ज़ों को भी शामिल हैं। इसकी मुख़्तसर तफ़्सील यूँ समझो कि एक शख़्स का नमाज़ का वक़्त तंग हो चुका हो और उसने उसे अदा करने का इरादा कर लिया हो, ठीक उसी वक़्त वह शख़्स कहीं जलती आग या दरिया में गिर पड़ा, तो ऐसी सूरत में उसका इरादा नमाज़ के बजाय अपने आपको बचाना ज़रूरी है। इस तारीफ़ के मुताबिक़ जब ख़तरे का तअल्लुक़ मुबाहात, सुन्नतें और फ़र्ज़ों से भी हो गया तो उनका भी क़तई इरादा करना दुरुस्त नहीं बल्कि साथ में इन्शा अल्लाह कहना चाहिए।

सवाल: यह कैसे हो सकता है कि रब तआला बन्दे पर एक काम फ़र्ज़ करे और उसके तर्क करने पर **वईद** (अज़ाब से डराना) फ़रमाए फिर उस बन्दे के लिए इस काम में कोई भलाई और बेहतरी न हो ?

जवाब: हमारे शैख़ ﷺ ने फ़रमाया कि- "*अल्लाह तआला बन्दे पर जो चीज़ लाज़िम और फ़र्ज़ करता है बन्दे के लिए ज़रूर उसमें भलाई और बेहतरी होती है जब कि वह दुशवारियों और रुकावटों से ख़ाली हो,*" हाँ अल्लाह तआला किसी लाज़िम और ज़रूरी काम में इस तरह तंगी नहीं फ़रमाता कि उससे किसी और तरफ़ न फिर सके और ज़रूर हर फ़र्ज़ व लाज़िम काम में बन्दे के लिए बेहतरी छुपी हुई है, बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस फ़र्ज़ व लाज़िम काम से बन्दे के लिए फिर जाने के असबाब पैदा हो जाते हैं और ऐसे हालात में एक और वाजिब को तर्क करके दूसरे वाजिब को इख़्तियार करना बेहतर और औला हो जाता है।

जैसा कि हम ज़िक्र कर आए हैं ऐसे असबाब के पेश आने पर बन्दा पूछ गछ में मुब्तला नहीं होगा बल्कि अज्र व सवाब मिलेगा, यह अज्र व सवाब फ़र्ज़ के तर्क करने से नहीं बल्कि दूसरा वाजिब अदा करने की वजह से है।

और मैंने अपने शैख़ व इमाम को कहते सुना है कि तमाम फ़राइज़ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किए है जैसे नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात वग़ैरह उनमें यक़ीनन बन्दे के लिए ख़ैर है, इसलिए उनकी बजाआवरी के वक़्त इन्शाअल्लाह कहने की ज़रूरत नहीं बल्कि उनका यक़ीनन और क़तअन इरादा होना चाहिए और हमारे शैख़ ने फ़रमाया कि आख़िरकार तमाम मशाइख़ का इस पर इत्तेफ़ाक़ हो चुका है, इस ऐतबार से जब फ़राइज़ व वाजिबात ख़तरे के हुक्म से ख़ारिज हो गए तो सिर्फ़ मुबाहात व नवाफ़िल ही ख़तरे की जगह में रहे। हमारी यह बहस इस बाब में मुश्किल बहस है। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

सवाल: क्या अपने तमाम कामों को ख़ुदा के हवाले करने वाला हलाकत व फ़साद वग़ैरा उमूर से महफ़ूज़ हो जाता है हालांकि दुनिया मुश्किलों और तकलीफ़ों का घर है?

जवाब: ज़्यादा ग़ालिब बात यही है कि ऐसा शख़्स उन ख़तरों से महफ़ूज़ रहता है हाँ कभी कभी इसके ख़िलाफ़ भी हो जाता है जिससे ज़िल्लत में मुब्तला हो जाता है और तफ़वीज़ के दर्जे से गिर जाता है, शैख़ अबू अम्र عليه الرحمة ने यूँ ही फ़रमाया है: और कहा गया है कि- *"ऐसे शख़्स को उन उमूर में जो उसने ख़ुदा के हवाले किए हैं भलाई और दुरुस्ती ही पेश आती है, नादिर तौर पर भी वह ज़िल्लत व रुसवाई में मुब्तला नहीं होता।"* हमारे शैख़ عليه الرحمة के नज़दीक यह क़ौल ज़्यादा पसन्दीदा है इसलिए कि अगर तफ़वीज़ के ज़रिए हलाक करने वाली और फ़साद पैदा करने वाली से महफ़ूज़ रहने की उम्मीद न हो तो तफ़वीज़ से फ़ायदा ही क्या।

सवाल: क्या ख़ुदा तआला पर वाजिब है कि तफ़वीज़ वाले के लिए अफ़ज़ल चीज़ ही मुहय्या करे?

जवाब: इस बात पर सब का इत्तेफ़ाक है कि बारी तआला पर किसी शय का वाजिब होना मुहाल और नामुमकिन है और बन्दे के लिए अल्लाह

तआला पर कोई शय वजिब और लाज़िम नहीं, कभी ऐसा होता है कि अल्लाह तआला हिकमत के लिए ऐसी चीज़ मुक़र्रर कर देता है जो हक़ीक़त में बेहतर और ज़्यादा अच्छी होती है मगर बज़ाहिर बन्दे की नज़र में वह अफ़ज़ल नहीं होती, देखिए कि हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ और आपके सहाबा के लिए ***'लैलतुत्तारीस'*** *(ग़ज़वा-ए-ख़ैबर से वापसी पर एक मक़ाम पर पड़ाव किया जहाँ यह वाक़िया पेश आया, इस वाक़िया पेश आने वाली रात को 'लैलतुत्तारीस' कहते हैं)* में दिन चढ़ आने तक नींद मुक़र्रर कर दी यहाँ तक कि नबी-ए-करीमﷺ और सहाबा-ए-किराम की तहज्जुद की नमाज़ और फ़ज्र की नमाज़ फ़ौत हो गई, हालांकि नींद के बजाय नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल और बेहतर थी। इसी तरह बाज़ वक़्त अल्लाह तआला एक बन्दे के लिए दौलत और नेमत मुक़र्रर कर देता है, हालांकि दरहक़ीक़त फ़क़ीर होना उसके हक़ में अफ़ज़ल है। इसी तरह बाज़ वक़्त रब तआला बन्दे के लिए बीवियाँ और औलाद मुक़र्रर कर देता है हालांकि दरहक़ीक़त उसके लिए ज़िक्रे इलाही और इबादत ज़्यादा बेहतर और अफ़ज़ल होते हैं। इसकी मिसाल यूँ समझो कि एक माहिर और ख़ैरख़्वाह हकीम मरीज़ के लिए जौ का पानी पसन्द करता है अगरचे मरीज़ गन्ने का रस पसन्द करता है क्योंकि उस हकीम को मालूम है कि मरीज़ की इसी में इस्लाह है और बन्दे का मक़सद भी तो यही है कि वह हलाक होने से बच जाए, फ़साद व हलाकत के साथ साथ सिर्फ़ ज़ाहिरी फ़ज़्ल व शर्फ़ और अच्छाई हासिल करना मक़सूद नहीं।

सवाल: क्या मुफ़व्विज़ (अपने सब काम ख़ुदा के हवाले कर देने वाला) तफ़वीज़ के बावजूद भी इख़्तियार दिया हुआ समझा जाएगा।?

जवाब: उल्मा-ए-अहले सुन्नत के नज़दीक सही यही है कि तफ़वीज़ से उसका इख़्तियार बातिल व ख़त्म नहीं होता बल्कि वह मुख़्तार ही शुमार होगा।

तीसरा आरिज़ा (दुशवारी)

क़ज़ा और उसकी मुख़्तलिफ़ क़िस्मों का इन्सान पर आना

इसका इलाज सिर्फ़ यह है कि इन्सान क़ज़ा-ए-इलाही (यानि अल्लाह ने जो मुक़द्दर किया है उस) पर राज़ी हो जाए। इसलिए तुम पर **दो** वजह से क़ज़ा-ए-इलाही पर राज़ी रहना ज़रूरी है:

पहली वजह इबादत के लिए फ़राग़त

यह फ़राग़त यूँ हासिल होगी कि अगर तुम क़ज़ा-ए-इलाही पर राज़ी न हो तो तुम्हारा दिल हमेशा ग़मगीन रहेगा और मशग़ूल रहेगा कि यह बात इस तरह क्यूँ हुई है और यह काम इस तरह क्यूँ हो, जब इस तरह की फ़िक्रों में तुम्हारा दिल हमेशा मशग़ूल रहेगा तो इबादत के लिए फ़राग़त कब नसीब होगी इसलिए कि तुम्हारे पहलू में दिल तो सिर्फ़ एक ही है और उसे तुमने फ़िक्रों और वसवसों से भर दिया है जब तुम्हारे दिल के तमाम गोशे दुनियावी ख़्यालात से भरे होंगे तो यादे ख़ुदा, उसकी इबादत और फ़िक्रे आख़िरत के लिए कौन सा गोशा है जो ख़ाली होगा।

हज़रत शक़ीक़ बल्ख़ी عليه الرحمه ने क्या ख़ूब फ़रमाया *"तुम्हारे गुज़रे हुए वाक़ियात पर हसरत और आइन्दा की तदबीर के ख़्यालात ने इस मौजूदा लम्हे की बरकत को तबाह कर दिया है"*

दूसरी वजह क़ज़ा-ए-इलाही पर राज़ी होने की

क़ज़ा-ए-इलाही पर राज़ी न होने के इज़्हार से अल्लाह पाक के ग़ज़ब फ़रमाने का ख़तरा है। रिवायत में आया है कि किसी नबी عليه السلام ने अपनी किसी तकलीफ़ का रब तआला के दरबार में शिकवा किया तो रब तआला की तरफ़ से ***वही*** आई कि क्या तू मेरा शिकवा करता है? हांलाकि मैं मज़म्मत और शिकवे का मुस्तहिक़ नहीं हूँ क्या तू ऐसी नामुनासिब बात का इज़्हार कर रहा है? तू मेरी क़ज़ा पर नाराज़गी का इज़्हार क्यूँ कर रहा है? क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरी ख़ातिर दुनिया बदल दूँ या तेरी ख़ातिर लौहे महफ़ूज़ में तब्दीली करूँ और ऐसी चीज़ तेरे वास्ते मुक़द्दर करूँ जिसे तू चाहे अगरचे मैं

उसको न चाहूँ? और ऐसी चीज़ तेरे लिए मुहय्या करूँ जो तुझे पसन्द हो, मुझे पसन्द न हो? मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! अगर तेरे सीने में आइन्दा कभी इस क़िस्म का ख़तरा और वसवसा गुज़रा तो मैं ज़रूर तुझसे नुबुव्वत का मुक़द्दस लिबास उतार लूँगा और तुझे दोज़ख़ की आग में डाल दूँगा और मुझे कोई परवाह नहीं।

मैं कहता हूँ कि अक़्लमन्द शख़्स को होश में होकर सुनना चाहिए कि रब तआला किस तरह अपने नबियों और बरगुज़ीदा बन्दों से ऐसी गुफ़्तगू फ़रमा कर तम्बीह फ़रमा रहा है, जब वह अपने बरगुज़ीदा और पाक बन्दों को ऐसे कलिमात कह सकता है तो ग़ैरे नबी के साथ इससे बढ़ कर ऐसी गुफ़्तगू कर सकता है।

फिर रब तआला का यह इरशाद बहुत क़ाबिले ग़ौर है कि ‘अगर तेरे दिल में दोबारा इस क़िस्म का ख़्याल आया तो तेरी नुबुव्वत छीन ली जाएगी।’ जब सिर्फ़ इरादे और ख़्याल पर इस क़द्र वईद और तम्बीह फ़रमाई तो उस शख़्स पर उसके ग़ज़ब का क्या आलम होगा जो बेसब्री से चीख़े और चिल्लाए और बार बार फ़रयादरसी के लिए बुलाए, शिकवा करे और रब को अपनी तबाही व बरबादी के लिए आम लोगों के सामने पुकारे, सिर्फ़ अकेला न पुकारे बल्कि इसमें अपने साथी और दोस्त भी शामिल कर ले, फिर यह इसको तम्बीह है जिसने सारी उम्र में सिर्फ़ एक बार शिकवा किया, तो जिसकी सारी उम्र ही रब तआला के शिकवों और शिकायतों में गुज़री हो तो उसका क्या अन्जाम होगा? फिर इस क़िस्म का कलाम उसके साथ है जिसने उसके दरबार में शिकवा किया, तो जो शख़्स ग़ैरों के आगे अल्लाह तआला का शिकवा करे वह तो सख़्ततरीन सज़ा का मुस्तहिक़ है।

सवाल: क़ज़ा पर राज़ी होने के क्या मअना हैं और उसकी हक़ीक़त और हुक्म क्या है?

जवाब: हमारे उल्मा ने फ़रमाया है रज़ा ग़ुस्सा तर्क कर देने का नाम है और ग़ुस्सा ऐसी चीज़ को बेहतर कहने का नाम है जो क़ज़ा-ए-इलाही के ख़िलाफ़ हो और जिसका बुरा या अच्छा होना यक़ीनी न हो नाराज़गी और ग़ुस्से में ऐसा ज़िक्र और ख़्याल ज़रूरी है तब ग़ुस्सा साबित होगा।

सवाल: क्या बुराइयाँ और गुनाह अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़द्र से नहीं हैं? तो अल्लाह तआला बन्दे से बुराई पर कैसे राज़ी होगा और उस पर बुराई कैसे लाज़िम करेगा?

जवाब: रज़ा का तअल्लुक़ क़ज़ा से है और क़ज़ा-ए-शर बुरा नहीं बल्कि वह शय बुरी है जिसके साथ क़ज़ा मुताल्लिक़ होती है लिहाज़ा रज़ा बिश्शर (शर के साथ रज़ा) न पाई गई, हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया है कि जिन उमूर से क़ज़ा मुताल्लिक़ होती है वो चार हैं-

1. *नेअमत*
2. *शिद्दत*
3. *ख़ैर*
4. *शर*

नेअमत में क़ाज़ी यानी ख़ुदाए तआला, क़ज़ा और मक़दी यानी नेअमत, सब पर राज़ी होना वाजिब है और उसके नेअमत होने के ऐतबार से उसका शुक्र भी वाजिब है और इस तौर पर इज़हारे नेअमत भी ज़रूरी है जिससे नेअमत के असर का इज़हार हो।

शिद्दत यानी मुसीबत और तकलीफ़ें इसमें भी क़ाज़ी (तक़दीर बनाने वाला) यानी ख़ुदा-ए-तआला, क़ज़ा और मक़दी यानी उस मुसीबत, सब पर राज़ी होना ज़रूरी है और उसमे सख़्ती और तकलीफ़ होने के ऐतबार से उस पर सब्र भी वाजिब है।

ख़ैर यानी भलाई और नेकी, इसमें भी ऊपर ज़िक्र तीनों चीज़ों पर रज़ामन्द होना लाज़िम है और इसमें परवरदिगार के एहसान का एतराफ़ करना कि उसने ख़ैर की तौफ़ीक़ दी, यह ज़रूरी है।

शर यानी बुराई इसमें भी क़ाज़ी यानी ख़ुदा-ए-तआला, क़ज़ा और मक़दी यानी उस बुराई पर इस ऐतबार से कि इसके साथ अल्लाह तआला की क़ज़ा का तअल्लुक़ है, रज़ामन्द होना ज़रूरी है हाँ इस ऐतबार से इसके साथ रज़ा का तअल्लुक़ नहीं हो सकता कि वह शर और बुराई है और इस शर का फ़ैसलाशुदा और क़ज़ाशुदा होना अस्ल में अल्लाह तआला के क़ाज़ी होने और उसकी क़ज़ा की जानिब ही रुजू करता है।

इसको यूँ समझो कि तुम मसलन किसी बुरे मज़हब पर रज़ा का इज़हार करो, इस ऐतबार से कि मुझे उसका इल्म और उसकी पहचान हो जाए, न कि इस ऐतबार से कि वह तुम्हारा मज़हब हो जाए, तो उस मज़हब का मालूम होना दरअस्ल तुम्हारे इल्म की तरफ़ ही रुजू करता है तो रज़ा और मुहब्बत दरहक़ीक़त उस मज़हबे बातिल से नहीं बल्कि उसके इल्म के साथ है। इसी तरह यहाँ शर से रज़ामन्द होने का मतलब उसकी बुराई पर राज़ी होना नहीं बल्कि उस पर राज़ी होना है कि यह भी ख़ुदा तआला के मुक़द्दर करने से है।

सवाल: क्या तक़दीर पर राज़ी रहने वाले शख़्स को ज़्यादती का तालिब होना दुरुस्त है?

जवाब: हाँ इस नीयत से कि मेरे लिए ख़ैर व सलाह में इज़ाफ़ा हो, ज़्यादा का तालिब दुरुस्त है और यह रज़ा बिलक़ज़ा (क़ज़ा से राज़ी होने) के ख़िलाफ़ नहीं क्योंकि इस नीयत के साथ ज़्यादती का तालिब होना, इस काम की दलील है कि वह इस पर मुकम्मल तौर से राज़ी है, इन्सान उसी वक़्त ज़्यादती का तालिब होता है जबकि वह उस पर ख़ुश हो, लिहाज़ा वह ज़्यादा का तालिब हो सकता है।

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ की आदते मुबारका थी कि जब आपके सामने दूध पेश किया जाता तो फ़रमाते:- ***"ऐ अल्लाह हमें इसमें बरकत दे और इसमें इज़ाफ़ा फ़रमा।"*** और अगर कोई और शय पेश होती तो फ़रमाते कि –***"हमारे लिए इससे बेहतर में इज़ाफ़ा फ़रमा।"*** (सुनन अबी दावूद)

और दोनों मक़ामों में कहीं भी ज़ाहिर नहीं होता कि आपﷺ ख़ुदा की मुक़द्दर शुदा चीज़ पर राज़ी नहीं थे।

सवाल: हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से यह तो मन्क़ूल नहीं कि ब नीयत ख़ैर व सलाह ज़्यादती चाहिए, जैसा कि आपने कहा?

जवाब: इस तरह के उमूर का तअल्लुक़ दिल से होता है इसलिए उमूमन इन्हें ज़बान पर नहीं लाया जाता मगर वह मुराद ज़रूर होते हैं।

चौथा आरिज़ा (दुशवारी)
मुसीबतें और तकलीफ़ें

इनमें कामयाबी की सिर्फ़ एक सूरत है और वह सब्र है, इसलिए कि ऐसे तमाम मुक़ामात पर सब्र बहुत ज़रूरी है और यह **दो** वजह से ज़रूरी है:

1. ताकि इन्सान इबादत तक पहुँच सके और अपना मक़सूद हासिल कर सके इसलिए कि इबादत का दारोमदार सब्र और मशक़्क़त बर्दाश्त करने पर है, तो जो शख़्स साबिर नहीं होगा, उससे कोई नेकी हक़ीक़त में अन्जाम को नहीं पहुँच सकती। यह इसलिए कि जो शख़्स सच्चे दिल से इबादत करेगा उसको कई तरह की मशक़्क़तें, मुसीबतें और तकलीफ़ें पेश आयेंगी।

एक तो इस बिना पर कि ऐसी कोई इबादत नहीं जिसमें मशक़्क़त न हो क्योंकि जब तक ख़्वाहिश का ख़ात्मा और नफ़्स पर सख़्ती न की जाए इबादत का कोई काम नहीं हो सकता, इसलिए कि ख़्वाहिश और नफ़्स दोनों इन्सान को इबादत से रोकते है और नफ़्स व ख़्वाहिश पर क़ाबू पाना इन्सान के लिए मुश्किलतरीन काम है।

दूसरे इसलिए कि इन्सान जब कोई नेक काम करता है तो उसमें एहतियात ज़रूरी है और एहतियात मशक़्क़त के बग़ैर नहीं हो सकती और किसी काम को एहतियात व सही तरह अन्जाम देना भी मुश्किल काम है।

तीसरे इसलिए कि दुनिया मशक़्क़त का घर है, तो जो शख़्स इसमें होगा उसे ज़रूर तरह तरह की मुश्किलात, मुसीबतें और तकलीफ़ें पेश आयेंगी। ये मुसीबतें कई तरह की हैं:

1. *रिश्तेदार, भाइयों और दोस्तों का मरना या उनका गुम हो जाना या उनसे जुदाई।*
2. *उसका तरह- तरह की ख़तरनाक बीमारियों में मुब्तला होना।*
3. *लोगों का उसे क़त्ल करके उसकी इज़्ज़त बर्बाद करना और उसके बीवी बच्चों पर ज़ुल्म करना, उसे हक़ीर जानना, उसकी ग़ीबत करना, उस पर इल्ज़ाम तराशियाँ करना।*
4. *उसके माल का बर्बाद और तबाह होना।*

और ये मुसीबतें अपने अपने दर्जे के मुताबिक़ इन्सान को ज़ख़्मी करती हैं और उसके दिल को जलाती हैं तो इन सब तकलीफ़ों में सब्र की ज़रूरत है, वर्ना ग़म व अफ़सोस और बेसब्री इन्सान को इबादत से दूर रखेगी।

चौथा यह कि आख़िरत के तलबगार की सख़्त आज़माइश होती है और उसे शदीद मेहनत में मुब्तला किया जाता है, जो शख़्स अल्लाह तआला के जितना क़रीब होगा उतना ही उसे दुनिया में मुसीबतें ज़्यादा पेश आयेंगी। हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का इरशाद है ***"लोगों में सबसे ज़्यादा अम्बिया आज़माइश में डाले जाते हैं फिर उल्मा, फिर जो उनके क़रीब हैं, फिर जो उनके क़रीब हैं।"*** (अलमुसतदरक)

जो शख़्स भी नेकी का इरादा करेगा और राहे आख़िरत इख़्तियार करेगा वह ज़रूर इन मेहनतों और मशक़्क़तों में मुब्तला होगा, तो जो शख़्स इन पर सब्र न कर सका और बर्दाश्त न कर सका वह रास्ते ही में रह जाएगा और इबादत से महरूम रह जाएगा, तो इबादत में से कुछ हासिल नहीं कर सकेगा और अल्लाह तआला ने हमें साफ़ बताया है कि हम ज़रूर तुम्हें मुसीबतों और तकलीफ़ों में आज़माइश के तौर पर मुब्तला करेंगे,

चुनांचे इरशादे बारी तआला है:-

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ

(बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुशरिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे।)

(सूरह आले इमरान, आयत-186)

फिर फ़रमाया:-

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

(और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो यह बड़ी हिम्मत का काम है।)

(सूरह आले इमरान, आयत-186)

तो गोया अल्लाह तआला इन आयात में यह फ़रमा रहा है कि अपनी जानों को मुसीबतों और तकलीफ़ें बर्दाश्त करने का आदी बना लो, तो अगर तुम इन मुसीबतों में सब्र करोगे तो वाक़ई तुम अपनी मर्दानगी का सुबूत दोगे और वाक़ई तुम्हारे इरादे मर्दों वाले होंगे, फिर जो शख़्स भी इबादत का इरादा करेगा उसके लिए ज़रूरी है कि पहले बड़े सब्र करने का इरादा करे और नफ़्स को मुसलसल बड़ी मुश्किलें बर्दाश्त करने का आदी बनाए यहाँ तक कि मौत आ जाए वर्ना वह एक ऐसी चीज़ का इरादा कर रहा है जिसका उसके पास हथियार नहीं और जिस ज़रिए से वह काम अन्जाम को पहुँच सकता है वह उसके ख़िलाफ़ करने का इरादा कर रहा है।

हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ ﵀ से मन्क़ूल है कि- *जो शख़्स आख़िरत के रास्ते तय करने का इरादा करे वह अपने अन्दर पहले मौत के चार रंग पैदा करे **सफ़ेद, सुर्ख़, स्याह** और **सब्ज़***

मौत का **सफ़ेद रंग तो भूख का** है और **स्याह लोगों की मुज़म्मत** और **सुर्ख़ मुख़ालफ़ते शैतान** और **सब्ज़ रोज़मर्रा आने वाली मुसीबतें और परेशानियों पर सब्र करना।**

सब्र करने का दूसरा फ़ायदा यह है कि इससे दुनिया व आख़िरत की भलाई नसीब होती है और निजात व कामयाबी हासिल होती है। इरशादे बारी तआला है:-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

(और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके लिए निजात की राह निकाल देगा और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो।)

(सूरह तलाक़, आयत 2,3)

इस आयत के मअना यह हैं कि जो शख़्स सब्र के ज़रिए अल्लाह तआला से डरेगा अल्लाह तआला उसे सख़्तियों से निजात देगा।

सब्र के ज़रिए इन्सान दुश्मनों पर फ़तहमन्द होता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَاصْبِرْ ؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾

(तो सब्र करो बेशक भला अन्जाम परहेज़गारों का।)

(सूरह हूद, आयत- 49)

सब्र के ज़रिए इन्सान अपनी मुराद पा लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ

(और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इस्राईल पर पूरा हुआ बदला उनके सब्र का।)

(सूरह अलआराफ़ आयत-137)

कहा गया है कि जब याक़ूब عليه السلام ने जुदाई के ग़म का तज़किरा यूसुफ़ عليه السلام को लिखा तो यूसुफ़ عليه السलाम ने जवाब में लिखा '***आपके बाप दादाओं ने सब्र किया तो कामयाब हुए, आप भी सब्र करें जैसे उन्होंने किया तो आप भी कामयाब होंगे जैसे वो हुए।***

ये दो शेर भी इसी सिलसिले में कहे गए हैं जिनका तर्जुमा पेश है:

- *मायूस हरगिज़ न हो अगरचे तुझे गुज़ारिश करते हुए अर्सा दराज़ हो जाए जबकि तूने सब्र से मदद ली हो क्योंकि तू ज़रूर वुसअत व कुशादगी से हमकिनार होगा यानी कामयाब होगा।*
- *'साबिर शख़्स कितनी बलन्द अख़लाक़ी का मज़ाहिरा करता है यहाँ तक कि वह अपने मक़सद व हाजात को पा लेता है इसी तरह ख़ुदा की बारगाह को मुसलसल दस्तक देने वाला, यहाँ तक कि उसकी मुरादों का दरवाज़ा खुल जाता है।*

सब्र का यह भी फ़ायदा है कि इससे लोगों की पेशवाई और उनकी इमामत का दर्जा मिलता है। इरशादे रब्बानी है:-

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ

(और हमने उनमें से कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बताते जबकि उन्होंने सब्र किया।)

(सूरह सजदा, आयत-24)

सब्र से इन्सान अल्लाह तआला की तारीफ़ का मुस्तहिक़ होता है। इरशादे बारी-ए-तआला है:-

إِنَّا وَجَدْنَٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

(बेशक हमने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वह बहुत रुजू लाने वाला है।)

(सूरह स़ाद, आयत-44)

सब्र से जन्नत की बशारत मिलती है और साबिर शख़्स अल्लाह तआला की रह़मत और मेहरबानी का मुस्तहिक़ होता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٥٥﴾

(और ख़ुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-155)

और अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

أُو۟لَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ

(ये लोग हैं जिन पर उनके रब की दुरूदें हैं और रह़मत।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-157)

सब्र की वजह से अल्लाह तआला इन्सान से मुहब्बत करता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٤٦﴾

(और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं।)

(सूरह आले इमरान, आयत-146)

सब्र के ज़रिए जन्नत में दर्जाते आलिया अता होंगे। इरशाद है:-

أُو۟لَٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ ٱلْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا۟

(उनको जन्नत का सबसे ऊँचा बालाख़ाना इनाम मिलेगा बदला उनके सब्र का।)

(सूरह फ़ुरक़ान, आयत-57)

सब्र के तुफ़ैल इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ से करामत और इज़्ज़त का मुस्तहिक़ होता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ بِمَا صَبَرۡتُمۡ

(सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला।)

(सूरह रअद, आयत-24)

सब्र से बन्दे को आख़िरत में बेहिसाब बेशुमार सवाब अता होगा जो लोगों के वहम व गुमान से बहुत ही बाला तर होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوۡنَ اَجۡرَهُمۡ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ۝١٠

(साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बेगिनती।)

(सूरह अज़्ज़ुमर, आयत-10)

सुब्हानल्लाह उस बुज़ुर्ग और बरतर ज़ात ने इन्सान पर किस क़द्र करम फ़रमाया और सब्र के सिले में जो ऊपर गुज़री दस करामतें और फ़ज़ीलतें दुनिया व आख़िरत में परवरदिगार इन्सान को अता फ़रमाता है, यह महज़ एक लम्हा भर सब्र के बदले में, तो तुम पर साफ़ हो गया कि दुनिया व आख़िरत की ख़ैर और भलाई सब्र में पोशीदा है। हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का इरशादे गिरामी है कि- ***"सब्र जैसी कुशादा और वसीअ भलाई और ख़ैर और कोई इन्सान को अता नहीं की गई"*** (सही बुख़ारी)

हज़रत उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه से मरवी है आप رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि- ***मोमिनीन की हर तरह की भलाई एक लम्हा भर के सब्र में है।***

एक शायर ने इस मज़मून को बहुत अच्छे अंदाज़ में पेश किया है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *सब्र हर उम्मीद की चाबी है और हर भलाई सब्र से ही हासिल हो सकती है।*
- *तुम सब्र करो अगरचे सब्र में काफ़ी अर्सा गुज़र जाए क्योंकि बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि एक दुशवार शय आख़िर को मुमकिन हो जाती है।*
- *और बहुत दफ़ा सब्र से ऐसे उमूर पर कामयाबी हासिल कर ली गई है जिनके मुताल्लिक़ यह कहा जाता था कि इनका होना बहुत मुश्किल है।*

एक शायर इसी मज़मून को यूँ अदा करता है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *मैं सब्र करता हूँ और सब्र मेरी इबादत हो चुका है और तुम्हारे लिए सब्र की फ़ज़ीलत में यही काफ़ी है कि ख़ुदा तआला ने सब्र की तारीफ़ की है।*
- *मैं सब्र पर क़ायम रहूँगा यहाँ तक कि अल्लाह तआला हमारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे आसान का या तंगी का।*

जब तुम मालूम कर चुके कि सब्र के ये फ़ज़ाइल हैं तो तुम पर लाज़िम है कि इस नफ़ीस और उम्दा ख़सलत को अपने में पैदा करो और इसको हासिल करने के लिए पूरी कोशिश करो, इस ख़सलत के हासिल हो जाने पर ज़रूर तुम कामयाब लोगों में से हो जाओगे। और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ का मालिक है।

सवाल: सब्र की हक़ीक़त और उसका हुक्म बयान कीजिए?

जवाब: लुग़त में सब्र के मअना रोकने के हैं जैसे कि क़ुरआन में यह लफ़्ज़ रोकने के मअना में इस्तेमाल हुआ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

(और अपनी जान उनसे मानूस रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं।)

(सूरह कहफ़, आयत-28)

अल्लाह तआला को भी साबिर इस वजह से कहा जाता है कि वह मुजरिमों से अज़ाब रोके रखता है और जल्दी उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करता और इस्लाह के तौर पर सब्र दिल की कोशिशों में से एक कोशिश का नाम है क्योंकि सब्र नफ़्स को ***जज़ाअ*** (बेसब्री या घबराहट) से रोकने का नाम है और जज़ाअ की उल्मा ने यह तारीफ़ की है कि तकलीफ़ के वक़्त अपनी परेशानी और बेचैनी का ज़िक्र करना और बाज़ ने जज़ाअ के ये मअना किए हैं कि अपने ज़ोर से तंगी से निकलने का इरादा करना और सब्र इस जज़ाअ के तर्क का नाम है।

सब्र किस तरह पैदा किया जाए?

इसका तरीक़ा यह है कि आदमी शिद्दत और उसके वक़्त को याद करे और यह ख़्याल करे कि न तो मेरी बेसब्री से इसमें इज़ाफ़ा होगा और न कमी और न इसमें जल्दी होगी न देरी, तो फिर जज़ाअ (रोना धोने) और बेसब्री से क्या फ़ायदा? बल्कि इसमें बजाय फ़ायदे के नुक़सान और ख़तरा है और अपने अन्दर सब्र की ख़ासियत पैदा करने की सबसे आला चीज़ यह है कि आदमी सब्र के इस बदले का तसव्वुर करे जिसका परवरदिगार ने वादा फ़रमाया है। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

फ़स्ल

इबादत के लिए फ़राग़त हासिल करने की ख़ातिर तुम पर लाज़िम है कि इन अवारिज़ और इनकी वजहों को अपने रास्ते से हटा कर इस अहम और सख़्त घाटी को पार करो वर्ना अगर तुम इन दुशवारियों और रुकावटों में मुब्तला रहे तो तुम्हें अपना मक़सूद याद करने की मोहलत भी नहीं मिलेगी, और यह कि तुम मक़सूद को पाओ और उसको हासिल करो और इन अवारिज़ में से हर एक आरज़ा (दुशवारी) अलग तरह की मशग़ूलियत व मसरूफ़ियत रखता है बाज़ बहुत जल्द इन्सान को मशग़ूल कर लेते हैं और बाज़ देर से।

फिर इन चार (यानी रिज़्क़, सफ़र के ख़तरात, क़ज़ा-ए-इलाही पर रज़ा और मुसीबतों) में से सबसे बड़ा और सबसे सख़्त तरीन रिज़्क़ का मामला है और इसकी तदबीर है क्योंकि मख़लूक़ के लिए सबसे बड़ी मुसीबत यह रिज़्क़ ही है जिसकी दौड़-भाग ने मख़लूक़ात को मुसीबत में मुब्तला और आजिज़ कर दिया है और दिलों को इबादत से ग़ाफ़िल कर रखा है और लोगों को बेपनाह फ़िक्रों और परेशानियों में मुब्तला कर दिया है और उम्रों को बर्बाद कर दिया है और यह रिज़्क़ ही की वजह से इन्सान बड़े बड़े गुनाहों में पड़ा है। और रिज़्क़ का मामला ही लोगों को अल्लाह तआला की इताअत से हटा कर ख़िदमते दुनिया और मख़लूक़ की ख़िदमत की वजह बना है, तो लोग इस रिज़्क़ के धंधे में फंस कर यादे हक़ से ग़फ़लत और गुनाहों की

तारीकी में डूब जाते हैं और रिज़्क़ की तलाश में भाग दौड़, परेशानी और ज़िल्लतख़्वारी में उम्र को बर्बाद कर देते हैं और अल्लाह तआला के दरबार में आमाल से मुफ़लिस और क़ल्लाश होकर पेश होते हैं यानी बग़ैर नेक आमाल किए अल्लाह के पास पहुँचते हैं और अगर ख़ुदा तआला की रहमत उनके शामिल हाल न हो तो परेशानकुन हिसाब और तकलीफ़देह अज़ाब में मुब्तला होते हैं।

देखिए इस रिज़्क़ के मामले में अल्लाह तआला ने किस कसरत के साथ आयात नाज़िल फ़रमाई हैं और अल्लाह तआला ने किस क़द्र वादे किए हैं और रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी के मुताल्लिक़ तवक्कुल की तलक़ीन करते आये हैं और लोगों के लिए सही राह की वज़ाहत करते आये हैं और उल्मा ने इस सिलसिले में सैकड़ों किताबें लिखी हैं और तरह तरह की मिसालें देकर समझाते रहते हैं और अल्लाह तआला के ग़ज़ब व मुआख़िज़ा से डराते रहते हैं लेकिन अफ़सोस कि लोग इसके बावजूद राहे हिदायत पर नहीं चलते और तक़वा इख़्तियार नहीं करते और रिज़्क़ के बारे में मुतमइन नहीं होते बल्कि वह रिज़्क़ की तलाश में बेहोशी की हद तक पहुँच चुके हैं हमेशा इस बात से डरते हैं कि कहीं सुबह या शाम को खाना फ़ौत न हो जाए और इस ग़फ़लत की अस्ल और बड़ी वजह आयाते क़ुरआनी में ग़ौर व फ़िक्र की कमी और अल्लाह तआला की क़ुदरतों में फ़िक्र की कमी और रसूलुल्लाह ﷺ के मुक़द्दस कलाम से नसीहत हासिल न करना, पुराने बुज़ुर्गाने दीन के इरशादात में ग़ौर व फ़िक्र न करना है और इसके साथ साथ लोग शैतान के वसवसों का शिकार हो चुके हैं और जाहिलों की बातों को पसन्द करने लगे हैं यहाँ तक कि इब्लीस लईन उन पर मुकम्मल तौर पर मुसल्लत हो चुका है और ग़लत आदतें उनमें घर कर चुकी हैं, इस तरह लोग एतेक़ाद व यक़ीन में कमज़ोरी के मर्ज़ का शिकार हो चुके हैं।

लेकिन असहाबे बसीरत (दूर की नज़र रखने वाले लोग) रियाज़त व मुजाहिदा और हिम्मत वाले लोग जो रब तआला के बरगुज़ीदा बन्दे हैं वो ख़ुदा तआला की रज़ा पर राज़ी हैं इसलिए वो दुनिया के सबबों को ख़ातिर में नहीं लाते उन्होंने ख़ुदा तआला की रस्सी यानी दीन को मज़बूती से थाम लिया है और मख़लूक़ से पूरी तरह बेनियाज़ हो गए हैं, इन्हें रब तआला की

आयतों पर पूरा यक़ीन है वो उसके बताए हुए ***सिराते मुस्तक़ीम*** पर ही निगाह रखते हैं, रिज़्क़ के सिलसिले में शैतान के वसवसों, मख़लूक़ की तरह तरह की बातों और नफ़्से ख़बीस के फ़रेब में नहीं आते और जब इस सिलसिले में शैतान या कोई इन्सान या उनका नफ़्स वसवसा डालने की कोशिश करता है तो वह पूरी तरह मुक़ाबला करते हैं और मुकम्मल तौर से मुख़ालफ़त करते हैं यहाँ तक कि मख़लूक़ इनसे मुँह फेर लेती है और शैतान इनसे जुदा हो जाता है और नफ़्स इनका फ़रमाबरदार हो जाता है और इन्हें सिराते मुस्तक़ीम पर इस्तेहकाम (मज़बूती) और ज़्यादा नसीब हो जाता है।

इस सिलसिले में हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम ﵀ के मुताल्लिक़ यह हिकायत मन्क़ूल है कि- *"जब आपने ज़ादे राह (सफ़र के सामान) के बग़ैर एक जंगल पार करने का इरादा किया तो इब्लीस ने आकर आपको यूँ ख़ौफ़ दिलाने की कोशिश की कि यह एक ख़तरनाक जंगल है और आपके पास न तो ज़ादे राह है और न ही इसे तय करने का कोई और ज़रिया है। शैतान की तरफ़ से यह ख़ौफ़ दिलाने पर आपने पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं ज़रूर यह ख़ौफ़नाक जंगल ज़ादे राह के बग़ैर तय करूँगा और सिर्फ़ बग़ैर ज़ादे राह ही तय नहीं करूँगा बल्कि हर मील पर 1000 रकअत नफ़्ल अदा करूँगा। चुनांचे आपने जो इरादा फ़रमाया पूरा कर दिखाया और आप बारह बरस इस जंगल में रहे यहाँ तक कि जब हारून रशीद इस जंगल से हजे बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से गुज़रा तो उसने देखा कि आप एक जगह नवाफ़िल में मशग़ूल हैं, लोगों ने उसे बताया कि यह नमाज़ पढ़ने वाले बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम ﵀ हैं तो उसने आप से कहा 'ऐ अबू इसहाक़ आप इस हाल में अपने आपको कैसा पाते हैं?' तो आपने इसके जवाब में यह दो शेर पढ़े:-*

- *हम अपने दीन को बर्बाद करके दुनिया सँवारने की कोशिश करते हैं तो न हमारा दीन रहता है और न ही दुनिया सँवरती है।*
- *तो वह शख़्स कितना मुबारक और ख़ुशक़िस्मत है जिसने हर मामले में अपने रब की रज़ा को ही तरजीह दी और आख़िरत की निजात की उम्मीद पर दुनिया को क़ुर्बान कर दिया।*

बाज़ स़ालेहीन (नेक लोगों) के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि- *"वह किसी जंगल में थे कि इब्लीस उनके पास आया और इस तरह वसवसे डालने लगा कि आप इस वीराने में ज़ादे राह से ख़ाली हाथ हैं और यह ऐसा जंगल है जिसमें हलाक करने वाली चीज़ें बहुत हैं और इसमें न तो कहीं आबादी का निशान है और न ही इसमें किसी इन्सान का गुज़र है, तो उस बुज़ुर्ग ने उस शैतानी वसवसे को महसूस करके पक्का इरादा कर लिया कि मैं ज़ादे राह के बग़ैर ही इसको तय करूँगा और मैं इसमें चलता रहूँगा और न तो किसी से कोई शय लूँगा और न उस वक़्त तक कुछ खाऊँगा जब तक कि मेरे मुँह में जबरन घी और शहद वग़ैरा न डाला जाए। यह इरादा करके आपने उस जंगल के बिल्कुल ही उजाड़ हिस्से की तरफ़ अपना रुख़ कर लिया और उसकी सियाहत (सैर) में मशग़ूल हो गए। वह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं 'मैं इसमें घूमता रहा यहाँ तक कि एक रोज़ मैंने देखा कि एक क़ाफ़िला रास्ता भूल कर मेरी तरफ़ को आ रहा है मैं उन्हें देखते ही ज़मीन पर लेट गया, ताकि वो मुझे न देख पायें लेकिन ख़ुदा की शान कि वो मेरी तरफ़ ही सीधे चलते रहे यहाँ तक कि मेरे सर पर आ खड़े हुए, मैंने आँखें बन्द कर लीं तो वो मेरे बिल्कुल ही क़रीब खड़े होकर एक दूसरे से कहने लगे कि मालूम होता है कि इस शख़्स का सफ़रे ख़र्च ख़त्म हो चुका है और भूख प्यास की वजह से गिरा हुआ है इसलिए घी और शहद लाओ कि इसके हलक़ में डालें ताकि वह होश में आये चुनांचे वह घी और शहद लाए। मैंने अपना मुँह मज़बूती से बन्द कर लिया तो उन्होंने छुरी मँगवा कर मेरा मुँह ज़बरदस्ती से खोल लिया तो मैं हँस पड़ा और मैंने मुँह खोल दिया। मेरी हँसी को देख कर वह कहने लगे कि तुम तो कोई पागल हो। तो मैंने जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम मैं मजनूं या पागल हरगिज़ नहीं हूँ। और मैंने शैतान के आने और उसके वसवसे डालने से उन्हें आगाह किया जिसे सुन कर वह बहुत ही ताज्जुब करने लगे।*

एक और बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि- *"तालिबे इल्मी के ज़माने में सफ़र के दौरान मैंने एक ऐसी मस्जिद में क़याम किया जो आबादी से काफ़ी फ़ासले पर थी और मैं अपने मशाइख़ के तरीक़ा-ए-कार के मुताबिक़ सफ़र ख़र्च से ख़ाली हाथ था। इब्लीस ने आकर वसवसा डालना शुरू किया कि यह मस्जिद आबादी से बहुत दूर है इसमें क़याम के बजाय अगर तू किसी ऐसी*

मस्जिद में क़याम करे जो आबादी में हो तो वहाँ तेरे खाने पीने का इन्तेज़ाम हो सकेगा। मैंने उसके जवाब में कहा कि मैं यहीं रहूँगा और ख़ुदा की क़सम मैं हलवे के सिवा और कोई शय खाऊँगा भी नहीं और हलवा भी उस वक़्त तक नहीं खाऊँगा जब तक एक एक लुक़्मा करके मेरे मुँह में न डाला जाए चुनांचे मैंने वहाँ नमाज़े इशा अदा की और मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर दिया जब रात का शुरू का हिस्सा गुज़र गया तो अचानक किसी शख़्स ने जिसके हाथ में शमा थी मस्जिद का दरवाज़ा खटखटाया, जब उसने काफ़ी ज़ोर ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाना शुरू किया तो मैंने उठ कर दरवाज़ा खोला मैंने देखा कि एक बुढ़िया है जिसके साथ एक नौजवान है, बुढ़िया दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुई और मेरे सामने हलवे से भरा हुआ एक थाल रख दिया और कहने लगी यह नौजवान मेरा लड़का है, मैंने यह हलवा इसके लिए तैयार किया था और गुफ़्तगू के दौरान इसने क़सम खा ली कि मैं यह हलवा अकेला नहीं खाऊँगा बल्कि किसी मुसाफ़िर के साथ खाऊँगा या उस मुसाफ़िर के साथ जो उस मस्जिद में है इसलिए तू इसे खा, अल्लाह तआला तुझ पर रहम करे, इसके बाद बुढ़िया ने लुक़्मे बना कर एक मेरे मुँह में और एक अपने लड़के के मुँह में देना शुरू किया यहाँ तक कि हमने सेर होकर खाया फिर वह नौजवान और बुढ़िया वापस चले गए और मैंने मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर लिया। इस वाक़िए पर मैं दिल ही दिल में ताज्जुब करता रहा।"

ऐ मुख़ातिब! ये और इस तरह के हज़ारों वाक़ियात है जो सालेहीन से मुजाहिदे और शैतान की मुख़ालफ़त के तौर पर हुए हैं। इस तरह के वाक़ियात से तुम्हें तीन तरह के फ़ायदे हासिल होते हैं।

पहला फ़ायदा:- *यह कि तुम जान लो जो रिज़्क़ मुक़र्रर हो चुका है वह बहरहाल इन्सान को मिलेगा।*

दूसरा फ़ायदा:- *यह कि तुम्हें मालूम हो जाए कि रिज़्क़ और उसमें तवक्कुल एक अहम शय है और यह कि रिज़्क़ के मामले में शैतान के फ़रेब और वसवसे निहायत हौलनाक और अज़ीम हैं यहाँ तक कि ऊपर ज़िक्र किये गये ज़ाहिद लोग, अइम्मा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन भी इन वसवसों से महफ़ूज़ न रह सके और इनके इस क़द्र मुजाहिदों और रियाज़तों के बावजूद इन्हें गुमराह करने से मायूस न हुआ यहाँ तक कि इन अइम्मा-ए-किराम को*

इन वसवसों से महफ़ूज़ रहने के लिए अक़्लों को हैरान कर देने वाले ज़रिए इख़्तियार करने पड़े और ख़ुदा की क़सम जो शख़्स सत्तर बरस से मुजाहिदों और रियाज़तों से मसरूफ़ हो, वह भी शैतानी वसवसों से महफ़ूज़ नहीं हो सकता। जिस तरह बहुत से ग़ाफ़िल लोग इसके वसवसों व ख़तरात से महफ़ूज़ नहीं रह सकते और अगर नफ़्स व शैतान का ज़रा भी दाँव चले तो वह उसे हलाक करके रख दें, जिस तरह वह ग़ाफ़िल व ग़ुरूर में मुब्तला शख़्स को हलाक कर देते हैं। और इसमें अक़्लमन्दों के लिए ज़रूर देख कर सीखना है।

तीसरा फ़ायदा:- *अइम्मा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन के इस तरह के वाक़ियात से तीसरा फ़ायदा यह हासिल होता है कि इनसे पता चलता है कि रिज़्क़ के सिलसिले में तवक्कुल की मन्ज़िल शदीद कोशिश और बहुत ज़्यादा रियाज़त के बग़ैर तय नहीं हो सकती और वो अइम्मा-ए-किराम अगरचे तुम्हारी तरह गोश्त, ख़ून, बदन और रूह से ही बने थे बल्कि इनके बदन तुमसे ज़्यादा कमज़ोर और इनके आज़ा तुमसे ज़्यादा कमज़ोर और उनकी हड्डियाँ तुमसे ज़्यादा पतली थीं लेकिन उनमें क़ुव्वते इल्म थी नूरे यक़ीन था और दीन के मामले में उनकी हिम्मत क़वी थी, इसलिए वह इस क़द्र सख़्त मुजाहिदे करते रहे यहाँ तक कि उन बुलन्द मक़ाम पर पहुँचे। इन बुज़ुर्गाने दीन की ज़िन्दगियों के मुक़ाबले में ज़रा अपनी तरफ़ भी ग़ौर करो तुम्हें चाहिए कि इस लाइलाज़ बीमारी की दवा करो, ताकि आख़िरत में फ़लाह पा सको।*

फ़स्ल

अब मैं इस सिलसिले में तुम्हें चन्द ऐसे नुकते बताता हूँ जो मेरे इल्म में आये हैं और जो पूरा ध्यान रख कर सुनने से तुम्हारे दिल में बैठ जायेंगे और रिज़्क़ के बारे में अल्लाह तआला पर भरोसा करने के मसअले में ज़्यादा कशमकश करने से बच जाओगे और उन पर अमल करने और उनमें ग़ौर करने से तुम्हें साफ़ तौर पर राहे हक़ की तरफ़ रहनुमाई नसीब हो जाएगी।

(वल्लाहु सुब्हानहुल मुवफ़्फ़िक़)

पहला नुकता: तुम्हें यह यक़ीन होना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने अपनी मुक़द्दस किताब में तुम्हारे रिज़्क़ की किफ़ालत का ज़िम्मा उठा लिया है, इस चीज़ को तुम यूँ समझो कि कोई दुनियावी बादशाह तुमसे यह वादा करे कि आज शाम तुम्हारी मेरे यहाँ मेहमानी है और तुम्हें इसके मुताल्लिक़ यह *हुस्ने ज़न* (नेक नीयत) भी हो कि यह अपनी गुफ़्तगू में सच्चा है झूठा नहीं और वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता बल्कि अगर एक बाज़ारी या कोई यहूदी या नसरानी (ईसाई) या कोई आतिश परस्त (मजूसी) जिसका ज़ाहिर हाल अच्छा हो वह तुमसे इस तरह का कोई वादा करे तो तुम ज़रूर उसकी बात पर ऐतमाद करोगे और तुम उसकी बात पर मुतमइन हो जाओगे और रात के खाने के सिलसिले में उसकी बात पर भरोसा करके बेफ़िक्र हो जाओगे।

जबकि तुम इन ऊपर गुज़रे लोगों के सिर्फ़ ज़ाहिर हाल और अपने हुस्ने ज़न की वजह से उन पर फ़ौरन भरोसा कर लेते हो तो अफ़सोस है कि अपने परवरदिगार की बात पर ऐतमाद नहीं करते जिसने रिज़्क़ के मुताल्लिक़ निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ज़मानत व क़िफ़ालत का वादा फ़रमाया है, सिर्फ़ वादा ही नहीं फ़रमाया बल्कि क़ुरआन मजीद में इस रिज़्क़ के वादे पर क़समें खाई हैं, अफ़सोस कि अल्लाह तआला के इन ताकीदी वादों के बावजूद रिज़्क़ के मामले में तुम्हारा दिल मुतमइन नहीं होता और अल्लाह तआला की किफ़ालत व ज़मानत पर तुम्हारे दिल में सुकून नहीं आता और तुम अल्लाह तआला की तक़सीमे अज़ली (रोज़े अज़ल से बँट चुके रिज़्क़) पर नज़र नहीं करते बल्कि तुम्हारा दिल तशवीश में मुब्तला और बेचैन रहता है काश कि अल्लाह तआला के इन ताकीदी वादों पर ऐतमाद न करने के वादे के वबाल का राज़ तुम पर वाज़ेह हो जाए। हज़रत अली ﷺ इन सिलसिले में फ़रमाते हैं जिनका तर्जुमा यह है:-

- ***क्या तुम रब तआला के सिवा दूसरों से रिज़्क़ तलब करते फिरते हो, और इस तरह तुम ज़माने के अवाक़िब व मुसीबतों से महफ़ूज़ होने के फ़ुज़ूल ख़्याल में मुब्तला हो।***
- ***अफ़सोस कि तुम एक मुशरिक सर्राफ़ के ज़ामिन बनने पर रज़ामन्द हो जाते हो मगर अपने परवरदिगार की ज़मानत पर तुम्हें भरोसा नहीं।***

- ***गोया तुमने रिज़्क़ के मुताल्लिक़ आयाते ख़ुदावन्दी को पढ़ा ही नहीं इसलिए तुम राहे हक़ से जुदा और यक़ीन से फिरे हुए मालूम होते हो।***

रिज़्क़ के मामले में अल्लाह तआला पर ऐतमाद न करना एक ऐसी तबाह कुन चीज़ है जो इन्सान को शक व शुबह में मुब्तला कर देती है और ऐसे शख़्स के मुताल्लिक़ ख़तरा है कि उससे उसका दीन और दीन की मारिफ़त छीन न ली जाए। (*अलअयाज़ुबिल्लाह*)

इसीलिए अल्लाह पाक ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:-

وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

(और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है।)

(सूरह अलमाइदह, आयत-23)

और फ़रमाया:-

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾

(और मुसलमानों का अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।)

(सूरह अलमुजादिलह, आयत-10)

दीन का सही एहसास रखने वाले ईमानदार के लिए सिर्फ़ यही एक नुकता काफ़ी है। *(वलाहौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)*

दूसरा नुकता: क़ुरआन की आयात और इरशादाते नबवी ﷺ से निहायत सेहत के साथ यह बात साबित है कि हर एक का रिज़्क़ अज़ल से तक़सीम हो चुका है, इसलिए तुम्हें इस तक़सीमे ख़ुदावन्दी पर यक़ीन होना चाहिए और इस बात का भी एतेक़ाद होना चाहिए कि इसकी तक़सीम में तब्दीली नामुमकिन है, तो अगर तुम इन दलाइल के बावजूद तक़सीमे अज़ली (रोज़े अज़ल से बँट चुके रिज़्क़) का इन्कार करो, या उसमें रद्दो बदल को जाइज़ ख़्याल करो तो यह दरवाज़ा-ए-कुफ़्र पर दस्तक देना है। (*नऊज़ुबिल्लाहि मिन्ह* यानी इस बात से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) और जब तुम्हें इस बात का यक़ीन हो चुका कि इसमें रद्दो बदल नामुमकिन है तो इस सिलसिले में एहतिमाम व तलब व जुस्तजू से क्या फ़ायदा। इस अक़ीदे के होते हुए फिर तलाश व जुस्तजू दुनिया में ज़िल्लत व ख़्वारी और

आख़िरत में तंगी और ख़सारे का सबब है। इसीलिए हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया है कि- "***मछली और बैल की पुश्त पर लिखा हुआ है कि यह फ़ुलाँ इब्ने फ़ुलाँ का रिज़्क़ है तो रिज़्क़ के मामले में लालची शख़्स को बेजा मशक़्क़त के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा।***"

मेरे शैख़ رحمة الله عليه फ़रमाते हैं- "*बेशक जिन लुक़्मों का चबाना तेरे मुक़द्दर में हो चुका है उन्हें कोई दूसरा नहीं चबा सकता, तू अपने हिस्से के रिज़्क़ को इज़्ज़त के साथ खा ज़िल्लत व ख़्वारी से न खा।*"

दानिशमन्द शख़्स के लिए यह दूसरा नुकता भी एक जामेअ नुकता है।

तीसरा नुकता: यह नुकता मैंने अपने शैख़ رحمة الله عليه से सुना है जिसे उन्होंने अपने किसी उस्ताद से नक़्ल फ़रमाया है कि मेरे शैख़ के उस्ताद رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि- " *रिज़्क़ के मामले में जिस चीज़ से मुझे सुकून हुआ वह यह है कि मैंने अपने नफ़्स से कहा कि यह रिज़्क़ ज़िन्दा इन्सानों के लिए ही तो है, मुर्दे को रिज़्क़ से क्या तअल्लुक़ और जिस तरह इन्सानी ज़िन्दगी और ख़ज़ाने अल्लाह तआला के दस्ते क़ुदरत में हैं उसी तरह रिज़्क़ भी उसके दस्ते क़ुदरत में है चाहे मुझे दे और चाहे न दे, इस सिलसिले में अल्लाह तआला की मर्ज़ी मेरे इल्म से छुपी हुई है, वही जैसे चाहता है तदबीर करता है और मुझे अपने नफ़्स को सुकून व क़रार में रखना चाहिए।*" तहक़ीक़ करने वालों के लिए यह नुकता भी बहुत मुफ़ीद है।

चौथा नुकता: अल्लाह तआला हमारे रिज़्क़ का ज़ामिन व कफ़ील है मगर इस हद तक जो ग़िज़ा और तरबीयत में काम दे सके, ज़्यादा का नहीं, बाक़ी रहा खाना पीना, तो जब बन्दा इबादते इलाही के लिए लोगों से जुदाई इख़्तियार कर ले और अल्लाह तआला पर पूरी तरह भरोसा करे तो बाज़ वक़्त खाने पीने के ज़ाहिरी असबाब उससे रोक लिए जाते हैं और ज़ाहिरी असबाब के रुक जाने पर न तो बन्दे को ग़मगीन होना चाहिए और न ही उसकी कुछ परवाह करना चाहिए, इसलिए कि जब बात की हक़ीक़त इस पर ज़ाहिर है कि अगर मेरी ज़िन्दगी बाक़ी है तो अल्लाह तआला ने मेरे बदन को क़ायम रखने का वादा किया हुआ है और अल्लाह पर तवक्कुल से मक़सूद भी सिर्फ़ इसी क़द्र है कि वह हलाक न हो और उसका जिस्म क़ायम रहे और अल्लाह तआला ज़रूर इसकी ग़ैबी इमदाद फ़रमाएगा ताकि जब तक उसकी

ज़िन्दगी है इबादत और अल्लाह पाक की इताअत में वह बन्दा पूरी तवज्जोह से मशग़ूल रहे और मक़सूद भी यही है कि किसी न किसी तरह इन्सान का जिस्म क़ायम रहे ताकि वह रब तआला की याद में मसरूफ़ रहे और ख़ुदा तआला को क़ुदरत है कि जब तक चाहे किसी बन्दे का बदन क़ायम रखे चाहे ग़िज़ा खाने, पानी पीने के ज़रिए बाक़ी रखे या गारे या मिट्टी या तस्बीह व तहलील के ज़रिए बाक़ी रखे, जैसे मलाइका तस्बीह व तहलील से ज़िन्दा हैं, और चाहे तो बग़ैर किसी सबब के बाक़ी रखे और मक़सूद तो इबादत और ताअत के ख़ातिर जिस्म का सलामत रखना है चाहे जिस तरह भी बाक़ी रहे, बन्दे को खाने पीने, शहवतों (ख़्वाहिशों) को पूरा करने और दुनियावी लज़्ज़तों के लिए वह पैदा नहीं किया गया कि ख़्वामख़ाह इसके लिए मुरग़्ग़न ग़िज़ायें ही ज़रूरी हैं।

हमारे इस बयान से साफ़ हो गया कि ऐसे हालात में ज़ाहिरी असबाब का बिल्कुल ऐतबार नहीं क्योंकि यह चीज़ बुज़ुर्गाने दीन और उम्मत के ज़ाहिदीन के दिलों में पूरी तरह बैठी हुई थीं इसलिए वह दूर दराज़ के सफ़र, कई कई रातें और दिन खाए पिए बग़ैर काट लेते थे, चुनांचे इनमें से बाज़ दस दस रोज़ तक नहीं खाते थे और बाज़ एक एक माह और बाज़ दो दो माह बग़ैर कुछ खाए पिए गुज़ार लेते थे और इसके बावजूद उनकी बदनी क़ुव्वत बहाल रहती थी।

और बाज़ ऐसे भी थे जो सिर्फ़ रेत फाँक लेते थे और वही उनको ग़िज़ा का काम दे जाती थी जैसा कि हज़रत सुफ़यान सौरी ﵀ के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि- *"मुझे एक दफ़ा हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम ﵀ मिले और कहने लगे कि एक माह से मैंने कुछ नहीं खाया पिया बल्कि दो माह से और इस दो माह के अरसे में सिर्फ़ एक दफ़ा एक शख़्स ने ख़ुदा की क़सम देकर कुछ थोड़े से अंगूर खिला दिए और इस बात पर मैं अब तक अपने शिकम का शाकी (यानी अपने पेट की शिकायत करने वाला)* हूँ।

मैं कहता हूँ ऐ मुख़ातिब! तुझे ऐसी हिकायत और पुराने बुज़ुर्गों के ऐसे वाक़ियात सुन कर ताज्जुब नहीं करना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला हर शय पर क़ादिर है और इस सिलसिले में तुम्हारा वहम यूँ दूर किया जा सकता है बाज़ मरीज़ एक एक माह और दो दो माह कुछ खाए पिए बग़ैर ज़िन्दा रहते

हैं हालांकि बीमार जिस्मानी तौर पर तन्दरुस्त आदमी से ज़्यादा कमज़ोर होता है और जो शख़्स ऐसे तवक्कुल में भूख से हलाक हो जाए तो इसका मतलब यह है कि उसकी ज़िन्दगी सिर्फ़ इतनी ही थी न यह कि ख़ुदा पर तवक्कुल करने से वह मर गया, जिस तरह बाज़ लोग ख़ूब सेर होकर खा लेने की वजह से मर जाते हैं और मुझ तक अगर अबू सईद ख़र्राज़ ﷺ की यह बात पहुँची है कि आप ने फ़रमाया कि- *"ग़िज़ा के सिलसिले में मेरा दस्तूर था कि हर तीसरे रोज़ अल्लाह तआला कहीं न कहीं से इन्तिज़ाम कर देता था, एक दफ़ा मुझे एक जंगल उबूर करना पड़ा, इस दौरान पूरे तीन रोज़ गुज़रने पर खाने पीने की कोई सूरत मुहय्या न हो सकी आख़िर चौथे रोज़ मैंने कुछ कमज़ोरी महसूस की और एक जगह ज़रा आराम के लिए बैठ गया तो अचानक ग़ैब से आवाज़ सुनाई दी ऐ अबू सईद क्या तू यह चाहता है कि ज़रूर तेरे लिए ख़ुराक ही मुहय्या हो या तुझे सिर्फ़ इस क़द्र काफ़ी है कि तुझे चलने फिरने की क़ुव्वत दे दी जाए? मैंने अर्ज़ किया मुझे सिर्फ़ क़ुव्वत काफ़ी है चुनांचे इसके साथ ही कमज़ोरी जाती रही और मैं मुसलसल बारह रोज़ कुछ खाए पिए बग़ैर सफ़र करता रहा और मुझे कुछ तकलीफ़ न हुई।"*

तो जब बन्दा देखे कि खाने पीने के ज़ाहिरी असबाब में रुकावट हो रही है और उसका ख़ुदा तआला पर तवक्कुल भी हो तो उसे यक़ीन रखना चाहिए कि अल्लाह पाक ज़रूर ग़ैबी क़ुव्वत से इमदाद फ़रमाएगा, तो असबाब की बन्दिशों पर परेशान न हो बल्कि अल्लाह तआला की ज़ाते करीम का कसरत से शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उसने अपने ख़ुसूसी एहसान, करम नवाज़ी और मेहरबानी से मशक़्क़त से बचा कर ग़ैबी मदद से सरफ़राज़ फ़रमाया और अस्ल मक़सद तक पहुँचाया और खाने पीने के ज़ाहिरी असबाब की परेशानी के बोझ से निजात अता फ़रमाई और ख़र्क़े आदत (करामत) के तौर पर इसे क़ुव्वत अता फ़रमाई और खाए पिए बग़ैर अपनी याद की क़ुदरत नसीब फ़रमाई और उसके हाल को फ़िरिश्तों के हाल जैसा कर दिया और जानवरों और आम लोगों के हाल से बुलन्द कर दिया और उसे अपने क़ुर्ब की इज़्ज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

हमारे इस बयान में संजीदगी से ग़ौर करो ताकि तुम्हें बहुत फ़ायदा हासिल हो इन्शाअल्लाह तआला।

मैं कहता हूँ शायद तू यह कहे कि रिज़्क़ के मौज़ू पर तुमने गुफ़्तगू का सिलसिला ख़िलाफ़े मामूल बहुत बढ़ा दिया है हालांकि तुम कह चुके हो कि इस किताब में मुख़्तसर करने का दामन हाथ से नहीं छूटेगा तो मैं कहता हूँ कि ख़ुदा की क़सम रिज़्क़ का मामला जिस क़द्र अहम और नाज़ुक है इसकी निसबत यह बयान बहुत ही थोड़ा और छोटा है क्योंकि रिज़्क़ एक ऐसी चीज़ है जिस पर दुनिया व दीन के तमाम उमूर का दारोमदार है तो इबादते ख़ुदावन्दी के लिए जिसकी हिम्मत मज़बूत हो, उसे चाहिए कि हमारे बयान की बातों पर मज़बूती से अमल करे और इसके मुताल्लिक़ इस्लामी अहकाम की पूरी रिआयत मलहूज़ रखे और अगर वह ऐसा नहीं कर सकता तो वह मक़सूद से बहुत दूर है और वह चीज़ जिससे तुम पर इस काम का राज़ खुले। रिज़्क़ के मामले में उल्माए हक़्क़ानी और बुज़ुर्गाने दीन इस क़द्र बसीरते कामिला (यानी हक़ को पहचानने वाली निगाह) के मालिक थे, कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की बुनियाद ही अल्लाह तआला पर तवक्कुल, इबादत की तरफ़ पूरी तवज्जोह और मख़लूक़ से तअल्लुक़ात छोड़ने पर रखी थी उन्होंने इस मौज़ू पर इस कसरत से किताबें लिखीं और विसाल के वक़्त इस मामले में क्या क्या वसीयत करते रहे और अल्लाह तआला ने उनके लिए दीन में कैसे मुख़्लिस मददगार और दोस्त मुहय्या कर दिए थे कि ख़िलाफ़े अहले सुन्नत व जमाअत के एतेक़ाद वाले आबिदों और ज़ाहिदों वग़ैरा को उनमें थोड़ा सा हिस्सा भी नसीब नहीं हुआ जैसे *कर्रामिया* (एक फ़िरक़े का नाम) वग़ैरह, इसलिए कि उनके अक़ाइद की बुनियाद ही हक़ के उसूल के ख़िलाफ़ थी और हम अहले सुन्नत व जमाअत जब तक अपने अइम्मा-ए-दीन और बुज़ुर्गाने उज़्ज़ाम की सीरत और उनके नक़्शेक़दम पर चलते रहे तो ख़ुदा और मख़लूक़ की नज़रों में मुकर्रम व मुअज़्ज़म रहे और इस्लामी मदरसों और अपनी इबादतगाहों से इल्म व अख़लाक़ के पैकर बन बन कर निकलते रहे।

चुनांचे इल्म में उस्ताद अबू इस्हाक़, अबू हामिद, अबू तय्यब, इब्ने फ़ौरक रहमुल्लाहु तआला और मेरे शैख़ जैसे माहिर उल्मा हमारे इमाम और पेशवा हैं और इबादत में अबू इस्हाक़ शीराज़, अबू सईद सूफ़ी और अबू नस्र मक़दिसी रहमुल्लाहु तआला जैसे पाकीज़ा हज़रात हमारे रहबर हैं, ये लोग इल्म व ज़ोहद में बहुत आला लोग थे, अफ़सोस कि हमारे दिल इन हज़रात

की पैरवी से कमज़ोर व ज़ईफ़ हो गए और हम ऐसे मामलात में मुब्तला हो गए जिनका नुक़सान नफ़े से कहीं ज़्यादा है, इसका नतीजा यह हुआ कि हम दीन के मामले में पीछे चले गए, हिम्मतें पस्त हो गईं, बरकतें उड़ गईं और इबादत की लज़्ज़तें और हलावत (मिठास) चली गईं। अब यह उम्मीद मुश्किल ही से की जा सकती है कि इबादत में किसी का हाल फिर दुरुस्त हो जाए और उसे सही इल्म नसीब हो जाए और जिस जिस में इस वक़्त मामूली रौशनी मौजूद है वह सिर्फ़ *हारिस मुहासिबी*, *मुहम्मद इब्ने इदरीस शाफ़ेई*, *मुज़न्नी* और *हरमलह* वग़ैरा पुराने बुज़ुर्गों की पैरवी का सदक़ा है जैसा कि एक शायर ने पुराने बुज़ुर्गों की सिफ़त बयान की है जिनका तर्जुमा पेश है:-

- *वह ज़माने में निहायत इज़्ज़त व पाकीज़गी के साथ रहे और उनके लिए अल्लाह तआला की मुहब्बत के सिवा कोई चीज़ भी बाइसे इत्मिनान और सुकून न बनी।*
- *बड़े बड़े फ़ाज़िल व सिद्दीक़ अस्लाफ़ जो अहले विलायत थे हमेशा उनकी तवज्जोह सय्यदुस्सादात यानी रब तआला की तरफ़ ही रही।*
- *ज़माने की मुसीबतों और हादसों ने बड़ों बड़ों के सब्र की गिरह खोल डालीं मगर मुक़द्दस नुफ़ूस (नेक लोगों) के सब्र की एक गिरह भी न खोल सके।*

हम (अहले इस्लाम) सदरे अव्वल (यानी इस्लाम के शुरू के ज़माने) में दीने इस्लाम की पैरवी की वजह से बादशाह थे लेकिन इससे रूगरदानी (नाफ़रमानी) की वजह से अब हमारी हालत एक बाज़ारी शख़्स से ज़्यादा नहीं, हम दीनी व दुनियावी कमालात के मैदान के शहसवार थे मगर अब पैदलों से भी गए गुज़रे हैं और अब ख़तरा है कि कहीं रास्ते से भटक ही न जायें, अल्लाह तआला ही मुसीबतों पर हमारा मददगार है और उसी से ख़ुलूस दिल के साथ इल्तिजा है कि दीन की जो मामूली रमक़ (रही सही ताक़त) हममें बाक़ी है वह छीन न ली जाए।

(इन्नहू जव्वादुन करीमुम मन्नानुर्रहीम वलाहौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)

तफ़वीज़ का बयान

तफ़वीज़ के मअना हैं अपने सब काम अल्लाह तआला के हवाले कर देना, तफ़वीज़ की पूरी हक़ीक़त और तफ़्सील समझने के लिए दो चीज़ों का समझना ज़रूरी है:-

एक यह कि किसी चीज़ के पसन्द या नापसन्द होने का फ़र्क़ वही कर सकता है जो हर मामले को हर पहलू से जानता हो और उसके ज़ाहिर, बातिन, हाल और अन्जाम से पूरी तरह आगाह हो जिस शख़्स को इस फ़र्क़ का इल्म न हो, वह अच्छी बुरी चीज़ और ग़लत सही में फ़र्क़ नहीं कर सकता, किसी बदवी या देहाती या चरवाहे को आप कभी नहीं कहेंगे यह दरहम (सिक्के) देखना खरे हैं या खोटे? क्योंकि वह उसकी पहचान नहीं कर सकता, इसी तरह आप किसी शहरी से भी यह बात नहीं कहेंगे जो सर्राफ़ न हो कि इसे पहचानो कि खरा है या खोटा। लिहाज़ा तुम इस काम के लिए उसी शख़्स की तरफ़ रुजू करोगे जो माहिर सर्राफ़ हो और सोने चांदी के खरे खोटे का जानकार हो। और हर शय के बारे में इस तरह का इल्म हर पहलू से सिर्फ़ ज़ाते रब्बुल आलमीन को ही हासिल है, तो अल्लाह तआला के सिवा किसी को लायक़ नहीं कि कामों की तदबीर और किसी काम के पसन्द या नापसन्द का फ़ैसला ख़ुद ही अपने तौर पर कर ले बल्कि तदबीर व इख़्तियार का यह जामेअ वस्फ़ (मुकम्मल ख़ूबी) अल्लाह पाक ही के साथ ख़ास है, इसलिए अल्लाह पाक अपने मुक़द्दस कलाम में फ़रमाता है:-

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ

(और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है उनका कुछ इख़्तियार नहीं।)

(सूरह अलक़सस, आयत-68)

और दूसरे मक़ाम पर फ़रमाता है:-

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(और तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपा है और जो ज़ाहिर करते हैं।)

(सूरह अलक़सस, आयत-69)

नक़्ल है कि किसी बुज़ुर्ग को ख़ुदा की तरफ़ से इशारा हुआ 'आप जो चाहे मुझसे माँगें, आपको अता किया जाएगा' और वह बुज़ुर्ग ***मुस्तजाबुद्दुआ*** (जिनकी हर दुआ क़बूल होती है) थे, तो आपने जवाब में अर्ज़ किया '***सुब्हानल्लाह***! वह ज़ात जो तमाम उलूम पर हावी है, एक ऐसे जाहिल से फ़रमाती है माँग जो माँगना चाहता है, मुझे क्या मालूम कि मेरे लिए फ़ुलाँ चीज़ बेहरत है और फ़ुलाँ बेहतर नहीं बल्कि जो तुझे पसन्द है वही मुझे पसन्द है।'

तफ़वीज़ के लिए दूसरी इस चीज़ को ज़हन में रखना भी ज़रूरी है कि अगर एक शख़्स तुझसे यह कहे कि तेरे सब काम मैं अन्जाम देता हूँ और तेरी तमाम हाजतों का इन्तिज़ाम मैं करता हूँ इसलिए तू अपने तमाम काम मेरे हवाले कर दे और तू अपने किसी अहम काम को अन्जाम देने में मशग़ूल रह और यह कहने वाला शख़्स तेरे नज़दीक वाक़ई तमाम कामों से वाक़िफ़ हो और अपने इरादे को पूरा करने के लिए वह ताक़त भी रखता हो और वह तुझ पर रहीम व करीम भी हो, इसके साथ साथ वह शख़्स मुत्तक़ी और परहेज़गार और बात का सच्चा भी हो, तो क्या तू उस शख़्स की इस अज़ीम पेशकश को अपने हक़ में अज़ीम तरीन ग़नीमत नहीं समझेगा और बहुत बड़ी नेमत ख़्याल नहीं करेगा और उसकी इन्तिहाई एहसानमन्दी का यकीन नहीं करेगा और उसके शुक्रिए और तारीफ़ में इन्तिहा नहीं कर देगा? यक़ीनन ज़रूर करेगा।

फिर जब वह कोई शय तेरे लिए पसन्द करेगा जिसकी अच्छाई तुझ पर साफ़ तौर पर खुली न हो तो तू उसकी इस पसन्दीदगी पर हरगिज़ रंजीदा नहीं होगा बल्कि तुझे उस पर पूरा भरोसा होगा और तेरा दिल कामिल तौर पर मुतमइन होगा और तुझे यक़ीन होगा यह शख़्स वही चीज़ मेरे लिए चुनेगा जो मेरे लिए फ़ायदेमन्द और मेरे हक़ में बेहतर होगी, अगरचे बाद में उसका अन्जाम कुछ भी हो लेकिन तुमको इस पर पूरा भरोसा होगा।

जब तुम एक इन्सान पर इस तरह का ऐतमाद करते हो तो तुम्हें क्या है कि अपने तमाम काम अपने परवरदिगार के हवाले नहीं करते हालांकि वही है जो ज़मीन व आसमान के निज़ाम की तदबीर करता है और वह हर आलिम से ज़्यादा आलिम है और हर क़ादिर से ज़्यादा क़ादिर है और हर रहम करने

वाले से ज़्यादा रहीम है और ग़नी से ज़्यादा ग़नी है। वह अपने कामिल इल्म और हुस्ने तदबीर (अच्छी तदबीर) से वह शय तुम्हारे लिए चुनेगा जिस तक तुम्हारा वहम व गुमान नहीं जा सकता।

तो जब ख़ुदा तआला ही तेरे तमाम कामों का कफ़ील और ज़ामिन है तो तुझे चाहिए कि तमाम तअल्लुक़ात से कटकर पूरी तरह अपनी आख़िरत की इस्लाह में मशग़ूल हो जाए और जो जो चीज़ें अल्लाह तआला तेरे सामने लाता रहे उन पर राज़ी रहे अगरचे उसका अच्छा होना या बुरा होना तुझ पर न खुला हो क्योंकि ख़ुदा की तरफ़ से जो चीज़ होगी वह तेरे हक़ में बेहतर और ख़ैर ही होगी। (*बिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

रज़ा बिल क़ज़ा (तक़दीर पर राज़ी रहने) का बयान

रज़ा बिल क़ज़ा के सिलसिले में दो बातें ज़हन नशीन करना ज़रूरी है ताकि हक़ीक़ते हाल की वज़ाहत हो जाए। एक तो यह कि रज़ा बिल क़ज़ा का हाल यानी अभी अभी और अन्जाम यानी आख़िर में क्या फ़ायदा है?

फ़िलहाल तो इसका फ़ायदा यह है कि फ़राग़ते क़ल्ब और बेफ़िक्री व परेशानी से निजात हासिल होती है। बाज़ ज़ाहिदों ने इसीलिए फ़रमाया है कि जब क़ज़ा व क़द्र हक़ है तो ज़िन्दगी के मामलात में ग़म व फ़िक्र बेमअना है और इसकी अस्ल वह हदीस शरीफ़ है जो हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से मन्क़ूल है अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद ؓ ने फ़रमाया कि- ***"ऐ इब्ने मसऊद तुझे किसी मामले में फ़िक्र व तशवीश नहीं होनी चाहिए इसलिए कि जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वह आकर रहेगा और जो तेरे लिए मुक़द्दर नहीं है वह हरगिज़ तेरे ऊपर वारिद नहीं होगा"***। (शोअबुल ईमान)

यह कलाम नबी-ए-अकरमﷺ का कलामे मुबारक है जो निहायत जामेअ और बलीग़ (कामिल) है कि अल्फ़ाज़ बिल्कुल मुख़्तसर हैं मगर बेशुमार मअना लिए हुए हैं और रज़ा बिल क़ज़ा का अन्जाम के ऐतबार से यह फ़ायदा है कि क़ज़ा पर राज़ी होने वाले इन्सान को अल्लाह तआला अज्र व सवाब अता फ़रमाएगा और ऐसे शख़्स को अपने रब की रज़ा और ख़ुशनूदी भी हासिल होगी,

अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ

(अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी।)

(सूरह अलमाइदह, आयत-119)

इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) ख़ुदावन्द क़ुद्दूस की नाराज़गी इस दुनिया में तो फ़िक्र, ग़म और परेशानी वग़ैरा पैदा करती है और आख़िरत में भी ख़्वामख़्वाह बोझ और अज़ाब का सबब बनेगी क्योंकि क़ज़ा-ए-इलाही तो बहरहाल नाफ़िज़ हो कर रहेगी, तेरी नाराज़गी और तेरे इरादे से वह बदल नहीं सकती, जैसा कि नीचे के अशआर में कहा गया है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *ऐ नफ़्स तेरे लिए जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है उस पर सब्र कर और जो कुछ तेरे लिए मुक़द्दर नहीं उससे डरने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह तुझ पर वारिद नहीं हो सकता।*
- *और इस बात पर यक़ीन रख कि जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वह ज़रूर मिल कर रहेगा तू सब्र करे बेसब्री का मुज़ाहिरा करे।*

और अक़्लमन्द इन्सान राहते क़ल्ब और सवाबे जन्नत को छोड़ कर इस चीज़ को इख़्तियार नहीं करता जो आख़िरत में बोझ और अज़ाब की वजह बने और जिससे बेफ़ायदा फ़िक्र और तशवीश हो। दूसरी उसूली बात यह है कि ख़ुदा तआला की नाराज़गी में नुक़सान का अन्देशा और ख़तरा छुपा हुआ है और ख़ुदा तआला मेहरबान न हो तो उसे अपने पर नाराज़ करने वाला इन्सान बाज़ वक़्त कुफ़्र व निफ़ाक़ में मुब्तला हो जाता है अल्लाह तआला के इस कलाम में ग़ौर करो:-

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

(तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उससे रुकावट न पायें और जी से मान लें।)

(सूरह अन्निसा, आयत-65)

अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में उस शख़्स के ईमान की ही नफ़ी कर दी और ईमान की नफ़ी पर क़सम खाई कि जो रसूल के फ़ैसले को पसन्द न करे और नबी का फ़ैसला सुनकर दिल में तंगी और बेचैनी महसूस करे, तो जो शख़्स ख़ुदा के फ़ैसले को तसलीम न करे बल्कि उल्टा उससे नाराज़ हो, वह कैसे मोमिन हो सकता है? हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से हदीसे क़ुदसी मरवी है- "***जो शख़्स मेरी तक़दीर पर राज़ी न हो और मेरी जानिब से आने वाली मुसीबतों पर साबिर न हो और मेरी अता करदा नेमतों का शुक्र न अदा करे तो ऐसा शख़्स मेरे बजाए किसी और को रब बना ले***" (फ़ैज़ुल क़दीर)

इस हदीस में अल्लाह तआला गोया यूँ फ़रमाता है कि ये शख़्स जब मुझसे राज़ी नहीं, क्योंकि तक़दीर पर नाक मुँह चढ़ाता है तो फिर यह अपना रब कोई और बना ले जो उसे अच्छा लगे, अक़्लमन्द जानता है कि यह इन्तिहाई डाँट के अल्फ़ाज़ हैं, एक बुज़ुर्ग से जब *उबूदियत* और *रुबूबियत* का मअना पूछा गया तो उन्होंने क्या ही अच्छा जवाब दिया चुनांचे फ़रमाया- "*रुबूबियत यह है कि रब तआला जो चाहे हुक्म करे और उबूदियत यह है कि बन्दा उसके हर हुक्म और क़ज़ा को बिला चूँ व चरा तसलीम करे, जब अल्लाह तआला कोई हुक्म दे और बन्दा न तो उसकी तामील करे और न उसको पसन्द करे तो वहाँ उबूदियत और रुबूबियत कुछ भी नहीं।*"

इसमें ग़ौर करो और अपने हाल को उबूदियत के मुताबिक़ करो, ताकि तुम्हें अल्लाह तआला की मदद तौफ़ीक़ से सलामती नसीब हो।

सब्र का बयान

सब्र एक कड़वी दवा है और नाख़ुशगवार शरबत है मगर निहायत बाबरकत और हर तरह से नफ़े का ज़रिया है और हर तरह के नुक़सान को दफ़ा करता है, जब दवा ऐसी बाबरकत और नफ़ा देने वाली हो तो अक़्लमन्द इन्सान तबीअत पर ज़बरदस्ती करके भी ऐसी दवा का इस्तेमाल करता है और घूँट घूँट करके अपने पेट में डाल लेता है और उसकी तल्ख़ी व तेज़ी को बर्दाश्त करता है और यूँ कहता है कि इस दवा की तल्ख़ी तो गर एक घड़ी भर

के लिए है मगर इसका नफ़ा बरसों तक बाक़ी रहने वाला है। --- अब हम ऐसे नफ़े की तफ़्सील बयान करते हैं जो सब्र से हासिल होते हैं, जान लो कि सब्र चार तरह का है:

1. *सब्र अलत्ताअ़ह (अल्लाह की ताआत बजा लाने में मेहनत पर सब्र)*
2. *सब्र अनिल मअसियह (गुनाह की लज़्ज़त छोड़ने पर सब्र)*
3. *सब्र अन फ़ुज़ूलिद्दुनिया (दुनिया की फ़ुज़ूल बातों पर सब्र)*
4. *दुनिया की मुसीबतों पर सब्र*

जब कोई शख़्स सब्र की तल्ख़ी बर्दाश्त करे और ज़िक्र हुए चारों तरह के सब्र पर कारबन्द हो जाए तो उसे ताअत और ताअत पर इस्तेक़ामत (मज़बूती से रहना) की नेमत नसीब होती है, आख़िरत में सवाबे अज़ीम का मुस्तहिक़ बनता है और ऐसे शख़्स को दुनिया में गुनाहों और गुनाहों के बुरे नतीजों से हिफ़ाज़त नसीब हो जाती है और आख़िरत में गुनाहों के वबाल में मुब्तला होने से भी बच जाता है नीज़ ऐसा शख़्स दुनिया की तलबगारी को तर्क कर देता है और इस पाँच रोज़ा ज़िन्दगी में दुनिया के मशग़लों से अलग रहता है, ऐसा शख़्स इन्शाअल्लाह तआला आख़िरत के अज़ाब से भी महफ़ूज़ रहेगा, उसके आमाले ख़ैर भी बर्बाद नहीं होते और दुनियावी मुसीबतों में मुब्तला होने व आज़माइश के वक़्त साबित क़दम रहता है और दुनिया के आराम हासिल न होने पर ग़मगीन दिल नहीं होता, तो इस सब्र से इन्सान को फ़रमाबरदारी, उसके ऊँचे दर्जे, फ़रमाबरदारी का सवाब, परहेज़गारी, ज़ोहद और अल्लाह तआला की तरफ़ से अच्छा बदला, अच्छी जज़ा और बहुत सा सवाब हासिल होता है और सब्र के फ़ायदों की पूरी तफ़्सील हक़ीक़त में ख़ुदा तआला ही जानता है।

सब्र नुक़सानदेह चीज़ों को दूर कर देता है

सब्र की वजह से एक तो इन्सान बेसब्री से पैदा होने वाली बेचैनी व घबराहट में रोने पीटने की मशक़्क़त से बच जाता है और दुनिया में बेसब्री का रंज बर्दाश्त करने से महफ़ूज़ रहता है फिर सब्र का दामन छोड़ने पर आख़िरत में दिए जाने वाले अज़ाब से हिफ़ाज़त में रहता है लेकिन अगर इन्सान बेसब्री

करे, गिला शिकवे की ज़बान दराज़ करे तो उसका हर फ़ायदा ख़त्म हो जाता है और वह तरह तरह की नुक़सानदेह चीज़ों में फँस जाता है क्योंकि जब वह अल्लाह तआला की ताअत (फ़रमाबरदारी) व बन्दगी बजा लाने की मशक़्क़त पर सब्र नहीं करेगा तो ताअत व बन्दगी-ए-मौला तआला की नेअमत से महरूम रहेगा और ताअत पर कारबन्द न हो सकेगा या बेसब्री की वजह से ताअत पर उसे हमेशगी नसीब नहीं होगी, तो इस्तेक़ामत (मज़बूती से जमे रहने) का मरतबा नहीं पा सकेगा जो एक आला मरतबा है या सब्र की कमी की वजह से दुनिया की फ़ालतू और बेहूदा बातों से नहीं बचेगा और गुनाह में पड़ जाएगा या सब्र की कमी की बिना पर दुनियावी तकलीफ़ व मुसीबत के वक़्त शिकवा शिकायत की ज़बान दराज़ करेगा और इस तरह सब्र के सवाब से महरूम रहेगा और बाज़ वक़्त ज़्यादा बेसब्री दिखाने पर आख़िरत के सवाब के अलावा सब्र करने पर दुनिया में जो नेअमत मिलने वाली थी वह भी उसके हाथ से निकल जाती है और बेसब्री करके एक मुसीबत के बजाय कई मुसीबतें मोल ले लेता है कि दुनिया की नेअमतें भी हाथ से निकल जाती हैं और आख़िरत का सवाब भी फ़ौत हो जाता है, कई उलझने पैदा हो जाती हैं, सब्र जैसी उम्दा नेअमत से महरूम हो जाता है, बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है- "*मुसीबत के वक़्त सब्र न करना मुसीबत से ज़्यादा बदतर मुसीबत* है।"

लिहाज़ा उस चीज़ को इख़्तियार करने का क्या फ़ायदा जो हासिल हुई चीज़ को भी फ़ौत कर दे और गुमशुदा चीज़ को वापस न ला सके। लिहाज़ा कोशिश करो कि अगर एक शय (दुनियावी नेअमत) फ़ौत हो जाए तो दूसरी तो फ़ौत न हो यानी सब्र तो फ़ौत न हो। सब्र की फ़ज़ीलत के मुताल्लिक़ एक निहायत जामेअ क़ौल मन्क़ूल है कि आपने एक शख़्स को सब्र की तलक़ीन करते हुए फ़रमाया कि "***तुझ पर तक़दीरे इलाही ज़रूर जारी होकर रहेगी, हाँ अगर तू सब्र करेगा तो अज्र व सवाब पाएगा और अगर बेसब्री का शेवा इख़्तियार करेगा तो गुनाहगार होगा।***"

फिर मैं कहता हूँ कि अगरचे अल्लाह तआला की ज़ाते बरहक़ पर तवक्कुल व भरोसा करते हुए दिल का उसकी चाहत की चीज़ों से अलग करना, नफ़्से अम्मारा को उसकी बुरी आदतों से रोकना, दुनियावी मामलात

की तदबीरों व तजवीज़ों को तर्क कर देना, अपने मुताल्लिक़ नफ़ा व नुक़सान की चीज़ों से तवज्जोह न करते हुए अपना सारा मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करना नफ़्से अम्मारा की निगरानी करना, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ किसी काम के न होने पर नफ़्स को बेसब्री से रोकना, जब कि ऐसे मौक़े पर बेसब्री करना उसकी फ़ितरत व मिज़ाज में दाख़िल है नीज़ नफ़्स को रज़ा की लगाम देना और नफ़रत के बावजूद नफ़्स को सब्र के तल्ख़ और कड़वे घूँट पिलाना, यह सब ऊपर गुज़रे काम बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं और यह निहायत भारी बोझ और मुश्किल तरीन इलाज का तरीक़ा है लेकिन अपनी इस्लाह और दुरुस्ती की सही तदबीर भी सिर्फ़ यही है और यही सिराते मुस्तक़ीम है और इसी सिराते मुस्तक़ीम पर चलने का अन्जाम अच्छा है और सआदत व नेकबख़्ती के हालात इसी से पैदा हो सकते हैं।

तुम उस मालदार बाप के मुताल्लिक़ क्या कहते हो जो अपने बीमार बेटे को खजूर और सेब वग़ैरह फल खाने को नहीं देता और फल वग़ैरा की नेअमतें देने के बजाय उसको एक सख़्त उस्ताद के हवाले कर देता है जो सारा दिन तालीम के लिए उसे अपने पास रोके रखता है और उसे डाँटता रहता है और उसका बाप उसको सिंघी (एक इलाज का तरीक़ा है जिसमें जानवर का सींघ लगा कर मुँह से गंदा ख़ून खींचा जाता है) लगाने के लिए सिंघी लगाने वाले के पास ले जाता है, जो उसे अपने अमल जर्राही यानी सिंघी का अमल करके और तकलीफ़ देता है क्या तुम यह ख़्याल कर सकते हो कि उसका बाप उसे कंजूसी की बिना पर खाने को फल नहीं देता जब कि उसका बाप अजनबी लोगों के साथ भी फ़य्याज़ी से पेश आता है हर तरह माल से मदद करता है ऐसा शख़्स अपनी औलाद के हक़ में कैसे कंजूस हो सकता है और अपनी औलाद से अपना माल व दौलत क्यूँकर रोक सकता है हांलाकि उसके पास जो कुछ है उसकी औलाद के लिए ही है।

नीज़ सख़्त तबीयत मुअल्लिम के हवाले करे क्या वह उसे दुख या तकलीफ़ देना चाहता है? क्योंकि उसका बेटा तो उसकी आँखों की ठंडक है और उसके दिल का चैन है बल्कि बेटे को अगर हवा भी लग जाए तो बाप बेचैन हो जाता है, दरहक़ीक़त वह अपने बेटे के साथ ऐसा सुलूक इसलिए करता है कि वह जानता है कि इसमें उसकी बेहतरी है और तालीम व

तरबियत की इस थोड़ी सी मशक़्क़त व तकलीफ़ से उसका बेटा अज़ीम कमालात और आला सिफ़ात का मालिक बन जाएगा।

नीज़ उस ख़ैरख़्वाह, मुख़लिस और माहिर तबीब के मुताल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़्याल है जो एक लाग़र और नाज़ुकहाल मरीज़ को पानी पीने से रोक देता है हालांकि उस मरीज़ को शदीद प्यास लग रही होती है और प्यास की शिद्दत की वजह से उसका कलेजा जल रहा होता है लेकिन वह तबीब उसे कड़वी दवा देता है जो उस मरीज़ की तबीयत और नफ़्स पर गिराँ होती है तो क्या तुम यह ख़्याल कर सकते हो कि वह तबीब मरीज़ से दुश्मनी व अदावत और उसकी तकलीफ़ देने के लिए ऐसी दवा दे रहा है? हरगिज़ नहीं बल्कि इसमें उस मरीज़ के साथ सरासर ख़ैरख़्वाही और एहसान है क्योंकि तबीब जानता है कि मरीज़ ख़्वाहिश की वजह से जो कुछ तलब करता है उसमें उसकी हलाकत व मौत है और उसे उससे रोकने और बाज़ रखने में ही उसकी शिफ़ा और बक़ा है।

तो तुम्हें इन मिसालों से अन्दाज़ा लगाना चाहिए कि अगर अल्लाह तआला किसी वक़्त एक रोटी या एक दिरहम तुम्हें अता नहीं करता तो तुम्हें यक़ीन रखना चाहिए कि अल्लाह तआला इस पर क़ादिर है कि जो कुछ तुम चाहते हो वह सब कुछ तुम्हें अता कर दे क्योंकि वह फ़ज़्ल व जूद (वह नेअमत जो बिन माँगे मिले) का मालिक है, तुम्हारी तंगदस्ती से पूरी तरह वाक़िफ़ है, उससे कोई शय छुपी नहीं, इसके बावजूद अगर वह अहकमुल ह़ाकिमीन तुम्हें तुम्हारी चाहत की चीज़ अता नहीं कर रहा तो इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मआज़ल्लाह वह शय उसके पास नहीं या वह आजिज़ है या उसे तुम्हारी हालत का पता नहीं या वह बख़ील है। वह तो इन तमाम ऐबों से पाक है। वह तमाम ग़नियों से बड़ा ग़नी, तमाम क़ुदरत वालों से बड़ा क़ादिर, तमाम इल्म वालों से बढ़ कर आलिम और तमाम सख़ियों से बढ़ कर जव्वाद (बख़्शिश फ़रमाने वाला) और करीम है लिहाज़ा तुम्हें यक़ीन होना चाहिए कि तुम्हारी चाहत की चीज़ें बाज़ वक़्त वह तुम्हें इसलिए अता नहीं करता कि उसमें तुम्हारी इस्लाह व बेहतरी छुपी होती है अता ने करने की वजह मजबूर या बुख़्ल (कंजूसी) नहीं बल्कि वह क़ुरआन मजीद में यूँ इरशाद फ़रमाता है:-

خَلَقَ لَكُمۡ مَّا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ۗ

(जिसने तुम्हारे लिए बनाया जो कुछ ज़मीन में है।)

(सूरह अलबक़राह, आयत-29)

और अल्लाह तआला की तरफ़ बुख़्ल (कंजूसी) की निसबत कैसे हो सकती जब कि उसने तुम्हें अपनी मारिफ़त जैसी बड़ी नेअमत अता की जिसके सामने तमाम नेअमतें कुछ भी नहीं हैं, एक मशहूर हदीस में वारिद है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- ***"मैं अपने दोस्तों को दुनिया की नेअमतों से इस तरह दूर रखता हूँ जिस तरह मेहरबान चरवाहा अपने ऊँटों को खुजली वाले ऊँटो से अलग रखता है।"*** (जोहद)

और जब तुझे अल्लाह तआला दुनियावी सख़्तियों व मसअलों में रखे तो इस बात पर यक़ीन रख कि वह तेरा इम्तिहान लेने और तेरी आज़माइश करने से बेनियाज़ है, वह तेरे हाल से वाक़िफ़ है, तेरी कमज़ोरी को भी जानता है और वह तुझ पर रऊफ़ व रहीम भी है क्या तूने हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का यह क़ौले मुबारक नहीं सुना? आपﷺ फ़रमाते हैं कि ***"बेशक अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे पर, अपने बच्चे पर शफ़ीक़ माँ से भी ज़्यादा मेहरबान है।"***(बुख़ारी शरीफ़)

जब तूने यह बात जान ली तो फिर तुझे इस बात पर यक़ीन रखना चाहिए कि अल्लाह तआला तेरी इस्लाह के लिए तुझे तकलीफ़ व मुसीबत में डालता है, अल्लाह तआला के इल्म में तेरी इस्लाह मन्ज़ूर है मगर तू इससे बेख़बर है। इसी इस्लाह व दर्जात की तरक़्क़ी के लिए अल्लाह तआला अपने दोस्तों और मक़बूल बन्दों को आज़माइश में कसरत से मुब्तला करता है हालांकि यह तबक़ा उसकी दरगाह में निहायत बाइज़्ज़त तबक़ा है यहाँ तक कि नबी-ए-करीमﷺ ने एक मौक़े पर फ़रमाया कि- " ***जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को अपना दोस्त बनाता है तो उसको मुख़्तलिफ़ आज़माइशों में डालता है।"*** (मुसनद अहमद)

दूसरे मौक़े पर फ़रमाया कि- ***"बेशक सबसे ज़्यादा अम्बिया इम्तिहान आज़माइश में डाले जाते हैं फिर शहीद लोग फिर वह जो उनके नज़दीक हैं और फिर वह जो उनके नज़दीक हैं।"*** (मोअजम कबीर)

तो जब तू यह देखे कि अल्लाह तआला ने तुमसे दुनिया की नेअमतों को रोक रखा है या तेरे लिए कसरत से मुसीबतें व मुश्किलें पैदा कर रहा है तो यक़ीन रख कि यह बात अल्लाह तआला की दरगाह में तेरे बाइज़्ज़त और साहिबे मरतबा होने की अलामत है और वह तुझे अपने औलिया के रास्ते पर चलाना चाहता है, बेशक वह परवरदिगार तेरे तमाम हालात से वाक़िफ़ है और किसी बात में तेरा मोहताज नहीं (बल्कि इन बातों से तेरी इस्लाह मन्ज़ूर है) अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है:-

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا

(और ऐ महबूब तुम अपने रब के हुक्म पर ठहरे रहो कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो।)

(सूरह तूर, आयत-48)

लिहाज़ा मुसीबतों व मुश्किलों के वक़्त तुझे अल्लाह तआला का एहसानमन्द होना चाहिए वह तुझे दुनिया की लज़्ज़तों से दूर रख कर गुनाहों से महफ़ूज़ रखना चाहता है, तेरी इस्लाह करना चाहता है तुझे ज़्यादा अज्र व सवाब अता करना चाहता है और आख़िरत में नेक बन्दों व मुक़र्रिबीन के दर्जों पर फ़ाइज़ करना चाहता है लिहाज़ा मोमिन बन्दे के हक़ में मुसीबतों और मुश्किलों का नतीजा निहायत ही अच्छा है।

(*वल्लाहु वलीय्युत्तौफ़ीक़ि बिमन्निही व फ़ज़्लिही*)

फ़स्ल

ख़ुलासा यह है कि जब तुझे यक़ीन से यह बात मालूम हो गई कि अल्लाह तआला तेरे लिए इस क़द्र रोज़ी का ज़ामिन हो चुका है जिससे तेरी हयात व दुनिया की बक़ा वाबस्ता है और जिससे इबादत बजा ला सके और वह अपने इरादे के मुवाफ़िक़ हर चीज़ को जैसे चाहे वुजूद में लाने पर क़ुदरत रखता है और वह तेरे हर वक़्त और हर घड़ी और हालत की हाजत व ज़रूरत से भी वाक़िफ़ है, तो तुझे अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी और किफ़ालत पर भरोसा करना चाहिए और उसके वायदे को सच्चा जानना चाहिए। अल्लाह तआला पर इस एतमाद और भरोसे से तुम्हारे दिल को सुकून व इत्मिनान

नसीब होगा और तुम्हारी तबीयत दुनियावी तअल्लुक़ात व दुनियावी असबाब से अलग हो जाएगी और दिल का तअल्लुक़ इन सब असबाब व दुनियावी तअल्लुक़ात से कट जाएगा।

हक़ीक़त यह है कि तअल्लुक़ात और दुनियावी असबाब भी उस वक़्त ही फ़ायदेमन्द और काफ़ी होते हैं जब ख़ुदा तआला की मर्ज़ी हो, ग़िज़ा खाने और उसके हज़म में आसानी और सुहूलत, इसी तरह पीने की चीज़ों के इस्तेमाल में सुहूलत फिर खाने पीने की चीज़ों में तबीयत के मुवाफ़िक़ व ख़ुशगवार होने की सिफ़त अल्लाह तआला ही इनमें पैदा करता है फिर इन चीज़ों से बदन में क़ुव्वत और फ़ायदा भी अल्लाह तआला ही इनमें रखता है। नीज़ खाने पीने की चीज़ों से तबीयत पर गिरानी और उनके नुक़सान को अल्लाह तआला ही अपने इरादे और मशक़्क़त से दूर करता है तो दरहक़ीक़त नफ़ा देनी वाली उसी की बाबरकत ज़ात है और वही दरहक़ीक़त मुश्किलात में कारसाज़ है तो हर तरह का इख़्तियार सिर्फ़ उसी की ज़ाते *वाहदहू लाशरीक* को है लिहाज़ा उसी पर तवक्कुल व भरोसा करो और अपने मामलात में अपनी तदबीरों को अहमियत न दो बल्कि उस ज़ात की तदबीरों को काफ़ी जानो जो ज़मीन व आसमान को बनाने वाला है और अपने आपको आइन्दा के कामों में भी ग़ौर व फ़िक्र से निजात दो और यह न सोचो कि यह काम कल मुझे कैसे अन्जाम देना चाहिए और यह काम कल होगा या नहीं और यह काम अन्जाम देने के लिए क्या सूरत इख़्तियार करनी चाहिए, मतलब यह है कि 'शायद' व 'अगर मगर' के चक्कर में न पड़ो क्योंकि इससे वक़्त की बरबादी और दिल की मसरूफ़ियत के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। मुमकिन है कि कल ऐसे हालात सामने आ जायें जिनका तुम्हें वहम व गुमान भी न था और जो बातें और इरादे तुम कर रहे थे और जिन मामलात में तुम ग़ौर कर रहे थे उनमें से कोई न हो सके और सोच विचार में बेफ़ायदा वक़्त बर्बाद चला जाएगा बल्कि दिल की मसरूफ़ियत और उम्र बर्बाद जाने पर ख़सारा और पेरशानी उठानी पड़े, किसी ज़ाहिद ने शेर कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *तक़दीरे ख़ुदावन्दी में हर शय का फ़ैसला हो चुका है लिहाज़ा फ़िक्रों को ख़्वामख़्वाह अपने ऊपर मुसल्लत न करो और 'शायद' व 'अगर मगर' के चक्कर से अपने आपको अमन में रखो।*

एक और बुज़ुर्ग ने आपने अशआर में कुछ इस तरह कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *जो कुछ होना है वह अपने वक़्त में ज़रूर होकर रहेगा और जाहिल व बेख़बर इन्सान ख़्वामख़्वाह अपने आपको मशक़्क़त व ग़म में डाले रखता है।*

- *तो मुमकिन है जिसका तुझे ख़तरा है वह न हो और जिसकी तुझे उम्मीद है वह भी न हो।*

लिहाज़ा अपने नफ़्स को यूँ तलक़ीन करो कि-

"ऐ नफ़्स! हमारे हिस्से में सिर्फ़ वही चीज़ आएगी जो अल्लाह तआला ने हमारे लिए मुक़द्दर कर दी है और वह हमारा मौला है और वही हमें काफ़ी और हमारा कारसाज़ है"

वह ऐसा क़दीर है कि उसकी क़ुदरत की इन्तिहा नहीं और वह ऐसा हकीम है कि उसकी हिकमतों की इन्तिहा नहीं और ऐसा रहीम है कि उसकी रहमतों की इन्तिहा नहीं और जो इन ख़ूबियों का मालिक है वही इस बात का अहल है कि उसी पर भरोसा और तवक्कुल किया जाए और अपने तमाम काम उसके हवाले किए जायें लिहाज़ा तफ़वीज़ की सिफ़त पर क़ायम रहो और यह अक़ीदा भी रखो कि अल्लाह तआला के इल्म में मेरे लिए जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होगा सब मेरी हालत के मुताबिक़ और बेहतर है अगरचे मेरा इल्म उसकी कैफ़ियत और तफ़्सील को नहीं जानता।

अपने नफ़्स को यूँ भी तलक़ीन करो-

"***ऐ नफ़्स क़िस्मत में लिखा ज़रूर मिल कर रहेगा, ग़ुस्सा और बेचैनी बेफ़ायदा है और बेहतरी तो उसमें है जो अल्लाह तआला करे लिहाज़ा ग़ुस्से व नाराज़गी की कोई वजह नहीं***"

ऐ नफ़्स! जब तू अल्लाह तआला के रब होने पर राज़ी है तो उसके हुक्म और तक़दीर पर क्यूँ राज़ी नहीं हालांकि क़ज़ा व क़द्र रबूबियत की सिफ़ात और उसके लिए लाज़िम हैं लिहाज़ा उसकी रज़ा को इख़्तियार करो।

इसी तरह अगर तुम किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाओ या कोई नागवार मामला पेश आ जाए तो अपने नफ़्स को सब्र व ज़ब्त में रखो और अपने दिल पर भी क़ाबू रखो, यह न हो कि रोना धोना, बेचैनी, शिकवा शिकायत करने लगो, ख़ास कर पहले सदमें के वक़्त क्यूँ मुसीबत के शुरू के वक़्त सब्र करना एक दुशवार काम है और पहले सदमें के वक़्त नफ़्स पर क़ाबू रखना बहुत मुश्किल है, ऐसे वक़्त में अपने नफ़्स से यूँ कहो-

"ऐ नफ़्स! यह मुसीबत तो सर पर पड़ चुकी है इसे दूर करने की अब सूरत और तदबीर नहीं और अल्लाह तआला इससे भी बड़ी बड़ी मुसीबतों से तुझे निजात दे चुका है क्योंकि आफ़तों और बलाओं की बेशुमार क़िस्में हैं। इस मुसीबत और तकलीफ़ को भी अल्लाह तआला दूर करेगा और मुसीबत का यह बादल अन्क़रीब छंट जाएगा। तो ऐ नफ़्स! थोड़ी देर के लिए सब्र के दामन को मज़बूती से पकड़ रख, तुझे इसके बदले हमेशा के लिए ख़ुशी और बहुत बड़ा सवाब हासिल होगा।"

फिर यह भी है कि बेसब्री से नाज़िल होने वाली आफ़तें दूर नहीं हो सकतीं तो रोना धोना बेकार है। हक़ीक़त यह है कि सब्र के होते हुए मुसीबत का बर्दाश्त करना मुश्किल नहीं रहता। तो मुसीबत के नाज़िल होने के वक़्त ज़बान से '*इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*' बार बार पढ़ो और दिल में उस अज्र व सवाब का तसव्वुर करो जो इस पर अल्लाह तआला अता फ़रमायेगा और ऐसे वक़्त में बड़ी बड़ी मुसीबतों पर हिम्मत वाले, अम्बिया-ए-किराम (अलैहिमुस्सलाम) और औलिया-ए-अल्लाह के सब्र व तहम्मुल को याद करो जो अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त का मक़ाम रखते है और अगर किसी वक़्त तुम्हारा परवरदिगार तुमसे दुनिया को रोक ले तो अपने नफ़्स से यूँ कहो- ***'ऐ नफ़्स! अल्लाह तआला तेरे हाल से पूरी तरह वाक़िफ़ है तुझ पर करम करने वाला मेहरबान भी है वह ख़सीस (कमतर) कुत्ते को रोज़ी देता है बल्कि काफ़िर को भी रोज़ी देता है जो उसका सरासर दुश्मन और बाग़ी है और मैं तो उसका बन्दा, उसको पहचानने वाला और उसको एक मानता हूँ, क्या मुझे वह एक रोटी भी नहीं दे सकता यह तो एक मुहाल (नामुमकिन) बात है बल्कि वह ज़रूर***

दे सकता है, इसके बावजूद उसने अगर दुनिया को मुझसे रोक लिया है तो ज़रूर इसमें कोई बहुत बड़ा फ़ायदा छुपा हुआ है और हर तंगी के बाद सुहूलत है, तो ऐ नफ़्स! थोड़ी देर के लिए सब्र से काम ले तो इसके बदले अल्लाह तआला के लुत्फ़ व करम से अजीब अजीब और उम्दा उम्दा चीज़ें देखेगा,"

किसी कहने वाले शायर ने क्या ही अच्छा कहा जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *अपने रब के लुत्फ़ व करम से उम्मीद वाबस्ता रखो, अन्क़रीब वह कुशादगी व सुहूलत तुम्हें मिल जाएगी जिसे तुम चाहते हो।*
- *और मुसीबत व तकलीफ़ के वक़्त मायूसी का शिकार न हो जाओ क्योंकि ग़ैब के पर्दे में बड़े बड़े अजाइब व ग़राइब मौजूद हैं।*

एक और बुज़ुर्ग अपने अशआर में फ़रमाते हैं जिसका तर्जुमा पेश है:

- *और वह शख़्स जिस पर ग़म व फ़िक्र मुसल्लत हो चुका है।*
- *जब तेरा ग़म व फ़िक्र शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो 'सूरह अलमनशराह' का मज़मून ज़हन में ला।*
- *इस सूरत में साफ़ तौर पर फ़रमाया गया है कि एक तंगी दो आसानियों के दरमियान है तो उस मज़मून के तकरार से फ़राग़त हासिल कर।*

तो जब तुम इस तरह के जिक्र व बातें अपने तसव्वुर में लाते रहोगे और उनकी मश्क़ करते रहोगे तो तुम्हारा यह मामला आसान हो जाएगा बशर्ते कि कुछ वक़्त तक हिम्मत व कोशिश से काम लो।

जब तुम इस मक़ाम पर पहुँच जाओगे तो तुमने गुज़री हुई चारों रुकावटों को अपने नफ़्स से दूर कर लिया और उसकी मशक़्क़त तुमने उठा ली। अल्लाह तआला के यहाँ तुम मुतवक्किलीन (तवक्कुल करने वालों) में शामिल हो गए और उन लोगों का मक़ाम पा लिया जो अपना हर काम अल्लाह तआला के हवाले करते हैं और उसकी तक़दीर पर राज़ी रहते हैं और तुमने सब्र वालों का दर्जा हासिल कर लिया और दुनिया में तो तुम्हें दिल और बदन की राहत हासिल हो गई और आख़िरत में बहुत बड़ा अज्र और सवाब का ज़ख़ीरा जमा हो गया और रब तआला की दरगाह में तुम्हें बुलन्द

मरतबा हासिल हो गया और ख़ुदा तआला ने तुम को अपना महबूब दोस्त बना लिया। इस तरह तुमने दोनों जहान की भलाई हासिल कर ली और इबादत का सीधा रास्ता पा लिया। क्योंकि अब सामने न तो कोई रुकावट है और न दिल को इधर उधर मसरूफ़ करने वाली कोई चीज़ मौजूद है और इस वक़्त तुमने इस मुश्किल घाटी को उबूर कर लिया।

अल्लाह तआला के हुज़ूर में दुआ है कि वह हुस्ने तौफ़ीक़ से तेरी भी और हमारी भी मदद फ़रमाये क्योंकि हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार वही है।

(वहुवा अरहमुर्राहिमीन वलाहौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)

मुहम्मद अहमद की ज़रूरी राय

इमाम साहब ने इस बाब में तवक्कुल, तफ़वीज़, क़ज़ा-ए-इलाही, रज़ा और मुसीबतों पर सब्र और अमल करने का तरीक़ा व सवाब बताया और अमल न करने पर होने वाले नुक़सान को भी बताया। इस बाब और कुछ दूसरी जगहों पर ऐसा लगता है कि यह सब अमल हमारे बस के नहीं लेकिन आपने फिर भी उसे बराबर पढ़ा और पढ़ने के बाद आपको यह एहसास हुआ होगा हमारे बुज़ुर्गों ने ख़ालिस अल्लाह के लिए यह सारे अमल किए हैं और हमारे लिए अमल करना बहुत मुश्किल ज़रूर मगर नामुमकिन नहीं। फिर भी पढ़ने का यह फ़ायदा ज़रूर होगा कि शायद ज़िन्दगी के किसी हिस्से ही में कुछ अमल या तौबा की तौफ़ीक़ हो जाये। मान लीजिए कि अगर सिर्फ़ तौबा के सच्चे अमल की तौफ़ीक़ हो गई तो पिछले गुनाहों के अज़ाब से छुटकारा तो मिल गया और यह भी हो सकता है कि इसकी बरकत से अल्लाह तआला हमारे अगले पिछले सब गुनाह माफ़ फ़रमा दे और हमारा हिसाब ही न ले। यह तो ज़रूर होगा कि अगर आपने थोड़ी सी भी नसीहत क़बूल की तो कम से कम अपने बच्चों को भी कुछ तो राय या नसीहत देंगे और वह हमारे और आपके लिए सदक़ा-ए-जारिया बनेगी। उम्मीद है कि अब यहाँ तक पहुँचते पहुँचते अब इस किताब को पढ़ने में दिलचस्पी बढ़ी ज़रूर होगी फिर भी अगर अब भी आपको शैतान पढ़ने में टाल मटोल करा रहा है तो एक बार फिर गुज़ारिश यह है कि इस किताब 'मिन्हाजुल आबिदीन' को पूरा ज़रूर पढ़ें क्योंकि आख़िर तक पहुँचते पहुँचते आपको एहसास होगा कि इबादत के लिए इस किताब पर अमल बहुत ही ज़रूरी है और जन्नत में जल्दी जाने के लिए मेहनत भी बहुत करनी है। अल्हम्दुलिल्लाह सच्चे दिल से ईमान लाने पर जन्नत तो पक्की हो जाती है मगर जन्नत में मरने के बाद जल्द जाने और अज़ाबों से बचने के लिए इबादत, इल्म और सच्ची तौबा और रुकावटों को पार करना बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला हमें और आपको इस किताब को बार बार पढ़ने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इस बाब की ज़रूरी राय ख़त्म। **-मुहम्मद अहमद**

पाँचवीं घाटी

अक़ाबतुल बवाइस

(नेकियों पर उभारने वाली घाटी)

ऐ ब्रादरे अज़ीज़! जब इबादत का दुरुस्त रास्ता मालूम हो गया, इस इबादत की राह पर चलने में सुहूलत और आसानी हासिल हो गई और रुकावटें दूर हो गईं तो अब तुझे इस राह पर चलना ज़रूरी है लेकिन इस पर चलना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं जब तक तू अपने अन्दर ***ख़ौफ़*** व ***रजा*** (उम्मीद) की कैफ़ियत पैदा न करे और उनका शऊर हासिल न करे और इन दोनों को जहाँ तक उनका हक़ है न अपनाए।

ख़ौफ़ को अपने ऊपर लाज़िम करना दो वजहों से ज़रूरी है:-

एक तो इसलिए कि ख़ौफ़ के ज़रिए ही इन्सान गुनाहों से बच सकता है क्योंकि सरकश नफ़्स शर व बुराई को बहुत पसन्द करता है और फ़ितने की बातों का बहुत शौक़ीन है। यह उस वक़्त तक बाज़ नहीं आ सकता जब तक अपने अन्दर ज़बरदस्त ख़ौफ़ न पैदा किया जाए और इन्तिहाई डाँट और तम्बीह यानी नसीहत और ख़बरदारी का तरीक़ा इख़्तियार न किया जाए क्योंकि नफ़्से अम्मारा (बुराई की तरफ़ राग़िब करने वाला नफ़्स) की तबीयत वफ़ा व शर्म की सिफ़त से ख़ाली है जैसा किसी शायर ने कहा जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *ग़ुलाम लाठी से दुरुस्त होता है लेकिन दाना और शरीफ इन्सान को थोड़ी सी मलामत (शर्म दिलाना) और तम्बीह काफ़ी होती है।*

लिहाज़ा नफ़्से अम्मारा को इबादत की राह पर चलाने की यह तदबीर है कि तू अपनी बातों से अपने कामों से और सोच से, ग़र्ज़ हर तरह से उस पर ख़ौफ़ का कोड़ा मुसल्लत रखे जैसा कि किसी बुज़ुर्ग के मुताल्लिक़ मन्क़ूल है कि उनके नफ़्स में किसी गुनाह की रग़बत और चाहत पैदा हुई तो वह बाहर सहरा की तरफ़ चल पड़े, वहाँ जाकर कपड़े उतारे और तपती रेत पर लोटना शुरू कर किया और नफ़्स से मुख़ातिब होकर कहा:- "*ऐ रात के वक़्त मुर्दार की तरह चारपाई पर पड़े रहने वाले और दिन फ़ुज़ूलियात में बर्बाद करने वाले! इस तपिश व हरारत को चख ले जहन्नम की आग तो*

इससे कहीं ज़्यादा गर्म है, जब तेरे लिए यह हरारत नाक़ाबिले बर्दाश्त है तो दोज़ख़ की आग की गर्मी किस तरह बर्दाश्त करेगा।

दूसरा इसलिए ख़ौफ़ ज़रूरी है ताकि बन्दे का नफ़्स **उज्ब** और ख़ुदपसन्दी यानी अपने आपको बहुत अच्छा समझने में मुब्तला न हो बल्कि इबादत की राह में पेश आने वाले ख़तरों और सख़्तियों का लिहाज़ रखते हुए अपने नफ़्स को बुरा जाने उसको ऐबनाक तसव्वुर करे और नाक़िस जाने और इस तरह नफ़्स से उज्ब और ख़ुदपसन्दी के माद्दे को जड़ से उखाड़े और यह बात ख़ौफ़ ही से पैदा हो सकती है जैसा कि हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से मन्क़ूल है कि आपﷺ ने फ़रमाया कि- *"अगर मैं और ईसा अलैहिस्सलाम उन आमाल की वजह से पकड़े जाते जो हमसे सादिर हो चुके हैं तो हमको ऐसे अज़ाब में डाला जाता जो सबसे सख़्त होता"* (इब्ने हब्बान)

नोट: हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ का यह इरशाद अपनी उम्मत को ख़ौफ़ और डर की तालीम के तौर पर है या हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने तवाज़ो और इन्किसारी के तौर पर फ़रमाया, या बड़े दर्जे की नेकी छोड़ कर छोटे दर्जे को इख़्तियार करने को अम्बिया-ए-किराम की बुलन्द शान के मुताबिक़ गुनाह पर गुमान करते हुए अपनी और हज़रत ईसाعليه السلام की तरफ़ अज़ाब की निसबत कर दी क्योंकि अम्बिया-ए-किराम को इस पर भी इताब हो सकता है। हुज़ूरعليه السلام के इरशाद का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मआज़ल्लाह हुज़ूर या हज़रत ईसा से कोई गुनाह हुआ हो क्योंकि अम्बिया-ए-किराम बिलइजमा सग़ीरा और कबीरा दोनों तरह के गुनाह करने से मासूम और पाक होते हैं। इसके अलावा उनसे जो ख़ता होती है उसे गुनाह न कह कर लग़ज़िश कहा जाता है और उस लग़ज़िश में अल्लाह की हिकमत थी मसलन हज़रत आदमعليه السلام का शजरे ममनू खाने में यह हिकमत थी कि उन्हें दुनिया में आना था और दुनिया बसना थी। (*वल्लाहु तआला अअ़लम*)

हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه से मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया कि *"हममे से कोई शख़्स इस बात से बेख़ौफ़ नहीं हो सकता कि उसने अपनी ज़िन्दगी में कोई ऐसा गुनाह न किया हो जिसकी वजह से बख़्शिश और मग़फ़िरत का दरवाज़ा बन्द हो चुका हो और उसके बाद के नेक आमाल किसी शुमार में न आ रहे हों।"*

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ﵁ अपने नफ़्स को यूँ मलामत करते थे कि- *"ऐ नफ़्स! तू बातें तो दुरवेशों और ज़ाहिदों की करता है लेकिन तेरे आमाल मुनाफ़िकों जैसे हैं इस पर तू जन्नत की आस लगाए हुए है इस हाल में जन्नत की उम्मीद एक दूर की बात है और दरहक़ीक़त जन्नती और लोग हैं और उनके आमाल तेरे आमाल से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हैं।"*

तो इस तरह के वाक़ियात ज़हन में दोहराते रहो, ताकि इबादत के दौरान नफ़्से अम्मारा उज्ब और ख़ुदपसन्दी में मुब्तला न हो और मुसीबत व नाफ़रमानी का इरतेकाब न करे। (*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

रजा (उम्मीद) का बयान

रजा का तसव्वुर व शऊर दो वजह से ज़रूरी है:

एक तो इसलिए कि ताआत और नेक कामों का जज़बा पैदा हो, क्योंकि नेक अमल की अन्जामदेही नफ़्स पर भारी होती है शैतान भी नेकी की तरफ़ रुख़ नहीं करने देता और नफ़्सानी ख़्वाहिशात बदी की तरफ़ खींचती हैं और इन्सान ग़फ़लत वालों के हालात का ज़्यादा असर क़बूल करता है जो नेक कामों को बिल्कुल तर्क करके सरासर दुनिया की परस्तिश में मसरूफ़ हैं और आख़िरत में नेकियों पर जो सवाब अता होगा वह इस वक़्त आँखों से पोशीदा है और इस सवाब को पा लेने का मामला बईद (दूर) है, जब सूरते हाल यह हो तो नेक कामों की तरफ़ नफ़्स का मुतवज्जेह होना और पूरी तरह राग़िब होना और हरकत करना एक मुश्किल काम है तो ऐसी शय का साथ होना ज़रूरी है जो इन रुकावटों का मुक़ाबला कर सके इनकी दिफ़ा कर सके, बल्कि नेकियों से रोकने वाली चीज़ों की निसबत नेकियों की तरफ़ राग़िब करने वाली चीज़ की क़ुव्वत ज़्यादा होनी चाहिए और वह शय ***रजा*** है यानी रहमते ख़ुदावन्दी की क़वी उम्मीद, बेहतरीन अज्र की तरफ़ पूरी रग़बत और अज्रे इलाही का पूरा यक़ीन।

हमारे पीर मुरशिद ﵀ ने फ़रमाया ग़म व फ़िक्र खाने की रग़बत कम कर देता है, ख़ौफ़े इलाही गुनाहों से रोक देता है और रहमते ख़ुदावन्दी की उम्मीद नेक कामों की रग़बत पैदा करती है और मौत की याद फ़ुज़ूल और लग़्व कामों से नफ़रत करने वाला कर देती है।

दूसरे इसलिए रजा ज़रूरी है कि इससे इबादत की मुश्किल आसान हो जाती है। मालूम होना चाहिए कि जो शख़्स अपनी मतलब की चीज़ की अहमियत व ज़रूरत पहचान लेता है उस पर उस शय को हासिल करने के लिए अपनी हर चीज़ क़ुर्बान कर देना आसान हो जाता है, और जिसे कोई चीज़ पसन्द आ जाती है और दिल व जान से उसकी चाहत व रग़बत रखता है वह उसकी शिद्दत व मशक़्क़त को बर्दाश्त कर लेता है। और इसके हासिल करने में जो मेहनत व मशक़्क़त उसे उठानी पड़ती है वह उसकी परवाह नहीं करता और जिसे किसी चीज़ से पूरे तौर पर प्यार हो जाता है तो वह उसके लिए हर मुश्किल व दुशवारी बर्दाश्त करने पर आमादा हो जाता है बल्कि अपनी महबूब शय की ख़ातिर मुश्किलात व तकलीफ़ें बर्दाश्त करने में कई तरह की लज़्ज़त व फ़रहत महसूस करता है, तुम देखते नहीं शहद बेचने वाला नफ़े की ख़ातिर मक्खियों के डसने की तकलीफ़ को महसूस नहीं करता और मज़दूर इन्सान गर्मियों के लम्बे लम्बे दिनों में कड़ाके की धूप के अन्दर सारा दिन दो दिरहम की ख़ातिर भारी बोझ सर पर उठा कर बड़ी ऊँची ऊँची सीढ़ियों पर चढ़ता रहता है इसी तरह किसान अनाज कमाने की ख़ातिर गर्मी और सर्दी की तकलीफ़ और सारा साल मशक़्क़त व मेहनत उठाने को आसान जानता है।

इस तरह अल्लाह तआला के इन कोशिश करने वाले बन्दों ने जब जन्नत में हासिल होने वाले आराम व आसाइश, खाने पीने, हूरों व महलों, ख़ुशनुमा ज़ेवर व लिबास और अल्लाह तआला की उन तमाम बयान की हुई नेअमतों पर यक़ीन किया और उनकी याद ज़हन में रखी तो उन पर हक़ तआला की इबादत व ताअत में पेश आने वाली मशक़्क़तें आसान हो गईं और दुनिया की लज़्ज़तें और नेअमते फ़ौत हो जाने पर उन्हें रंज व कोफ़्त महसूस न हुई और जन्नत की ख़ातिर दुनिया में हर तरह के नुक़सान, ख़स्ताहाली, बेचैनी और मशक़्क़त को उन्होंने ख़ुशी ख़ुशी बर्दाश्त किया।

हिकायत: हज़रत सुफ़यान सौरी رحمة الله عليه के साथियों ने आपके ख़ौफ़े इलाही, इबादत में इन्तिहा दर्जे की कोशिश व मेहनत और आख़िरत के डर की वजह से आपकी परेशान हाली को देख कर अर्ज़ किया- *"ऐ उस्तादे मोहतरम! आप इससे कम दर्जे की कोशिश के ज़रिए भी इन्शाअल्लाह अपनी मुराद पा*

लेंगे" आपने जवाब दिया- "*मैं क्यों कोशिश न करूँ हालांकि मुझे यह बात पहुँची है कि अहले जन्नत अपने मन्ज़िलों व मकानात में तशरीफ़ फ़रमा होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिससे आठ जन्नतें जगमगा उठेंगी, जन्नती गुमान करेंगे कि यह अल्लाह तआला की ज़ात का नूर है तो सजदे में गिर पड़ेंगे। उन्हें निदा होगी कि सजदे से सर उठा लो, यह वह नहीं है जिसका तुम्हें गुमान हुआ है यह तो जन्नती औरत के तबस्सुम का नूर है जो उसने अपने ख़ाविन्द के सामने किया है।*"

फिर हज़रत सुफ़यान सौरी ﵀ ने ये अशआर पढ़े जिसका मतलब पेश है:-

- *मशक़्क़त व तंगदस्ती बर्दाश्त करना उसे कोई नुक़सानदेह नहीं जिसका ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस है।*
- *ऐसा शख़्स दुनिया में ग़मनाक, ख़ाइफ़, और आख़िरत में पेश आने वाले मामले से डरता रहता है आजिज़ी का लिबास पहने नमाज़ की अदाएगी के लिए मस्जिद की तरफ़ उसकी आमदो रफ़्त जारी रहती है।*
- *ऐ नफ़्स! तुझे आतिशे दोज़ख़ के शोले बर्दाश्त करने की हिम्मत नहीं है और आमाले बद की वजह से क़रीब है कि बहुत ज़्यादा रुसवाई के साथ तुझे वह अज़ाब बर्दाश्त करना पड़े।*

मैं कहता हूँ जब बन्दगी की बुनियाद दो चीज़ों पर है एक अल्लाह की ताअत बजा लाना दूसरी गुनाहों से बचना और मक़सद उस नफ़्से अम्मारा की मौजूदगी में सिर्फ़ उसी वक़्त हासिल हो सकती है जब उसे रग़बत दिलाने और डराने और उम्मीद व ख़ौफ़ के ज़रिए इस तरफ़ तवज्जोह रखी जाए क्योंकि सरकश हैवान उसी वक़्त क़ाबू में रहता है जब एक आगे से खींचने वाला हो और एक पीछे से हाँकने वाला हो यह हैवान जब अपनी पसन्द का चारा चरने लगता है और तू उसे एक डंडा रसीद करता है और रोकता है इतने में दूसरी जानिब सब्ज़ चारा नज़र आता है उसकी तवज्जोह उधर हो जाती है यहाँ तक कि तू पूरी होशयारी और एहतियात से उसे रोकता है तब जाकर वह रुकता है और सरकश बच्चा तालीम की तरफ़ सिर्फ़ उस सूरत में तवज्जोह करता है कि उसके वालिदैन उसे कई तरह का लालच दें और उस्ताद उसे अपने रोब व दबदबे में रखे।

ठीक यही हालत इस नफ़्से अम्मारा की है यह भी एक सरकश हैवान है जो अपनी ख़्वाहिशों की चरागाह में रहने का बहुत शौक़ रखता है, ख़ौफ़ इसलिए कि यह डंडा और हाँकने वाले का काम देता है और सवाब व निजात की उम्मीद उसके लिए सब्ज़ जौ हैं जिससे इताअत की तरफ़ राग़िब होता है नीज़ यह नफ़्से अम्मारा सरकश बच्चे की तरह है जिसे इबादत व तक़वे की किताब पढ़ानी मक़सूद है, दोज़ख़ की आग और अज़ाब का ज़िक्र उसमें डर पैदा करता है और जन्नत व आमाल का सवाब उसमें उम्मीद व रग़बत पैदा करते हैं। ठीक इसी तरह इबादत व रियाज़त के लिए ज़रूरी है कि नफ़्स में ख़ौफ़ व रजा का शऊर पैदा करे वर्ना यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि यह नफ़्स तक़वा व इबादत की किताब पढ़ने पर आमादा हो जाए और तुम से मुवाफ़िक़त इख़्तियार करे। इबादत के तलबगार में यही शऊर पैदा करने के लिए क़ुरआन मजीद में बार बार और मुबालग़े की हद तक वादा व वईद और तरग़ीब व तरहीब का ज़िक्र किया गया है, सवाब का इस पैराए में ज़िक्र किया कि कशिश पैदा होती है और दर्दनाक अज़ाब का इस तफ़्सील से ज़िक्र किया कि उसके बर्दाश्त की इन्सान में ताक़त व हिम्मत नहीं लिहाज़ा तुम पर ज़रूरी है कि ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) को पेशे नज़र रखो ताकि इबादत करने की मुराद हासिल हो सके और इस राह में मशक़्क़त व तकलीफ़ बर्दाश्त करने में आसानी हो। (*वल्लाहु तआला वलीय्युत्तौफ़ीक़ि बिफ़ज़्लिही व रहमतिह*)

सवाल: ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) की हक़ीक़त व अस्ल कैफ़ियत और उनका हुक्म व नतीजा क्या है?

जवाब: ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) हमारे उल्माए अहले सुन्नत के नज़दीक दिल में आने वाले ख़्यालात की क़िस्मों में से हैं, बन्दे की क़ुदरत में यही है कि वह ख़ौफ़ व रजा के मक़द्दिमात यानी उनकी तरफ़ ले जाने वाली चीज़ों को अमल में लाए चुनांचे **ख़ौफ़** की तारीफ़ यह की गई है- "*ख़ौफ़ उस डरने व लरज़ने का नाम है जो किसी बुरी चीज़ के पहुँचने के गुमान से दिल में पैदा होता है*"

ख़शीय्यत भी ख़ौफ़ जैसी कैफ़ियत का नाम है लेकिन ख़शीय्यत के मफ़हूम में जिससे ख़ौफ़ होता है उसकी हैबत और अज़मत का तसव्वुर भी

शामिल है, ख़ौफ़ के मुक़ाबले जुरअत है, बाज़ दफ़ा ख़ौफ़ के मुक़ाबले में अमन भी आता है, जैसे कहते हैं कि *'ख़ाइफ़ुन व अमिनुन'* यानी ख़ौफ़ व अमन क्योंकि आमिन यानी बेख़ौफ़ वह शख़्स होता है जो अल्लाह तआला के अहकाम के मुताल्लिक़ लापरवाही और बेबाकी का मुज़ाहिरा करे लेकिन हक़ीक़त में ख़ौफ़ के मुक़ाबिल जुरअत ही है। --- अपने अन्दर ख़ौफ़ पैदा करने के चार मुक़द्दमात और असबाब हैं:

1. *अपने पिछले गुनाहों को याद करो।*
2. *अल्लाह तआला की उस शिद्दत व सख़्ती को याद करना जिसे बर्दाश्त करने की तुममें ताक़त नहीं।*
3. *अल्लाह तआला के अज़ाब के आगे अपनी कमज़ोरी को याद करना।*
4. *अल्लाह तआला की क़ुदरत व ताक़त को याद रखना कि वह जब चाहे जैसे चाहे गिरफ़्त कर सकता है।*

रजा की तारीफ़ यह की गई है कि- "*अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम को पहचान कर दिल में ख़ुशी महसूस करना और उसकी रहमत के दामन में राहत हासिल करने का तसव्वुर।*"

रजा का यह मफ़हूम व मअना ख़वातिर (ख़तरे) में से है और बन्दे की क़ुदरत से बाहर है हाँ रज़ा इस मअना के ऐतबार से अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उसकी वुसअत रहमत को याद करना बन्दे की क़ुदरत में है।

ख़वातिर (ख़तरे) व हवादिस (हादसे) के मुताल्लिक़ यह इरादा और अक़ीदा रखना कि बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी उनसे नुक़सान नहीं पहुँच सकता इसको रजा कहा गया है, रजा के इस बयान में हमारे नज़दीक पहले मअना मुराद हैं यानी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व रहमत को याद करके ख़ुशी व राहत महसूस करना।

रजा की ख़िलाफ़ ***यास*** (नाउम्मीदी) है, नाउम्मीदी और यास की तारीफ़ यह की गई है- "*यह ख़्याल कि मुझे ख़ुदा की रहमत और उसका फ़ज़्ल नहीं पहुँचेगा*" नीज़ दिल को रब तआला के फ़ज़्ल व रहमत की उम्मीद से अलग कर लेने को *'यास'* कहते हैं।

इस तरह की नाउम्मीदी महज़ गुनाह है और जब रजा का तसव्वुर पुख़्ता करने के बग़ैर नाउम्मीदी और यास का ख़ात्मा करना दुशवार हो तो ऐसी सूरत

में रजा फ़र्ज़ है और अगर ऐसी सूरते हाल न हो तो रजा नफ़्ल है, जब कि *इजमाली* (मुख़्तसर) तौर पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम और वुसअते रहमत का अक़ीदा दिल में मज़बूत और पुख़्ता हो।

'रजा' चार चीज़ों से पैदा होती है:

1. *बन्दे की तरफ़ से बग़ैर किसी सिफ़ारिश करने वाले और बग़ैर किसी रग़बत व तलब के बन्दे पर अल्लाह तआला की तरफ़ से किए गए पिछले इनामात व एहसानात को याद करना।*
2. *अल्लाह तआला ने अपने शाने रहीमी व करीमी के मुताबिक़ बड़ी इज़्ज़तों और बड़े अज्र व सवाब के जो वादे किए हैं उनको ज़हन में रखना, उस अज्र व सवाब का ज़हन में न रखना जिसके तुम अपने आमाल के बदले मुस्तहिक़ हो सकते हो, क्योंकि अज्र व सवाब अगर बन्दे के अफ़आल व आमाल की हैसियत के मुताबिक़ मिले तो वह बिल्कुल क़लील (कम) व हक़ीर होगा।*
3. *इस्तेहक़ाक़ (हक़) के बग़ैर और बे माँगे दीन व दुनिया के हर शोबे में अल्लाह तआला जो तरह तरह की नेअमतें फ़िलहाल अता कर रहा है उनको याद करना।*
4. *यह तसव्वुर कि अल्लाह तआला की रहमत व मेहरबानी उसके ग़ज़ब और उसकी गिरफ़्त पर ग़ालिब है और यह तसव्वुर कि ख़ुदावन्द क़ुद्दूस रहमान, रहीम, ग़नी, करीम और अपने मोमिन बन्दे पर निहायत मेहरबान है, जब तुम ख़ौफ़ व उम्मीद दोनों के मुताबिक़ तसव्वुरात व ख़्यालात को ज़हन में रखोगे तो तुममें हर वक़्त ख़ौफ़ व रजा की कैफ़ियत बेदार रहेगी। (वल्लाहु तआला वलीय्युत्तौफ़ीक़ि बिमन्निही व फ़ज़्लिही व रहमतिह)*

फ़स्ल

तो ऐ बन्दे! तुझ पर पूरी एहतियात, पूरे ध्यान और पूरी रिआयत के साथ ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) की इस घाटी को तय करना ज़रूरी है, एहतियात की इसलिए ज़रूरत है कि यह घाटी निहायत दुशवार है इसमें तरह तरह के

ख़तरे हैं क्योंकि ख़ौफ़ व रजा (उम्मीद) की इस घाटी का रास्ता दो मोहलिक और ख़ौफ़नाक रास्तों से गुज़रता है, एक तो अल्लाह तआला से बिल्कुल बेख़ौफ़ हो जाने का रास्ता दूसरा उससे बिल्कुल मायूस हो जाने का रास्ता, इन दोनों टेढ़ी राहो के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता है, अगर रजा इस क़द्र ग़ालिब हो गई कि ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ बिल्कुल न रहा तो यह बिल्कुल ग़लत राह है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

(तो अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-99)

और अगर ख़ौफ़ इस क़द्र ग़ालिब हुआ कि दिल से उम्मीद रहमत व बख़्शिश का नामो निशान मिट गया तो यह नाउम्मीदी और मायूसी का रास्ता है और यह भी ग़लत है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

(अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर।)

(सूरह यूसुफ़, आयत-87)

लेकिन अगर तुम ख़ौफ़ व रजा के दरमियान चले और दोनों का दामन पकड़ा तो यही वह सिराते मुस्तक़ीम (सीधा रास्ता) है जो उसके उन औलिया व अस्फ़िया का रास्ता है जिनकी उसने अपनी किताब में यूँ तारीफ़ फ़रमाई:-

إِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۖ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

(बेशक वो भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं।)

(सूरह अम्बिया, आयत-90)

जब तुम्हें मालूम हो गया कि इस घाटी में तीन मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं:

1. रास्ता अमन व बेबाकी (पूरी तरह बेख़ौफ़ी) का।

2. नाउम्मीदी और मायूसी का रास्ता।

3. इन दोनों राहों के दरमियान ख़ौफ़ व रजा का रास्ता।

तो अगर तुम ज़रा भी दायें या बायें हुए तो दो मोहलिक (हलाक करने वाले) रास्ते में जा पड़ोगे और हलाक होने वालों के साथ हलाक हो जाओगे।

फिर सूरते हाल यह है कि बेख़ौफ़ी और मायूसी के दोनों रास्ते दरमियानी रास्ते की निसबत ज़्यादा कुशादा हैं और उनकी तरफ़ बुलाने वालों की कसरत है और दरमियानी रास्ते की निसबत उन दो पर चलना ज़्यादा सहल और आसान है क्योंकि अगर तुम अमन की तरफ़ यानी बेख़ौफ़ी की तरफ़ नज़र दौड़ाओगे तो तुम्हें अल्लाह तआला की वसीअ रहमत, उसके बेपायाँ फ़ज़्ल व करम और उसकी बख़्शिश और जूद के वह समुन्द्र नज़र आयेंगे कि ख़ौफ़ व डर का शाएबा भी दिल में बाक़ी नहीं रहेगा, तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल पर भरोसा करके बेख़ौफ़ हो कर बैठ जाओगे।

और अगर जानिबे ख़ौफ़ देखोगे तो तुम्हें ख़ुदा तआला की अज़ीम क़ुदरत, ग़ालिब सियासत (हिकमते अमली) कसरते हैबत, मामला हिसाब किताब की नज़ाकत, अपने वलियों और बरगुज़ीदा बन्दों का बतौर इताब गिरफ़्त के वह लरज़ा देने वाले वाक़िआत व हालात सामने आयेंगे कि रजा बाक़ी नहीं रहेगी, तो मायूसी और नाउम्मीदी का शिकार हो जाओगे।

लिहाज़ा ऐसी सूरते हाल पेश आने पर तुम पर भी ज़रूरी है कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की बेपनाह रहमत पर ही इन्हिसार न करो ताकि उसकी रहमत पर भरोसा करके बिल्कुल बेख़ौफ़ न हो जाओ कि यह भी ग़लत है और न सिर्फ़ उसकी अज़ीम हैबत और आख़िरत में सख़्त छानबीन पर ही नज़र रखो क्योंकि इस तरह तुम नाउम्मीदी और मायूसी का शिकार हो जाओगे बल्कि दोनों पहलुओं को पेशे नज़र रखो कुछ हिस्सा ख़ौफ़ का लो और कुछ रजा का फिर इन दोनों के कंधे पर सवार होकर इस बारीक राह पर चलो ताकि भटकने से महफ़ूज़ रहो, क्योंकि सिर्फ़ रजा का रास्ता बहुत आसान और सहल है और बड़ा वसीअ और कुशादा है लेकिन उसकी मन्ज़िल और आख़िर अज़ाबे ख़ुदा से बिल्कुल बेख़ौफ़ी और ख़सारा है, इसी तरह अगरचे ख़ौफ़ का रास्ता भी बड़ा वसीअ और चौड़ा है लेकिन उसका अन्जाम गुमराही है और बीच का रास्ता ख़ौफ़ व रजा के दरमियान है और यह दरमियानी रास्ता अगरचे दुशवार है लेकिन हर ख़तरे से महफ़ूज़ और साफ़ है। जो मग़फ़िरत और एहसान और जन्नत व रिज़वान और क़ुर्बे इलाही

तक ले जाता है, क्या तुमने ख़ौफ़ व रजा के रास्ते पर चलने वालों के मुताल्लिक़ ख़ुदा तआला का यह इरशादे मुबारक नहीं सुना:-

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا

(अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते।)

(सूरह सजदा, आयत-17)

फिर उनकी जज़ा के मुताल्लिक़ फ़रमाता है-

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

(तो किसी जी को नहीं मालूम जो आँख की ठंडक उनके लिए छुपा रखी है सिला उनके कामों का।)

(सूरह सजदा, आयत-18)

इस क़ुरआनी जुमले पर पूरी तरह ग़ौर करो फिर इस राह पर चलने के लिए पूरी तरह तैयार और बेदार हो जाओ क्योंकि ख़ौफ़ व रजा का मक़ाम हासिल करना आसान नहीं, फिर यह मालूम होना भी ज़रूरी है कि इस राह पर चलना और सुस्त और सरकश नफ़्स का उसकी महबूब चीज़ों से हटा कर ताअत और नेक आमाल में लगाना जो उसे बड़ा नागवार है, उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकता जब तक तीन उसूल ज़हन में न रखे जायें और जब तक ग़फ़लत और सुस्ती के बग़ैर लगातार हमेशा इन उसूलों की हिफ़ाज़त न की जाए, वो तीनों उसूल ये हैं:

1. *तरग़ीब व तरहीब के मुताल्लिक़ ख़ुदा तआला के इरशादात।*
2. *गिरफ़्त या माफ़ करने के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का दस्तूर*
3. *आख़िरत में नेक लोगों के सवाब और बुरे लोगों के सज़ा व अज़ाब को याद रखना।*

जैसा कि हक़ है, इन तीन उसूलों की तफ़्सील के लिए तो बहुत ज़्यादा लिखने की ज़रूरत है हमने इस बाब में एक मुस्तक़िल किताब '***तम्बीहुल ग़ाफ़ेलीन***' लिखी है और इस मुख़्तसर किताब में हम सिर्फ़ उन कलिमात की तरफ़ इशारा करते हैं जिनको ज़हन नशीन कर लेने के बाद मक़सूद से इन्शाअल्लाह तआला वाक़िफ़ हो जाओगे।

अस्ले अव्वल

तरग़ीब व तरहीब के मुताल्लिक़ ख़ुदा तआला का इरशाद

ऐ ब्रादरे अज़ीज़! तुझे इन आयात में ज़रूर तदब्बुर और ग़ौर करना चाहिए जिनमें ख़ुदा तआला ने तरग़ीब व तरहीब और ख़ौफ़ व रजा को ज़िक्र फ़रमाया है, चुनांचे रजा के मुताल्लिक़ क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:-

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ

(अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।)

(सूरह ज़ुमर, आयत-53)

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۣ

(और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के।)

(सूरह आले इमरान, आयत-135)

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ

(गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला)

(सूरह अलमोमिन, आयत-3)

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

(और वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है।)

(सूरह शूरा, आयत-25)

كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ

(तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मे करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है।)

(सूरह इनआम, आयत-54)

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۭ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ

(और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे हुए है, तो अनक़रीब मैं नेअमतों को उनके लिए लिख दूँगा जो डरते हैं)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-156)

إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٣﴾

(बेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान महर (रह़म) वाला है।)

(सूरह बक़र, आयत-143)

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾

(और वह मुसलमान पर मेहरबान है।)

(सूरह अह़ज़ाब, आयत-43)

इन ऊपर गुज़री आयात और इस तरह की दूसरी आयात में रजा का बयान है। **ख़ौफ़ और हैबत की आयात:-**

يَٰعِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾

(ऐ मेरे बन्दों तुम मुझसे डरो।)

(सूरह ज़ुमर, आयत-16)

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

(तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।)

(सूरह मोमिनून, आयत-115)

أَيَحْسَبُ الْإِنسَٰنُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

(क्या आदमी इस घमंड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।)

(सूरह क़ियामह, आयत-36)

لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَٰبِ

(काम न कुछ तुम्हारे ख़्यालों पर है न किताब वालों की हवस पर।)

(सूरह निसा, आयत-123)

مَن يَعْمَلْ سُوٓءًا يُجْزَ بِهِۦ وَلَا يَجِدْ لَهُۥ مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾

(जो बुराई करेगा उसका बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न अपना हिमायती पाएगा न मददगार।)

(सूरह निसा आयत 123)

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

(और वह इस ख़्याल में हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं।)

(सूरह कहफ़, आयत-104)

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

(और उन्हें अल्लाह की तरफ़ से वह बात ज़ाहिर हुई जो उनके ख़्याल में न थी।)

(सूरह ज़ुमर, आयत 47)

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

(और जो कुछ उन्होंने काम किए थे हमने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न (रोशनदान) की धूप में नज़र आते हैं।)

(सूरह फ़ुरक़ान, आयत 23)

हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें अपने दामने रहमत में जगह दे और बदआमालियों से बचाए।

चन्द वो आयात मुबारका कि जिनमें ख़ौफ़ व रजा दोनों का बयान है:

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾

(ख़बर दो मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूँ बख़्शने वाला मेहरबान।)

(सूरह हजर, आयत-49)

وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

(और मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है।)

(सूरह हजर, आयत-50)

अज़ाब का ज़िक्र साथ ही इसलिए फ़रमाया ताकि बन्दे पर सिर्फ़ रजा का ही ग़लबा न हो जाए, इसी तरह क़ुरआन मजीद में एक जगह जहाँ यह फ़रमाया:-

شَدِيۡدِ الۡعِقَابِ ۙ

(सख़्त अज़ाब करने वाला।)

(सूरह मोमिन, आयत-3)

वहाँ उसके साथ ही यह भी फ़रमाया:-

ذِی الطَّوۡلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

(बड़े इनाम वाला उसके सिवा कोई माबूद नहीं।)

(सूरह मोमिन, आयत-3)

ताकि बिल्कुल ख़ौफ़ का ग़लबा न हो जाए, इस सिलसिले में अल्लाह पाक का अजीबतरीन क़ौल यह है कि:-

وَ يُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ

(और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है।)

(सूरह आले इमरान, आयत-30)

وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۳۰﴾

(और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।)

(सूरह आले इमरान, आयत-30)

مَنۡ خَشِیَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ

(जो रहमान से बे देखे डरता है।)

(सूरह क़ाफ़, आयत-23)

कि ख़शीय्यत के साथ अपना ज़िक्र जब्बार या मुन्तक़िम या मुतकब्बिर नाम से न किया जो ख़शीय्यत के लिहाज़ से मौक़े के मुनासिब था बल्कि ख़शीय्यत को रहमान के साथ फ़रमाया ताकि ख़शीय्यत और रहमत का ज़िक्र हो जाए कि दिल सिर्फ़ ज़िक्रे ख़शीय्यत से फ़ना ही न हो जाए, लिहाज़ा

डराने के साथ अमन देने का तज़किरा किया और तहरीक के साथ साथ तसकीन का ज़िक्र भी कर दिया।

इस आयत के मज़मून की मिसाल यूँ है कि तुम किसी को कहो 'तुम अपनी मेहरबान माँ से क्यूँ नहीं डरते' या 'तुम रहमदिल हाकिम से क्यूँ नहीं डरते'

इस क़िस्म की गुफ़्तगू से मक़सूद यह होता है कि ख़ौफ़ व अमन का दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना चाहिए और बिल्कुल मायूसी या बिल्कुल बेख़ौफ़ी से दूर रहना चाहिए, अल्लाह तआला अपनी रहमत व करम से हमें और तुम्हें इस ज़िक्रे हकीम में ग़ौर व फ़िक्र और इस पर अमल करने वालों में से करे, बेशक वह बड़ा जव्वाद और करीम है।

(वलाहौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अ़ज़ीम)

दूसरी अस्ल

अल्लाह तआला के अफ़आल व मुआमलात के बयान में

ऐ अज़ीज़! नीचे लिखे वाक़ियात का पढ़ना ख़ौफ़ पैदा करने के लिए काफ़ी है:

1. इब्लीस ने अल्लाह तआला की अस्सी हज़ार बरस तक इबादत की और एक क़दम के बराबर भी उसने ऐसी जगह बाक़ी न छोड़ी जिस पर उसने सजदा न किया हो, फिर उसने सिर्फ़ एक हुक्म की नाफ़रमानी की तो उसको अपनी दरगाह से मरदूद कर दिया और उसकी अस्सी हज़ार बरस की इबादत उसके मुँह पर मार दी और क़ियामत तक इसके गले में लानत का तौक़ (फंदा) डाल दिया और उसके लिए हमेशा हमेशा तक अज़ाबे अलीम (दर्दनाक अज़ाब) में जलना मुक़र्रर कर दिया।

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से मरवी है कि आपﷺ ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देखा कि इब्लीस के हाल से इबरत हासिल करते हुए काबे शरीफ़ के पर्दे से लिपट कर निहायत गिरया व ज़ारी के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ कर रहे हैं कि- ***"ऐ मेरे अल्लाह! और ऐ मेरे मालिक! कहीं मेरा नाम नेकों की फ़ेहरिस्त से मिटा कर बदों की***

फ़ेहरिस्त में न कर देना और कहीं मेरा जिस्म अहले अता के ज़ुमरे से निकाल कर अहले इक़ाब (अज़ाब वाले) के गिरोह में न कर देना।"

2. सय्यदना हज़रत आदम عليه السلام ख़ुदा तआला के वह बरगुज़ीदा नबी हैं जिनको अल्लाह ने बराहे रास्त अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया फिर उनकी इज़्ज़त ज़ाहिर करने के लिए अपने तमाम फ़िरिश्तों को उन्हें सजदा करने का हुक्म दिया फिर उनको मलाइका की गर्दनों पर उठा कर अपने क़रीब जवारे रहमत में अपनी वसीअ और आरामदेह जन्नत में जगह अता की फिर सिर्फ़ एक दाना चखने से उनसे वहाँ रहने की रहमत छीन ली और अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आई सुन ले वह शख़्स मेरे जवारे रहमत में रहने के लायक़ नहीं जो मेरी नाफ़रमानी का मुरतकब हुआ। और जो मलाइका आपعليه السلام को नूरी तख़्त पर बैठा कर जन्नत में लाए थे उन्हीं को हुक्म दिया कि आदमعليه السلام को ऊपर के आसमान से नीचे के आसमान की तरफ़ उतार दो और इसी तरह इनको ज़मीन पर ले जाओ यहाँ तक कि उन्हीं मलाइका ने आपعليه السلام को ज़मीन पर पहुँचा दिया फिर आपعليه السلام की तौबा क़बूल नहीं होती थी, यहाँ तक कि आपعليه السلام मुसलसल दो सौ बरस तक रोते रहे और इस सिलसिले में आपعليه السلام को बेइन्तिहा मशक़्क़त और तकलीफ़ झेलनी पड़ी इस मशक़्क़त और रंज के असरात आपعليه السلام की औलाद में हमेशा हमेशा के लिए बाक़ी रह गए।

3. हज़रत नूह عليه السلام जो शैख़ुल अम्बिया हैं, आपعليه السلام ने अल्लाह तआला के दीन की तबलीग़ के सिलसिले में किस क़द्र शदीद मशक़्क़तें और तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, आपعليه السلام के मुँह से जब सिर्फ़ एक कलिमा अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ निकला तो ख़ुदा तआला ने फ़ौरन फ़रमाया:-

فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّىْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝۴۶

(तू मुझसे वह बात न माँग जिसका तुझे इल्म नहीं मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूँ कि नादान न बन।)

(सूरह हूद, आयत- 46)

रिवायात में आया है कि उसके बाद शर्म व हया की वजह से चालीस साल आपعليه السلام ने आसमान की तरफ़ सर उठा कर न देखा।

4. फिर सय्यदना हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عليه السلام से सिर्फ़ एक नामुनासिब कलिमा सादिर हुआ तो उसकी वजह से आपको किस क़द्र ख़ौफ़ हुआ, और किस क़द्र आजिज़ी व गिरया व ज़ारी से काम लिया, चुनांचे यूँ कहा:-

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾

(और वह जिसकी मुझे आस लगी है कि मेरी ख़तायें क़ियामत के दिन बख़्शेगा।)

(सूरह शोअरा, आयत-82)

रिवायात में यहाँ तक आया है कि आपعليه السلام इस क़द्र रोए थे कि अल्लाह तआला ने तसल्ली देने के लिए हज़रत जिब्रीलعليه السلام को आपके पास भेजा था। हज़रत जिब्रीलعليه السلام अल्लाह तआला की तरफ़ से यह पैग़ाम लाए थे – "*ऐ इब्राहीम(عليه السلام) तूने कभी ऐसा दोस्त देखा है जो अपने दोस्त को आग के अज़ाब में डाले?*"

लेकिन हज़रत इब्राहीमعليه السلام हज़रत जिब्रीलعليه السلام को जवाब में कहते थे कि- "*ऐ हज़रत जिब्रील(عليه السلام) जब मुझे अपनी ख़ता याद आती है तो ख़ौफ़ की वजह से अल्लाह के साथ रिश्तए दोस्ती भूल जाता हूँ।*"

5. हज़रत मूसाعليه السلام से सिर्फ़ इतना हुआ कि आप(عليه السلام) ने तम्बीह के तौर पर एक काफ़िर क़िबती को थप्पड़ या घूँसा मारा, लेकिन इस काम पर आप(عليه السلام) के दिल में ख़ुदा तआला का किस क़द्र ख़ौफ़ व डर पैदा हुआ और आप(عليه السلام) ने किस क़द्र गिरया व ज़ारी और इस्तिग़फ़ार से काम लिया, चुनांचे क़ुरआन मजीद में वारिद है कि आप(عليه السلام) ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया:-

رَبِّ اِنِّیۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡ لِیۡ

(ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की तू मुझे बख़्श दे।)

(सूरह क़सस, आयत-16)

6. हज़रत मूसा عليه السلام के ज़माने के एक शख़्स 'बलअम बिन बाऊरा' का वाक़िया भी याद करो। गुमराह होने से पहले उसकी हालत यह थी कि जब वह आसमान की तरफ़ देखता था तो उसकी नज़र अर्शे अज़ीम तक पहुँचती थी, अल्लाह तआला ने नीचे दी गई आयत में उसी का तज़किरा किया है:-

وَاتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَاَ الَّذِىۡۤ اٰتَيۡنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانۡسَلَخَ مِنۡهَا

(और ऐ महबूब उन्हें उसका अहवाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं तो वह उनसे साफ़ निकल गया।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत -175)

और यह गुमराही व ज़लालत उस पर सिर्फ़ इस वजह से मुसल्लत हो गई कि वह दुनिया और अहले दुनिया की तरफ़ झुक गया और सिर्फ़ एक मौक़े पर अल्लाह तआला के दोस्तों में से एक दोस्त की इज़्ज़त व हुरमत क़ायम न रखी तो अल्लाह तआला ने उससे अपनी मारिफ़त छीन ली और उसे धुत्कारे हुए कुत्ते की तरह कर दिया, चुनांचे इसके मुताल्लिक़ क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:-

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الۡكَلۡبِ ۚ اِنۡ تَحۡمِلۡ عَلَيۡهِ يَلۡهَثۡ

(तो उसका हाल कुत्ते की तरह है तू उस पर हमला करे तो ज़बान निकाले।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-176)

तो सिर्फ़ एक बार अल्लाह तआला के दोस्त की बेअदबी करने और एक बार दुनिया की तरफ़ झुकने की पादाश में यानी बदले में उसे हलाकत और ज़लालत (गुमराही) के समन्दर में ग़र्क़ कर दिया।

मैंने बाज़ उल्मा से सुना है कि गुमराह होने से पहले 'बलअम बिन बाऊरा' की इल्मी मजलिस में सिर्फ़ एक वक़्त में बारह बारह हज़ार दीनी

तालिबे इल्म होते थे जो हाथों में क़लम व दावात लिए उसके मारिफ़त से भरे हुए मल्फ़ूज़ात क़लमबन्द करते थे फिर गुमराही के बाद वह इस हाल को पहुँचा कि इन्कारे ख़ुदा के मसअले पर सबसे पहले उसने किताब लिखी। हम अल्लाह तआला के ग़ज़ब, उसकी नाराज़गी, उसके अज़ाबे अलीम और उसकी तरफ़ से मुसल्लत होने वाली ज़िल्लत व ख़्वारी से बार-बार पनाह पकड़ते हैं।

तो तुम ग़ौर कर लो कि दुनिया की ख़यानत और आम लोग तो दूर बड़े बड़े उल्मा को ज़लालत और गुमराही के गहरे ग़ार में कहाँ तक धकेल कर ले जाती है लिहाज़ा बेदार और होशियार बनो, क्योंकि मामला बड़ा ख़तरनाक है और उम्र मुख़्तसर है और आमाल ख़ामियों से भरे हैं और आमाल को जाँचने वाला बड़ा साहिबे बसीरत है, अगर वह अच्छे आमाल पर हमें मौत नसीब फ़रमाए और हमारी लग़ज़िशों को माफ़ कर दे तो उसे कोई मुश्किल और दुशवार नहीं।

7. फिर सय्यदना हज़रत दाऊदعليه السلام से जो ज़मीन में ख़ुदा के नाइब और ख़लीफ़ा थे, सिर्फ़ एक लग़ज़िश हुई तो ख़ौफ़े इलाही से इस क़द्र रोए कि उनके आँसूओं से ज़मीन से सब्ज़ा उग आया, आप अ़लैहिस्लाम बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूँ अर्ज़ करते थे- "*ऐ अल्लाह! मेरी इस गिरया व ज़ारी को देख और मुझ पर रहम फ़रमा।*" अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब आया- "***ऐ दाऊद! तू अपनी लग़ज़िश तो भूल चुका है मगर तुझे अपना रोना याद है***" मन्क़ूल है कि चालीस रोज़ तक और बाज़ रिवायात के मुताबिक़ चालीस साल तक आपعليه السلام की तौबा क़बूल न हुई।
8. फिर सय्यदना हज़रत यूनुसعليه السلام से सिर्फ़ इतनी बात सादिर हो गई कि आप फिर एक दफ़ा बे-मौक़ा ग़ुस्से में आ गए तो समन्दर की गहराइयों में चालीस रोज़ तक मछली के पेट में क़ैद कर दिए गए, वहाँ आपعليه السلام यह तस्बीह पढ़ते और ख़ुदा को निदा करते थे:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

(कोई माबूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझको बेशक मुझसे बेजा हुआ।)

(सूरह अम्बिया, आयत -87)

फ़िरिश्तों ने आप(عليه السلام) की आवाज़ सुनी और अर्ज़ किया "ऐ इलाहिल आलमीन! आवाज़ तो पहचानी जाती है मगर उसका मक़ाम और उसकी जगह मालूम नहीं होती। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ व पुकार है। इस पर फ़िरश्तिों ने सिफ़ारिश की मगर इन तमाम बातों के बावजूद अल्लाह तआला ने आप(عليه السلام) का नामे मुबारक यूनुस लेने की बजाए '***ज़ुन्नून***' के नाम से आप(عليه السلام) का ज़िक्र किया। और इस क़िस्से को यूँ बयान फ़रमाया:-

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾

(फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह अपने आपको मलामत करता था। तो अगर वह तस्बीह करने वाला न होता ज़रूर उसके पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाये जायेंगे।)

(सूरह साफ़्फ़ात, आयत 142,144)

इस बयान के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुसعليه السلام पर अपनी नेअमत और अपने एहसान का ज़िक्र यूँ फ़रमाया:-

لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

(अगर उसके रब की नेअमत उसकी ख़बर को न पहुँच जाती तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुआ।)

(सूरह क़लम, आयत-49)

लिहाज़ा ऐ अज़ीज़ ख़ुदा-ए-तआला के इस तरीक़ा-ए-कार को ग़ौर से देख और उससे डर।

9. फिर रब तआला ने ख़ुद उस हस्ती को जिसे तमाम अम्बिया पर बुज़ुर्गी व फ़ज़ीलत और उसकी अपनी दरगाह में सबसे ज़्यादा मुकर्रम और मोहतरम होने का मक़ाम हासिल है यूँ ख़िताब फ़रमाया:-

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا

إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

(तो क़ायम रहो जैसा तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रुजू लाया है और ऐ लोगों सरकशी न करो बेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है।)

(सूरह हूद, आयत 112)

इस हुक्मे ख़ुदावन्दी के नुज़ूल के बाद हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ फ़रमाया करते थे:- "***मुझे सूरह हूद और उसकी तरह दूसरी सूरतों ने बूढ़ा कर दिया है।***" (मोअजमुल कबीर)

उल्मा-ए-किराम फ़रमाते हैं हुज़ूरعليه السلام की इससे यह आयत और इसी तरह की दूसरी आयात मुराद हैं। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने आपको यह हुक्म भी दिया:-

وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ

(और अपनों के गुनाहों की माफ़ी चाहो।)

(सूरह मोमिन, आयत-55)

इस हुक्म के मुताबिक़ हुज़ूरعليه السلام मुसलसल इस्तिग़फ़ार करते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से यह आयत नाज़िल हुई:-

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾

(और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।)

(सूरह अलम नशरह, आयत 2,3)

नीज़ यह आयत भी नाज़िल हुई:-

لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ

(और अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के।)

(सूरह फ़तह, आयत-2)

इस तरह की आयात के नुज़ूल के बाद हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ की यह हालत थी कि आपﷺ सोते नहीं थे बल्कि सारी-सारी रात इबादत में मशग़ूल

रहते थे यहाँ तक कि आपﷺ के क़दम मुबारक वरम कर आये। सहाबा-ए-किराम ﷺ ताज्जुब व हैरत से सवाल करते थे। "*आप इतनी ज़्यादा इबादत करते हैं? हांलाकि अल्लाह तआला ने तुम्हारे सबब से तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के गुनाह बख़्श दिए*" तो आपﷺ जवाब में फ़रमाते थे- "***क्या मैं अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ?***"

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ अपने अंगूठे और शहादत की उंगली से इशारा करते हुए यह भी फ़रमाया करते थे कि- "***मेरी और हज़रत ईसा عليه السلام की अगर इतनी सी भी लग़ज़िश पर पकड़ होती तो हम ऐसे अज़ाब में डाले जाते जो सबसे ज़्यादा सख़्त होता।***"

नोट: इस हदीसे पाक से मुताल्लिक़ नोट पीछे गुज़रा उसे वहीं से ज़रूर पढ़ें।

आपﷺ सारी सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते थे और रोते रहते थे और ज़बाने मुबारक से यह दुआ करते थे कि- "***ऐ अल्लाह मैं तेरे अज़ाब से तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ और तेरे ग़ज़ब से तेरी रज़ा की पनाह में आता हूँ और तुझसे तेरी पनाह में आता हूँ, मैं तेरी सना (तारीफ़) हरगिज़ नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जिस तरह तूने ख़ुद अपनी सना की है।***" (शोअबुल ईमान)

फिर सहाबा-ए-किराम رضي الله عنهم जिनका ज़माना बाद के ज़मानों से बेहतर था और जो तमाम उम्मत से अफ़ज़ल थे, आपस में सिर्फ़ एक दफ़ा कहीं हंसी मज़ाक़ हो गया तो फ़ौरन यह आयत नाज़िल हुई:-

اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُہُمۡ لِذِکۡرِ اللّٰہِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الۡحَقِّ ۙ

(क्या ईमान वालों को अभी वह वक़्त न आया कि उनके दिल झुक जायें अल्लाह की याद (के लिए)।)

(सूरह हदीद, आयत 16)

फिर अल्लाह तआला ने इस उम्मत के मरहूमा होने के बावजूद जुर्म करने वालों की तम्बीह व तादीब के लिए सज़ाएं और तदबीरें मुक़र्रर कर दीं।

हज़रत यूनुस इब्ने उबैद رحمة الله عليه कहा करते थे कि- "*अगर यहाँ किसी के पाँच दिरहम चोरी करने से तुम्हारा बेहतरीन उज़्व (अंग) हाथ कट सकता है तो वहाँ आख़िरत में तुम को अज़ाब से भी बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए।*"

हम अल्लाह तआला से हर वक़्त इल्तिजा करते हैं कि वह हमारे साथ अपने करम व फ़ज़्ल के मुताबिक़ सुलूक करे। *(इन्नहू हुवा अर्रहमुर्राहिमीन)*

रजा से मुताल्लिक़ चन्द वाक़ियात

मुक़ामे रजा के हासिल करने के लिए अल्लाह तआला की वसीअ रहमत को ध्यान में रखना चाहिए। रहमते ख़ुदावन्दी का तज़किरा करना एक अच्छी बात है, इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह तआला की रहमत का बयान और उसकी निहायत व ग़ायत इससे ज़ाहिर है कि वह एक घड़ी के ईमान से सत्तर बरस के कुफ़्र को उड़ा देता है, क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गयाः-

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ

(तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ फ़रमा दिया जाएगा।)

(सूरह अनफ़ाल, आयत-38)

तुम फ़िरऔन के जादूगरों के वाक़िए को नहीं देखते जो हज़रत मूसा عليه السلام के साथ जंग और मुनाज़रा करने के लिए आये थे और ख़ुदा के दुश्मन फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम खाई थी और मुक़ाबले पर तुल गए थे, उन्होंने हज़रत मूसा عليه السلام का सिर्फ़ एक मोजज़ा देखा तो इरफ़ाने हक़ नसीब हो गया और बोल उठे:-

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢١

(हम ईमान लाए जहान के रब पर।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-121)

इन जादूगरों के मुताल्लिक़ यह ज़िक्र कहीं नहीं आया कि उन्होंने ईमान के अलावा नेक आमाल भी किए थे, सिर्फ़ ईमान क़बूल करने की वजह से अल्लाह तआला ने अपने कलाम मजीद में बार बार तारीफ़ के तौर पर इनका ज़िक्र किया है और उनके पिछले सग़ीरा व कबीरा गुनाह, एक घड़ी भर बल्कि एक लहज़ा भर के ईमान की बरकत से माफ़ कर दिए। उन्होंने सच्चे दिल से सिर्फ़ इतना कहा था कि- ***"हम रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आए"*** इख़्लास के साथ सिर्फ़ इतने अल्फ़ाज़ कहने से अल्लाह तआला ने

उनकी रूहानियत में इन्क़िलाब पैदा कर दिया, और उन पर अपनी बेशुमार नेअमतों की बारिश कर दी और क़ियामत में हमेशा के लिए उनको शहीदों का सरदार बना दिया, यह अल्लाह तआला की उन लोगों पर करमनवाज़ी का हाल है जिन्हें सिर्फ़ एक लहज़ा के लिए उसके इरफ़ान और उसकी तौहीद पर क़ायम रहने का मौक़ा मिला, हालांकि उनकी पिछली ज़िन्दगी जादूगरी, कुफ़्र, गुमराही और शर फ़साद में गुज़री थी। तो उन लोगों पर ख़ुदा तआला की इनायत किस क़द्र होगी जिनकी ज़िन्दगी तौहीद पर इस्तेक़ामत और इबादत में गुज़र गई और दोनों जहान में अपने तमाम मामलात उसी से वाबस्ता रखे।

असहाबे कहफ़ के वाक़िए पर ग़ौर करो कि काफ़ी वक़्त तक यह लोग हालते कुफ़्र में रहे फिर उनको यकायक तौहीद व ईमान की तौफ़ीक़ नसीब हो गई, क़ुरआन मजीद में है:-

اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰـهًا

(जब खड़े होकर बोले कि हमारा रब वह है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी माबूद को न पूजेंगे।)

(सूरह कहफ़, आयत-18)

और जब वो अल्लाह तआला की तरफ़ मुल्तजी हुए तो उसने उनको फ़ौरन मक़बूल बन्दों का मक़ाम अता फ़रमाया और उन्हें रूहानी नेअमतों के साथ नवाज़ा फिर उनका निहायत एज़ाज़ व एहतराम फ़रमाया, चुनांचे क़ुरआन मजीद में वारिद है:-

وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ

(और हम उनकी दाहिनी बाईं करवटें बदलते हैं।)

(सूरह कहफ़, आयत-14)

नीज़ अल्लाह तआला ने उनकी इज़्ज़त व हुरमत क़ायम और महफ़ूज़ रखने के लिए उनको वहशत व हैबत का लिबास पहना दिया कि कोई उन

तक पहुँच न सके यहाँ तक कि उनके रोब व हैबत के मुताल्लिक़ अकरमुल ख़ल्क़ यानी हुज़ूर ﷺ को फ़रमाया:-

لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

(ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झाँक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे और उनसे हैबत में भर जाये।)

(सूरह कहफ़, आयत-18)

बल्कि ख़ुदा तआला ने उनके कुत्ते का एज़ाज़ व इकराम फ़रमाया यहाँ तक कि अपनी किताबे मुक़द्दस में मुतअद्दिद बार उसका जिक्र फ़रमाया फिर दुनिया में उनका साथी कर दिया और आख़िरत में उनके एज़ाज़ के तौर पर उस कुत्ते को जन्नत में दाख़िल होने की सआदत अता करेगा।

यह उसका एक कुत्ते पर फ़ज़्ल व करम है जो बिना ख़िदमत और बिना इबादत सिर्फ़ चन्द दिन और चन्द क़दम अहले तौहीद व इरफ़ान के साथ चला तो अल्लाह तआला का उस बन्दा-ए-मोमिन पर किस क़द्र फ़ज़्ल व करम होगा जो सत्तर बरस तक उसकी ख़िदमत (इबादत) में मसरूफ़ रहा और तौहीद के नशे में गुम रहा और उसकी बन्दगी में डूबा रहा बल्कि सत्तर साल तो कहाँ अगर बन्दा-ए-मोमिन सत्तर हज़ार साल जिन्दा रहता तो उसकी बन्दगी ही में मशग़ूल रहता।

क्या तुम्हें पता नहीं कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर किस तरह इताब फ़रमाया जब कि आपने मुजरिम लोगों के तबाह व बर्बाद होने की दुआ की थी।

और फिर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा عليه السلام पर क़ारून के बारे में कैसा इताब फ़रमाया और आपसे यूँ कहा- "***ऐ मूसा उसने तुझसे मदद चाही मगर तूने उसकी मदद न की मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! अगर वह मुझसे फ़रयाद करता तो मैं ज़रूर उसको बचा लेता और उसको माफ़ कर देता***"

इसी तरह हज़रत यूनुस عليه السلام से उनकी क़ौम के बारे में किस तरह इताबाना गुफ़्तगू की कि "***ऐ युनुस! तुझे कद्दू के एक दरख़्त के ख़ुश्क हो जाने का तो ग़म है जिसे मैंने एक घड़ी में उगाया और दूसरी घड़ी में***

ख़ुश्क कर दिया लेकिन 'नैनवा' शहर के एक लाख से ज़्यादा बाशिन्दों का तुझे कोई ग़म लाहिक़ न हुआ?"

फिर इस पर भी ग़ौर करो कि अल्लाह तआला ने उनकी क़ौम का कितनी जल्दी उज़्र क़बूल कर लिया और उनसे अज़ाबे अज़ीम उठा लिया हालांकि पहले उनको बतक़ाज़ा-ए-अद्ल गुमराही में डाल रखा था।

फिर इस वाक़िए पर भी ग़ौर करो कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीनﷺ से भी इताब वाली गुफ़्तगू फ़रमाई, जब कि एक दफ़ा आप अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम बाबे बनी शैबा से अन्दर तशरीफ़ लाए तो कुछ लोगों को देखा कि हँस रहे हैं तो फ़रमाया- "***क्यूँ हँसते हो, आइन्दा मैं तुमको हँसता हुआ न देखूँ***" यह बात कह कर जब आप हज्रे असवद के पास पहुँचे तो वहाँ से उल्टे पाँव फ़ौरन वापस लौटे और आकर उन लोगों से फ़रमाने लगे कि- "***अभी अभी मेरे पास जिब्रीले अमीन आये और ख़ुदा तआला की तरफ़ से यह पैग़ाम लाए हैं कि मेरे ह़बीब! तू मेरे बन्दों को मेरी रह़मत से क्यूँ मायूस करता है, मेरे बन्दों को बता दो कि मैं ग़फ़ूर व रह़ीम हूँ।***"

हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का एक इरशादे मुबारक है कि- "***अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों पर मेरहबान माँ के अपने बच्चे पर शफ़ीक़ होने से भी ज़्यादा मेहरबान है।***" (सही बुख़ारी)

एक और मशहूर हदीस में हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से वारिद है कि आपﷺ ने फ़रमाया- "***बेशक अल्लाह तआला के पास सौ रह़मतें थीं तो उसने उनमें से सिर्फ़ एक रह़मत को जिन्नों, इन्सानों और हैवानात के दरमियान तक़सीम किया तो हर जानदार सिर्फ़ उसकी एक रह़मत से एक दूसरे से नर्मी और शफ़क़त से पेश आता है, बाक़ी एक कम सौ रह़मतें उसने अपनी ज़ात के लिए मख़सूस कर रखी हैं जिन्हें वह क़ियामत के रोज़ अपने बन्दों के दरमियान तक़सीम फ़रमाएगा।***"

जब उसने अपनी रह़मत के सौ हिस्सों में से सिर्फ़ एक हिस्से से दुनिया में तुझ पर इस क़द्र नेअमतें कीं कि तुझे अपनी मारिफ़त अता की, इस उम्मते मरहूमा में पैदा किया और तरीक़ा-ए-अहले सुन्नत व जमाअत की पहचान नसीब की। इसके अलावा बेशुमार ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें अता कीं, तो

उसके फ़ज़्ले अज़ीम से इस बात की भी उम्मीद है कि वह अपनी नेअमतें तुझ पर कामिल कर दे क्योंकि जो एहसान की शुरूआत करता है उसके ज़िम्मे होता है कि उसको मुकम्मल कर दे और बक़िया एक कम सौ रहमतों से हिस्सा बहुत ज़्यादा अता करे। हम अल्लाह तआला से इल्तिजा करते हैं वह हमें अपने फ़ज़्ले अज़ीम से नामुराद न करे, बेशक वह बड़ा साहिबे करम व एहसान का मालिक है और बड़ा रहीम और जव्वाद है।

तीसरी अस्ल

आख़िरत के वादा और वईद के बयान में

हम इस सिलसिले में पाँच क़िस्म के हालात का ज़िक्र करते हैं:-

1. मौत, 2. क़ब्र, 3. क़ियामत, 4. जन्नत, 5. दोज़ख़

और हर मक़ाम के मुनासिब उन बड़े बड़े ख़तरों का तज़किरा जो नेकोकार, नाफ़रमानों, नेक कामों में कोताही करने वालों और नेकी में पूरी कोशिश करने वालों को पेश आयेंगी।

मौत का बयान

इस बाब में दो आदमियों का हाल ज़हन में रखो, एक तो वह जो इब्ने शुबरुमह عليه الرحمة से मरवी है वह बयान करते हैं कि- *"एक दफ़ा मैं और शअ़बी عليه الرحمة एक मरीज़ की इयादत को गए, उस पर नज़ा की हालत तारी हो चुकी थी और उसके पास बैठा हुआ एक शख़्स कलिमए तय्यबा की तलक़ीन कर रहा था। हज़रत शअ़बी عليه الرحمة ने उससे कहा कि मरीज़ से नर्मी और शफ़क़त से पेश आओ, इतने में मरीज़ बोल उठा और कहने लगा तू मुझे कलिमा-ए-तय्यबा की तलक़ीन करे या न करे, मैं यह ज़रूर पढ़ूंगा, फिर उस मरीज़ ने क़ुरआन करीम के यह अल्फ़ाज़ पढ़े:*

وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ط

(और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वह उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके अहल थे।)

(सूरह फ़तह, आयत-26)

तो शअ़बी ﷺ ने कहा- *“उस ख़ुदा की ह़म्द व सना जिसने हमारे दोस्त को निजात अता फ़रमाई।”*

दूसरा वाक़िया वह है जो हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ ﷺ से मरवी है कि आप अपने एक शागिर्द के पास पहुँचे जो मर रहा था, आप उसके सर के पास बैठ गए और सूरह यासीन पढ़ने लगे। तो उसने कहा ‘सूरह यासीन पढ़नी बन्द कर दें, फिर आपने उसे कलिमा-ए-तय्यबा की तलक़ीन की, मगर उसने कहा मैं यह कलिमा बिल्कुल नहीं पढ़ूँगा मैं इससे बेज़ार हूँ और इन अल्फ़ाज़ पर उसकी मौत हो गई, हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ ﷺ को अपने शगिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुआ, और चालीस रोज़ तक अपने घर से बाहर न निकले, अन्दर ही बैठ कर रोते रहे, चालीस दिन के बाद ख़्वाब में देखा कि उस शगिर्द को फ़िरिश्ते दोज़ख़ में घसीट रहे हैं, आपने उससे दरयाफ़्त किया किस वजह से अल्लाह तआला ने तेरी मारिफ़त सल्ब कर ली हालांकि तू मेरे साहिबे इल्म और लायक़ तरीन शगिर्दों मे से था? तो उसने जवाब दिया तीन ख़राबियों की वजह से, एक तो मेरे अन्दर चुग़लख़ोरी का ऐब था कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आपको उसके ख़िलाफ़, और दूसरा ऐब यह था कि मैं अपने साथियों से हसद करता था, और तीसरा ऐब यह था कि मुझे एक बीमारी थी मैंने उस बीमारी का हकीम से इलाज पूछा तो उसने कहा कि साल मे एक दफ़ा एक गिलास शराब पिया कर तब सेहतयाब होगा वर्ना यह बीमारी तुझे नहीं छोड़ेगी तो हर साल मैं एक गिलास शराब पीता था।

अल्लाह तआला हमें अपनी नाराज़गी से बचाए जिसको हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। फिर दो और आदमियों के हाल पर ग़ौर करो।

एक तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷺ हैं कि जब आप ﷺ का आख़िर वक़्त आया तो नज़र आसमान की तरफ़ उठाई, हँसे और ज़बान से यह अल्फ़ाज पढ़े और विसाल कर गए:-

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

(ऐसी ही बात के लिए कामियों को काम करना चाहिए।)

(सूरह सिफ़त, आयत-61)

और मैंने अपने उस्ताद हज़रत इमामुल हरमैन ﷺ से सुना है कि वह अपने उस्ताद हज़रत अबूबक्र ﷺ की यह हिकायत बयान करते थे कि ज़माना-ए-तालीम में मेरा एक साथी था जो शुरूआती किताबें पढ़ता था, तालीम में निहायत मेहनती और परहेज़गार और इबादत गुज़ार था लेकिन मेहनत व बहुत ज़्यादा कोशिश के बावजूद तालीम में बहुत कम आगे बढ़ता था, हमें उसके हाल पर ताज्जुब होता था, वह तालिबे इल्म अचानक बीमार हो गया और वहाँ औलिया अल्लाह की एक ख़ानक़ाह में पड़ गया। अस्पताल में दाख़िल न हुआ, लेकिन सख़्त बीमारी की हालत में भी उसने पढ़ने की कोशिश जारी रखी यहाँ तक कि उसकी हालत ज़्यादा नाज़ुक हो गई, उस वक़्त मैं उसके पास था, अचानक उसने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और फिर मुझसे कहा ऐ इब्ने फ़ौरक!

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

(ऐसी ही बात के लिए कामियों को काम करना चाहिए।)

(सूरह सिफ़त, आयत-61)

ये अल्फ़ाज़ कहे और फ़ौत हो गया।

दूसरा वाक़िया वह है कि जो हज़रत मालिक इब्ने दीनार ﷺ से मन्क़ूल है, आप फ़रमाते हैं कि मेरा एक पड़ोसी था, मैं मौत के वक़्त उसके पास गया, उस वक़्त उस पर नज़ा का वक़्त तारी था मुझे देख कर कहने लगा ऐ मालिक! इस वक़्त मुझे अपने सामने आग के दो पहाड़ नज़र आते हैं और कहा जाता है कि उन पर चढ़। मालिक इब्ने दीनार ﷺ कहते हैं कि मैंने उसके घर वालों से उसके मुताल्लिक़ पूछा उन्होंने कहा इस शख़्स ने ग़ल्ले के लिए दो पैमाने रखे हुए हैं एक ग़ल्ला लेने का दूसरा ग़ल्ला देने का, मैंने वो दोनों पैमाने मँगवाए और एक दूसरे पर मार कर तोड़ दिए, फिर मैंने उससे दरयाफ़्त किया अब कैसा हाल है? उसने कहा मामला तो और ही ज़्यादा नाज़ुक और ख़राब हो रहा है।

क़ब्र और मौत के बाद का हाल

इस बाब में भी दो आदमियों का क़िस्सा याद रखने के लायक़ है, एक तो वह जो किसी बुज़ुर्ग ने फ़रमाया है कि मैंने हज़रत सुफ़यान सौरी ﷺ को उनके विसाल शरीफ़ के बाद ख़्वाब में देखा, तो मैंने कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह! तुम किस हाल में हो तो आपने मुझसे फ़रमाया यह कुन्नियत से बुलाने का वक़्त नहीं। फिर मैंने कहा ऐ सुफ़यान किस हाल में हो? तो आपने जवाब में यह अशआर पढ़े जिनका तर्जुमा पेश है:-

- *मौत के बाद मैंने अपने परवरदिगार को बिल्कुल सामने देखा, मेरे परवरदिगार ने मुझे फ़रमाया ऐ इब्ने सईद तुझे मेरी रज़ामन्दी मुबारक हो।*
- *तू तारीक रातों में मेरी याद के अन्दर खड़ा रहता था उस वक़्त तेरी आँखों से ज़ौक़ व शौक़ के आँसू जारी होते थे और तेरा दिल पूरी तरह मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होता था।*
- *अब जन्नतुल फ़िरदौस के महल तेरे सामने हैं, तू जिसे चाहता है ले ले और हर वक़्त मेरी ज़्यारत से लुत्फ़अन्दोज़ हो क्योंकि मैं तेरे सामने और तेरे क़रीब ही रहूँगा।*

दूसरा वाक़िया उस शख़्स का है कि जिसे बाज़ लोगों ने ख़्वाब में देखा कि उसका रंग बदला हुआ है और दोनों हाथ गरदन से बंधे हुए हैं, उससे दरयाफ़्त किया गया ऐ शख़्स! अल्लाह तआला ने तेरे साथ क्या मामला किया है? तो उसने जवाब में यह शेर पढ़ा जिसका तर्जुमा पेश है:

- *वह ज़माना बीत गया जिसमें हम खेलते थे अब यह वह ज़माना है कि हमसे खेल रहा है।*

नीज़ इस बाब में दो और आदमियों का हाल भी ज़हन में रखने के क़ाबिल है, एक तो यह कि किसी बुज़ुर्ग का लड़का शहीद हो गया, वह अपने बाप को कभी ख़्वाब में नज़र न आया। सिर्फ़ उस दिन ख़्वाब में बाप से मिला जिस दिन सय्यदना हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ ﷺ ने विसाल फ़रमाया। बाप ने देख कर फ़रमाया- *"ऐ मेरे बेटे क्या तुझ पर मौत नहीं वाक़ेअ हो चुकी?"* तो उसने जवाब दिया- *"मैं मुर्दा नहीं हूँ बल्कि मुझे शहादत नसीब*

हुई है और मैं अल्लाह तआला के क़ुर्ब में ज़िन्दा हूँ और मुझे तरह-तरह की रोज़ी मिलती है।” बाप ने कहा- “*आज तू कैसे इधर आ गया?*” तो उसने कहा- “*आज तमाम आसमान वालों को आवाज़ दी गई कि आज कोई नबी, सिद्दीक़ और शहीद इधर न रहे, सब उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज के जनाज़े में शरीक हों, तो मैं भी उनकी नमाज़े जनाज़ा में शिरकत के लिए इधर आया था फिर मैं नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ होकर तुम्हें सलाम कहने आ गया हूँ।*”

और दूसरा वाक़िया वह है जो हश्शाम इब्ने हस्सान عليه السلام के मन्क़ूल है, वह कहते हैं कि मेरा एक छोटी उम्र का बच्चा फ़ौत हो गया। मौत के बाद मैंने उसे ख़्वाब में देखा कि बूढ़ा हो चुका है। मैंने पूछा ऐ बच्चे तू बूढ़ा किस तरह हो गया? तो उसने जवाब दिया जब फ़ुलाँ शख़्स दुनिया से हमारे पास पहुँचा तो दोज़ख़ ने उसे देख कर ग़ुस्से से एक साँस ली जिसके ख़ौफ़ से हम सब एक घड़ी में बूढ़े हो गए।

(नऊज़ु बिल्ला हिर्रहीमि मिनल अ़जाबिल अलीम)

रोज़े क़ियामत

रोज़े क़ियामत में लोगों की कैफ़ियत इस आयत में बयान की गई है:-

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

(जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जायेंगे मेहमान बना कर और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हाकेंगे प्यासे।)

(सूरह मरयम, आयत- 85,86)

एक शख़्स क़ब्र से उठेगा तो उसकी सवारी के लिए क़ब्र पर बुराक़ तैयार होगा, तो क़ब्र से निकलते ही उसके सर पर नूरी ताज रखा जाएगा, आला लिबास पहनाया जाएगा और बुराक़ पर बैठा कर ले जाया जाएगा, उसके एज़ाज़ व इकराम की ख़ातिर उसको पैदल नहीं चलने दिया जाएगा।

और एक दूसरा शख़्स क़ब्र से उठेगा तो दोज़ख़ के फ़िरिश्ते, दोज़ख़ की जंजीरें और तरह-तरह के अज़ाब उसे दोजख़ की तरफ़ पैदल चलने की

फ़ुरसत भी नहीं देंगे बल्कि क़ब्र से निकलते ही उसे चेहरे के बल घसीट कर फ़िरिश्ते दोज़ख़ में डाल देंगे। *(नऊज़ु बिल्लाहि मिन ग़ज़बिह)*

मैंने बाज़ उल्मा-ए-किराम से यह हदीसे मुबारक सुनी है कि हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया:- ***"क़ियामत के दिन एक क़ौम क़ब्रों से निकलेगी, उनके लिए सब्ज़ परों वाली निहायत उम्दा सवारियाँ उनकी क़ब्रों पर तैयार खड़ी होंगी, वो उन पर सवार हो जायेंगे तो वह उन्हें उड़ा कर मैदाने महशर में ले जायेंगी चुनाँचे वो उन सवारियों पर जन्नत की दीवारों तक पहुँच आयेंगे, जन्नत की दीवारों पर मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते उन्हें देख कर आपस में कहेंगे ये कौन लोग हैं बाज़ जवाब देंगे शायद ये लोग हज़रत मुहम्मदﷺ की उम्मत से हैं। तो चन्द फ़िरिश्ते उनके पास आयेंगे और पूछेंगे तुम कौन हो और किस उम्मत से हो तो वो जवाब देंगे हज़रत मुहम्मदﷺ की उम्मत से हैं। तो फ़िरिश्ते उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारा हिसाब व किताब हो चुका? तो वो जवाब देंगे हमारा कोई हिसाब नहीं हुआ। फिर फ़िरिश्ते दरयाफ़्त करेंगे क्या तुम्हारे आमाल तोले जा चुके हैं? वह उसको भी मना करेंगे। फिर फ़िरिश्ते उनसे दरयाफ़्त करेंगे क्या तुमने अपने आमाल नामे पढ़ लिए हैं वो कहेंगे नहीं। तो फ़िर फ़िरिश्ते उनसे कहेंगे वापस चलो क्योंकि ये सब कार रवाई पीछे रह गई है। तो वो लोग जवाब देंगे क्या तुमने हमको कोई चीज़ दी थी जिसका हमसे हिसाब लिया जाए। दूसरी हदीस में है वो जवाब देंगे दुनिया में हम किसी चीज़ के मालिक नहीं थे कि हम अद्ल व इन्साफ़ करते या ज़ुल्म का इरतेकाब करते हम तो दुनिया में अपने रब की बन्दिगी और इबादत में मसरूफ़ रहे। यहाँ तक कि उसने हमको यहाँ बुलाया तो हम आ गए। इतने में कोई आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा मेरे बन्दे ने ठीक बयान किया, इख़्लास से नेकी में ज़िन्दगी गुज़ार कर आने वालों से कोई आमाल की पुरसिश नहीं और अल्लाह तआला ग़फ़ुरुर्रहीम है।"***

ऐ मुख़ातिब! क्या तूने ख़ुदा तआला का यह फ़रमाने मुबारक नहीं सुना:-

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِىْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

(तो क्या जो आग में डाला जाएगा वह भला या जो क़ियामत में अमान से आयेगा।)

(सूरह हा मीम, सजदा-आयत 40)

और वह शख़्स किस क़द्र अज़ीम मरतबा होगा जो क़ियामत के उन ख़ौफ़नाक मन्ज़रों, हैबतनाक ज़लज़लों और डराने वाले वक़ियात को देखेगा मगर उसके दिल को कोई ख़ौफ़, घबराहट और बोझ महसूस नहीं होगा बल्कि वह ख़ुदा की मेहरबानी से क़ियामत की मुद्दत में सुकून व अमन के साथ गुज़ार कर जन्नत की तरफ़ चला जाएगा। हम अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करते हैं कि हमें और तुम्हें सब को उन नेकबख़्तों में दाख़िल करे और यह अल्लाह तआला के लिए कोई मुश्किल नहीं।

जन्नत और दोज़ख़ का बयान

इस बाब में क़ुरआन मजीद की इन दो आयात पर ग़ौर करो, एक आयत यह है:-

وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿۲۱﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۲۲﴾

(और उन्हें उनके रब ने सुथरी शराब पिलाई। उनसे फ़रमाया जाएगा यह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी।)

(सूरह दहर, आयत-21, 22)

और दूसरी आयत वह है जिसमें अल्लाह तआला ने दोज़ख़ वालों का हाल इस तरह नक़्ल किया है:-

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾

(ऐ हमारे रब हमको दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं रब फ़रमाएगा धुत्कारे (ज़लील होकर) पड़े रहो इसमें और मुझसे बात न करो।)

(सूरह मोमिन, आयत-107, 108)

रिवायत में है कि उसके बाद उनकी शक्लें कुत्तों की तरह हो जायेंगी और वह उसमें कुत्तों की तरह भौंकते फिरेंगे। (*नऊज़ु बिल्लाहिर्रिऊफ़िर्रहीम मिन अज़ाबिहिल अलीम*)

तो मामला ऐसा है जैसा हज़रत याह्या इब्ने मुआज़ राज़ी ﷬ ने फ़रमाया कि हम नहीं जानते कि दो मुसीबतों में से बड़ी मुसीबत कौन सी है जन्नत का हाथ से चले जाना या दोज़ख़ में जाना, जन्नत से सब्र की कोई गुन्जाइश नहीं और दोज़ख़ के अज़ाब को बर्दाश्त करने की कोई सूरत नहीं बहर सूरत नेअमत का फ़ौत होना अज़ाबे दोज़ख़ बर्दाश्त करने से निसबतन आसान है फिर दोज़ख़ में हमेशा रहना बहुत बड़ा हादसा और बहुत बड़ी मुसीबत है। इसलिए कि अज़ाब किसी वक़्त ख़त्म हो जाने वाला होता तो फिर भी कुछ सुहूलत थी लेकिन वह तो हमेशा हमेशा तक रहेगा वह कभी ख़त्म न होगा तो किस दिल में ऐसा अज़ाब बर्दाश्त करने की ताक़त है और किस की जान इस पर सब्र कर सकती है, इसीलिए हज़रत ईसा अ़लैहिस्लाम ने फ़रमाया- "***अज़ाबे दाइमी (हमेशा रहने वाला अज़ाब) का तज़किरा डरने वालों के दिलों को टुकड़े टुकड़े कर देता है***"

हज़रत हसन ﵁ के सामने जब उस शख़्स का ज़िक्र किया गया जो सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा जिसका नाम 'हन्नाद' होगा, उसको एक हज़ार साल अज़ाब हुआ होगा वह 'या हन्नान' 'या मन्नान' पुकारते हुए दोज़ख़ से बाहर आएगा, तो उसका हाल सुन कर रो पड़े और फ़रमाने लगे- "*काश! हन्नाद मैं होता*"

लोगों का आपके इस क़ौल पर ताज्जुब हुआ, आपने फ़रमाया कि- "*तुम पर अफ़सोस! कि बात नहीं समझते, वह एक न एक दिन अज़ाब से निकल आयेगा।*"

मैं कहता हूँ ख़ौफ़ व डर का यह सारा मामला एक उसूली बात की तरफ़ लौटता है और वही एक नुकता है जो पीठों को तोड़ता है और चेहरों को ज़र्द कर देता है जिसके तसव्वुर से जिगर पिघल जाते हैं, दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं और रोने वालों की आँखें ख़ून के आँसू बरसाती हैं, वह नुकता है मारिफ़ते इलाही का छिन जाना, यह वह अस्ल बात है जिसका ख़ौफ़ डरने

वालों को हर वक़्त लगा रहता है और जिस पर रोने वालों की आँखें हर वक़्त आँसू बहाती रहती हैं।

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है ग़म दरहक़ीकत एक ही है और वह ईमान छीन लिए जाने का ग़म है बाक़ी हर ग़म इससे कम दर्जे का है क्योंकि वह किसी वक़्त ख़त्म हो सकता है लेकिन ईमान का छीन लिये जाने का ग़म कभी दूर नहीं हो सकता।

हमें यूसुफ़ इब्ने असबात से यह बात पहुँची है कि एक दफ़ा आप हज़रत सुफ़यान सौरी के पास तशरीफ़ ले गए। यूसुफ़ इब्ने असबात फ़रमाते हैं मैंने देखा कि हज़रत सुफ़यान सौरी सारी रात रोते रहे। मैंने दरयाफ़्त किया- "*क्या आप अपने गुनाहों के ख़ौफ़ से रोते हैं?*" तो हज़रत सुफ़यान सौरी ने एक तिनका उठाया और फ़रमाया कि- "*गुनाह तो अल्लाह तआला के सामने इससे भी कम हैसियत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि अल्लाह तआला दौलते इस्लाम न छीन ले।*" हम एहसान करने वाले अल्लाह से इल्तिजा करते हैं कि वह हमें किसी मुसीबत में मुब्तला न करे और अपने फ़ज़्ल से हम पर अपनी नेअमतों की तकमील करे और मिल्लते इस्लाम पर हमें मौत नसीब करे। वह '***अर्रहमुर्राहिमीन***' है। हम बुरे ख़ात्मे का सबब और मअना अपनी किताब 'इहयाउल उलूम' में बयान कर चुके हैं, वहाँ देख लो, यहाँ इस बहस को छेड़ना एक लम्बी बहस का दरवाज़ा खोलना है जिसकी यह किताब मुतहम्मिल नहीं, तुम इस मुख़्तसर बात को संजीदगी से समझो क्योंकि बाज़ वक़्त तफ़्सील व तशरीह से मक़सद के ख़िलाफ़ ख़्यालात पैदा हो जाते हैं लिहाज़ा मुख़्तसर बयान पर ही किफ़ायत करो, शायद तुम्हें अल्लाह तआला की मदद व तौफ़ीक़ से फ़लाह व कामयाबी नसीब हो।

सवाल: तुम अगर यह सवाल करो कि 'फिर तुम्हें कौन सा रास्ता इख़्तियार करना चाहिए? ख़ौफ़ का रास्ता या रजा का रास्ता?

जवाब: तो इसका जवाब यह है कि तुम्हें इन दोनों के दरमियान का रास्ता इख़्तियार करना चाहिए क्योंकि कहा गया है कि जिस पर रजा का ग़लबा हो गया वह *मुरजिआ* (एक बदमज़हब फ़िरक़े का नाम) बन जाता है और उसके मुताल्लिक़ अक्सर यह ख़तरा रहता है कि यह शख़्स *हुर्रमियुल*

अक़ाइद (एक बदमज़हब फ़िरक़े का नाम) बन जाए और जिस पर ख़ौफ़ का ग़लबा हो गया वह *ख़वारिज* (एक गुमराह फ़िरक़ा) में से हो गया। इस मक़ूले का मतलब यह भी है कि सिर्फ़ एक पहलू इख़्तियार न करे और हक़ीक़त यह भी है कि रजा हक़ीक़ी ख़ौफ़े हक़ीक़ी से अलग नहीं हो सकती और ख़ौफ़े हक़ीक़ी रजा हक़ीक़ी से जुदा नहीं हो सकता, इसी बिना पर यह कहा गया है कि सब का सब ख़ौफ़ वालों के लिए है अमन से उन्हें कोई तअल्लुक़ नहीं और ख़ौफ़ सब का सब रजा वालों के लिए है यास यानी नाउम्मीदी से उन्हें कोई वास्ता नहीं।

सवाल: क्या वक़्त और हालात के ऐतबार से उनमें से किसी एक को तरजीह और ज़्यादती हासिल हो सकती है या हर हाल में दोनों के दरमियान रास्ता पर ही क़ायम रहना ज़रूरी है?

जवाब: मालूम होना चाहिए कि जब इन्सान तन्दरुस्त व क़वी हो तो ऐसी हालत में ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिए और जब बीमार पड़ जाए और कमज़ोरी का शिकार हो जाए ख़ास कर जब आख़िरी सफ़र आ जाए तब उस वक़्त रजा का ग़लबा होना चाहिए मैंने उल्मा-ए-किराम से यूँ ही सुना है, मैं कहता हूँ इसकी एक दलील भी है, मरवी है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- "***मैं उन लोगों के पास होता हूँ जिनके दिल मेरे ख़ौफ़ से चूर हो चुके हैं***"

तो ऐसे वक़्त में उसके लिए रजा औला और बेहतर है क्योंकि सेहत, क़ुव्वत और क़ुदरत के ज़माने में उस पर ख़ौफ़ ग़ालिब रहा होता है इसलिए उनसे कहा जाता है:-

اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا

(कि न डरो और न ग़म करो।)

(सूरह हा मीम सजदा, आयत-30)

सवाल: क्या बहुत सी अख़बार और हदीसें इस सिलसिले में वारिद नहीं हुई कि अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखना चाहिए और इस हुस्ने ज़न की तरग़ीब में भी बहुत रिवायात वारिद हैं?

जवाब: मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न यह है कि बन्दा उसकी नाफ़रमानी से बचे उसके अज़ाब और पूछताछ से डरे और उसकी बन्दिगी में कोशिश करे।

मालूम होना चाहिए कि यहाँ एक मज़बूत अस्ल और एक अहम नुकता है जिसमें अक्सर लोग ग़लती का शिकार हैं और वह यह है कि रजा और आरज़ू में फ़र्क़ है क्योंकि रजा तो दलील और अस्ल से वाबस्ता होती है मगर आरज़ू एक बेअस्ल और बेदलील चीज़ है, इन दोनों की मिसाल यूँ है कि एक शख़्स बीज डाले और फिर उसकी देखभाल में मेहनत व कोशिश करे फिर फ़सल काट कर खलियान में रखे, फिर यह कहे मुझे उम्मीद है कि सौ बोरी फ़सल हो जाएगी, तो यह रजा और उम्मीद है इसके ख़िलाफ़ एक दूसरा शख़्स हो जिसने मौक़े पर न बीज डाला और खेती बाड़ी का एक दिन भी काम न किया घर पर ही सोया रहा और सारा साल ग़फ़लत में गुज़ार दे और फ़सल उठाने के वक़्त कहना शुरू कर दे कि उम्मीद है कि सौ बोरी ग़ल्ला हासिल हो जाए। तो ऐसे शख़्स से कहा जाएगा कि तेरी यह उम्मीद हक़ीक़त में उम्मीद नहीं बल्कि यह तो सिर्फ़ आरज़ू है। बिल्कुल इसी तरह बन्दा जब नेक आमाल में कोशिश करे और गुनाहों से बचे तो यह कह सकता है कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस हक़ीर की ख़िदमत को क़बूल फ़रमाये और कमी को पूरा करे और इस पर बड़ा सवाब इनायत करे और गुनाहों को माफ़ करे और मुझे अल्लाह तआला की ज़ात से हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) है, तो बन्दे की इस तरह की उम्मीद रजा कहलाती है जो शरीअत को पसन्दीदा है लेकिन एक शख़्स अगर ग़ाफ़िल लापरवाह है नेक कामों को हाथ न लगाए गुनाह व नाफ़रमानी करे, अल्लाह तआला के ग़ज़ब व नाफ़रमानी की कोई परवाह न करे और अल्लाह तआला की रज़ा और उसके वादा वईद को ख़ातिर में न लाए फिर यूँ कहता फिरे कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला मुझे जन्नत अता करेगा और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाएगा तो यह आरज़ू है, रजा और उम्मीद नहीं और एक न हासिल होने वाली शय है, उसने इसको रजा और हुस्ने ज़न का नाम दे दिया, वह इस सिलसिले में भटका हुआ है और ख़ता और ग़लतफ़हमी में मुब्तला है, एक शायर ने यह मज़मून यूँ अदा किया है जिसका मतलब पेश है:

- *तुम निजात की उम्मीद रखते हो लेकिन निजात के रास्ते इख़्तियार नहीं करते, कश्ती ख़ुश्क पर नहीं चल सकती।*

मैं कहता हूँ इस अस्ल और क़ायदे की ताईद जिससे होती है वह हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ की यह हदीस है कि आपﷺ ने फ़रमाया:- ***"दाना (समझदार) वह है जो अपने नफ़्स को शरा और दीन के ताबे करे और मौत के बाद के लिए ज़ख़ीरा आमाल का करे और अहमक़ वह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और अल्लाह तआला से निजात और जन्नत की उम्मीद लगाए रखे।"*** (सुनन इब्ने माजा)

इस बारे में हज़रत हसन बसरी رضي الله عنه का यह क़ौल है कि कुछ लोग वो होते हैं जो दुनिया में बख़्शिश और मग़फ़िरत की उम्मीदों में रहते हैं, नेक अमल कुछ नहीं करते, दुनिया से आख़िरत की तरफ़ मुफ़लिस और क़ल्लाश जाते हैं उनके पास कोई नेकी नहीं होती और कहते यह हैं कि हमें अपने रब से हुस्ने ज़न है (कि वह हमसे बेहतर सुलूक करेगा) लेकिन ऐसे लोग झूठे हैं क्योंकि अगर उन्हें अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न होता तो उनके आमाल भी अच्छे होते। फिर क़ुरआन मजीद की यह आयत पढ़ी:-

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا

(तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे।)

(सूरह कहफ़, आयत-11)

दूसरी आयत यह पढ़ी:-

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

(और यह है तुम्हारा वह गुमान जो तुमने अपने रब के साथ किया और उसने तुम्हें हलाक कर दिया तो अब रह गए हारे हुओं में।)

(सूरह हा मीम सजदा, आयत-23)

हज़रत जाफ़र ज़बई رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि मैंने एक दफ़ा हज़रत अबू मैसरह आबिद رحمة الله عليه को देखा कि इबादत व बन्दगी में कोशिश व मेहनत और

मुजाहिदे की कसरत की वजह से उनकी पसलियाँ निकल आईं थीं। मैंने कहा अल्लाह आप पर रहम करे, अल्लाह तआला की रहमत तो बड़ी वसीअ है। आप ये अल्फ़ाज़ सुनकर ग़ुस्से में आ गए और फ़रमाया कि तूने मेरे अन्दर ऐसी चीज़ देखी है जिससे यह ज़ाहिर हो कि मैं अल्लाह तआला की रहमत से मायूस और नाउम्मीद हूँ, अल्लाह तआला की रहमत तो नेकोकार लोगों के बिल्कुल क़रीब है। हज़रत जाफ़र ज़बई ﷺ कहते हैं कि मुझे आपकी यह बात सुनकर रोना आ गया कि जब अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और तमाम औलिया और अब्दाल इबादत में कोशिश व मेहनत और गुनाह से पूरी तरह परहेज़गारी और बचने के बावजूद हर वक़्त ख़ौफ़ व ख़शिय्यत से लबरेज़ रहे तो तुम्हारा क्या ख़्याल है कि उन्हें अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न नहीं हालांकि उन्हें उसकी वसीअ रहमत पर बड़ा यक़ीन था और उन्हें अल्लाह तआला के जूद व करम से बड़ा हुस्ने ज़न था। दरहक़ीक़त वह जानते थे कि ताअत में कोशिश और मेहनत के बग़ैर ख़ाली हुस्ने ज़न, हुस्ने ज़न नहीं बल्कि झूठी आरज़ू और धोखा और ग़ुरूर है। इस नुकते से इबरत पकड़ और सालेहीन के हालात पर ग़ौर करो और ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाओ। *(वल्लाहु तआला वलीय्युत्तौफ़ीक़ि)*

फ़स्ल

ख़ुलासा गुफ़्तगू यह हुआ कि जब तुम अल्लाह तआला की रहमत का तसव्वुर करोगे जो उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है और जो तमाम चीज़ों को घेरे हुए है फिर उसका भी तसव्वुर करो कि ख़ुदा तआला ने तुमको उस उम्मते मरहूमा मुकर्रमा में पैदा फ़रमाया फिर उसके फ़ज़्ले अज़ीम और उसके कमाल और जूद व करम का भी तसव्वुर करो, फिर इस बात का भी तसव्वुर करो फिर वह किताब जो उसने तेरी हिदायत के लिए नाज़िल फ़रमाई उसको '*बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम*' से शुरू किया यानी '*बिस्मिल्लाह*' के अन्दर ही अपनी रहमानियात और रहीमियत का ज़िक्र फ़रमाया। फिर इसका भी तसव्वुर करो कि उस ज़ाते करीम ने तुम्हारी तरफ़ से किसी सिफ़ारिशी और किसी इबादत के बग़ैर सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से तुम्हें बेशुमार ज़ाहिरी व

बातिनी मेहरबानियों और इनामात से नवाज़ा। दूसरी तरफ़ उसके कमाले जलाल उसकी अज़मत उसकी अज़ीम क़ुदरत व हैबत नीज़ उसके शदीद ग़ज़ब व नाराज़गी का भी तसव्वुर करो जिसके आगे आसमान और ज़मीन भी नहीं ठहर सकते। फिर तुम आख़िरत के मामले की नज़ाकत और ख़तरे के साथ अपनी इन्तिहाई ग़फ़लत अपने लातादाद गुनाह और अपनी संगदिली का भी तसव्वुर करो, फिर इस बात का तसव्वुर करो कि अल्लाह तआला तुम्हारी तमाम हरकतों, तुम्हारे तमाम ऐबों और पोशीदा बातों से भी पूरी तरह वाक़िफ़ व आगाह है, फिर तुम उसके हुस्ने वादा (अच्छे सवाब का वादा) और उस सवाब को भी ज़हन में लाओ जिसकी बारीकी और हक़ीक़त इन्सानी वहम व गुमान से बहुत बुलन्द है, फिर उसकी शदीद वईदों (सख़्त अज़ाब का वादा) और उसके अज़ाबे अलीम (दर्दनाक अज़ाब) को भी ख़्याल में लाओ जिसको इन्सान के दिल बर्दाश्त नहीं कर सकते, नीज़ तुम उसके फ़ज़्ल व करम उसके मुक़ाबले में उसके अज़ाब फिर उसकी रहमत और शफ़क़त फिर अपने नफ़्स की ज़्यादती और बेराहरवी और जुर्म व माफ़ी को भी ज़हन में रखोगे तो यह तमाम बातें तुम्हारे अन्दर ख़ौफ़ व रजा की सिफ़त पैदा कर देंगी और तुम दरमियानी राह पर चल पड़ोगे और तुम बेख़ौफ़ और नाउम्मीदी के दोनों हलाक करने वाले रास्तों और बेख़ौफ़ी और नाउम्मीदी की वादियों में हैरान फिरने वालों से अलग हो जाओगे और हलाक व बर्बाद होने वालों से किनाराकश हो जाओगे और ख़ौफ़ व रजा की मोतदिल (दरमियानी) शराब से सरशार हो जाओगे फिर न तो सिर्फ़ रजा की ठंडक से हलाक होगे और न सिर्फ़ ख़ौफ़ की आतिश में जलोगे और अब तुम अपने मक़सूद से हमकिनार हो गए यानी पास हो गए और दोनों मोहलिक मर्ज़ों से बच गए अब तुम अपने नफ़्स को ताअत व बन्दगी पर आमादा पाओगे और ग़फ़लत और सुस्ती के बग़ैर दिन रात ख़िदमत में मसरूफ़ हो जाओगे और इस तरह तुम गुनाहों और ज़लील हरकतों से पूरी तरह महफ़ूज़ हो जाओगे और बुराइयों से पूरी तरह किनाराकशी हासिल हो जाएगी।

हज़रत नौफ़ बिकाली عليه الرحمة फ़रमाते हैं कि- "*नौफ़ जब जन्नत का ज़िक्र करता है तो उसके दिल में जन्नत का शौक़ पैदा हो जाता है और जब उसे दोज़ख़ की आग याद आती है तो मारे ख़ौफ़ के उसकी नींद उड़ जाती है।*"

ख़ौफ़ व रजा की यह सही कैफ़ीयत पैदा होने के बाद तुम अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा और ख़ास आबिदीन में से हो जाओगे जिनका अल्लाह तआला ने इस आयत में ज़िक्र किया है:-

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝۹۰

(बेशक वह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से, और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं।)

(सूरह अम्बिया, आयत-90)

और अब तुमने अल्लाह तआला के इज़्न और उसके हुस्ने तौफ़ीक़ से इस ख़तरनाक घाटी को उबूर कर लिया है, अब तुम्हें दुनिया में बहुत सफ़ाई और हलावत (मिठास) नसीब हो गई और तुमने आख़िरत के लिए अज़ीम ज़ख़ीरा और कसीर अज्र हासिल कर लिया। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी और तुम्हारी अपनी तौफ़ीक़ और दुरुस्ती से मदद फ़रमाए, बेशक वह अरहमुर्राहिमीन और तमाम सख़ियों से बढ़ कर नवाज़ने वाला है।

(वलाहौला वला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)

छटी घाटी
अक़ाबतुल क़वादेह
(इबादत में ख़राबियाँ पैदा करने वाली घाटी)

फिर ऐ ब्रादर! अल्लाह तआला अच्छी तौफ़ीक़ के साथ तुम्हारी और हमारी मदद फ़रमाए। तुझ पर इस रास्ते की पहचान और मारिफ़त और इस रास्ते पर चलने में इस्तिक़ामत के बाद इबादत और बन्दगी को ख़राब और बर्बाद करने वाली चीज़ों से अलग रखना और बचना भी लाज़िम और ज़रूरी है और यह बात इख़्लास को क़ायम करने अल्लाह तआला के एहसानात याद करने और ना रवा कामों से बचने के बाद ही हासिल हो सकती है। और यह बात दो वजह से लाज़िम व ज़रूरी है। एक तो इसलिए कि इख़्लास से अल्लाह तआला के हुज़ूर में अमल को हुस्ने मक़बूलियत (क़बूल होने) का मक़ाम हासिल होता है और सवाब हासिल करने में कामयाबी नसीब होती है वर्ना इख़्लास ख़त्म होने की सूरत में आमाल मरदूद हो जाते हैं और उनका सवाब या तो बिल्कुल ही या कुछ न कुछ बर्बाद हो जाता है। क्योंकि मशहूर हदीस में हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से मरवी है इसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- "***मैं शिर्क से बिल्कुल बेनियाज़ हूँ, जो शख़्स अमल में मेरे ग़ैर को शरीक करे, तो मेरा हिस्सा भी उस शरीक का पहुँचा मैं सिर्फ़ उस अमल को क़बूल करता हूँ जो ख़ालिस मेरे लिए किया गया हो।***"

मरवी है कि- "***क़ियामत के रोज़ जब बन्दा अल्लाह तआला से अपने आमाल पर सवाब तलब करेगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा क्या तुझे मजालिसों व महफ़िलों में वुसअत नहीं दी गई थी क्या वहाँ तुझे सरदारी नहीं दी गई थी क्या तुझे दुनिया में तेरे कारोबार और तिजारत में तरक़्क़ी और सहूलत और हर क़िस्म की कसरत अता नहीं की गई थी? क्या तुझे इसी तरह के बेशुमार एज़ाज़ात व इनामात नहीं दिए गए थे और तुझे तरह- तरह के नुक़सानात से महफ़ूज़ नहीं रखा गया था यानी यह सब कुछ आमाल के बदले के तौर पर दुनिया में तुझे दे दिया गया था।***"

मैं कहता हूँ रिया (दिखावा) के ख़तरों में से कम से कम दो क़िस्म की तो नदामत (शर्मिन्दगी) इन्सान को होती और दो मुसीबतें उस पर मुसल्लत होती हैं, एक नदामत तो पोशीदा क़िस्म की है वह तमाम मलाइका के सामने शर्मिन्दगी और नदामत है, जैसा कि रिवायत में है कि- ***"मलाइका एक बन्दे के आमाल ख़ुशी ख़ुशी ऊपर ले जाते हैं मगर अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म होता है कि ये आमाल सिज्जीन (जहन्नम की एक वादी) में फेंक दो क्योंकि इसने ये आमाल मेरी रज़ा और ख़ुशनूदी के लिए नहीं किए थे।"*** (हिल्या)

तो उस वक़्त उस बन्दे और उसके अमल को मलाइका के सामने नदामत होती है, दूसरी नदामत और शर्मिन्दगी ऐलानिया (सबके सामने) होगी, जो क़ियामत के दिन तमाम मख़लूक़ात के सामने नदामत और रुसवाई होगी, हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से रिवायत है कि- ***"रियाकार को क़ियामत के दिन चार नामों से पुकारा जाएगा: ऐ काफ़िर! ऐ फ़ाजिर! ऐ ग़द्दार! ऐ ख़सारा उठाने वाले तेरी कोशिश बेकार चली गई तेरे आमाल बेकार हो चुके हैं, यहाँ आख़िरत में तेरा कोई हिस्सा नहीं, ऐ धोखेबाज़ अपने आमाल का अज्र व सवाब उससे जाकर ले जिसको दिखाने के लिए तू अमल करता था।"***

एक रिवायत यह भी है कि- ***"क़ियामत के रोज़ एक निदा करने वाला निदा करेगा जिसे तमाम मख़लूक़ सुनेगी कहाँ हैं वो जो ख़ुदा के बजाय लोगों की इबादत करते थे, जाओ और अपने आमाल का बदला उनसे लो जिनके लिए करते थे, मैं उस अमल को क़बूल नहीं करता जिसमें रिया और नुमाइश की मिलावट हो।"***

और रिया से आने वाली दो मुसीबतों में एक मुसीबत जन्नत से महरूमी है क्योंकि हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से मरवी है कि- ***"जन्नत ने गुफ़्तगू की और कहा कि मैं बख़ील (कन्जूस) और रियाकार पर हराम हूँ।"*** (तारीख़े दमिश्क)

इस हदीस शरीफ़ के दो मअना हो सकते हैं एक यह कि इस बख़ील से वह बख़ील मुराद है जो सबसे बेहतर कलिमे को ज़बान पर लाने से बुख़्ल करता हो यानी '**कलिमा-ए-तय्यबा**' दिल की तसदीक़ के साथ नहीं पढ़ता

और उस रियाकार से वह मुराद है जो बदतरीन क़िस्म की रियाकारी का मज़ाहिरा करता हो यानी मुनाफ़िक़ जो अपनी तौहीद और अपने ईमान में रियाकारी करता है। हदीस के इस मअना में उम्मीद की तरफ़ इशारा है कि अगर सिद्क़ और इख़लास पैदा हो जाए तो उसका मामला दुरुस्त हो सकता है हदीस का दूसरा मअना यह हो सकता है कि जो शख़्स बुख़्ल और रियाकारी से बाज़ न आए और अपनी परवाह और रिआयत न करे तो ऐसी सूरत में दो ख़तरे हैं एक तो यह कि मुमकिन है इस बुख़्ल और रियाकारी की नुहूसत उस पर आ पड़े और वह कुफ़्र के गढ़े में जा गिरे और इस तरह जन्नत से बिल्कुल महरूम हो जाए। (*अल इयाज़ बिल्लाह मिन्ह*)

दूसरा ख़तरा यह है कि इस बुख़्ल व रियाकारी की वजह से ईमान ही छीन लिया जाए और दोज़ख़ का मुस्तहिक़ हो जाए। हम अल्लाह की नाराज़गी और शदीद ग़ज़ब से पनाह माँगते हैं। और दूसरी मुसीबत दोज़ख़ में जाना है, क्योंकि हज़रत अबू हुरैरह ﵁ रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया- "***क़ियामत के रोज़ सबसे पहले हिसाब के लिए जिस शख़्स को बुलाया जाएगा वह हाफ़िज़ और क़ारी-ए-क़ुरआन होगा, और एक वह जिसने राहे ख़ुदा में जान दी होगी और एक मालदार शख़्स को। तो अल्लाह तआला क़ारी से फ़रमाएगा क्या मैंने तुझे वह किताब नहीं सिखाई थी जो मैंने अपने रसूल पर नाज़िल की थी वह जवाब देगा हाँ या रब तो अल्लाह तआला पूछेगा कि तो इल्म के मुताबिक़ तूने अमल किया। क़ारी जवाब देगा कि मैं तेरी ख़ुशनूदी के लिए सारी सारी रात और दिन के मुख़्तलिफ़ वक़्तों में, मैं आयते क़ुरआनी की तिलावत में मशग़ूल व मसरूफ़ रहा, अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तू झूट बोलता है और फ़िरिश्ते भी कहेंगे तू झूठ बोलता है, फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तिलावते आयात से तेरा इरादा यह था कि लोग कहें कि फ़ुलाँ शख़्स क़ारी है और यह बात तुझे हासिल हो गई थी। फिर मालदार शख़्स को बुलाया जाएगा। अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि क्या मैंने तुझे रिज़्क़ में फ़राख़ी और वुसअत अता नहीं की थी यहाँ तक कि मैंने तुझे किसी इन्सान का मोहताज नहीं रखा था और वह कहेगा कि हाँ या रब तआला। तो***

उससे पूछा जाएगा कि मेरे दिए हुए माल को तूने किस अमल में ख़र्च किया। वह कहेगा कि उस माल के साथ सिला रहमी क़ायम की और तेरी राह में सद्क़ा व ख़ैरात किया। अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तू झूठा है और फ़िरिश्ते भी कहेंगे तू झूठा है, अल्लाह तआला फ़रमाएगा बल्कि तेरी नीयत तो यह थी कि दुनिया तुझे सख़ी और फ़य्याज़ के नाम से पुकारे और यह चीज़ दुनिया में तुझे हासिल हो गई और उस शख़्स को दरबारे ख़ुदावन्दी में लाया जाएगा जिसने अल्लाह की राह में जान दी होगी। अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि तूने दुनिया में क्या नेक काम किए। वह अर्ज़ करेगा कि मुझे तेरी राह में जिहाद का हुक्म मिला तो मैं जिहाद में मसरूफ़ हो गया हत्ताकि तेरे रास्ते में जान दे दी। और अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि तू झूठ बोलता है और फ़िरिश्ते भी कहेंगे तू झूठ बोल रहा है। अल्लाह तआला फ़रमाएगा बल्कि तेरा यह मक़सद था कि लोग तुझे बहादुर कहें और यह बात तुझे दुनिया में हासिल हो गई। फिर नबी-ए-करीमﷺ ने अपना मुबारक हाथ मेरे घुटने पर मारा और फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह! यही वह लोग हैं जिनको सब से अव्वल दोज़ख़ में फेंक कर अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग भड़काएगा।" (तिर्मिज़ी शरीफ़)

एक दूसरी हदीस हज़रत इब्ने अब्बास ؓ से मरवी है वह फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाहﷺ से सुना कि आप फ़रमाते थे- "***दोज़ख़ और दोज़ख़ वाले रियाकारों से चीख़ उठेंगे। कहा गया कि या रसूलल्लाहﷺ दोज़ख़ क्यूँ चीख़ेगी। आपﷺ ने फ़रमाया उस आग की तपिश से जिससे रियाकारों को अज़ाब दिया जा रहा होगा।***"

क़ियामत के रोज़ लाहक़ होने वाली शर्मिन्दगियों और नदामतों में अहले बसीरत के लिए दर्से इबरत है।

(वल्लाहु सुबहानहू वलीय्युल हिदायति बिफ़ज़्लिही)

सवाल: आप हमें इख़्लास और रिया की हक़ीक़त और उनके नतीजे से आगाह फ़रमायें, नीज़ उनसे इन्सान के आमाल में किस क़िस्म का असर रूनुमा होता है इस पर भी रौशनी डालें?

जवाब: हमारे उल्माए अहले सुन्नत के नज़दीक इख़्लास की दो क़िस्में हैं:-

1. अमल में इख़्लास

2. तलबे सवाब में इख़्लास।

अमल में इख़्लास तो यह है कि बन्दा अपने अमल से अल्लाह तआला का क़ुर्ब, उसके हुक्म की ताज़ीम और उसके अहकामात की बजाआवरी का इरादा करे और यह इख़्लास एतेक़ादे सही से नसीब होता है। इस इख़्लास की ज़िद निफ़ाक़ है, जिसमें ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब मक़सूद होता है। हमारे शैख़ عليه الرحمة ने फ़रमाया निफ़ाक़ उस एतेक़ादे फ़ासिद का नाम है जो अल्लाह तआला के बारे में मुनाफ़िक़ के दिल में पाया जाता है। और यह एतेक़ाद इरादे के क़िस्म में से नहीं है जैसा कि हम दूसरे मक़ाम पर ज़िक्र कर चुके हैं। लेकिन तलबे सवाब में इख़्लास की हक़ीक़त यह है कि बन्दा नेक अमल से आख़िरत के फ़ायदे का इरादा करे, हमारे शैख़ عليه الرحمة इसकी हक़ीक़त यह बयान करते थे कि ऐसे नेक काम पर आख़िरत के नफ़े का इरादा करना जिसे शरअन रद्द करना दुशवार हो और रद्द कर देने की सूरत में आख़िरत में नफ़े की उम्मीद बाक़ी न रहे।

हम इख़्लास की इस तारीफ़ में मल्हूज़ क़ैदों की शरह दूसरे मक़ाम पर कर चुके हैं।

एक दफ़ा हज़रत ईसा عليه السلام के हवारियों ने आप से दरयाफ़्त किया कि इख़्लास क्या है। तो आपने जवाब दिया कि- "***इख़्लास यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के लिए नेक काम करे और दिल में इसकी चाहत न रखे कि इस पर उसकी तारीफ़ की जाए।***"

हज़रत ईसा عليه السلام के इस क़ौले मुबारक का मतलब भी यही है कि बन्दा रिया को नज़दीक न आने दे और तारीफ़ की ख़ुसूसियत से नफ़ी (इन्कार) इस वास्ते फ़रमाई कि यह रिया के क़वीतरीन असबाब हैं जो इख़्लास को तबाह व बर्बाद करते हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी ﷺ फ़रमाते हैं कि- *"रियाकारी वग़ैरा के मैल कुचैल से आमाल को पाक व साफ़ करने का नाम इख़्लास है।"*

हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि- *"तमाम नफ़्सानी और बशरी तक़ाज़ों को भूल जाने और अल्लाह तआला की ज़ाते पाक के साथ हमेशा अल्लाह तआला के साथ लौ लगाए रखना,हमेशा अल्लाह पाक की याद में रहने का नाम इख़्लास है।"*

यह इख़्लास का मुकम्मल बयान है। इख़्लास की तारीफ़ में और भी बहुत से अक़वाल हैं लेकिन हक़ीक़त वाज़ेह हो जाने के बाद अक़वाल की नक़्ल करने में कोई फ़ायदा नहीं।

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ से जब इख़्लास की हक़ीक़त दरयाफ़्त की गई तो आपﷺ ने फ़रमाया इख़्लास यह है कि- "***तू कहे कि मेरा रब अल्लाह है और फिर जो तुझे हुक्म है उस पर क़ायम और मज़बूत हो जाए।***"

यानी तू अपने, नफ़्स और ख़्वाहिशात की इबादत छोड़ दे, बल्कि सिर्फ़ रब तआला की पूजा और बन्दगी करे और उसके हुक्म के मुताबिक़ उसकी इबादत और बन्दगी में क़ायम रहे। हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ के इस इरशाद में इशारा है कि अल्लाह तआला के सिवा हर शय से तअल्लुक़ मुन्क़ता कर ले और उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ अपनी नज़र से हटा दे, इख़्लासे हक़ीक़ी इसी का नाम है। इख़्लास के मुक़ाबले में रिया है, और रिया की तारीफ़ है अमले आख़िरत के बदले दुनियावी नफ़े का इरादा करना। फिर रिया दो क़िस्म का है-

1. **रियाए महज़**
2. **रियाए मख़लूत**

रियाए महज़ तो यह है कि सिर्फ़ दुनियावी नफ़े का इरादा किया जाए। और रियाए मख़लूत यह है कि अमले आख़िरत से दुनियावी और उख़रवी (आख़िरत का) दोनों क़िस्म के नफ़े का इरादा किया जाए।

यह तो थी इख़्लास और रिया दोनों की हक़ीक़त और माहिइयत बाक़ी रही इन दोनों की तासीर तो इख़्लास से तो तुम अपने फ़ेल को क़ुरबत और नज़दीकी का सबब बना लोगे और तलबे सवाब में इख़्लास से तुम्हारा अमल बड़े सवाब और अज़मत का मुस्तहिक़ हो जाएगा। इसके ख़िलाफ़ निफ़ाक़

अमले ख़ैर को बर्बाद कर देता है और इस अमल से नज़दीकी और क़ुरबत की हैसियत सल्ब कर लेता है। अल्लाह तआला ने नेक अमल पर जो सवाब का वादा किया है निफ़ाक़ से वह अमल इस वादे का मुस्तहिक़ नहीं रहता। बाज़ उल्मा के नज़दीक रिया महज़ एक आरिफ़ से अमल में नहीं हो सकता हाँ रिया की आमेज़िश (मिलावट) हो सकती है। जिससे आधा सवाब बातिल और बर्बाद हो सकता है और बाज़ दूसरे उल्मा के नज़दीक आरिफ़ से रियाए महज़ भी अमल में आ सकता है। और उससे दुगुने का आधा सवाब बर्बाद होता है और रियाए मख़लूत से दुगुने का चौथाई सवाब बर्बाद होता है और हमारे शैख़ के नज़दीक सही बात यह है कि आरिफ़ से आख़िरत का तसव्वुर रहते हुए रियाए महज़ अमल में नहीं आ सकता, हाँ आख़िरत से भूल की सूरत में रियाए महज़ अमल में आना मुमकिन है।

मुख़्तार और पसन्दीदा बात यह है कि रिया की तासीर से अमल की क़ुबूलियत ख़त्म हो जाती है और सवाब में कमी वाक़ेअ हो जाती है बाक़ी यह अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि आधा सवाब बर्बाद होता है या चौथाई सवाब और इन मसअलों की शरह बड़ी तवील है, हम इनकी मुकम्मल और पूरी शरह अपनी किताब 'इहयाउल उलूम' और 'असरारे ममामलाते दीन' में कर चुके हैं।

सवाल: अगर तुम यह सवाल करो कि इख़्लास का मौक़ा महल कौन सा है और किस ताअत में यह पाया जाता है और कहाँ वाजिब व ज़रूरी है?

जवाब: तो इसका जवाब यह है कि बाज़ उल्मा के नज़दीक आमाल तीन क़िस्म हैं:

एक क़िस्म वह है जिसमें दोनों क़िस्म का इख़्लास पाया जाता है और वह इबादाते ज़ाहिरा अस्लिया हैं दूसरी क़िस्म इबादात की वह है जिसमें दोनों क़िस्म का इख़्लास नहीं पाया जाता, वह इबादाते बातिनिया अस्लिया हैं। और आमाल की तीसरी क़िस्म वह है जिसमे बन्दा अज्र व सवाब तो चाहता है लेकिन अमल का इख़्लास नहीं पाया जाता और यह वह मुबाहात हैं जो सामाने आख़िरत के तौर पर इन्सान अपने पास रखता है।

हमारे शैख़ ने फ़रमाया है कि इबादाते अस्लिया जो ग़ैरुल्लाह के लिए भी हो सकती हैं उनमें इख़्लासे अमल पाया जाता है, तो अक्सर इबादाते

बातिनिया में इख़्लासे अमल मुतहक़्क़क़ होता है लेकिन तलबे अज्र में इख़्लास तो यह अक्सर मशाइख़े किराम के नज़दीक इबादाते बातनिया में नहीं पाया जाता क्योंकि इन पर अल्लाह पाक के सिवा किसी को पता नहीं होता, तो इनमें रिया के असबाब व दवाई नहीं पाए जा सकते लिहाज़ा इनमें तलबे अज्र के इख़्लास की हाजत व ज़रूरत नहीं पड़ती। हमारे शैख़ का कहना है जब एक बन्दा-ए-मुक़र्रब इबादाते बातिनिया से दुनियावी नफ़े का इरादा करे तो यह भी रिया में दाख़िल है। मैं कहता हूँ इस सूरत में कोई बईद नहीं कि बहुत सी इबादाते बातिनिया में दोनों क़िस्म का इख़्लास पाया जाए। इसी तरह नवाफ़िल शुरू करते वक़्त दोनों क़िस्म का इख़्लास होना ज़रूरी है लेकिन वह मुबाहात जो आख़िरत की तैयारी की ग़र्ज़ से इन्सान ने अपने पास रखे हुए हैं उनमें तलबे सवाब का इख़्लास तो पाया जाता है मगर इख़्लासे अमल नहीं पाया जाता क्योंकि यह मुबाहात बज़ाते ख़ुद इबादत व क़ुरबत नहीं हैं बल्कि क़ुरबत व बन्दगी का ज़रिया व सबब हैं।

सवाल: अगर तुम कहो कि यह जो बयान किया गया है यह दोनों क़िस्म के इख़्लास के मौक़ा व महल का बयान था इन दोनों का वक़्त भी बतायें?

जवाब: इख़्लासे अमल तो फ़ेल (काम) के साथ ही होता है इससे बाद में नहीं हो सकता लेकिन इख़्लासे तलबे अज्र बाद में हो सकता है और बाज़ उल्मा अमल से फ़राग़त के वक़्त का ऐतबार करते हैं यानी अमल से फ़राग़त इख़्लास की कैफ़ियत पर होती है तो इख़्लास का ऐतबार होगा और अगर रिया पर होती है तो रिया का ऐतबार होगा और चूंकि अमल से फ़राग़त हो चुकी है इसलिए उसका तदारुक (तलाफ़ी पाना) मुमकिन नहीं और मशाइख़े किराम के नज़दीक जब तक अमल से कोई फ़ायदा न उठाया हो और इख़्लास का इरादा कर लिया जाए तो इख़्लास ऐतबार के लायक़ हो जाएगा लेकिन अगर दुनियावी फ़ायदा हासिल कर लिया है तो फिर इख़्लास का ऐतबार नहीं किया जा सकता और बाज़ उल्मा का ख़्याल है कि फ़राइज़ में मौत तक इख़्लास पैदा कर लेना मुमकिन है लेकिन नवाफ़िल में नहीं और उन्होंने फ़राइज़ नवाफ़िल में फ़र्क़ की यह वजह बयान की है कि फ़राइज़ में अल्लाह तआला के हुक्म से बन्दा दाख़िल होता है, तो इसमें अल्लाह

तआला के फ़ज़्ल और उसकी तरफ़ से आसानी की उम्मीद होती है लेकिन नवाफ़िल में यह सूरते हाल नहीं क्योंकि नवाफ़िल बन्दा अपनी मर्ज़ी व चाहत से शुरू करता है। लिहाज़ा उनमें से मुतालबा किया जाता है कि वह उन्हें जैसा उनका हक़ है अदा करे और उनमें ज़रा सी कोताही न आने दे। मैं कहता हूँ कि इस मसअले में एक फ़ायदा है वह यह कि जिस शख़्स से रिया हो चुका या इख़्लास का तर्क हो चुका तो उसके लिए ऊपर ज़िक्र हुई वजहों की रौशनी में माफ़ी की गुन्जाइश है। इन बारीक और दक़ीक़ मसअलों में लोगों के मुख़्तलिफ़ मज़हबों के नक़्ल करने से एक मक़सद तो यह है कि यह बात मालूम हो जाए कि इस ज़माने में सही अमल करने वाले बहुत कम हैं और इस राहे तसव्वुफ़ व फ़क्र पर चलने वालों की रग़बत और उनका शौक़ ख़त्म हो चुका है। इसलिए वह इन मुश्किल बातों और उनकी हक़ीक़त को जानने की तरफ़ तवज्जोह नहीं रखते। मज़हबों की नक़्ल करने से दूसरा मक़सद यह है कि इस रास्ते के मुब्तदी को इबादत में और क़रीब लाया जाए और उसको अपनी बीमारियों का इलाज एक मज़हब में न मिले तो दूसरे मज़हब में पा ले क्योंकि इन्सानी अमराज़ (बहुत से मर्ज़) अग़राज़ (ग़र्ज़ें), आमाल की ख़राबियाँ और उनकी आफ़तें मुख़्तलिफ़ हैं। इन्शा अल्लाह तआला तुम यह बातें अच्छी तरह समझ लोगे।

सवाल: क्या हर अमल में इख़्लास मुफ़रद है यानी एक ही सिर्फ़ काफ़ी हो सकता है या हर अमल के हर जुज़्व के लिए अलैहिदा अलैहिदा नए इख़्लास की ज़रूरत है?

जवाब: इसमें उल्मा-ए-किराम का इख़्तेलाफ़ है बाज़ तो यह कहते हैं सारे अमल के लिए एक ही इख़्लास की ज़रूरत है और बाज़ यह कहते हैं कि कुछ आमाल ऐसे हैं जिनमें एक इख़्लास ही काफ़ी है जैसे वो आमाल जो मुख़्तलिफ़ अरकान से मिल कर बने हैं लेकिन मजमूई ऐतबार से दुरुस्ती और फ़साद के लिहाज़ से एक शय की हैसियत रखते हैं जैसे नमाज़ रोज़ा वग़ैरह।

सवाल: एक शख़्स अपने अमले ख़ैर से अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी नहीं बल्कि अपने फ़ायदे का इरादा करता है। लोगों से कोई इरादा नहीं रखता यानी उसके दिल में यह बात नहीं कि इस अमले ख़ैर पर

लोग मेरी तारीफ़ करें या मेरे अमल को देखें या मुझे कोई नफ़ा पहुँचायें तो इस क़िस्म का अमल भी रियाकारी में दाख़िल है।

जवाब: इस क़िस्म का अमल ख़ालिस रियाकाराना अमल है उल्मा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि अमल में मुराद का ऐतबार होता है उसका ऐतबार नहीं होता जिससे मुराद तलब की जा रही हो। लिहाज़ा अमल से तेरी मुराद अगर दुनियावी फ़ायदा हो तो बहरहाल रिया है चाहे ख़ुदा से मुराद तलब की जा रही हो या लोगों से। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾

(जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिए उसकी खेती बढ़ायें और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।)

(सूरह शूरा, आयत-20)

और लफ़्ज़ रिया का ऐतबार नहीं बल्कि नीयत और मुराद का ऐतबार है और लफ़्ज़ 'रूयतुन' से मुश्तक़ यानी किसी दूसरे लफ़्ज़ से बना है, इससे इश्तिक़ाक़ (एक लफ़्ज़ से दूसरे लफ़्ज़ बनाने) की वजह यह है कि यह फ़ासिद इरादा अक्सर व बेशतर लोगों की तरफ़ से और उनके देखने की वजह से पैदा होता है।

सवाल: एक शख़्स अल्लाह तआला से दुनिया इसलिए तलब करे कि वह लोगों के सामने माँगने से बचे और अल्लाह तआला की बन्दगी व इबादत में दिल से मसरूफ़ रह सके तो क्या ऐसा इरादा भी रिया में दाख़िल है।

जवाब: लोगों के सामने हाथ फैलाने से बचना ज़्यादा माल व इज़्ज़त कमाने और दुनिया का सामान इकट्ठा करने से नहीं होता बल्कि यह चीज़ तो क़नाअत और ख़ुदा तआला पर कामिल भरोसे और तवक्कुल से होती है लेकिन दुनिया की तलब से उसका इरादा यकसूई से इबादत में मसरूफ़ रहना हो तो इस तरह का मक़सद व इरादा रिया में दाख़िल नहीं लेकिन उससे वही चीज़ें मुराद होंगी जो आख़िरत और आख़िरत के सबबों से तअल्लुक़ रखती

हैं और उसका इरादा भी क़तअन आख़िरत की तैयारी से ही मुताल्लिक़ हो। अगर किसी अमले ख़ैर से इस क़िस्म का इरादा हो तो वह रिया नहीं क्योंकि दुनियावी उमूर इस इरादे से ख़ैर बन जाते हैं, या आमाले आख़िरत के तहत आ जाते हैं और ख़ैर का इरादा नहीं हो सकता। यूँही अगर तुम यह इरादा करो कि लोगों में तुम्हारी इज़्ज़त हो और मशाइख़ और मज़हबी रहनुमा तुमसे महब्बत करें लेकिन उससे तुम्हारा मक़सूद यह हो कि तुम्हें हक़ वालों के मज़हब की ताईद व तक़वियत की क़ुदरत हासिल हो या इस तरह मुअस्सिर तौर पर अहले बिदअत का रद्द कर सको ताकि इस तरह ठोस तरीक़े से इल्मे दीन की इशाअत कर सको और लोगों को इबादत की तहरीस (ख़्वाहिश) व तरग़ीब दे सको। अपने नफ़्स की अज़मत व बुज़ुर्गी और दुनिया के हासिल करने की नीयत न हो तो दीन से मुताल्लिक़ इस तरह के तमाम मज़बूत इरादे और अच्छी नीयतें रिया में दाख़िल नहीं क्योंकि दरहक़ीक़त इनसे मक़सूद आख़िरत है।

मैंने बाज़ मशाइख़ से पूछा कि कई औलिया अल्लाह की आदत है कि वह सख़्ती व तंगी के ज़माने में सूरह वाक़िअह पढ़ते हैं, क्या उनकी नीयत यह नहीं होती कि इससे अल्लाह तआला उनकी सख़्ती और तंगी को दूर करे और उन्हें रिज़्क़ के मामले में फ़राख़ी व वुसअत अता करे, क्या अमले आख़िरत से दुनिया को हासिल करने का इरादा दुरुस्त है।

बाज़ मशाइख़ की तरफ़ से इसका जवाब मुझे मिला उसका मफ़हूम यह था कि औलिया-ए- किराम की मुराद व नीयत इससे यह होती है कि अल्लाह तआला उन्हें क़नाअत अता करे और इतनी मिक़दार में रोज़ी अता करे जिससे वह इबादते इलाही बजा लाते रहें और दर्स व तदरीस (पढ़ने, पढ़ाने) की क़ुदरत बहाल रहे और इस तरह का इरादा नेक इरादा है दुनिया का इरादा नहीं।

जानना चाहिए कि वह सख़्ती व तंगी के वक़्त फ़राख़ी-ए-रिज़्क़ के लिए इस सूरत को पढ़ने का मामूल बनाना ख़ुद हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ और सहाबा-ए-किराम ﷡ से मरवी है यहाँ तक कि हज़रत इब्ने मसऊद ﷡ ने वफ़ात के वक़्त सब माल ख़ैरात कर दिया और अपनी औलाद के लिए कुछ

न छोड़ा तो इस फ़ेल पर जब उनको डाँटा गया तो उन्होंने जवाब दिया मैं अपनी औलाद के लिए सूरह वाक़िअह छोड़ कर जा रहा हूँ। (शोअबुल ईमान)

सुन्नत के इसी उसूल के मुताबिक़ हमारे उल्मा-ए-किराम ने इस क़िस्म की बातें इख़्तियार कीं वर्ना बिहम्दिही तआला उन्हें दुनिया की सख़्ती और फ़राख़ी की कोई परवाह नहीं थी बल्कि वह तो असबाबे दुनिया की तंगी और सख़्ती को ग़नीमत जानते थे और इसमें एक दूसरे पर फ़ौक़ियत ले जाने की कोशिश करते थे और माली तंगी को अल्लाह तआला का बड़ा एहसान तसव्वुर करते थे और जब अपने आपको दुनियावी साज़ व सामान की कुशादगी में देखते तो सख़्त डरते थे हालांकि अक्सर लोग दुनियावी माल व नेअमत को अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम ख़्याल करते थे बावजूद यह कि यह वुसअते माल व दौलत उनके लिए इस्तिदराज (अल्लाह पाक का बन्दे को ढील देना) और मुसीबत होता है।

अल्लाह तआला के नेक बन्दे सख़्ती और तंगदस्ती को क्यूँ अल्लाह तआला का एहसान तसव्वुर न करें जब कि उनकी अन्दरूनी हालत यह होती है कि वह उमूमन भूख की हालत में होते हैं। पिछले ज़माने के सूफ़ी कहा करते थे भूख हमारा सरमाया है। इस बारे में तसव्वुफ़ वालों का मज़हब यह है और मेरा और मेरे मशाइख़ का मज़हब भी यही है और हमारे असलाफ़ की सीरत भी यही थी। बाक़ी रहा इस सिलसिले में बाज़ मुताख़ेरीन (बाद में आने वाले) का कोताही करना तो इसका कोई ऐतबार नहीं।

रिज़्क़ की वुसअत व तंगी के मुताल्लिक़ उनका नुकता-ए- नज़र मैंने इसलिए बयान किया है ताकि मुख़ालिफ़ जहालत की वजह से उनको हक़ीर व मजबूर ख़्याल न करे या सहीहुल अक़ीदा मुब्तदी उनके मुताल्लिक़ ग़लती में मुब्तला न हो।

सवाल: अहले इल्म, *असहाबे तजर्रुद* (इबादत के लिए मख़लूक़ से जुदाई इख़्तियार करने वाले परहेज़गार लोग), और *अरबाबे सब्र व क़नाअत* (सब्र करने और थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी रहने वाले) को यह कब लायक़ है कि वह दुनिया के हासिल करने के लिए वज़ीफ़े करता फिरे?

जवाब: जब कि मक़सूद क़नाअत का हासिल करना और आख़िरत की तैयारी हो तो फिर *क़ूते लायमूत* (जिससे ज़िन्दगी क़ायम रहे इस क़द्र

ख़ुराक) के लिए कोई वज़ीफ़ा या क़ुरआन की सूरत पढ़ना सुन्नत से साबित है। हाँ हिर्स व शहवत की पैरवी के लिए ऐसा करना दुरुस्त नहीं, नीज़ सख़्ती व तंगदस्ती से परेशान हो कर यह रास्ता इख़्तियार करना भी ठीक नहीं।

और जब मक़सूद आख़िरत की तैयारी हो तो उसके पीछे अक्सर व बेशतर तू अपने दिल में क़नाअत महसूस करेगा और भूख व कमज़ोरी को भी महसूस नहीं करेगा। और खाने से बेनियाज़ी और हाजत भी महसूस नहीं करेगा जिन लोगों ने इसका तजुर्बा किया है उनको इसका अच्छी तरह इल्म है अल्लाह तआला तुझे तौफ़ीक़ दे और इस तहक़ीक़ को जहन में रख।

उज्ब (ख़ुदपसन्दी, ख़ुदसताई)

दूसरा आमाल बर्बाद करने वाली बुराई का नाम उज्ब है। इससे बचना दो वजह से ज़रूरी है। एक तो यह है कि उज्ब की वजह से इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाली तौफ़ीक़ से महरूम हो जाता है, उज्ब में गिरफ़्तार इन्सान आख़िरकार ज़लील व ख़्वार होता है, जब इन्सान तौफ़ीक़ व ताईदे ख़ुदावन्दी से महरूम हो जाता है तो हलाकत व बरबादी का जल्द शिकार होता है, इसीलिए हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया कि- "***इन्सान को तीन चीज़ें हलाक करती हैं: बुख़्ल (कंजूसी) जिसकी पैरवी की जाए, ख़्वाहिशे नफ़्सानी जिसका इन्सान पैरवी करने वाला बन जाए और आदमी का अपने आपको अच्छा जानना***।"

दूसरी वजह यह है कि उज्ब नेक आमाल को तबाह व बर्बाद कर देता है इसलिए हज़रत ईसाعليه السلام ने अपने हवारियों से फ़रमाया- "*बहुत से चिराग़ हैं जिनको हवा ने बुझा दिया और बहुत से आबिद हैं जिनको उज्ब ने तबाह कर दिया, जब इन्सानी ज़िन्दगी से मक़सूद और ग़र्ज़ व ग़ायत इबादत व बन्दगी है और यह आदत इन्सान को उस मक़सूद से महरूम कर देती है कि इन्सान किसी ख़ैर को हासिल नहीं कर सकता और अगर कुछ थोड़ी बहुत नेकी हासिल भी करे तो यह उज्ब उसको भी तबाह कर देता है, और उसके हाथ में कुछ भी नहीं रहता तो बहुत ज़रूरी है कि इन्सान इससे बचे और महफ़ूज़ रहे*।" (*वल्लाहु तआला वलीय्युत्तौफ़ीक़ि वलइस्मति*)

उज्ब की हक़ीक़त व उसका मअना

अगर तुम यह दरयाफ़्त करो कि उज्ब की हक़ीक़त और उसका मअना क्या है, नीज़ उसकी तासीर और उसका हुक्म और नतीजा क्या है। इसकी वज़ाहत होनी चाहिए तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि- "**अपने नेक आमाल को अज़ीम ख़्याल करने का नाम उज्ब है।**"

हमारे उल्मा-ए-किराम के नज़दीक उज्ब की तफ़्सील यह है कि बन्दा यह ज़िक्र व इज़हार करे कि नेक आमाल की फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी फ़ुलाँ शय से या मख़लूक़ या नफ़्स से हुई है नाकि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसको मिली है। उल्मा-ए-किराम का बयान है कि बाज़ वक़्त उज्ब में मुब्तला इन्सान तीनों चीज़ों का ज़िक्र करता है बाज़ वक़्त दो का ज़िक्र करता है और बाज़ वक़्त सिर्फ़ एक का ज़िक्र करता है और उज्ब की ज़िद एहसान व मिन्नत है। एहसान व मिन्नत से यह मुराद है कि इन्सान यह ज़ाहिर करे कि यह सब बुज़ुर्गी व फ़ज़ीलत ख़ुदावन्द तआला की ताईद व तौफ़ीक़ से है और मुझे यह हासिल हुआ शर्फ़ व बुज़ुर्गी और मरतबा व मक़ाम अता करने वाला रब तआला है। उज्ब के असबाब व अलामत के ज़ाहिर होने के वक़्त ख़ुदा तआला के एहसान का ज़िक्र करना फ़र्ज़ हो जाता है और आम वक़्तों व हालात में इस एहसाने ख़ुदावन्दी का तज़किरा बेहतर है।

बाक़ी रही उज्ब व ख़ुदसताई की नेक आमाल में तासीर तो इसके मुताल्लिक़ बाज़ उल्मा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि उज्ब वाले इन्सान के आमाल को बर्बाद करने के मुताल्लिक़ इन्तिज़ार किया जाता है अगर वह मौत से पहले तौबा कर ले तो उसके आमाल बर्बाद होने से बच जाते हैं वर्ना बर्बाद कर दिए जाते हैं। मशाइख़े किराम में से मुहम्मद इब्ने साबिर का यही मज़हब है, मुहम्मद इब्ने साबिर के नज़दीक आमाल के बर्बाद होने का मतलब यह है कि नेक आमाल हर क़िस्म की अच्छाई से ख़ाली हो जाए कि अज्र व सवाब और तारीफ़ तक का इस्तेहक़ाक़ (हक़) ख़त्म हो जाए। मुहम्मद इब्ने साबिर के अलावा दूसरों के नज़दीक आमाल बर्बाद होने का मतलब यह है कि नेक आमाल पर दोगुना तिगना सवाब जो मिलता था वह बर्बाद हो जाता है अमल का सवाब बाक़ी रह जाता है।

सवाल: आरिफ़ शख़्स पर यह बात कैसे छुपी रह सकती है कि नेक आमाल की तौफ़ीक़ देने वाला अल्लाह तआला ही है और वही अपने फ़ज़्ल व एहसान से बुलन्द मरतबा और कसीर सवाब अता करता है?

जवाब: दरअसल यहाँ एक उम्दा ज़ख़ीरा और लतीफ़ नुकता है जिसको ज़हन नशीन कर लेना जवाब के तमाम पहलुओं को साफ़ करता है और वह यह कि उज्ब के मामले में लोग तीन क़िस्म के हैं: **एक** वह यह कि जो हर हाल में उज्ब व ख़ुदसताई का शिकार हैं और ये *मोअतज़लह* और *क़दरिइयह* (दो बदमज़हब फ़िरक़ों के नाम) का गिरोह है जो अपने आमाल का ख़ुद अपने आपको ख़ालिक़ जानता है और इस मामले में अल्लाह तआला का अपने ऊपर कोई एहसान तस्लीम नहीं करता और उसकी मदद व तौफ़ीक़ और लुत्फ़े ख़ास का इन्कार करने वाला है और यह ख़राबी उन्हें उस शुबह की बिना पर लाहक़ होती है जिसने उनको मुतास्सिर किया हुआ है।

दूसरा गिरोह वह मुस्तक़ीमुलहाल कामिलीन (दुरुस्त हाल के कामिल लोग) हैं जो हर हाल में अल्लाह तआला के एहसान को ही याद करते हैं उनको अपने किसी भी अमल में उज्ब लाहक़ नहीं होता और यह उस बसीरत की वजह से है जो उनको अता होती है और उस ताईद की वजह से है जो इन्हीं के साथ ख़ास है।

तीसरा गिरोह वह आम अहले सुन्नत व जमाअत हैं जो जब बेदार होते हैं तो अल्लाह तआला का ही एहसान मानते हैं और जब उन पर ग़फ़लत तारी होती है तो उज्ब और ख़ुदसताई का शिकार हो जाते हैं और यह आरज़ी ग़फ़लत सुस्ती और बसीरत की कमी की वजह से होता है।

सवाल: मोअतज़लह और क़दरिइयह (दो बदमज़हब फ़िरक़ों के नाम) के अफ़आल व आमाल की सूरते हाल क्या है। क्या इस उज्ब की वजह से उनके सब आमाल बर्बाद हैं?

जवाब: इसमें बहुत इख़्तेलाफ़ है बाज़ का क़ौल है कि उनके तमाम आमाल बर्बाद और बेकार हैं क्योंकि उनका अक़ीदा ही ख़राब है और बाज़ कहते हैं कि अगर एक शख़्स मजमूई तौर पर इस्लामी अक़ीदे रखता हो तो थोड़ी बहुत एतक़ादी ग़लती से उसके आमाल बर्बाद नहीं होते जब तक हर

अमल में उज्ब मौजूद न हो, जिस तरह अक़ीदा-ए-अहले सुन्नत होते हुए यह ज़रूरी नहीं कि उज्ब से महफ़ूज़ रहे जब तक ख़ुसूसियत से अल्लाह तआला के एहसान का इज़हार न करे।

सवाल: क्या रिया और उज्ब के अलावा भी कोई चीज़ आमाल को नुक़सान देती है?

जवाब: इन के अलावा भी बहुत ऐसी चीज़ें हैं जो आमाल को ख़राब करती हैं, हमने इन दो का ख़ुसूसियत से इसलिए ज़िक्र किया है कि आमाल की बरबादी में अस्ल और बुनियाद की हैसियत रखते हैं वर्ना बाज़ मशाइख़ का क़ौल है कि बन्दे पर लाज़िम है कि अपने आमाल को दस चीज़ों से महफ़ूज़ रखेः **1. निफ़ाक़ से 2. रिया से 3. लोगों से मेलजोल से 4. एहसान जतलाने से 5. अज़ीयत देने से 6. नदामत से 7. उज्ब से 8. हसरत से 9. सुस्ती और काहिली से 10. मलामत के ख़ौफ़ से यानी अगर मैंने फ़ुलाँ नेक काम किया तो लोग मलामत करेंगे।**

फिर हमारे शैख़ عليه الرحمة ने उनमें से हर एक की ज़िद और उनसे जो आमाल को नुक़सान पहुँचता है सब बयान किया है। चुनांचे आप फ़रमाते हैं:-

- *निफ़ाक़ की ज़िद इख़्लासे अमल है।*
- *रिया की ज़िद सवाब में इख़्लास पैदा करना है।*
- *लोगों से मेलजोल की ज़िद जुदाई और तन्हाई है।*
- *एहसान जतलाने की ज़िद अपने अमल को ख़ुदा तआला के सुपुर्द करना है।*
- *अज़ीयत देने की ज़िद अपने अमल की हिफ़ाज़त है।*
- *नदामत की ज़िद नफ़्स को मज़बूत और क़ायम करना है।*
- *उज्ब की ज़िद अल्लाह तआला के एहसान का इज़हार है।*
- *हसरत की ज़िद नेकी और ख़ैर को ग़नीमत जानना है।*
- *सुस्ती की ज़िद तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी की ताज़ीम करना है।*
- *ख़ौफ़े मलामत की ज़िद अल्लाह तआला की ख़शीय्यत और उसका डर है।*

निफ़ाक़ से अमल बर्बाद होता है। रिया अमल को मरदूद बनाता है। एहसान जतलाना और अज़ीयत देना सदक़े के सवाब को बर्बाद करते हैं।

और बाज़ मशाइख़ के नज़दीक एहसान जताने और अज़ीयत देने से अस्ल अमल का सवाब बर्बाद नहीं होता। अलबत्ता दोगुना तिगना सवाब जो मिलता था वह बर्बाद हो जाता है। लेकिन नेक अमल पर नदामत (शर्मिन्दा) होना भी बिलइत्तेफ़ाक़ अमल को बेकार करती है। उज्ब से अमल का ज़ाइद सवाब बर्बाद होता है और हसरत और सुस्ती और ख़ौफ़े मलामत से अमल का सवाब कम होता है और अमल की क़द्र व क़ीमत नाक़िस हो जाती है।

मैं कहता हूँ आमाल का मक़बूल होना या मरदूद होना अहले इल्म हज़रात के नज़दीक मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अज़मतों और नुक़सानात की तरफ़ रुजू करता है और आमाल के बर्बाद होने की भी मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। बाज़ वक़्त तो बिलफ़ेल आमाल का नफ़ा बर्बाद होता है और बाज़ वक़्त आमाल में रिया वग़ैरह अमल के ख़राब व बेकार होने का सबब बनते हैं। बाज़ वक़्त आमाल पर सवाब नहीं मिलता। और बाज़ दफ़ा आमाल का ज़्यादा सवाब नहीं मिलता। सवाब तो अमल का अस्ल नफ़ा है जो अक़्लन इन्सान को मिलना चाहिए और अमल की हालत सवाब का तक़ाज़ा करने वाली और उसका क़रीना होती है और सवाब का दोगुना तिगुना हो जाना अस्ल सवाब पर इज़ाफ़ा और ज़्यादती जो अल्लाह तआला इन्सान को अता करता है और आमाल की क़द्र व क़ीमत में इज़ाफ़ा और ख़ारजी क़िस्म के हालात व तरीक़ों से अमल में पैदा होता है। मसलन नेक लोगों से हुस्ने सुलूक करना भी बड़े सवाब की चीज़ है। मगर वालिदैन से हुस्ने सुलूक से पेश आने में इससे भी ज़्यादा सवाब है। फिर एक नबी(عليه السلام) से हुस्ने सुलूक से पेश आना बहुत ही ज़्यादा सवाब की वजह है तो बाज़ वक़्त एक अमल की क़द्र व क़ीमत तो ज़्यादा होती है मगर उसका सवाब दोगुना तिगुना नहीं मिलता यह गुफ़्तगू ख़ुलासा है इसका जो इस बाब में मेरे ज़हन में आई है। इसको अच्छी तरह समझो।(*वबिल्लाहित्तौफ़ीक़*)

फ़स्ल उज्ब और रिया से बचने के उसूल

तुम पर उज्ब व रिया जैसी ख़ौफ़नाक शय का उबूर और पार करना भी ज़रूरी है जो कई तरह की हलाकतों और रहज़नी की वारदात को अपने अन्दर लिए हुए है, लिहाज़ा इसमें सख़्त एहतियात की ज़रूरत है, ताअत और नेकियों का सरमाया (ख़ज़ाना) रखने वालों के लिए इन घाटियों से गुज़रना पड़ता है और इस रास्ते की तमाम मशक़्क़तें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं और इन घाटियों को उबूर करने से ही आबिद को दरहक़ीक़त इबादत का मुअज़्ज़ज़ और उम्दा सरमाया हाथ आता है और इस सरमाये के बर्बाद होने का ज़्यादातर ख़तरा इसी घाटी में पेश आता है क्योंकि इस घाटी में डकैत शैतान के ऐसे ऐसे मक़ामात और आमाल की तबाही व बरबादी के ऐसे ऐसे मक़ामात (ठिकाने) मौजूद हैं जिनमें इस सरमाये के छिन जाने के ज़बरदस्त ख़तरे पाये जाते हैं और ऐसी ऐसी आफ़तें नमूदार होती हैं जो बन्दे की इबादत व ताअत को बेकार कर के रख देती हैं। बहुत ज़्यादा पाए जाने वाले सबसे बड़े यह दो राहज़न हैं: एक रिया, दूसरा उज्ब लिहाज़ा हम यहाँ इन दोनों से बचाव के चन्द ज़रूरी और जामेअ उसूल ज़िक्र करते हैं। इनको ज़हन नशीन करने से इन्शाअल्लाह तआला तू इनके नुक़्सानात से बचा रहेगा।

पहला उसूल: रिया के बारे में सबसे पहले मैं ख़ुदा तआला का यह इरशाद नक़्ल करता हूँ

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ۬ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾

(अल्लाह है जिसने सात आसमान बनाए और उन्हीं के बराबर ज़मीनें हुक्म उनके दरमियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है।)

(सूरह तलाक़, आयत-12)

इस आयत में अल्लाह तआला ने गोया यूँ फ़रमाया है, मैंने आसमान पैदा किये और ज़मीनें पैदा कीं और इन दोनों के दरमियान अपनी क़ुदरत के अजीब व ग़रीब नमूने भी पैदा किए यह सब कुछ पैदा करके तेरी नज़रे इबरत (सबक़ लेने वाली निगाह) के हवाले कर दिया कि तू ख़ुद देख कर जान ले कि मैं क़ादिर भी हूँ, आलिम भी हूँ। और ऐ इन्सान! तेरे नफ़्स और कमज़ोरी का यह हाल है कि दो रकअत नमाज़ पढ़ता है मगर उसमें भी तुझसे कई तरह की कोताही होती हैं और कई क़िस्म के ऐब रह जाते हैं। मैं चूँकि क़ादिर होने के साथ साथ आलिम भी हूँ इसलिए तेरी इन दो रकअतों को अच्छी तरह देख रहा हूँ मगर तू अपनी इस हक़ीर सी इबादत के बारे में मेरी नज़र मेरे इल्म, मेरी मदह व सना और मेरी क़द्रदानी पर किफ़ायत नहीं करता बल्कि तू उसका तालिब होता है कि लोगों को तेरी इस इबादत का हाल मालूम होता कि लोग तेरी मदह व सना करें, क्या तेरा यह रवय्या (तरीक़ा) वफ़ादारी का रवय्या है, क्या यह दानिशमन्दी की बात है, ऐसा रवय्या यह कोई अक़्लमन्द अपने लिए इख़्तियार नहीं करता। तुझ पर अफ़सोस तू बड़ी बेसमझी का मुज़ाहिरा करता है।

दूसरा उसूल: जिस शख़्स के पास एक नफ़ीस शय हो जिसे बेचकर वह लाखों दीनार वसूल कर सकता हो फिर वह उस चीज़ को एक पैसे के बदले बेच दे तो क्या यह बहुत बड़ा नुक़सान नहीं कहलाएगा और यह इन्तिहाई दर्जे का नुक़सान नहीं होगा और उसका यह फ़ेल उसकी पस्त हिम्मती और कम इल्मी की दलील नहीं होगी और यह उसकी कमज़ोर राय और बेअक़्ली का सुबूत नहीं है? ज़रूर उसकी कमअक़्ली का सुबूत है। बिल्कुल इसी तरह यही हालत उस बन्दे की है जो अपने अमल से ख़ुदा तआला की रज़ा उसकी क़द्रदानी, उसकी मदह व सना और उसका सवाब छोड़ कर मख़लूक़ की तारीफ़ व तौसीफ़ और कमीनी दुनिया का तलबगार हो। अल्लाह तआला की रज़ा व सवाब के मुक़ाबले में मख़लूक़ की मदह व सना और दुनिया की तलबगारी लाखों दीनार के मुक़बले में एक पैसे से भी कम हैसियत रखती है बल्कि तमाम दुनिया और जो कुछ इसमें है बल्कि एक दुनिया नहीं इस तरह की बीसियों दुनिया भी ख़ुदा तआला की रज़ा के सामने बेहैसियत हैं। क्या यह वाज़ेह नुक़सान नहीं कि अपने नफ़्स को अच्छे

आमाल के बदले अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाले बहुत बड़े बड़े इनामात को छोड़ कर इन हक़ीर और कमीनी चीज़ों को चाहे और क़बूल करे। फिर अगर कमीनी दुनिया की चाहत और कम हिम्मती को ज़ाहिर करने से बाज़ नहीं आ सकते तो फिर भी आख़िरत ही को चाहो दुनिया उसके साथ ख़ुद-ब-ख़ुद मिल जाएगी बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी के ही तलबगार बनो अल्लाह तआला तुम्हें हमेशा की नेअमतों से मालामाल कर देगा क्योंकि वह दुनिया व आख़िरत सबका मालिक है। इस चीज़ को अल्लाह तआला इस आयत में बयान फ़रमाता है:-

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ط

(जो दुनिया का इनाम चाहे तो अल्लाह ही के पास दुनिया और आख़िरत दोनों का इनाम है।)

(सूरह निसा, आयत-134)

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ फ़रमाते हैं कि- "***अल्लाह तआला नेक आमाल के तुफ़ैल दुनिया भी अता कर देता है, मगर आमाले दुनियवी के साथ आख़िरत अता नहीं करता।***" (अज़ ज़ोहद)

तो जब तुम ख़ालिस नीयत कर लो और आख़िरत के लिए दुनियावी ख़्यालात से तवज्जोह ख़त्म कर दो तो तुम्हें दुनिया व आख़िरत मिल जाएगी, लेकिन अगर तुमने सिर्फ़ दुनिया को ही चाहा तो आख़िरत तुम्हारे हाथ से निकल जाएगी और बाज़ वक़्त उतनी दुनिया भी तुमको न मिलेगी जितनी तुम चाहते थे और ख़्वाहिश के मुताबिक़ दुनिया तुमको मिल भी गई तो फिर भी वह चन्द दिनों की बहार है, तो दुनिया के तलबगार बन कर तुमने दुनिया व आख़िरत दोनों का ख़सारा मोल ले लिया, लिहाज़ा दानिशमन्दी का सुबूत दो।

तीसरा उसूल: वह मख़लूक़ जिसके लिए तुम काम करोगे और जिसकी रज़ा के तालिब बनोगे अगर उसे मालूम हो जाए कि तुम उसकी रज़ा के लिए यह काम कर रहे हो तो वह तुम्हें बुरा जानेगी तो एक अक़्लमन्द आदमी उसके लिए कोई काम करने को तैयार नहीं हो सकता जिसको अगर पता चल जाए कि वह मेरी रज़ा के लिए काम कर रहा है तो इस पर नाराज़ हो

और उसको ज़लील जाने। लिहाज़ा ऐ मिस्कीन बन्दे! उसकी रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए काम कर और उसको अपना मक़सूद और अपनी कोशिशों का मरकज़ बना, जो तुझसे महब्बत करे जो तुझे नेअमत अता करे अपनी रहमत तुझ पर निछावर करे, तेरी इज़्ज़त करे यहाँ तक कि तुझे अज्र व सवाब देकर ख़ुश और राज़ी करे और तुझे सबसे बेनियाज कर दे। अगर तू अक़्लमन्द है तो इस नुकते को ज़हन में बिठा।

चौथा उसूल: जिस शख़्स के पास कोशिश का ऐसा सरमाया मौजूद हो जिसके ज़रिये वह दुनिया में सबसे बड़े बादशाह की रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल कर कसता हो लेकिन वह उससे बादशाहों की ख़ुशनूदी तो हासिल न करे बल्कि उसके एक झाड़ू लगाने वाले की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने का ख़्वाशिमन्द हो तो उसकी यह हरकत इस बात की दलील है कि यह शख़्स बेवक़ूफ़ है अक़्लमन्द नहीं, बदबख़्त और बदक़िस्मत है, सब लोग उसे कहेंगे जब अज़ीम बादशाह की ख़ुशनूदी हासिल करना तेरे लिए मुमकिन था तो तूने उसे तर्क करके एक झाड़ू लगाने वाले की ख़ुशनूदी हासिल करने में क्या बेहतरी महसूस की। ख़ास कर जब कि बादशाह की नाराज़गी की वजह से वह झाड़ू लगाने वाला भी तुझसे नाराज़ होगा। तो इस तरह दोनों की ख़ुशनूदी से तू हाथ धो बैठा। ठीक यही हाल रियाकार इन्सान का है जबकि इन्सान अल्लाह रब्बुल आलमीन की जो इन्सान की तमाम मुश्किलात के लिए काफ़ी है, रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल कर सकता है तो हक़ीर, कमज़ोर, बेवक़अत मख़लूक़ की रज़ा हासिल करने की क्या ज़रूरत व हाजत है फिर अगर तुम्हारी हिम्मत कमज़ोर हो और तुम बसीरत से ख़ाली हो कि लामुहाला मख़लूक़ की रज़ा ही के तालिब हो तो ऐसी सूरत में भी तुम्हें अपना इरादा ग़ैर की रज़ा से ख़ाली करना चाहिए और अपनी कोशिश ख़ालिस ख़ुदा के लिए होनी चाहिए क्योंकि लोगों के दिल और उनकी पेशानियाँ उसी के क़ब्ज़े में हैं, वह दिलों को तेरी तरफ़ झुका देगा और लोगों को तेरा मुहब्बत करने वाला बना देगा और लोगों के सीने तेरी मुहब्बत व उल्फ़त से भर देगा। तो इस तरह तुम्हें वह कुछ मिलेगा जो तुम अपनी कोशिश व इरादे से हासिल नहीं कर सकते थे लेकिन अगर तुम अपनी कोशिशों को ख़ुदा तआला के लिए ख़ालिस न करो बल्कि मख़लूक़ की रज़ा

के ही तालिब बनो तो ऐसी सूरत में अल्लाह तआला लोगों के दिल तुम से फेर देगा और लोगों के दिलों में तेरे मुताल्लिक़ नफ़रत डाल देगा और मख़लूक़ को तुझ पर नाराज़ कर देगा। तो तुम्हारे इस रवइये से ख़ुदा तआला भी नाराज़ हो गया और मख़लूक़ भी नाराज़ हो गई तो ऐसे शख़्स के ख़सारे और महरूमी का क्या ठिकाना।

हिकायत:हज़रत हसन बसरी ﵁ से मन्क़ूल है कि- *"एक शख़्स कहा करता था कि ख़ुदा की क़सम! मैं ऐसी इबादत करूँगा जिससे लोगों में मेरा चर्चा हो, यह शख़्स नमाज़ के लिए सबसे पहले मस्जिद में दाख़िल होता और सबसे आख़िर में मस्जिदे से निकलता। नमाज़ के वक़्तों में हर वक़्त नमाज़ पढ़ते ही नज़र आता, हमेशा रोज़ादार रहता, ज़िक्र की मजलिस में पाबन्दी से शरीक होता, सात माह तक वह इसी तरह करता रहा लेकिन इसके मुताल्लिक़ लोगों का रवय्या यह था कि जब भी कहीं से गुज़रता तो सब लोग यही कहते अल्लाह तआला इस रियाकार को ले और संभाले, आख़िर उसने अपने आप पर मलामत की और कहा मेरी इबादत और बन्दगी तो बर्बाद हुई और इसका कुछ नतीजा नहीं निकला। आइन्दा के लिए मैं बन्दगी व इबादत सिर्फ़ रज़ा-ए-इलाही के लिए करूँगा। उसने इबादत में पहले की निसबत और ज़्यादा इज़ाफ़ा न किया। बल्कि इतनी ही मिक़दार में करता रहा, जितनी मिक़दार में पहले करता था। उसने सिर्फ़ नीयत में तब्दीली की और उसमें इख़्लास पैदा किया। उसके बाद जहाँ से भी वह गुज़रता सब यही कहते अल्लाह तआला फ़ुलाँ शख़्स पर रहमत नाज़िल फ़रमाये।"* यह हिकायत बयान करने के बाद हज़रत हसन बसरी ﵁ ने यह आयत पढ़ीः-

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

(बेशक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किए अनक़रीब उनके लिए रहमान मुहब्बत कर देगा।)

(सूरह मरयम, आयत-96)

यानी अल्लाह तआला ख़ुद भी उनसे दोस्ती करेगा और लोगों के दिलों में भी उनकी दोस्ती और मुहब्बत डाल देगा। किसी शायर ने बहुत ठीक कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *ऐ लोगों से हम्द व सवाब के तालिब तू अपने आमाल से एक नामुमकिन काम का इरादा कर रहा है।*
- *अल्लाह तआला रियाकार को नाकाम व नामुराद करता है और उसकी कोशिश और मशक़्क़त को बेकार कर देता है।*
- *जो मुलाक़ाते रब तआला का उम्मीदवार हो वह उसके डर से अपने अफ़आल में इख़्लास पैदा करता है।*
- *जन्नत और दोज़ख उसके हाथ में हैं इसलिए अपने आमाल उसी को दिखा वह तुझे अपनी अताओं से मालामाल कर देगा।*
- *लोगों के क़ब्ज़ा-ए-इख़्तियार में कुछ नहीं, तू नासमझी की वजह से उनके लिए रियाकारी क्यूँ करता है।*

उज्ब का बयान

हम इससे बचाव के लिए भी चन्द ज़रूरी जामेअ उसूल बयान करते हैं:

पहला उसूल यह है कि बिला शुबह बन्दे का फ़ेल उसी वक़्त मुफ़ीद और क़ाबिले ऐतबार होता है जब कि उसे महज़ हुसूले रज़ा-ए-इलाही के लिए किया जाए वर्ना उसकी मिसाल उस मज़दूर की तरह होगी जो कि सारा दिन दो दरहमों के लिए मारा मारा फिरता है और उस चौकीदार की तरह होगी जो सिर्फ़ दो पैसों के लिए तमाम रात जागते अपनी आँखों से निकाल देता है और ऐसे जैसा कि कारोबारी लोग महज़ चन्द टकों के लिए रात दिन अपने क़ीमती वक़्त को बर्बाद करते रहते हैं। तो फिर जब बन्दा मसलन महज़ अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए एक रोज़ा रखता है तो यूँ समझना चाहिए कि अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी की वजह से उस रोज़े की जज़ा की मिसाल नहीं जैसा कि रब तआला ने ख़ुद फ़रमाया:

إِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠

(साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बेगिनती।)

(सूरह ज़ुमर, आयत-10)

हदीस शरीफ़ में वारिद है कि- ***"मैंने अपने रोज़ादार बन्दों के लिए ऐसा अज्र मुतय्यन कर रखा है, जिसको किसी आँख ने देखा तक नहीं***

और न ही किसी कान ने उसे सुना और न ही किसी के दिल पर उसका खटका तक गुज़रा।''

बहरहाल बन्दा जब अल्लाह तआला के लिए एक रोज़ रोज़ा रखता है तो इस रोज़े की क़ीमत और अज्र बहुत ज़्यादा हो जाता है इसी तरह अगर बन्दा किसी रात महज़ रज़ा-ए-इलाही को हासिल करने की ख़ातिर क़ियाम करता है तो इस ऐतबार से यह क़ियाम बेशुमार एज़ाज़ और एहतमाम का हक़दार हो जाता है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

(तो किसी जी को नहीं मालूम जो आँख की ठंडक उनके लिए छुपा रखी है सिला उनके कामों का।)

(सूरह सजदा, आयत-18)

बहरहाल यह मामूली सी इबादत जिसकी क़ीमत दो दिरहम या रुपये थी, जब कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिए की जाए तो बहुत ज़्यादा क़ीमत हो जाती है बल्कि यूँ समझिये कि अगर एक किसी घड़ी में महज़ रज़ा-ए-इलाही के दो रकअतें पढ़ी जायें बल्कि एक साँस जिसमें ''***ला इलाहा इल्लल्लाह***'' अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए पढ़ा जायें।

जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है-

وَمَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُو۟لَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ ٱلْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

(और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औरत और जो हो मुसलमान तो वो जन्नत में दाख़िल किए जायेंगे वहाँ बेगिनती रिज़्क़ पायेंगे।)

(सूरह मोमिन, आयत-40)

हिसाब: यह एक साँस जिसकी दुनियादारों के यहाँ कोई इज़्ज़त व क़ीमत नहीं जब उसको रज़ा-ए-इलाही के उसूल के लिए इस्तेमाल किया

जाए तो तू कितने ग़ैर मामूली एज़ाज़ का मुस्तहिक़ हो जाता है तो बन्दे को देखना चाहिए कि वह शब व रोज़ अपने इन औक़ाते अज़ीज़ा को फ़ुज़ूल और बेहूदा कारोबार में बर्बाद करता हुआ नज़र आता है फिर अक़्लमन्द को यह सोचना चाहिए कि वह फ़ेल जो कि बिला रज़ा-ए-इलाही कुछ क़ीमत नहीं रखता था वही हुसूले रज़ा-ए-इलाही के नज़रिए से किस क़द्र शराफ़त और एहतराम का मुस्तहिक़ हो जाता है तो उसका हर फ़ेल ख़ुशनूदी-ए-ख़ुदा के लिए होना लाज़िम है ताकि दुनिया व आख़िरत में हर तरह से मुफ़ीद साबित हो और उसकी यूँ एक मिसाल दी जा सकती है कि मसलन अंगूर का एक गोशा या एक ख़ुशबूदार पौधे की कली जिसकी बाज़ार में एक दमड़ी या पैसा क़ीमत हो अगर कोई इसको बादशाह की ख़िदमत में बतौरे हदिया पेश करे और वह बादशाह इस हक़ीर से तोहफ़े को क़बूल कर ले और ख़ुशी से एक हज़ार अशर्फ़ी दे दे तो वह हक़ीर शय हुसूले रज़ा की वजह से एक हज़ार दीनार की हो गई और अगर वह उसको क़बूल न करे तो उसकी क़ीमत वही पैसा या दमड़ी पड़ेगी, इसी तरह बन्दे के तमाम आमाल की कैफ़ियत है कि उनको देख कर इतराना और दूसरों के आमाल की तहक़ीर करना बन्दे के लिए एक हलाक कर देने वाली चीज़ है बल्कि यह इल्तिजा करनी ज़रूरी है कि ऐ अल्लाह! यह सब तेरा ही फ़ज़्ल व करम है तेरी तौफ़ीक़ से सबकुछ होता है कि बन्दे के तमाम अक़्वाल व अफ़आल दुनिया व आख़िरत में अज्र व सवाब का ज़रिया हों

और दूसरा अस्ल यह है कि तुम्हें मालूम है कि दुनिया के बादशाह जब किसी आदमी को कोई खाना या मशरूब (पीने की चीज़) या लिबास या चन्द एक फ़ानी दिरहम व दीनार अता करते हैं तो वह आदमी दिन रात इस बादशाह की ख़िदमत बजा लाता है हालांकि इस ख़िदमत में ज़िल्लत भी होती है वह उसकी ख़िदमत में इस तरह खड़ा रहता है कि उसके पाँव बेहिस हो जाते हैं और जब बादशाह अपनी सवारी पर सवार होता है तो वह उसके साथ साथ दौड़ता है कभी सारी सारी रात उसके दरवाज़े पर पहरा देता है और कभी दुश्मन से मुक़ाबले की नौबत आती है तो अपनी वह जान उस पर क़ुर्बान कर देता है जो उसे फिर कभी न मिल सकेगी और यह तमाम ख़िदमत और तकलीफ़ और ख़तरात और नुक़सान सिर्फ़ उस थोड़े से हक़ीर मुनाफ़े के

लिए बर्दाश्त कर जाता है हालांकि हक़ीक़त में यह तमाम एहसानात अल्लाह तआला की तरफ़ से होते हैं और बादशाह सिर्फ़ एक ज़ाहिरी सबब होता है। फिर तेरा वह रब जिसने तुझे पैदा किया जब कि तेरी कोई हक़ीक़त न थी फिर तेरी तरबियत की और बहुत अच्छी की फिर तुझ पर दीनी दुनियावी और जानी, ज़ाहिरी और बातिनी मुनाफ़े की तुझ पर बारिश बरसा दी कि जिनको समझने से तेरी अक़्ल फ़हम और फ़िरासत मजबूर है ख़ुदावन्द तआला फ़रमाता है-

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا ط

(और अगर अल्लाह की नेअमते गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।)

(सूरह नहल, आयत-18)

फिर देख कि तू दो रकआत नमाज़ पढ़ता है जिनमें कई एक क़ुसूर और कोताहियाँ होती हैं और फिर इसके बावजूद उसने तुझसे आइन्दा के लिए बेहतरीन जज़ा रंगारंग तरह तरह की मेहरबानियों का वायदा फ़रमा रखा है और फिर तू इन रकआत को बहुत कुछ समझता है और उन पर मग़रूर होता है अगर तू ग़ौर करेगा तो तुझे मालूम होगा कि यह अक़्लमन्दी का काम नहीं इसे याद रख।

और तीसरा अस्ल यह है कि ऐसा बादशाह जिसकी ख़िदमत दुनिया के बादशाह और अमीर लोग करते हों जिसकी ख़िदमत में बड़े बड़े सरदार लोग हाथ बाँधे आजिज़ी के साथ खड़े हों जिसकी ख़िदमत पर ज़माने के दानिशमन्द ज़माने के अक़्लमन्द फ़ख़्र महसूस करते हों जिसकी तारीफ़ अक़्ल वाले लोग और उल्मा करते हों जिसके आगे आगे अमीर और बड़े बड़े लोग दौड़ते हों वह बादशाह अगर किसी बाज़ारी या देहाती आदमी को महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से अपने दरवाज़े पर हाज़िर होने की इजाज़त बख़्श दे जिसके दरवाज़े पर बादशाहों, बड़े लोगों, सरदारों और उल्मा व फ़ुज़्ला की भीड़ लगी हो और फिर वह बादशाह उसको एक मुअज़्ज़िज़ मुक़ाम पर जगह दे और उसकी ख़िदमत को पसन्दीदगी की नज़र से देखे हालांकि उसमें कई एक ऐब भी हों तो क्या यह नहीं कहा जाएगा कि उस हक़ीर इन्सान पर बादशाह ने बहुत बड़ा करम फ़रमाया। फिर अगर यह हक़ीर अपनी नाकारा

ख़िदमत की वजह से बादशाह पर अपना एहसान जताने लगे और उसको बहुत कुछ समझे और उस पर मग़रूर हो तो क्या यह नहीं कहा जाएगा कि वह हद दर्जे का बेवक़ूफ़ और पागल आदमी है जिसे कोई किसी क़िस्म का होश नहीं है, जब यह बात साबित हो गई तो अब समझना चाहिए कि हमारा माबूदे बरहक़ ऐसा बादशाह है जिसकी तस्बीहात आसमान ज़मीन और उनकी तमाम मख़लूक़ात कर रही है।

وَاِنۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰـكِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِيۡحَهُمۡؕ

और कोई चीज़ नहीं जो उसे सरहाती (तारीफ़ करती) हुई उसकी पाकी न बोले।)

(सूरह बनी इस्राईल, आयत 44)

और एक ऐसा माबूद है जिसके सामने तमाम आसमान और ज़मीनें सजदा रेज़ हैं ख़्वाह ख़ुशी से या नाख़ुशी से और उसके उक़बा-ए-आलिया के ख़ुद्दाम में से हैं जिब्रीले अमीन, मीकाईल, इस्राफ़ील, इस्राईल और अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते कर्रूबी (आला दर्जे के फ़िरिश्ते) और रूहानी (रहम के फ़िरिश्ते) और तमाम मलाइका मुक़र्रबीन कि जिनकी तादाद को अल्लाह रब्बुल आलमीन के सिवा कोई भी नहीं जानता, बावजूद यह कि उनके मक़ामात बड़े बुलन्द हैं उनके नुफ़ूस पाक हैं उनकी इबादत भी बहुत बड़ी और ज़्यादा है, और फिर उसी के बाबे आली के ख़ादिम हैं नूह(عليه السلام), इब्राहीम(عليه السلام), मूसा(عليه السلام), ईसा(عليه السلام) और मुहम्मद ﷺ जो तमाम कायनात का ख़ुलासा हैं और उनके अलावा दूसरे अम्बिया और रसूल भी ख़ुदा तआला की उन पर रहमतें और सलाम नाज़िल हों हालांकि उनके मरतबे बड़े बुलन्द उनके मनाक़िब अज़ीज़ और मक़ामाते बुज़ुर्ग और आदाते जलील हैं। फिर उल्मा, अइम्मा, नेक लोग और ज़ाहिद भी अपने बुज़ुर्ग मरातिब और पाक इज्साम और इबादाते कसीरा ख़ालिसा के बावजूद भी उसी की चौखट के ग़ुलाम हैं। और दुनिया के बादशाह और जाबिर लोग उसके दरवाज़े के एक अदना ख़ादिम हैं।

निहायत ज़िल्लत से उसके सामने सजदा रेज़ होते हैं, निहायत ख़ुशू व ख़ुज़ू से उसके सामने अपने चेहरे ख़ाक पर रखते हैं रो रो कर आजिज़ी के

साथ अपनी हाजतें उसके सामने पेश करते हैं उसकी ख़ुदवन्दी और अपनी ग़ुलामी का इक़रार सजदा-ए-उबूदियत से करते हैं फिर वह कभी उनकी तरफ़ निगाह उठाता है, अपने फ़ज़्ल व करम से उनकी हाजतें पूरी करता है, अपने करम से उनकी ख़ताओं से दरगुज़र करता है और फिर उसने अपनी इस अज़मत व जलाल और बादशाही व कमाल के तुझको बावजूद तेरी हिक़ारत, तेरे ऐबों और तेरी गन्दगी के अपने दरवाज़े पर हाज़िर होने की इजाज़त बख़्श दी है हालांकि तेरी हैसियत यह है कि अगर तू अपने शहर के सरदार से दाख़िले की इजाज़त माँगे तो तुझे इजाज़त न मिले अगर अपने मुहल्ले के सरदार से गुफ़्तगू करना चाहे तो वह तुझसे न बोले और अगर तू अपने शहर के हाकिम के सामने सजदा रेज़ हो तो वह तवज्जोह भी न करे।

और उस अल्लाह ने तुझे इजाज़त दे रखी है कि तू उसकी इबादत करे और उसकी सना कहे, उसे मुख़ातिब कर सके बल्कि अपनी हाजतें उस पर पेश करे। दिल खोल कर बातें करे अपनी ज़रूरियात उससे माँग ले और तेरी तमाम मुरादें पूरी करे। फिर वह तेरी उन दो रकअतों से ख़ुश है हालाँकि उनमें बहुत से ऐब हैं और फिर उन पर इतना सवाब अता फ़रमाता है कि किसी इन्सान के दिल में उसका तसव्वुर भी नहीं आ सकता और फिर तू अपनी उन दो रकअतों पर मग़रूर है और उनको बहुत कुछ समझता है और बड़ा जानता है और इस मामले में अल्लाह तआला के एहसानात को नहीं समझता तू कितना बुरा ग़ुलाम है और कितना जाहिल इन्सान है। अल्लाह तआला ही से मदद की दारख़्वास्त है और इस जाहिल नफ़्स की शिकायतें उसी की बारगाह में हैं और सिर्फ़ उसी पर भरोसा है। इसको याद रख।

फ़स्ल

अब एक और तरीक़े से देखो कि अगर कोई बहुत बड़ा बादशाह तोहफ़े और हदिया नज़्र करने की इजाज़त बख़्शे और उसकी बारगाह में अमीर और बड़े बड़े लोग क़ीमती हीरों, नफ़ीस ज़ख़ीरों और बहुत ज़्यादा माल व दौलत पेश करने लगें फिर अगर कोई मामूली सब्ज़ी बेचने वाला या कोई देहाती अंगूर का गुच्छा पेश करे जिसकी क़ीमत एक दमड़ी या एक रत्ती भर हो और उन बड़े बड़े लोगों और दौलतमन्दों के गिरोह में घुस जाए जो बेहतरीन तोहफ़े

लेकर खड़े हों और फिर वह बादशाह फ़क़ीर से उसका तोहफ़ा क़बूल फ़रमा ले और उसको बड़ी अच्छी और क़ुबूलियत की निगाह से देखे और उसके लिए इज़्ज़त वाला लिबास और इज़्ज़त व एहतराम का हुक्म फ़रमाये तो क्या यह उसका इन्तिहाई फ़ज़्ल व करम न होगा। फिर अगर यह फ़क़ीर बादशाह पर एहसान जताने लगे और अपने तोहफ़े को बहुत कुछ समझे और बादशाह के एहसान का तज़किरा करना भूल जाए तो क्या उसे दीवाना, बदहवास या बेवक़ूफ़ और बदतमीज़ और इन्तिहाई नादान न समझा जाएगा।

अब तुझ पर लाज़िम है कि जब तू ख़ुदा तआला के सामने खड़ा हो और दो रकअत अदा करे फ़ारिग़ होने पर ज़रा सोच कि इस रात में अल्लाह तआला की बारगाह में कितने इबादतगुज़ार खड़े हुए होंगे ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों में जंगलों, समुन्द्रों, पहाड़ों और शहरों में कई एक इस्तेक़ामत वाले सिद्दीक़, ख़ाइफ़ (डरने वाले) मुश्ताक़ मुजतहेदीन और आजिज़ी करने वालों के गिरोह और ग़ौर कर कि इस घड़ी में ख़ुदावन्द तआला की बारगाह में कितनी ही ख़ालिस इबादत और खोट से पाक व साफ़ इबादतें पेश हो रही होंगी और वह भी डरने वाले लोगों, पाक ज़बानों, रोने वाली आँखों, आबाद दिलों, पाक सीनों और परहेज़गार लोगों की तरफ़ से और तेरी नमाज़ अगर्चे तूने उसको अच्छी तरह अदा करने में उसके इख़्लास और मज़बूती में अपनी ताक़त के मुताबिक़ कोशिश की होगी लेकिन फिर भी उस अ़ज़ीम बादशाह की बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहाँ है और उन इबादात के मुक़ाबले में उसकी क्या हैसियत है जो वहाँ पेश हो रही हैं क्योंकि तूने उसे ग़ाफ़िल दिल से अदा किया जिसमें तरह तरह के ऐब शामिल थे बदन गुनाहों की आलूदगी से नापाक था और ज़बान फ़ुज़ूल और गुनाह की बातों से लिथड़ी हुई थी फिर ऐसी नमाज़ उसकी बारगाह में पेश होने के क़ाबिल कहाँ थी और रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में हदिया करने की उसमें कौन सी सलाहियत थी।

हमारे शैख़ ﷺ ने फ़रमाया कि- "*ऐ अक़्लमन्द ग़ौर कर आसमान की तरफ़ नमाज़ भेजने में तूने कभी वह तवज्जोह की है जो किसी अमीर आदमी के सामने खाना पेश करने में करता है।*"

अबूबक्र वर्राक़ ﷺ फ़रमाया करते कि- "*जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ होता हूँ तो उस औरत से ज़्यादा शर्मिन्दगी मुझ पर मुसल्लत हो जाती है जो ज़िना से फ़ारिग़ हुई हो।*"

फिर अल्लाह तआला ने महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से उन दो रकअतों की क़द्र अफ़ज़ाई की और उन पर बहुत बड़े सवाब का वायदा फ़रमाया हालांकि तू उसका ग़ुलाम है उसका दिया हुआ खाता है और फिर यह अमल भी उसी की तौफ़ीक़ और मदद से तूने किया है फिर बावजूद उन तमाम चीज़ों के तू उन पर मग़रूर है और अपने ऊपर अल्लाह तआला के एहसान को भूल रहा है। ख़ुदा की क़सम! यह तमाम अजायबात में से अजीब चीज़ है और उसका सुदूर ऐसे जाहिल ही से हो सकता है जिसमें कोई अक़्ल न हो और ऐसे ग़ाफ़िल से जिसका कोई ज़हन न हो और या फिर किसी मुर्दा दिल से जिसमें कोई भलाई न हो। इसको याद रख, हम अल्लाह तआला ही से उसके फ़ज़्ल व करम का वास्ता देकर बेहतरीन किफ़ायत का सवाल करते हैं।

फ़स्ल

फिर इन गुज़ारिशों के बाद कहूँगा कि इस घाटी में अपनी ख़्वाबे ग़फ़लत से जाग वर्ना ख़सारा उठाएगा, यह घाटी बड़ी सख़्त दुशवार, निहायत कड़वी और नुक़सानदेह है जो तुझे इस राह में पेश आनी है क्योंकि पिछली तमाम घाटियों के नतीजे यहीं आकर ख़त्म होते हैं अगर तू यहाँ से बच कर निकल गया तो ग़नीमत और फ़ायदा हासिल करेगा और अगर दूसरी तरह का मामला हुआ तो तमाम मेहनत बर्बाद जाएगी उम्मीदें ख़ाक में मिल जायेंगी, उम्र ज़ाय हो जाएगी। फिर अब मामला यह है कि इस घाटी में तीन उमूर आकर जमा हो गए हैं।

पहला यह है कि मामला बहुत बारीक है और नुक़सान बड़ा सख़्त और ख़तरे बेअन्दाज़, मामले की बारीकी यह है कि आमाल में रिया और उज्ब की राहें निहायत बारीक हैं उन पर दीनी उमूर में बसीरत रखने वाला निहायत अक़्लमन्द और होशियार आदमी ही जान सकता है और एक जाहिल खंडरा और ग़फ़लत की नींद सोया हुआ आदमी कहाँ उनको जान सकता है।

मैंने अपने उल्मा-ए-किराम से नीशापुर में सुना, वह बयान करते थे कि अता सुलमी ﷺ ने एक कपड़ा निहायत अच्छा बुना, बड़ा ख़ूबसूरत कपड़ा तैयार हुआ आप उसे उठा कर बाज़ार ले गए और बज़्ज़ाज़ (कपड़ा बेचने वाले) को जा कर दिखाया उसने उसकी क़ीमत बहुत थोड़ी लगाई और कहा कि इसमे फ़ुलाँ फ़ुलाँ ऐब हैं तो अता ﷺ ने उसे वापस ले लिया और रोने लगे और बहुत रोए। बज़्ज़ाज़ को इस पर शर्मिन्दगी हुई और आपसे माफ़ी माँगने लगा और अता ﷺ की माँगी हुई क़ीमत देने पर तैयार हो गया तो अता ﷺ ने कहा कि मैं इसलिए नहीं रोया बल्कि रोने की वजह यह है कि मैं यह काम जानता हूँ मैंने इस कपड़े की मज़बूती दुरुस्ती और ख़ूबसूरती में बहुत कोशिश की यहाँ तक कि मेरे ख़्याल में इसमें कोई ऐब न था फिर जब उसके ऐबों के जानने वाले पर पेश किया तो उसने इसके ऐबों को ज़ाहिर कर दिया जिनसे मैं बेख़बर था फिर हमारे उन आमाल का क्या हाल होगा जबकि कल वह ख़ुदावन्द तआला के हुज़ूर पेश किए जायेंगे मालूम नहीं उनमें कितने ऐब व नुक़सान ज़ाहिर होंगे।

बाज़ नेक लोगों से रिवायत है कि- *"मैं एक रात सहरी के वक़्त सड़क के किनारे एक बालाख़ाने पर सूरह **'ताहा'** पढ़ रहा था, जब मैंने सूरह ख़त्म कर लिया तो मुझे कुछ ऊँघ सी आ गई मैंने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी आसमान से नाज़िल हुआ उसके हाथ में एक सहीफ़ा था उसने वह मेरे सामने फैला कर रख दिया तो उसमें वही सूरह 'ताहा' लिखी हुई थी और हर कलिमे के नीचे दस नेकियाँ लिखी हुई थीं मगर एक कलिमा मैंने देखा कि मिटा हुआ है और उसके नीचे कुछ भी नहीं लिखा हुआ है। मैंने कहा कि मैंने यह कलिमा भी पढ़ा था और न उसका सवाब लिखा हुआ है न कलिमा ही लिखा हुआ है। तो उस आदमी ने कहा कि तुम सही कहते हो तुमने इसे पढ़ा था और हमने लिखा भी था मगर हमने आसमान से एक आवाज़ देने वाले को सुना उसने कहा कि इस कलिमे को मिटा दो और इसका सवाब भी ख़त्म कर दो तो हमने इसे मिटा दिया। उस आदमी ने कहा कि मैं अपने ख़्वाब ही में रोने लगा और उनसे पूछा कि तुमने ऐसा क्यूँ किया तो उसने जवाब दिया कि एक आदमी सड़क पर से गुज़रा तो उसको सुनाने के लिए तुमने यह कलिमा बुलन्द आवाज़ से पढ़ा था तो उसका सवाब ख़त्म हो गया।"* इसको याद रख।

बाक़ी रही नुक़सान की शिद्दत तो उसकी वजह यह है कि रिया और उज्ब एक बहुत बड़ी आफ़त है जो एक लम्हे में वाक़ेअ हो जाती है और बाज़ वक़्त सत्तर साल की इबादत को बिगाड़ कर रख देती है।

बयान किया जाता है कि एक आदमी ने सुफ़यान सौरी ﷀ और उनके साथियों की मेहमानी की तो अपने घर वालों से कहा कि उस थाल में रोटी रख कर लाओ जो मैं दूसरे हज के मौक़े पर लाया था पहले हज वाले थाल में रोटी न लाना तो सुफ़यान सौरी ﷀ ने उसकी तरफ़ देखा और कहा कि इस मिस्कीन ने इतनी सी बात में अपने हज को बातिल कर दिया।

और बाज़ ने नुक़सान ज़्यादा होने की यह वजह बयान की है कि वह थोड़ी सी इबादत जो रिया व उज्ब से सलामत रहे उस इबादत की क़ीमत ख़ुदा तआला के नज़दीक बहुत ज़्यादा है और ऐसी बहुत सी इबादत जिसे यह आफ़त पहुँच जाए उसकी कोई क़ीमत नहीं रहती मगर यह कि अल्लाह तआला उसे बचा ले जैसे कि हज़रत अली ﷠ से मन्क़ूल है कि आपने फ़रमाया कि- *"मक़बूल अमल कभी कम नहीं होता और मक़बूल अमल कम हो भी कैसे सकता है।"*

इमाम नख़ई ﷀ से पूछा गया कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ अमल का कितना सवाब है? आपने फ़रमाया- *"जब वह क़बूल हो जाए तो उसके सवाब की कोई हद नहीं।"*

और वहब से रिवायत है कि पहले लोगों में एक आदमी था जिसने सत्तर साल तक अल्लाह तआला की इबादत की। एक हफ़्ते के बाद रोज़ा अफ़्तार किया करता था। उसने अल्लाह तआला से एक हाजत का सवाल किया तो उसकी वह हाजत पूरी न हुई। वह अपने नफ़्स को मलामत करने लगा और कहने लगा कि अगर तेरे पास कोई भलाई होती तो तेरी हाजत पूरी कर दी जाती तो अल्लाह तआला ने एक फ़िरिश्ते को नाज़िल फ़रमाया और कहा कि ऐ आदम के बेटे! तेरी वह एक घड़ी जिसमें तूने अपने नफ़्स को बेहक़ीक़त समझा वह तेरी पहली तमाम इबादतों से बेहतर है। (इमाम अहमद)

मैं कहता हूँ कि अक़्लमन्द को इस कलाम पर ग़ौर करना चाहिए क्या यह शदीद नुक़सान नहीं है कि एक आदमी सत्तर साल तक तकलीफ़ और मेहनत उठाए और दूसरा एक घड़ी सोच विचार करे तो उसकी एक एक घड़ी

की फ़िक्र अल्लाह तआला के नज़दीक सत्तर साल की इबादत से अफ़ज़ल हो जाए। क्या यह बहुत बड़ा नुक़सान नहीं कि सत्तर साल से एक घड़ी ज़्यादा बेहतर हो जाए और सत्तर साल की तमाम इबादत बेकार चली जाए। ख़ुदा की क़सम यह बहुत बड़ा नुक़सान है और इससे बेख़बर रहना उससे भी बड़ा नुक़सान है और वह आदत जिसकी यह क़ीमत हो और ऐसे ख़तरे हों ज़रूरी है कि उससे बचा जाए और परहेज़ किया जाए और सही मअना में अक़्लमन्द लोगों की निगाह ऐसी बारीकियों पर पड़ती है फिर वह उन भेदों को पहचानने की पहले तो कोशिश करते हैं और बाद में उसकी रिआयत और हिफ़ाज़त का ख़्याल रखते हैं, उनकी निगाह आमाल के ज़्यादा होने पर नहीं होती, वह कहते हैं कि शान सफ़ाई में है ज़्यादती में नहीं। वह कहते हैं एक हीरा हज़ार कौड़ियों से बेहतर है लेकिन जिन लोगों का इल्म कम होता है और जिनकी निगाह इस बाब में आजिज़ है वह ऐसे मअना से बेख़बर हैं और दिलों के ऐबों से बेख़बर हैं और जानों को रुकू और सुजूद और खाने पीने से रोक कर थका देते हैं, उनको तादाद और कसरत ने धोखे में रखा है, और वह सफ़ाई और बुज़ुर्गी पर निगाह नहीं रखते और ऐसे अख़रोटों की कसरत कोई फ़ायदा नहीं देती जिनमें कोई गूदा न हो ऐसे मकानों की बुलन्द छतें कोई नफ़ा नहीं देतीं जिनकी बुनियाद मज़बूत न हो और इन हक़ीक़तों को सिर्फ़ आलिम लोग ही जान सकते हैं जिन पर ख़ुदा तआला की तरफ़ से कश्फ़ हो और अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़्ल व करम से हिदायत का वली है और बाक़ी रहा ख़तरों का बड़ा होना तो उसकी कई एक वजहें हैं:

पहली यह है कि माबूद एक ऐसा बादशाह है कि जिसके जलाल व अज़मत की कोई इन्तिहा नहीं और उसके तुझ पर एहसानात इतने हैं जो हिसाब और शुमार से बाहर हैं और तेरा बदन पोशीदा ऐबों से आलूदा है, बेशुमार आफ़तों से भरा हुआ है और मामला ख़तरनाक है, अगर नफ़्स की जल्दी से तेरा पाँव फिसल गया तो फिर तू मोहताज होगा कि ऐबदार बदन और बुराई की तरफ़ लगाव रखने वाले और बुराई का हुक्म देने वाले नफ़्स से कोई ऐसा ख़ालिस अमल करे कि वह रब्बुल आलमीन के जलाल व अज़मत के लायक़ हो और उसकी नेअमतों और एहसानों की कसरत का शुक्राना बन सके। और उसकी बारगाह में पसन्दीदगी और क़ुबूलियत हासिल

कर सके वर्ना तुझसे वह बड़ा फ़ायदा फ़ौत हो जाएगा जिसके फ़ौत होने को कोई नफ़्स ब रज़ा व रग़बत क़बूल नहीं कर सकता और यह भी हो सकता है कि तुझे कोई ऐसी मुसीबत पहुँच जाए कि जिसकी तुझे ताक़त न हो, और ख़ुदा की क़सम यह एक अजीब हालत है और एक अज़ीम कैफ़ियत है, बाक़ी रहा उस बादशाह के जलाल व अज़मत का मामला इस तरह कि मलाइका व मुक़र्रिबीन हर वक़्त दिन रात उसकी इबादत में खड़े हैं यहाँ तक कि बाज़ उनमें से रुकू की हालत में और बाज़ सजदे की कैफ़ियत में और बाज़ उनमें से तस्बीह व तहलील में मशग़ूल हैं, तो क़ियाम करने वाले का क़ियाम और रुकू करने वाले का रुकू और सजदा करने वाले का सजदा और तस्बीह कहने वाले की तस्बीह और "***ला इलाहा इल्लल्लाह***" कहने वाले की तहलील सूर फूँकने तक बराबर चली चलेगी और फिर भी उनकी इबादत पूरी न होगी। फिर भी वो जब इस अज़ीम इबादत से फ़ारिग़ होंगे तो सब के सब पुकार उठेंगे तू पाक है, जैसा तेरी इबादत का हक़ था हम उसे अदा नहीं कर सके।

और यह रसूलों के सरदार, कायनात का ख़ुलासा, तमाम मख़लूक़ात से ज़्यादा इल्म और फ़ज़ीलत रखने वाले हज़रत मुहम्मद ﷺ हैं जो फ़रमाते हैं कि- "***मैं तेरी ऐसी सना बयान नहीं कर सकता जिस सना का तू मुस्तहिक़ है***" और कहते हैं कि- "***मैं तेरी उस तारीफ़ को बयान करने से क़ासिर हूँ जिस तारीफ़ का तू मुस्तहिक़ है***।" फिर उस इबादत का तसव्वुर भी कैसे किया जा सकता है जिसका तू अहल है।

और आप ﷺ ही तो हैं जिन्होंने फ़रमाया कि- "***कोई आदमी जन्नत में अपने अमल से दाख़िल नहीं हो सकता, सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप भी दाख़िल नहीं हो सकते? तो आप ﷺ ने फ़रमाया जब तक ख़ुदा तआला की रहमत मुझको न ढाँप ले मैं भी नहीं दाख़िल हो सकता***।

बाक़ी रहे इनामात और एहसानात तो जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

(अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकागे।)

(सूरह नहल, आयत 18)

और जैसा कि हदीस में है कि लोगों के आमाल के तीन दफ़्तर होंगे एक नेकियों का दफ़्तर एक बुराइयों का दफ़्तर एक ख़ुदा तआला की नअमतों का दफ़्तर। नेकियों को नेअमतों के मुक़ाबिल लाया जाएगा जब कोई नेकी लाई जाएगी तो उसके मुक़ाबिल में नेअमत रख दी जाएगी यहाँ तक कि नेकियाँ नेअमतों में ख़त्म हो जायेंगी और गुनाह और बुराइयाँ बाक़ी रह जायेंगे तो फिर अल्लाह तआला को उनमें इख़्तियार है।

बाक़ी रहे नफ़्स के ऐब और उनकी आफ़तें, फिर हम पहले उसको उसके बाब में ज़िक्र कर चुके हैं और खतरनाक मामला तो यह है कि आदमी इबादत में सत्तर साल तक मेहनत करता है और तकलीफ़ उठाता है और वह उनके ऐबों और आफ़तों से बेख़बर होता है फिर कभी तो ऐसा होता है कि उनमें से एक भी मक़बूल नहीं होता और कभी कई साल तक मेहनत करता और एक घड़ी उसे बर्बाद करके रख देती है और उन तमाम ख़तरों से बढ़ कर यह ख़तरा है कि अल्लाह तआला बन्दे को देखता है और ख़ुदा तआला की इबादत लोगों को दिखाने के लिए करता है इस तरह कि उसका ज़ाहिर तो अल्लाह तआला के लिए होता है और बातिन मख़लूक़ के लिए, फिर वह उसको इस तरह मरदूद क़रार देता है कि उसे कोई भी ख़ुदा के यहाँ मक़बूल नहीं बना सकता। उससे ख़ुदा की पनाह।

और बाज़ उल्मा से सुना है कि वह हसन बसरी عليه الرحمة बयान करते थे कि उनकी वफ़ात के बाद उनको ख़्वाब में देखा गया तो उनसे उनका हाल पूछा गया, तो फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे अपने सामने खड़ा कर लिया, और फ़रमाया ऐ हसन क्या तुझे याद है कि एक दिन तू मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था, लोगों ने तुझको देखा तो तूने अपनी नमाज़ अच्छी करके पढ़ी अगर तेरी पहली नमाज़ मेरे लिए ख़ास न होती तो मैं तुझे आज अपने दरबार में से हाँक देता और तुझसे अपने तअल्लुक़ात ख़त्म कर लेता।

और जब मामला मुश्किल और बारीकी की वजह से इस अज़ीम हद तक बढ़ा हुआ है तो अक़्लमन्द लोगों ने इसमें ग़ौर किया और वह अपनी जानों पर डरते रहे यहाँ तक कि बाज़ उनमें से अपने उस अमल की तरफ़

तवज्जोह भी नहीं करते थे जो लोगों पर ज़ाहिर हो जाए यहाँ तक कि राबिया बसरिया रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैहा से बयान किया जाता है कि उन्होंने फ़रमाया कि- *"मेरा जो अमल ज़ाहिर हो जाए मैं शुमार में नहीं लाती"*। और किसी और ने कहा अपनी नेकियों को इस तरह छुपा जिस तरह तू अपनी बुराइयों को छुपाता है और किसी और ने कहा अगर तुझे नेकियों को छुपा कर कोई जगह मिल सके तो ऐसा ही कर। बयान किया जाता है कि राबिया रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैहा से सवाल किया गया कि- *"आपको अपने कौन से अमल पर सबसे ज़्यादा उम्मीद है?"* तो उन्होंने फ़रमाया कि- *"इस अमल पर कि मैं अपने आमाल से मायूस हूँ।"*

बयान किया जाता है कि- *"मुहम्मद इब्ने वासेअ़ और मालिक इब्ने दीनार ﷺ दोनों की मुलाक़ात हुई। मालिक ﷺ ने कहा कि या तो अल्लाह तआला की इबादत होगी या जहन्नुम। मुहम्मद इब्ने वासेअ़ ﷺ ने कहा या अल्लाह तआला की रह़मत होगी या जहन्नुम। तो मालिक इब्ने दीनार ﷺ ने कहा मुझे तेरे जैसे उस्ताद की कितनी ज़रूरत है।"* (फ़ैज़ुल क़दीर)

हज़रत बायज़ीद बिस्तामी ﷺ से रिवायत है कि- *"आपने फ़रमाया मैंने तीस साल तक इबादत में मेहनत की फिर मैंने एक कहने वाले को देखा कि जो मुझसे कहने लगा ऐ बायज़ीद उसके ख़ज़ाने इबादत से भरे हुए हैं अगर तू उसकी बारगाह तक पहुँचना चाहता है तो तुझे ज़िल्लत और मिस्कीनी इख़्तियार करनी चाहिए।"* (फ़ैज़ुल क़दीर)

और मैंने उस्ताद अबुल हसन ﷺ से सुना वह उस्ताद अबुल फ़ज़्ल ﷺ से बयान करते थे कि- "आपने फ़रमाया मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं जो भी इबादत करता हूँ वह अल्लाह तआला के दरबार में नाक़ाबिले क़बूल है आपसे इस मामले में गुफ़्तगू की गई तो आपने जवाब दिया किसी काम के मक़बूल होने के लिए जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है उनको मैं जानता हूँ और मुझे यह भी मालूम है कि उनको पूरा नहीं कर रहा हूँ। तो मैं जानता हूँ कि मेरे अमल ग़ैर मक़बूल हैं। तो आप से कहा गया फिर आप अमल क्यूँ करते है? फ़रमाया हो सकता है कि अल्लाह तआला किसी दिन मुझको दुरुस्त कर दे तो नफ़्स को अच्छे काम करने की आदत तो होगी और शुरू से उसे आदत डालने की ज़रूरत न होगी। यह हाल उन बड़े बड़े लोगों का है जो साहिबे

मुजाहिदा और मुश्किलात को उबूर करने वाले और मज़बूत क़दम रखते थे। तेरी हालत ऐसी है जैसा कि किसी शायर ने कहा है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *अपने नफ़्स के लिए ग़ैर लोगों की सोहबत तलाश करो क्योंकि मायूसी तारी हो गई है और उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं*
- *अफ़सोस कि सुस्ती के बदले सरदारी की ख़्वाहिश करता है नफ़्सों से कोशिश कराओ और अल्लाह पाक की तरफ़ मुतवज्जेह करने में मदद करो।*

फिर मुझे ख़्याल हुआ कि मैं यहाँ वह हदीस बयान कर दूँ जो सादिक़ुल मख़लूक़ﷺ से मन्क़ूल है और हमने उसको कई किताबों में ज़िक्र किया है इब्ने मुबारक رحمه الله ख़ालिद इब्ने माअदान رحمه الله से रिवायत करते हैं कि उन्होंने हज़रत मुआज़ رضي الله عنه से अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी हदीस सुनाओ जो आप رضي الله عنه ने रसूलुल्लाहﷺ से ख़ुद सुनी हो और उसको याद किया हो, और उसकी शिद्दत और बारीकी की वजह से आप उसी का तज़किरा हर रोज़ करते हों, तो आपने फ़रमाया हाँ बयान करता हूँ।

फिर आप बड़ी देर तक रोते रहे फिर कहने लगे रसूलुल्लाहﷺ और उनकी मुलाक़ात का शौक़ हद से बढ़ गया है।

"फिर फ़रमाया एक दफ़ा मैं रसूलुल्लाहﷺ के पास था। आपﷺ सवारी पर बैठे और मुझे भी अपने पीछे बिठा लिया। फिर हम चले। आपﷺ ने अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई फिर फ़रमाया तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जो अपनी मख़लूक़ में जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है। ऐ मुआज़! मैंने अर्ज़ किया लब्बैक या सय्यदुल मुरसलीन। आपﷺ ने फ़रमाया मैं तुझसे ऐसी बात बयान कर रहा हूँ कि अगर तूने उसको याद रखा तो तुझे नफ़ा देगी और अगर तूने उसको ज़ाया कर दिया तो अल्लाह पाक के नज़दीक तेरी हुज्जत ख़त्म हो जाएगी। ऐ मुआज़ अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान की पैदाईश के पहले सात फ़िरिश्तों को आसमानों के ख़ाज़िन और दरबान की हैसियत से पैदा किया। और हर एक आसमान के दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ते को बहैसियते दरबान खड़ा कर दिया फिर किरामन कातेबीन के बन्दे आमाल ले कर चढ़ते हैं उनमें रौशनी और चमक

होती है जैसे सूरज की रौशनी, यहाँ तक कि वह पहले आसमान पर चले जाते हैं और किरामन कातेबीन उसके अमल को बहुत ज़्यादा समझते हैं और उसको ख़ालिस जानते हैं फिर जब वह दरवाज़े पर पहुँचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ता उनसे कहता है इस अमल को अमल करने वाले के मुँह पर दे मारो मैं ग़ीबत का फ़िरिश्ता हूँ अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ऐसे आदमी का अमल ऊपर न जाने दूँ जो लोगों की ग़ीबत करता है वह मुझे छोड़ कर दूसरों की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है।------फिर दूसरे दिन फ़िरिश्ते ऊपर जाते हैं उनके पास बहुत अच्छे आमाल होते हैं, वो आमाल नूर से रौशन होते हैं किरामन कातेबीन उनको बहुत ज़्यादा पाकीज़ा ख़्याल करते हैं यहाँ तक कि जब वो दूसरे आसमान पर जाते हैं तो फ़िरिश्ता कहता है ठहर जाओ और इस अमल को अमल करने वाले के मुँह पर दे मारो क्योंकि इसकी नियत उस अमल से दुनिया कमाने की थी मुझे मेरे अल्लाह ने हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अमल ऊपर न जाने दूँ जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह होता है फिर फ़िरिश्ते शाम तक उस पर लानत करते रहते हैं। ----- फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अमल लेकर ऊपर जाते हैं और उनसे बड़ा ख़ुश होते हैं, उनमें सदक़ा, रोज़ा और बहुत सी नेकियाँ होती हैं, फ़िरिश्ते उनको बहुत ज़्यादा समझते हैं, और ख़ालिस जानते हैं, फिर जब वह तीसरे आसमान तक पहुँचते हैं तो दरबान फ़िरिश्ता कहता है कि ठहर जाओ और इस अमल को अमल करने वाले के मुँह पर दे मारो, मैं तकब्बुर वालों का फ़िरिश्ता हूँ, मेरे अल्लाह ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अमल ऊपर न जाने दूँ जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह हो यह आदमी लोगों पर उनकी मजलिस में अपनी बड़ाई बयान करता था। -----और फ़िरिश्ते बन्दे का अमल लेकर ऊपर जाते हैं और वो अमल इस तरह चमकते हैं जैसे सितारे या कोई रौशन सितारा उन आमाल में से तस्बीह की आवाज़ आती है। उनमें रोज़ा, नमाज़, हज और उमरह होता है। फिर जब वो चौथे आसमान पर जाते हैं तो वहाँ का मुवक्किल दरबान फ़िरिश्ता उनसे कहता है कि ठहर

जाओ और इस अमल को अमल करने वाले के मुँह पर दे मारो मैं उज्ब वालों का फ़िरिश्ता हूँ मुझे मेरे अल्लाह ने हुक्म दे रखा है कि मैं किसी ऐसे आदमी का अमल ऊपर न जाने दूँ जो मुझे छोड़ कर ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह होता है यह आदमी जब कोई अमल करता है तो उस पर मग़रूर हो जाता है। -----और फ़िरिश्ते बन्दे का अमल लेकर ऊपर जाते हैं वो अमल इस तरह आरास्ता होते हैं जैसे दुल्हन सुसराल जाने के वक़्त, जब वह उनको लेकर पाँचवें आसमान तक पहुँचते हैं उनमें जिहाद, हज, उमरा वग़ैरा अच्छे आमाल होते हैं। उनकी चमक सूरज जैसी होती है तो फ़िरिश्ता कहता है मैं हसद करने वालों का फ़िरिश्ता हूँ यह आदमी लोगों पर उन चीज़ों में हसद करता था जो उनको अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से दी हैं यह आदमी ख़ुदा तआला की पसन्दीदा तक़सीम पर नाराज़ है। मेरे अल्लाह ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इसके अमल ऊपर न जाने दूँ कि वह मुझे छोड़ कर दूसरों की तरफ़ मुतवज्जेह है। ------और फ़िरिश्ते बन्दे का अमल लेकर ऊपर जाते हैं उनमें अच्छे वुज़ू, बहुत सी नमाज़ें, रोज़े, हज और उमरह होता है वह छठे आसमान तक पहुँच जाते हैं, तो दरवाज़े पर मुक़र्ररा निगहबान कहता है मैं रहमत का फ़िरिश्ता हूँ इन आमाल को अमल करने वाले के मुँह पर दे मारो यह आदमी कभी किसी इन्सान पर रहम नहीं करता था और किसी बन्दे को मुसीबत पहुँचती है तो ख़ुश होता है मेरे अल्लाह ने मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इसके आमाल ऊपर न जाने दूँ कि वह मुझे छोड़ कर ग़ैरों की तरफ़ मुतवज्जेह है। -----फिर फ़िरिश्ते बन्दे का अमल लेकर ऊपर जाते हैं उसमें बहुत सा सदक़ा, नमाज़, रोज़ा, जिहाद और परहेज़गारी होती है उनकी आवाज़ होती है जैसा बिजली की कड़क की आवाज़ और चमक जैसे बिजली की चमक, फिर जब वो सातवें आसमान पर पहुँचते हैं तो फ़िरिश्ता जो इस आसमान पर मुवक्किल है कहता है मैं ज़िक्र का फ़िरिश्ता हूँ यानी सुनाने का और लोगों में आवाज़ देने का, इस अमल वाले ने इस अमल में मजलिसों में ज़िक्र करने और दोस्तों में बुलन्दी और बड़े लोगों के नज़दीक इज़्ज़त पसन्दी की नीयत की थी, मेरे अल्लाह ने

मुझे हुक्म दे रखा है कि मैं इसके आमाल ऊपर न जाने दूँ कि वह मुझे छोड़ कर ग़ैरों की तरफ़ मुतवज्जेह है और हर वह अमल जो अल्लाह के लिए ख़ालिस न हो वह रिया है, और रिया का अमल अल्लाह तआला क़बूल नहीं फ़रमाता। ------ और फ़िरिश्ते बन्दे के आमाल नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज, उमरह अच्छा अख़लाक़, ख़ामोशी और ज़िक्रे इलाही लेकर ऊपर जाते हैं। सातों आसमानों के फ़िरिश्ते उनकी ताज़ीम के लिए साथ हो जाते हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआला की बारगाह के सामने से तमाम पर्दे हट जाते हैं फिर वह अल्लाह के सामने खड़े होकर उसके लिए शहादत देते हैं कि उसका अमल नेक ख़ालिस अल्लाह तआला के लिए है, तो अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम मेरे बन्दे के आमाल पर निगराँ हो और मैं उसके दिल की निगरानी करने वाला हूँ इस अमल से इसका इरादा मुझे ख़ुश करना नहीं था बल्कि मेरे सिवा औरों को ख़ुश करना मक़सूद था। मैं इसे अपने लिए ख़ालिस नहीं समझता और मैं ख़ूब जानता हूँ जो अमल करने से उसकी नीयत थी उस पर मेरी लानत, इसने बन्दों को भी धोखा दिया और तुमको भी लेकिन मुझे धोखा नहीं दे सकता, मैं ग़ैबों का जानने वाला हूँ, दिलों के ख़्यालात से वाक़िफ़ हूँ मुझ पर कोई पोशीदा चीज़ छुपी नहीं रह सकती, और कोई छुपी चीज़ मुझसे ओझल नहीं है मेरा इल्म हाज़िर के मुताल्लिक़ भी उसी तरह है जैसे मुस्तक़बिल के मुताल्लिक़ है और गुज़री हुई चीज़ों के साथ मेरा इल्म उसी तरह है जैसा कि बाक़ी चीज़ों के मुताल्लिक़ और मेरा इल्म पहले लोगों के साथ उसी तरह है जैसे पिछलों के साथ। मैं पोशीदा को जानता हूँ और दिल के ख़्यालात को भी। मेरा बन्दा अपने अमल के साथ मुझे किस तरह धोखा दे सकता है। धोखा तो मख़लूक़ खाती है जिनको इल्म नहीं होता, और मैं तो ग़ैबों का जानने वाला हूँ उस पर मेरी लानत है और सातों फ़िरिश्ते और तीन हज़ार फ़िरिश्ते रुख़्सत करने वाले सब कहते हैं ऐ हमारे रब इस पर तेरी लानत है, और हमारी भी लानत। फिर आसमानों वाले कहते हैं उस पर अल्लाह की लानत और लानत करने वालों की लानत।

फिर मुआज़ ﷺ रोने लगे और बड़ा सख़्त रोए और कहा ऐ अल्लाह के रसूलﷺ आपने जो ज़िक्र फ़रमाया है उससे निजात की क्या सूरत है? तो फ़रमाया ऐ मुआज़ अपने नबी की यक़ीन में पैरवी कर मैंने कहा आप तो अल्लाह के रसूल हैं और मैं मुआज़ इब्ने जबल हूँ, मुझे निजात और ख़ुलासी किस तरह नसीब हो सकती है। आपﷺ ने फ़रमाया ऐ मुआज़ अगर तेरे अमल में कोताही हो तो लोगों की बेइज़्ज़ती करने से अपनी ज़बान को रोक ख़ुसूसन अपने भाईयों से। क़ुरआन पढ़ने वालों से और लोगों की बेइज़्ज़ती करने से अपने नफ़्स के ऐबों का इल्म तुझे रोक दे, और अपने भाईयों की ख़िदमत करके अपने नफ़्स को पाक न बना और अपने भाईयों को गिरा कर अपने आपको बुलन्द करने की कोशिश न कर और अपने अमल में रियाकारी न कर कि तू लोगों में पहचाना जाए और इस तरह दुनिया में मशग़ूल न हो जा कि तुझे आख़िरत का मामला भूल जाए और जब तेरे पास कोई और आदमी भी बैठा हो तो किसी दूसरे से छुप कर मशवरा न कर और लोगों में बड़ाई हासिल करने की कोशिश न कर कि दुनिया व आख़िरत की भलाइयाँ तुझसे मुँह मोड़ लेंगी और अपनी मजलिस में इस तरह बेहूदा बातें न कर कि लोग तेरी बदअख़लाक़ी की वजह से तुझसे गुरेज़ करने लगें और लोगों पर एहसान न जता और लोगों की इज़्ज़त का पर्दा अपनी ज़बान से चाक न कर कि तुझे जहन्नुम के कुत्ते फाड़ डालेंगे और यही अल्लाह तआला का क़ौल है

وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا

(हड्डियों से गोश्त को अलग कर देंगे)।

मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूलﷺ इन बातों की कौन ताक़त रख सकता है। आपﷺ ने फ़रमाया ऐ मुआज़! जो मैंने तुझसे बयान किया है, वह उसी आदमी पर आसान है, जिस पर अल्लाह तआला आसान करे। तुझे इन तमाम बातों से यह चीज़ किफ़ायत करती है कि तू लोगों के लिए वही कुछ पसन्द करे जो तू अपने नफ़्स के लिए पसन्द करता है और लोगों के लिए वही कुछ नापसन्द करे जो

तू अपने नफ़्स के लिए नापसन्द करता है अगर तू ऐसा करेगा तो सलामत रहेगा और निजात पाएगा।

ख़ालिद इब्ने मअदान عليه‌السلام ने कहा कि हज़रत मुआज़ क़ुरआन पाक की तिलावत भी इस कसरत से नहीं करते थे जितना कि इस हदीस को बयान करते थे और अपनी मजलिस में इसका तज़्किरा करते। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

और ऐ आदमी! जब तूने यह अज़ीम हदीस और बहुत बड़ी ख़बर सुन ली है जिसका अन्जाम बड़ा दर्दनाक है जिसके असर से दिल उड़ने लगते हैं और अक़्लें परेशान हो जाती हैं और जिसको सीने उठाने से तंग हैं जिसकी हैबत से नफ़्स घबराते हैं, तो अपने मौला की रहमत का दामन थाम ले और आजिज़ी और गिड़गिड़ाने और दिन रात के रोने से उसके दरवाज़े को लाज़िम पकड़ ले जैसा कि दूसरे आजिज़ी करने वाले गिड़गिड़ाने वाले करते हैं, इस मामले में निजात सिर्फ़ उसी की रहमत से है और इस समुन्द्र से सलामती के साथ बच निकलना सिर्फ़ उसकी तवज्जोह और तौफ़ीक़ और इनायत से है। ग़ाफ़िलों की नींद से बेदार हो और इस काम को उसका हक़ दे और इस ख़ौफ़नाक घाटी में अपने नफ़्स से जिहाद कर ताकि तू हलाक होने वालों के साथ हलाक न हो जाए और हर हालत में अल्लाह तआला ही से मदद की इल्तिजा है वह बेहतरीन मददगार है और वह सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है और गुनाह से बचने और नेकी करने की ताक़त भी अल्लाह तआला बुलन्द व अज़ीम की तौफ़ीक़ से है।

फ़स्ल

क़िस्सा मुख़्तसर जब तूने अच्छी तरह देख लिया और अल्लाह तआला की इताअत के अन्दाज़े को मुलाहिज़ा कर लिया और मख़लूक़ और उनकी कमज़ोरी और उनकी जहालत को देख लिया तो अपने दिल के साथ उनकी तरफ़ तवज्जोह मत कर उनकी तारीफ़ से बेनियाज़ हो जा कि इसमें कोई फ़ायदा नहीं, तू इन चीज़ों से अपनी इबादत को कमज़ोर न कर और जब तूने दुनिया की कमीनगी और हिक़ारत और बहुत जल्द ख़त्म होने को जान लिया तो अल्लाह तआला की इबादत से उसकी तरफ़ तवज्जोह न कर और अपने नफ़्स से कह कि ऐ नफ़्स! रब्बुल आलमीन की तारीफ़ और उसकी

शुक्रगुज़ारी, आजिज़ और जाहिल मख़लूक़ की तारीफ़ से बेहतर है जो कि हक़ीक़त में तेरे अमल की क़द्र को और तेरी मेहनत को जानते ही नहीं और तेरे हक़ को तेरे आमाल में और तेरी तकलीफ़ में नहीं पहचान सकते बल्कि बाज़ वक़्त तुझ पर किसी ऐसे आदमी को फ़ज़ीलत देंगे जो तुझसे हज़ारहा दर्जा कमतर होगा और सबसे ज़्यादा हाजत के वक़्त में तुझ को बर्बाद कर देंगे और भूल जायेंगे और अगर वह ऐसा न भी करें तो उनके हाथ में आख़िर है भी क्या और उनकी ताक़त कहाँ तक पहुँच सकती है फिर वो भी अल्लाह तआला ही के क़ब्ज़े में हैं तो फिर वह उनको जिस तरह चाहेगा और जिधर चाहेगा फेर देगा तो ऐ नफ़्स! अक़्ल से काम ले और अपनी क़ीमती इबादत को उनकी वजह से बर्बाद न कर और नहीं बर्बाद होगी तुझसे उस ज़ात की सना, जिसकी सना तमामतर फ़ख़्र और अता है और जिसकी अता तमामतर ज़ख़ीरा है और कहने वाले शायर कितना सच कहा है जिसका तर्जुमा पेश हैः

- *तेरे चेहरे के सिवा आँखों का जागना बातिल है और तेरे गुम होने के सिवा उनका रोना बेकार है।*

और कहो ऐ नफ़्स! क्या हमेशा की जन्नत बेहतर है या दुनिया और उसका नाकारा और फ़ानी हराम से आलूदा सामान? हालांकि तुझे ताक़त है कि तुझे तेरी इस इबादत से हमेशा की नेअमतें हासिल हों फिर न हों तो कम हिम्मत बेकार इरादे और कमीने कामों वाला, क्या तू ग़ौर नहीं करता कि कबूतर जब फ़िज़ा में बुलन्द उड़ने वाला हो तो उसकी क़ीमत किस तरह बढ़ जाती है और उसकी क़द्र कितनी ज़्यादा हो जाती है तो तू अपनी तमाम हिम्मत को आसमान की तरफ़ बुलन्द कर और अपने दिल को अकेले अल्लाह तआला के लिए ख़ाली कर दे जिसके इख़्तियार में तमाम उमूर है और नाकारा चीज़ों की वजह से अपनी कमाई हुई इबादत को बर्बाद न कर और इसी तरह जब तू अच्छी तरह ग़ौर करेगा तो अल्लाह तआला की नेअमतों, बड़े बड़े एहसानात को उस इबादत में अपने ऊपर मुलाहिज़ा फ़रमाएगा कि उसी ने तुझको इसकी तौफ़ीक़ बख़्शी और उसने इसका सामान फ़राहम किया और उसी ने रुकावटों को तुझसे दूर फ़रमाया यहाँ तक के इस इबादत के लिए फ़ारिग़ हुआ। फिर उसने तुझको तौफ़ीक और ताईद से ख़ास

किया और उसको तुझ पर आसान बनाया और तेरे दिल में उसको ज़ीनत बख़्शी यहाँ तक कि तूने उस पर अमल किया। फिर उसी ने अपनी अज़मत और जलाल और तेरी इबादात और तुझसे बेनियाज़ी और अपनी तुझ पर बेअन्दाज़ नेअमतों के बावजूद तेरी लिए उस मामूली अमल पर अच्छी तारीफ़ और सवाबे अज़ीम का अज्र तैयार कर रखा है, जिसका तू किसी सूरत में मुस्तहिक़ नहीं है, फिर वह उस पर तुझे शुक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और उस मामूली काम पर तारीफ़ फ़रमाता है और उसी की वजह से तुझसे मुहब्बत रखता है।

और यह सब कुछ उसी के बहुत बड़े फ़ज़्ल की वजह से है, न किसी और वजह से वर्ना तेरा कौन सा हक़ है और तेरे इस ऐबदार और हक़ीर अमल की कौन सी क़द्र है, सो ऐ नफ़्स! अपने रब्बे करीम रहीम सुब्हानहु व तआला के एहसान को याद कर कि उसने तुझ पर इस इबादत के बजा लाने में कितना एहसान किया और उससे शर्म कर कि तू अपने अमल की तरफ़ तवज्जोह करे बल्कि अल्लाह तआला ही का हम पर हर हाल में फ़ज़्ल और एहसान है और उस इबादत के हासिल हो जाने के बाद तेरा काम अल्लाह तआला सुब्हानहु की बारगाह में आजिज़ी और गिड़गिड़ाने के सिवा और कुछ नहीं होना चाहिए कि वह उसे अपनी रहमत से क़बूल फ़रमाये। क्या तूने अल्लाह तआला के ख़लील इब्राहीमعليه السلام की बात नहीं सुनी कि जब वह ख़ुदा तआला के घर की तामीर की ख़िदमत से फ़ारिग़ हुए तो किस तरह अल्लाह तआला की बारगाह में गिड़गिड़ए कि वह उसको क़बूल फ़रमा कर उन पर एहसान करे उन्होंने कहा:-

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٨﴾

(ऐ रब हमारे हमसे क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता।)

(सूरह बक़र, आयत-128)

और जब अपनी दुआ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया:

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ

(ऐ हमारे रब और मेरी दुआ सुन ले।) (सूरह इब्राहीम, आयत-40)

फिर अगर उसने उस खोटी पूँजी (नाक़िस अमल) को क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एहसान किया तो उसने अपनी नेअमत को मुकम्मल कर दिया और एहसाने अज़ीम फ़रमाया। कितनी अच्छी है यह सआदत और दौलत व इज़्ज़त व बुलन्दी और यह ख़िलअत (इज़्ज़त की निशानी) और नेअमत और ज़ख़ीरा और करामत तुझ पर कितनी सजेगी और अगर दूसरी कैफ़ियत हुई तो इस ख़सारे और नुक़सान और महरूमी पर निहायत अफ़सोस, फिर तू उठ और इस कैफ़ियत में मशग़ूल हो जा, जब तू इस अमल पर हमेशगी करेगा और अपनी इबादत से फ़ारिग़ होने पर अपने दिल पर उसकी तकरार करेगा और ख़ुदावन्द तआला से मदद चाहेगा तो वह तुझे मख़लूक़ और नफ़्स की रग़बत से बचा लेगा और उज्ब और रियाकारी के शग़ल से महफ़ूज़ रखेगा और तुझे ख़ालिस इख़्लास पर इबादात ज़िक्रे इलाही में आमादा करेगा और फिर तमाम हालात में तुझ पर अल्लाह तआला का एहसान होगा। तुझे ज़ाहिरी इताअत हासिल होगी जो उम्मीद के क़ाबिल हो और ऐसी नेकियाँ मयस्सर आयेंगी जिनमें कोई ख़राबी न हो और ऐसी मक़बूल इबादतें हासिल होंगी जिनमें कोई नुक़्स न हो और ऐसी इबादत अगर बिलफ़र्ज़ ज़िन्दगी में एक ही दफ़ा मयस्सर हो जाए और फिर कभी मयस्सर न हो तो वह भी हक़ीक़त में बहुत है, और मुझे अपनी उम्र की क़सम! अगर्चे उसकी तादाद कम हो लेकिन उसके माअना बहुत हैं उसकी क़द्र बड़ी है, इसका नफ़ा कसीर है उसका अन्जाम अच्छा है और इस तरह की तौफ़ीक़ मिलना बहुत अज़ीज़ है और बन्दे पर ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा एहसान है। फिर उस तोहफ़े से कौन सा तोहफ़ा बड़ा हो सकता है जिसको अल्लाह रब्बुल आलमीन क़ुबूल कर ले और उस कोशिश से अच्छी और कौन सी कोशिश हो सकती है जिस पर शुक्र करने की तौफ़ीक़ की नवाज़िश बेक़रारों की दुआयें सुनने वाला करे और रब्बुल आलमीन उस पर तारीफ़ करे और कौन सी पूँजी उस पूँजी से ज़्यादा बेहतर है जिसको रब्बुल आलमीन पसन्द कर दे और उस पर ख़ुश हो जाए।

फिर ऐ मिस्कीन ग़ौर कर! और होशियार हो जा कि तू ख़सारा पाने वालों से न हो जाए और जब मामला इस हद तक पहुँच जाएगा तो तू अल्लाह तआला के मुख़्लिस डरने वाले, फ़िक्र करने वाले अल्लाह के

एहसानात पर राज़ी होने वाले लोगों में से हो जाएगा और तू इस ख़ौफ़नाक घाटी को अपने पीछे छोड़ जाएगा उसकी आफ़तों से सलामत रहेगा और उसकी भलाइयाँ और फल अपने साथ ले जाएगा उसकी सआदतों और करामतों पर हमेशा के लिए कामयाबी पा लेगा और अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़्ल व करम से इज़्ज़त और तौफ़ीक़ का वाली है और अल्लाह तआला बुलन्द अ़ज़ीम की तौफ़ीक़ ही से गुनाह से परहेज़ और नेकी की क़ुव्वत हासिल की जा सकती है।

सातवीं घाटी
शुक्र के बयान में

और यह घाटी ह़म्द और शुक्र की है। अल्लाह तुझे भी तौफ़ीक़ दे और हमें भी इन घाटियों के पार करने के बाद और ऐसी इबादत के हुसूल के बाद जो आफ़तों से सही सलामत हो अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाना लाज़िम है। इस अज़ीम नेअमत और एहसाने करीमी पर शुक्र बजा लाना तुझे दो वजहों से लाज़िम है। एक तो अज़ीम नेअमत की हमेशगी के लिए और दूसरे ज़्यादा हासिल होने के लिए, फिर नेअमत की हमेशगी के लिए इसलिए ज़रूरी है कि शुक्र के साथ नेअमतें क़ैद हो जाती हैं और हमेशा हमेशा के लिए बाक़ी रहती हैं और उसको तर्क कर देने से चली जाती हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया है -

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۗ

(बेशक अल्लाह किसी क़ौम से नेअमत नहीं बदलता जब तक वह ख़ुद अपनी हालत न बदलें।)

(सूरह रअ़द, आयत-11)

और फ़रमाया:-

فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللّٰهِ فَأَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

(तो वह अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री करने लगी तो अल्लाह ने उसे यह सज़ा चखाई कि उसे भूख और डर का पहनावा पहनाया बदला उनके किए का।)

(सूरह नह़ल, आयत-112)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۗ

(और अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ।)

(सूरह निसा, आयत-147)

हुज़ूर नबी-ए-करीमﷺ ने फ़रमाया- "***नेअमतें भी इसी तरह भाग जाती हैं जैसे जंगली जानवर भाग जाते हैं तो उनको शुक्र के साथ पाबन्द करो।***"

बाक़ी रहा और ज़्यादा नेअमतें हासिल करना तो चूँकि शुक्र नेअमतों के लिए ज़ंजीर है तो वह ज़्यादा नेअमतों का फल देंगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ

(अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूँगा।)

(सूरह इब्राहीम, आयत-7)

और फ़रमाया:-

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

(और जिन्होंने राह पाई अल्लाह ने उनको हिदायत और ज़्यादा फ़रमाई।)

(सूरह मुहम्मद, आयत-17)

और फ़रमाया: -

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط

(और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।)

(सूरह अनकबूत, आयत 69)

फिर अक़्लमन्द मालिक जब ग़ुलाम को देखता है कि वह उसकी नेअमत का हक़ अदा कर रहा है तो उस पर और भी एहसान करता जाता है और उसको उनका अहल समझता है, वर्ना उससे एहसानात रोक लेता है

फिर नेअमतें दो क़िस्म की हैं: **दुनियावी** और **दीनी** फिर दुनियावी दो क़िस्म की हैं: पहली नफ़े की नेअमत और दूसरी मुदाफ़अत (बचाव) की

नेअमत, नफ़े की नेअमत तो यह है कि तुझे अल्लाह तआला तेरे मुनासिब और मुनाफ़े की चीज़ें अता फ़रमाये। फिर मुनाफ़े की दो क़िस्में हैं: सही पैदाइश और जिस्मानी सलामती और आफ़ियत और मरग़ूब चीज़ों का मुहय्या करना मसलन खाना पीना, लिबास, निकाह वग़ैरा के फ़ायदे, और मुदाफ़अत की नेअमत यह है कि अल्लाह तआला तुझसे बिगाड़ पैदा करने वाली और तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को तुझसे रोक रखे और यह भी दो क़िस्म है: पहली नफ़्स में कि अल्लाह तआला तुझे तमाम आफ़तों, बीमारी से महफ़ूज रखे, और दूसरी उन चीज़ों की मुदाफ़अत जिनसे तुझे कोई नुक़सान पहुँच सके या कोई इन्सान या जिन्न या दरिन्दा और मूज़ी जानवर तुझे बुराई पहुँचाने का इरादा करे और बाक़ी रहीं दीनी नेअमतें तो वह भी दो क़िस्म की हैं।

1. *नेअमते तौफ़ीक़*
2. *नेअमते इस्मत*

तौफ़ीक की नेअमत तो यह है कि अल्लाह तआला तुझे पहले तो इस्लाम की तौफ़ीक़ बख़्शे फिर सुन्नत पर अमल की फिर फ़रमाबरदारी की और इस्मत की नेअमत यह है कि सबसे पहले अल्लाह तआला तुझे कुफ्ऱ और शिर्क से बचाये फिर बिदअत और गुमराही से फिर तमाम गुनाहों से और उसकी तफ़्सील उस कायनात के मालिक के सिवा कोई नहीं जानता जिसने तुझ पर एहसानात किए हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

(और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।)

(सूरह नहल, आयत- 18)

और इन तमाम नेअमतों का रिवाज बाद इसके कि अल्लाह तआला ने तुझ पर उनका एहसान किया और हर तरफ़ से उस पर इज़ाफ़ा फ़रमाया कि जिसको तेरा वहम न तो शुमार कर सकता है और न वहाँ तक पहुँच सकता है और यह तमाम चीज़ें एक ही चीज़ से मुताल्लिक़ हैं और वह अल्लाह तआला की तारीफ़ और उसका शुक्र।

और वह काम जिसकी यह क़ीमत हो जिसमें यह तमाम फ़ायदे हों हक़ रखता है कि उसको किसी हाल में ग़फ़लत के बग़ैर थाम रखा जाए, यह क़ीमती हीरा है और निहायत क़ीमती शय है, और अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल व रहमत से तौफ़ीक़ का वाली है।

अगर सवाल किया जाए कि हम्द और शुक्र की हक़ीक़त क्या और उसके मअना क्या हैं और उनका हुक्म क्या है तो जान लेना चाहिए कि उल्मा ने हम्द और शुक्र में कुछ फ़र्क़ किया है। वह यह कि हम्द तो तस्बीह व तहलील की क़िस्म से है इसलिये यह ज़ाहिरी कोशिशों में से होगी और शुक्र सब्र और सुपुर्दगी की क़िस्म से है तो यह बातिनी कोशिशों में से होगा क्योंकि शुक्र कुफ़्र (इन्कार करने) के मुक़ाबिल है और हम्द मुज़म्मत (बुराई करने) के मुक़ाबिल और दूसरा फ़र्क़ यह है कि हम्द आम है और अक्सर है और शुक्र कम है और ख़ास है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۝١٣

(और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।)

(सूरह सबा, आयत- 13)

साबित हुआ कि यह दोनों के अलग-अलग मअना हैं, फिर यह फ़र्क़ भी है कि हम्द किसी के अच्छे काम करने पर तारीफ़ करने को कहते हैं। हमारे शैख़ के कलाम का हासिल यही है।

बाक़ी रहा शुक्र तो इसके मअना में उल्मा ने बहुत कलाम किया है हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه से मरवी है कि आप رضي الله عنه ने फ़रमाया कि- "*ख़ुदावन्द तआला की ज़ाहिर और बातिन में तमाम आज़ा से इताअत का नाम शुक्र है और हमारे बाज़ मशाइख़ का भी यही क़ौल है कि उन्होंने कहा कि ज़ाहिर और बातिन में इताअत का अदा करना शुक्र है, फिर दूसरे क़ौल की तरफ़ रुजू किया और कहा कि ज़ाहिर और बातिन में गुनाहों से परहेज़ करना शुक्र है।*" और किसी और ने कहा कि- "*अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों को इख़्तियार करने से अपनी हिफ़ाज़त करने का नाम शुक्र है कि तू अपने दिल और ज़बान और आज़ा की इस तरह हिफ़ाज़त करे कि इन तीनों से किसी तरह भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी न कर सके* और इस क़ौल और

पहले शैख़ के क़ौल में फ़र्क़ यह है कि शैख़ बुज़ुर्ग ने हिफ़ाज़त को गुनाहों से बचने पर एक ज़ाएद मअना की हैसियत से साबित किया है और नाफ़रमानी से बचने की हक़ीक़त तो यही है कि जब उसके असबाब मौजूद हों तो इन्सान नाफ़रमानी न करे और इस तारीफ़ के मुताबिक़ कोई ऐसा मअना अपने नफ़्स में हासिल नहीं होगा जिससे बन्दा मशग़ूल रहे और नाशुक्री से बचा रहे। और हमारे शैख़ ने फ़रमाया कि- एहसान करने वाले की नेअमत के मुक़ाबले में इस तरह ताज़ीम की जाए कि एहसान करने वाले की नाफ़रमानी नाशुक्री से उसको रोक दे उसका नाम शुक्र है और अगर एहसान के मुक़ाबले में मोहसिन की ताज़ीम रखी जाए तो ऐसी सूरत में यह भी सही होगा कि अल्लाह तआला बन्दे को शुक्र की तौफ़ीक़ दे और यह बहुत अच्छी तारीफ़ है और इसमें काफ़ी तफ़्सील है जिसको हमने अपनी किताब 'इहयाउल उलूम' वग़ैरा में पूरी तरह बयान किया है। लेकिन हासिल यह है कि बन्दे का शुक्र यह है कि अपने मोहसिन की इस तरह ताज़ीम करे कि उनकी नाफ़रमानी से बाज़ आ जाए और यह उसके एहसान के याद करने से होता है और शुक्र करने वाले का हाल शुक्र में बहुत बेहतर है और नाशुक्री करने वाले का हाल नाशुक्री में बहुत बदतर है।

मैं कहता हूँ कि नेअमत देने वाले का कम से कम यह हक़ है कि उसकी नेअमत के साथ उसकी नाफ़रमानी न की जाए और कितनी बदतर हालत है उस आदमी की जो नेअमत देने वाले की नेअमत को उसकी नाफ़रमानी पर हथियार के तौर पर इस्तेमाल करे फिर बन्दे पर शुक्र का हक़ीक़त में यह फ़र्ज़ है कि उसके दिल में अल्लाह तआला की ऐसी ताज़ीम हो कि वह ख़ुदा तआला और उसकी नाफ़रमानी के बीच में आ जाए जबकि उस नेअमत को याद करे, जब उसने ऐसा कर लिया तो उसने शुक्र का हक़ अदा कर दिया फिर उसके मुक़ाबिल ख़ुदा तआला की इताअत में कोशिश और इबादत में जद्दोहद है क्योंकि वह नेअमत के हुक़ूक़ में से है तो नाफ़रमानी से बचते रहना भी ज़रूरी है और अल्लाह तआला ही की तरफ़ से तौफ़ीक़ है।

अगर तुम यह सवाल करो कि शुक्र का मक़ाम कौन सा होता है तो मालूम होना चाहिए कि उसका मक़ाम दीनी और दुनियावी नेअमतें हैं, बाक़ी रहा मुसीबतों और सख़्तियों पर दुनिया में चाहे वह अपने नफ़्स पर हों या

अहले ख़ाना और माल पर शुक्र करना बन्दे पर लाज़िम हैं या नहीं, तो बाज़ ने कहा है कि बन्दे का उन पर उनकी हैसियत से शुक्र करना लाज़िम नहीं है बल्कि उन पर सब्र करना लाज़िम है, और बाक़ी रहा शुक्र तो वह नेअमतों पर होता है नाकि किसी दूसरी चीज़ पर और बाज़ ने कहा है कि कोई सख़्ती ऐसी नहीं कि जिसके पहलू में अल्लाह तआला का एहसान न हो, तो उस नेअमत पर जो उस सख़्ती से मिली हुई है, बन्दे पर शुक्रिया लाज़िम है नाकि सख़्ती और मुसीबत पर और यह नेअमतें वो हैं जो इब्ने उमर ﵁ ने फ़रमाई। आपने फ़रमाया जब कभी भी कोई मसीबत मुझ पर आई तो मैंने उस में अल्लाह तआला के चार एहसान देखे पहला यह कि वह मुसीबत मेरे दीन में न आई, दूसरी यह कि उससे ज़्यादा न आई, तीसरी यह कि मैं तक़दीर पर राज़ी होने से महरूम न रहा, और चौथी यह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है।

और यह भी कहा गया है कि यह भी एक नेअमत है कि वह सख़्ती दूर हो जाने वाली है हमेशा रहने वाली नहीं और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है नाकि किसी दूसरे की तरफ़ से।

और अगर वह सख़्ती किसी मख़लूक़ के सबब से हो तो वह तेरी तरफ़ से उस पर है नाकि उसकी तरफ़ से तुझ पर। तो इस वक़्त बन्दे पर शुक्रिया लाज़िम है उन नेअमतों पर जो सख़्ती के साथ मिली हुई हैं।

और कुछ लोगों ने यह भी कहा है और हमारे शैख़ ने इस क़ौल को ज़्यादा बेहतर क़रार दिया है कि दुनिया की मुसीबतों पर शुक्र करना भी बन्दे पर लाज़िम है क्योंकि यह सख़्तियाँ हक़ीक़त में नेअमतें हैं क्योंकि बन्दे को इसके मुआवज़े में अज़ीम मुनाफ़ा बेशुमार सवाब और अच्छा बदल आख़िरत में मिलता है जिनके मुक़ाबले में उन सख़्तियों की कोई हैसियत नहीं रहती और इससे बढ़ कर और कौन सी नेअमत होगी उसकी मिसाल ऐसी है जैसा कि तुझे बदमज़ा और कड़वी दवाई पिलाये ताकि ख़तरनाक बीमारी दूर हो जाए या किसी बहुत बड़ी बीमारी या ख़ौफ़नाक ख़तरे की वजह से सिंघी लगाए। तो उसका नतीजा नफ़्स की सेहत, बदन की सलामती और ज़िन्दगी की सफ़ाई होगा तो उसका तुझे कड़वी दवाई पिला कर तकलीफ़ देना या फ़सद का जख़्म लगाना या सिंघी खींचना हक़ीक़त में एक बहुत बड़ा एहसान और अज़ीम नेअमत होगी अगरचे उसकी ज़ाहिरी सूरत नापसन्दीदा है उससे

तबीयत नफ़रत करती और नफ़्स वहशत महसूस करता है फिर भी तू उस आदमी का शुक्रिया अदा करता है बल्कि अपनी हिम्मत के मुताबिक़ उसको अच्छा मुआवज़ा भी देता है तो यही हुक्म उन मुसीबतों और सख़्तियों का भी है क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि नबी-ए-करीमﷺ सख़्तियों पर भी उसी तरह शुक्र अदा करते थे जैसा कि ख़ुशी की चीज़ों पर। आपﷺ ने फ़रमाया- "***तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए हैं बुराइयों पर भी और भलाईयों पर भी***।"

क्या आप अल्लाह तआला के क़ौल की तरफ़ ग़ौर नहीं फ़रमाते कि:-

فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّ يَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾

(तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई रखे।)

(सूरह निसा, आयत-19)

और अल्लाह तआला जिसका नाम भलाई रखे वह उस बात से बहुत ज़्यादा है कि तेरा ख़्याल भी वहाँ तक पहुँच सके, और इसकी ताईद इस क़ौल से होती है कि नेअमत सिर्फ़ वह ही नहीं होती जिसमें ख़ुशगवार मज़ा हो या जिसे तबीयत के तक़ाज़े की वजह से नफ़्स चाहे बल्कि वह चीज़ भी नेअमत है जिससे दर्जात में बुलन्दी नसीब हो। यही वजह है कि नेअमत को ज़ियादत के मअना में भी इस्तेमाल करते हैं और जब सख़्ती बन्दे के शरफ़ और दर्जात की बलन्दी का सबब है तो यह भी हक़ीक़त में नेअमत होगी अगरचे अपनी ज़ाहिरी सूरत से उसे सख़्ती और तकलीफ़ शुमार किया जाता है, इसको अच्छी तरह याद रख ख़ुदा तुझको तौफ़ीक़ दे।

फिर अगर तुम यह पूछो कि शुक्रगुज़ार अफ़ज़ल है या सब्र करने वाला? तो मालूम होना चाहिए कि शुक्र करने वाला अफ़ज़ल है और उसकी दलील अल्लाह तआला का क़ौल है फ़रमाया:-

وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾

(और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।)

(सूरह सबा, आयत-13)

तो अल्लाह तआला ने उनको ख़ासों में से ख़ास बनाया और नूह عليه السلام की तारीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴿٣﴾

(बेशक वह बड़ा शुक्रगुज़ार बन्दा था।)

(सूरह बनी इस्राईल, आयत- 3)

और इब्राहीम عليه السلام के मुताल्लिक़ फ़रमाया:-

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ

(उसके एहसानो पर शुक्र करने वाला।)

(सूरह नहल, आयत- 121)

और इसलिए भी कि यह ईनाम और आफ़ियत के मक़ाम पर होता है और इसीलिए कहा गया है कि अगर मुझ पर एहसान किया जाए और मैं शुक्र करूँ तो यह उससे मुझे ज़्यादा पसन्द है कि मैं सख़्ती में मुब्तला किया जाऊँ और सब्र करूँ।

और यह भी कहा गया है कि सब्र करने वाला ज़्यादा अफ़ज़ल है क्योंकि उसकी मशक़्क़त बड़ी है इसलिए उसका सवाब भी बड़ा और दर्जात भी बुलन्द होंगे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: -

إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ الْعَبْدُ ۖ

(बेशक हमने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा।)

(सूरह स़ाद, आयत- 44)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

(साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बेगिनती।)

(सूरह ज़ुमर, आयत- 10)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾

(और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं।)

(सूरह आले इमरान, आयत 146)

मैं कहता हूँ कि हक़ीक़त में शुक्र करने वाला साबिर के सिवा कोई नहीं और सब्र करने वाला हक़ीक़त में शुक्रगुज़ार के सिवा कोई नहीं क्योंकि शुक्रगुज़ार इम्तिहान में है। उसमें सख़्ती के सिवा चारा नहीं जिस पर वह लाज़िमी तौर पर सब्र करेगा तो बेसब्री न करेगा क्योंकि शुक्र एहसान करने वाले की ऐसी ताज़ीम है जो उसकी नाफ़रमानी से रोक दे और बेसब्री भी नाफ़रमानी है।

और सब्र करने वाला भी नेअमत से ख़ाली नहीं है जैसा कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि पहले मअना के मुताबिक़ सख़्ती भी हक़ीक़त में नेअमत है तो जब उस पर सब्र करेगा तो हक़ीक़त में यह भी शुक्र होगा क्योंकि सब्र यह है कि अल्लाह की ताज़ीम के लिए अपने नफ़्स को बेसब्री से रोके और शुक्र यही है क्योंकि वह ऐसी ताज़ीम है जो नाफ़रमानी से बचाए और इसलिए भी कि शुक्रगुज़ार अपने नफ़्स को नाशुक्री से रोकता है नाफ़रमानी से सब्र करता है और अपने नफ़्स को शुक्र पर आमादा करता है तो हक़ीक़त में यह भी साबिर है और साबिर ने अल्लाह तआला की ताज़ीम की जिसने उसे बेसब्री से रोक दिया और सब्र पर आमादा किया तो उसने अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया तो हक़ीक़त में यही शाकिर है और इसलिए भी कि नफ़्स को नाशुक्री से रोकना जब कि नफ़्स इसका इरादा रखता हो, एक सख़्ती है जिस पर शुक्रगुज़ार सब्र करता है और साबिर की तौफ़ीक़ और इस्मत एक नेअमत है जिस पर साबिर शुक्रगुज़ार है, तो इन दोनों में से कोई एक भी दूसरे से अलग नहीं। और इसलिए भी कि वह बसीरत जो इन दोनों पर इन्सान को आमादा करती है वह एक ही है और वह हमारे बाज़ उल्मा के क़ौल के मुताबिक़ इस्तेक़ामत की वसीअत है। इन्ही वजहों की बिना पर हमने कहा है कि यह एक दूसरे से अलग नहीं हैं। इस जुमले को ख़ूब ज़हन नशीन कर और तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है।

फ़स्ल

ऐ मर्दे ख़ुदा! तुझ पर लाज़िम है कि इस आसमान सी घाटी को उबूर करने के लिए अपनी हिम्मत ख़र्च कर दे यह ऐसी घाटी है कि जिसकी मशक़्क़त बहुत थोड़ी है मुआवज़ा बहुत ज़्यादा है और जिसका वुजूद निहायत अज़ीज़ और क़द्र व मन्ज़िलत निहायत अ़ज़ीम है। दो चीजों पर ग़ौर कर पहली यह है कि नेअमत उसको दी जाती है जो उसकी क़ीमत को जानता हो, और उसकी क़द्र को सिर्फ़ शुक्रगुज़ार ही जानता है और हमारे इस क़ौल की दलील अल्लाह तआला का क़ौल है जो कि ख़ुदावन्द तआला ने कुफ़्फ़ार से हिकायत करते और उनका जवाब देते हुए फ़रमाया:-

أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّن بَيْنِنَا ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٣﴾

(क्या यही वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने हममें से एहसान किया क्या अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों से वाक़िफ़ नहीं।)

(सूरह अनआम, आयत 53)

तो इन जाहिल लोगों ने यह ख़्याल कर रखा था कि अ़ज़ीम नेअमत और बड़ा एहसान उसी पर किया जाता है जो माली लिहाज़ से ज़्यादा और हसब व नसब के लिहाज़ से अशरफ़ हो। तो कहने लगे कि इन फ़क़ीरों का एक मक़ाम है। कि उनके क़ौल के मुताबिक़ ग़ुलाम और आज़ाद थे कि उनको यह नेअमते अ़ज़ीमा दी जाए और हमें उससे महरूम रखा जाए, तो उन्होंने तकब्बुर की राह और मज़ाक़ के तौर पर कहा कि क्या यही वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने हममें से एहसान किया है। तो उन पर अल्लाह तआला ने इस रौशन नुकते से जवाब दिया और फ़रमाया:-

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٣﴾

(क्या अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों को नहीं जानता।)

(सूरह अनआम, आयत- 53)

जिस कलाम का मुद्दआ यह है कि आक़ा करीम उसी को नेअमत देता है जो उसकी क़द्र को पहचानता हो और उसकी क़द्र वही पहचानता है जो उस पर अपने नफ़्स और दिल से मुतवज्जेह हो। और दूसरी चीज़ों को छोड़

कर उसको पसन्द कर ले और उसके हासिल करने में जो मुश्किलात बर्दाश्त करना पड़ें उनकी परवाह न करे फिर उसका शुक्र अदा करने के लिए हमेशा नेअमत देने वाले के दरवाज़े पर खड़ा रहे। और हमारे अज़ली इल्म में यह पहले से मौजूद था कि यह कमज़ोर लोग इस नेअमत की क़द्र को जानेंगे और उसके शुक्रिया के लिए खड़े होंगे। तो तुम्हारी निसबत यह उस नेअमत के ज़्यादा हक़दार थे और तुम्हारी दौलत, दुनियावी इज़्ज़त व शोहरत और ख़ानदान की अल्लाह को कोई परवाह नहीं। तुम लोग तमाम तर नेअमते सिर्फ़ दुनिया और उसके सामान और ख़ानदान की बुलन्दी को समझते हो, नाकि दीन, इल्म, ह़क़ व मारिफ़त को। यही वजह है कि तुम लोग उसी की ताज़ीम करते हो और उसी पर फ़ख़्र करते हो क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि तुम उस दीन और इल्म और हक़ को अगर क़बूल करते हो तो उस पर एहसान जताते हो जो यह चीज़ें तुम्हारे पास लेकर आया है और यह इसलिए है कि तुम इन चीज़ों को हक़ीर समझते हो और उनकी बहुत थोड़ी परवाह करते हो और यह कमज़ोर लोग उस पर अपनी जानें क़ुर्बान करते हैं। और उसकी आबयारी पर अपना ख़ून देते हैं और जो कुछ उनके हाथों से इस सिलसिले में निकल जाता है उसकी परवाह नहीं करते और न उनकी परवाह करते हैं जो उनसे दुश्मनी रखते हैं। और यह इसलिए है कि तुम्हें मालूम हो जाए कि यही वो लोग हैं जिन्होंने उसकी क़द्र को पहचाना जिनके दिलों में इसकी तालीम पुख़्ता है और उसके सिवा हर चीज़ का ज़ाय हो जाना उन पर निहायत आसान है और उसमें हर सख़्ती को बर्दाश्त करना उनको पसन्द है तो यह लोग अपनी तमाम उम्र को उसके शुक्रिया में ख़त्म करते है यही वजह है कि वो इस नेअमते अज़ीमा और एहसाने जलीला के अहल क़रार पाए और हमारे पिछले इल्म की वजह से हमने उनको ख़ास कर दिया और तुम्हें इससे महरूम कर दिया।

फिर मैं कहता हूँ लोगों में से हर दीन के मानने वालों का यही हाल है कि जिनको अल्लाह तआला ने दीनी नेअमतों में से किसी नेअमत के साथ ख़ास किया है ख़्वाह वह इल्मी हो या अमली, जब तुम हक़ीक़त मे ग़ौर करोगे तो उन लोगों को इसकी क़द्र का सबसे ज़्यादा जानने वाला और उसकी ताज़ीम में सबसे ज़्यादा सख़्त और उसके हासिल करने में सबसे

ज़्यादा कोशिश करने वाला और उसकी ताज़ीम में सबसे बड़ा और उसके शुक्रिए में सबसे ज़्यादा मज़बूत पाओगे।

और बाज़ लोगों को अल्लाह तआला ने इससे महरूम किया है उनको अपनी तक़दीर के मुताबिक़ इसी बेपरवाही और बेअदबी की वजह से महरूम किया है फिर अगर इल्म और इबादत की ताज़ीम आम लोगों और बाज़ारी लोगों के दिलों में भी वैसी ही होती जैसी उल्मा और इबादतगुज़ारों के दिल में है तो वो कभी बाज़ारों को इख़्तियार न करते और उसको छोड़ देना उन पर आसान हो जाता, क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि कोई फ़क़ीह (इल्मे फ़िक़्ह का माहिर) जब किसी ऐसे मसअले को दरयाफ़्त कर लेता है जिसमें पहले पेचीदापन हो तो उसका दिल कितना ख़ुश हो जाता है उसकी ख़ुशी कितनी बड़ी होती है। और उसके दिल में उसका मक़ाम कितना बुज़ुर्ग होता है। यहाँ तक कि अगर उसको हज़ार दीनार मिल जाता तो उसे इतनी ख़ुशी न होती। और कभी दीन के मामले में कोई मसअला उसको परेशान रखता है तो वह उसमें साल भर तक बल्कि दस साल बल्कि बीस साल तक भी ग़ौर व फ़िक्र करता रहता है। और फिर भी वह उससे उकता नहीं जाता यहाँ तक कि कभी अल्लाह तआला उसको यह मसअला समझा देता है तो फिर उसको अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान और सबसे बड़ी नेअमत समझता है। और उसकी वजह से अपने आपको तमाम दौलतमन्दों से ज़्यादा दौलतमन्द और हर शरीफ़ से ज़्यादा शरीफ़ समझता है बल्कि कभी उस मसअले को किसी बाज़ारी या किसी सुस्त तालिबे इल्म के सामने बयान कर देता है यह समझते हुए कि वह भी इल्म की मुहब्बत और रग़बत में उसी जैसा है, फिर वह उसकी तरफ़ कान भी नहीं रखता और कभी अगर इस पर कलाम लम्बा हो जाए तो उकता जाता है या सो जाता है। अगर उसके लिए यह ज़ाहिर हो जाए तो उसे कोई मामला नहीं समझता तो यही मामला अल्लाह तआला की तरफ़ तौबा करने वाले का है कि वह रियाज़त और नफ़्स को शहवतों और लज़्ज़तों से महफ़ूज़ रखने के लिए कोशिश करता है और अपने आज़ा को हरकात व सकनात (यानि आदतों और तौर तरीक़ों) में किस तरह पाबन्द रखता है। कि हो सकता है कि शायद अल्लाह तआला पूरी तहारत और अज़ाब के साथ दो रकअत की तौफ़ीक़ दे दे और अल्लाह तआला की जनाब में कितना

गिड़गिड़ाता है। कि अल्लाह तआला उसको सफ़ाई व हलावत के साथ एक घड़ी की मुनाजात नसीब कर दे अगर वह महीना भर में बल्कि साल भर में बल्कि अपनी सारी ज़िन्दगी में एक मरतबा भी इस पर कामयाब हो जाए तो उसको बहुत बड़ा एहसान और सबसे अ़ज़ीम नेअमत समझता है। और कितना ख़ुश होता है और कितना अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करता है। और उन मशक़्क़तों और तकलीफ़ों की कोई परवाह नहीं करता जो उसने रातों को जाग कर उठाई हैं। और अपनी लज़्ज़तों को छोड़ा है।

फिर तू उन लोगों को देखता है जो यह ख़्याल करते हैं कि वो इबादात की रग़बत रखते हैं अगर इसी तरह की ख़ालिस इबादत मसलन उनके रात के खाने का एक लुक़्मा भी नुक़सान करने के बाद हासिल हो, या किसी ऐसी बात के छोड़ने के बाद जो उनको महबूब हो या उनकी आँखों से एक लम्हे की नींद रोकने के बाद हासिल हो तो उनके नफ़्स उन पर आमादा नहीं हुए और न उनके दिल ख़ुश हुए हैं और अगर इत्तेफ़ाक़ से उनको ख़ालिस इबादत हासिल हो भी जाए तो वह उसे कोई बड़ा मामला नहीं समझते। और न वह उसका कोई बड़ा शुक्रिया अदा करते हैं। बल्कि उनकी ख़ुशी उस वक़्त होती है और उनकी ज़बान से ह़म्द का कलिमा उस वक़्त निकलता है जब उनको कोई दरहम मिल जाए या कोई रोटी का टुकड़ा मिल जाए या अच्छा सालन मिल जाए या काफ़ी मुद्दत बदन की सलामती के लिए नींद आ जाए तो उस वक़्त कहते हैं अल्ह़म्दु लिल्लाह यह अल्लाह का एहसान है। फिर यह ग़ाफ़िल आजिज़ लोग उन नेकबख़्त कोशिश और इज्तेहाद करने वालों के बराबर कैसे हो सकते हैं। यही वजह है कि यह मिसकीन लोग इस भलाई से महरूम हैं और ख़ुदा की तौफ़ीक़ दिए गए लोग इसी पर कामयाब हैं। और इसी तरह हिदायत के मामले को अहकमुल ह़ाकिमीन ने तक़्सीम कर दिया है और वह सबसे ज़्यादा जानने वाला है, फिर यह तफ़्सील है अल्लाह तआला के इस क़ौल की:-

(क्या अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों को नहीं जानता।)

(सूरह अनआम, आयत- 53)

फिर इसको समझ और इसके हक़ की रिआयत कर और जान ले कि जिस भलाई की तू ख़्वाहिश करता है उससे तू सिर्फ़ इसी वजह से महरूम है कि तू उसकी क़द्र को नहीं जानता। सो तू अपनी हिम्मत ख़र्च कर कि अल्लाह की नेअमतों और पूरी ताज़ीम की क़द्र जाने फिर तू उसका अहल हो जाएगा और उसकी अता तुझे नसीब होगी फिर वह तुझ पर उसकी बक़ा के साथ भी एहसान करेगा जैसा कि उसने तुझ पर शुरू में एहसान किया जैसा कि हम इसका दूसरे अस्ल में बयान करेंगे बेशक वही है शफ़क़त करने वाला मेहरबान।

दूसरा अस्ल यह है कि जो आदमी किसी चीज़ की क़द्र न जाने वह नेअमत उससे छीन ली जाती है। और जो क़द्र नहीं जानता वही नाशुक्रा है जिसने उस नेअमत की क़द्र न की और उसका शुक्र अदा न किया और इसकी दलील अल्लाह तआला का क़ौल है:-

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِيٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ

الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا

(और ऐ महबूब उन्हें उसका अहवाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं तो वह उनसे साफ़ निकल गया तो शैतान उसके पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत- 175,176)

कलाम का मक़सद यह है कि हमने उस बन्दे पर बड़ी-बड़ी नेअमतों और अज़ीम एहसानात से दीन के मुताल्लिक़ जो हमने उसको बसीरत दी थी इनाम किया और बड़ा रुतबा और रफ़ीअ मन्ज़िलत अपने दरवाज़े पर उसको अता की ताकि वह हमारे पास बुलन्द मरतबा अज़ीमुल क़द्र बड़े जाह व जलाल वाला हो जाए लेकिन वह हमारी नेअमत की क़द्र से जाहिल रहा और हक़ीर और कमीनी दुनिया की तरफ़ माइल हो गया। और अपनी कमीनी और रद्दी ख़्वाहिशाते नफ़्स को इख़्तियार कर लिया और यह न जाना कि सारी दुनिया अल्लाह तआला के नज़दीक दीनी नेअमतों में से एक नेअमत के बराबर भी नहीं है। और यह मच्छर के एक पर की भी हैसियत भी नहीं

रखती। तो उस आदमी की मिसाल उस कुत्ते की सी है जो इज़्ज़त और राहत और तौहीन और मशक़्क़त में तमीज़ नहीं कर सकता। और ना बुलंदी और इज़्ज़त को हिक़ारत और कमीनगी से अलग देखता है तो यह दोनों हालतों में हाँपता है। उसके नज़दीक तमाम बुज़ुर्गी रोटी के एक टुकड़े में है जिसे वह खा ले या दस्तरख़्वान की एक हड्डी में जिसे उसकी तरफ़ फेंक दिया जाए बराबर है कि तू उसे अपने साथ तख़्त पर बिठाये या अपने सामने गंदगी और मिट्टी में खड़ा कर दे सो उसकी हिम्मत और करामत और नेअमत सब कुछ इसी में है। तो इस बुरे इन्सान ने जब हमारी नेअमत की क़द्र को न पहचाना और जो बुज़ुर्गी हमने उसको दी थी उस का हक़ न पहचाना तो उसकी बसीरत कुंद हो गई और हमें छोड़ कर दूसरों की तरफ़ तवज्जोह करने के सबब से मक़ामें क़ुर्ब में उसका अदब बदतर सूरत इख़्तियार कर गया और हमारी नेअमतों के तज़किरे को छोड़ कर हक़ीर दुनिया ख़सीस लज़्ज़त में मशग़ूल हो गया, तो हमने उसकी तरफ़ क़हर की नज़र से देखा और उसे इन्साफ़ के मैदान में खड़ा कर दिया। और उसके मुताल्लिक़ मज़म्मत का फ़ैसला नाफ़िज़ किया। फिर उससे अपनी तमाम इनामात की निशानियाँ और करामतें छीन लीं और उसके दिल से अपनी मारिफ़त खींच ली फिर वह नंगा होकर उन तमाम नेअमतों से बाहर निकल गया, जो हमने उसको अपने फ़ज़्ल से दी थीं। फिर वह एक हाँका हुआ कुत्ता और शैतान मरदूद हो गया हम अल्लाह की नाराज़गी और उसके दर्दनाक अज़ाब से उसी की पनाह चाहते हैं वह हम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है।

फिर एक बादशाह की मिसाल पर क़नाअत कर कि वह अपने किसी बन्दे की इज़्ज़त करे और उसे ख़ास अपने कपड़े पहनाये और उसे अपने क़रीब करे और अपने तमाम ख़ादिमों, दरबानों पर उसको सरदार बना दे और उसे अपने दरवाज़े की मुलाज़मत का हुक्म दे फिर हुक्म दे कि उसके लिए किसी दूसरी जगह में महल तामीर किए जायें और उसके लिए बुलन्द तख़्त बिछाये जायें, उसके लिए तरह तरह के खाने चुने जायें, आरास्ता लौंडियाँ उसको मुहय्या की जायें, ग़ुलाम उसके सामने हाथ बाँधे खड़े हों यहाँ तक कि जब वह इस मुलाज़मत से वापस जाये तो उस जगह एक मख़दूम बादशाह की हैसियत से बिठाया जाए और उसकी ख़िदमत की हालत और अपने

मुल्क और विलायत की हालत में एक ही साअत का फ़ासला हो या उससे भी कम फिर अगर यह बन्दा बादशाह के दरवाज़े पर जानवरों की निगरानी करते हुए किसी नौकर को रोटी का टुकड़ा खाते देखे या किसी कुत्ते को हड्डी चबाते हुए तो बादशाह की ख़िदमत को छोड़ कर उनको देखने में मशग़ूल हो जाये और अपनी तवज्जोह उस तरफ़ फेर दे और शाही ख़िलअतों और करामतों की तरफ़ तवज्जोह न करे और उस मुलाज़िम की तरफ दौड़े और अपना हाथ फैला कर उससे रोटी का टुकड़ा माँगने लगे या किसी कुत्ते को हड्डी चबाते देख कर उसके सामने रुक जाये और उन पर रश्क करे और उनकी इस हालत को बड़ा अच्छा जाने तो क्या बादशाह जब उस आदमी को इस हालत में देखेगा तो यह न समझेगा कि यह बेवक़ूफ़ और कमीना हिम्मत आदमी है? उसने हमारे इनामात का हक़ न पहचाना और हमने उसको ख़िलअत अता करके और अपनी बारगाह में हाज़िर करके और अपनी इनायत उस पर तमाम करके इसकी जो इज़्ज़त अफ़ज़ाई की थी उसने उसकी क़द्र को नहीं देखा, और हमने उसके लिए दौलत के ज़ख़ीरे और कई क़िस्म की नेअमतें मुहय्या की थीं। यह कमीना हिम्मत और बहुत बड़ा जाहिल और बदतमीज़ इन्सान है। इससे ख़िलअतें (इनामात) छीन लो और इसको हमारे दरवाज़े से धुत्कार दो।

और यही हाल आलिम का है जब वह दुनिया की तरफ़ झुक जाए और यही हाल आबिद का है जब वह ख़्वाहिश की पैरवी करने लगे बाद इसके कि अल्लाह तआला ने उसको अपनी इबादात और अपनी नेअमतों की पहचान और अपनी शरीअत और उसके अहकाम से नवाज़ा था। फिर उसने इनकी क़द्र को न जाना तो वह अल्लाह के नज़दीक सबसे हक़ीर और सबसे ज़लील है कि उसमें रग़बत करता है और उसकी हिर्स रखता है। और उसके दिल में यह सबसे बड़ी और सबसे महबूब चीज़ है उन तमाम चीज़ों से जो उसको इल्म और इबादात और हिकमत और हक़ाइक़ से हमने इनायत कीं थीं। और यही हाल है उस आदमी का कि जिसको अल्लाह तआला ने तरह तरह की तौफ़ीक़ और इज़्ज़त से ख़ास कर लिया और अपनी बन्दगी और इबादत के अनवार से उसको ज़ीनत बख़्शी और अक्सर औक़ात में रहमत की नज़र से उसको देखा और उसकी वजह से फ़िरिश्तों पर फ़ख़्र किया और उसको अपने

दरवाज़े की सरदारी और इज़्ज़त और उसे शफ़ाअत के मुक़ाम पर खड़ा किया। और उसको इज़्ज़त की मन्ज़िल पर उतारा यहाँ तक कि जब वह इस हैसियत का हो गया कि अगर उसको पुकारे तो वह क़बूल करे और लब्बैक कहे और अगर उससे माँगे तो उसको दे और ग़नी कर दे और अगर दुनिया भर की शफ़ाअत करे तो उनके मुताल्लिक़ उनकी शफ़ाअत को क़बूल करे और उसे राज़ी करे अगर ख़ुदा को क़सम दे तो वह उसकी क़सम को पूरा करे और अगर उसके दिल में किसी चीज़ का ख़्याल आए तो उसको सवाल करने से पहले अता करे फिर जिस आदमी की यह हालत हो और फिर भी वह उन नेअमतों की क़द्र न पहचाने और इस मन्ज़िल की क़द्र को न देखे और बेहया नफ़्स की रद्दी ख़्वाहिशात की तरफ़ चला जाए या कमीनी दुनिया के हासिल करने में लग जाए जिसको कोई बक़ा नहीं और उन करामतों और ख़िलअतों और हदियों और एहसानों और अताओं को न देखे फिर उन चीज़ों का ख़्याल न रखे जिनका उसने वायदा किया है जो आख़िरत में उसके लिए तैयार हैं अज़ीम सवाब और हमेशा की रहने वाली पूरी नेअमतें तो यह कितना हक़ीर आदमी है। और कितनी बदतर हालत में बन्दा है और अगर वह मर जाए तो कितने ख़तरनाक मुक़ाम पर है। और उसका यह काम अगर वह समझे तो कितनी बड़ी बेहयाई है। हम अल्लाह तआला रहीम और एहसान फ़रमाने वाले से सवाल करते हैं कि वह अपने अ़ज़ीम फ़ज़्ल व वसीअ रहमत से हमारे हालात को दुरुस्त कर दे, बेशक वह सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

तो ऐ मर्द! तुझ पर लाज़िम है कि तू अपनी हिम्मत ख़र्च करे ताकि तू अपने ऊपर अल्लाह तआला के एहसानात की क़द्र को पहचाने और जब तुझ पर दीन की नेअमत का एहसान फ़रमाये तो दुनिया और उसके सामान की तरफ़ तवज्जोह करने से परहेज़ कर क्योंकि यह तुझसे एक तरह की सुस्ती होगी कि अल्लाह तआला ने तुझे दीन की नेअमतों का वाली बनाया और फिर तूने क़द्र न की क्या तूने अल्लाह तआला के क़ौल को नहीं सुना जो सय्यदुल मुरसलीन को मुख़ातिब करके फ़रमायाः-

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

(और बेशक हमने तुमको सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं और अज़मत वाला क़ुरआन अपनी आँख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हमने उनके कुछ जोड़ों को बरतने को दी।)

(सूरह ह़जर, आयत- 87, 88)

इसका मतलब यह है कि जिसे क़ुरआन अ़ज़ीम दिया जाए वह उसका हक़ है कि हक़ीर दुनिया की तरफ़ पसन्दीदगी और रज़ामन्दी की निगाह से कभी न देखे और यह कि क़ुरआने अज़ीम से ही उसको रग़बत हो। इस पर अल्लाह तआला का हमेशा शुक्र अदा करे कि यह वह बुज़ुर्गी है जिसकी ख़्वाहिश अल्लाह तआला के दोस्त इब्राहीमؑ ने अपने बाप के मुताल्लिक़ की कि उस पर एहसान करे लेकिन उसने उसको क़बूल न किया और अल्लाह तआला के ह़बीब मुह़म्मदﷺ ने ख़्वाहिश की कि अपने चचा अबू तालिब पर उसका एहसान करे उसने भी क़बूल न किया।

और बाक़ी रहा दुनिया का सामान तो यह वह चीज़ है जो अल्लाह तआला हर काफ़िर, फ़िरऔन, मुलहिद, जिन्दीक़, जाहिल और फ़ासिक़ को अता फ़रमाता है जो कि अल्लाह की निगाह में सबसे ज़्यादा ज़लील हैं यहाँ तक कि वह उसमें डूब जाते हैं। और इस सामान से हर एक नबीؑ बरगुज़ीदा, सिद्दीक़, आलिम और आबिद को महरूम कर देता है जो कि उसकी निगाह में सबसे बेहतरीन मख़लूक़ हैं यहाँ तक कि उनको रोटी का टुकड़ा और कपड़े का चिथड़ा भी बाज़ दफ़ा नसीब नहीं होता, और उन पर एहसान जताता है कि उनको इस गन्दगी से आलूदा नहीं किया, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मूसा और हारून अ़लैहिमुस्सलाम से फ़रमाया अगर मैं चाहूँ तो तुमको ज़ीनत दे दूँ ताकि फ़िरऔन को मालूम हो जाए जब कि उसको मुलाहिज़ा करे यह कि उसकी क़ुदरत उससे आजिज़ है तो मैं कर सकता हूँ लेकिन मैं तुम दोनों से दुनिया को लपेट लूँगा और उसको तुम्हारे नज़दीक न आने दूँगा। और मैं अपने दोस्तों से ऐसा ही करता हूँ, मैं उनको

दुनिया की नेअमतों से इस तरह हाँक देता हूँ जिस तरह शफ़ीक़ चरवाहा अपने ऊँटों को ख़तरनाक जगहों से रोक देता है और दुनिया के ऐश और इतमिनान को उनसे अलग रखता हूँ और यह इसलिए नहीं कि वह मेरी निगाह में ज़लील हैं बल्कि इसलिए कि वह मेरी करामत (नवाज़िशात) से पूरा हिस्सा हासिल कर सकें और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ

لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ

(और अगर यह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जायें तो हम ज़रूर रहमान के मुन्किरों के लिए चाँदी की छतें बनाते।)

(सूरह ज़ख़रफ़, आयत-33)

फिर दोनों उमूर में ग़ौर कर अगर तुझे बसीरत हासिल है और कहे तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है कि जिसने हम पर अपने औलिया व अस्फ़िया की नेअमतों से एहसान फ़रमाया और अपने दुश्मनों के फ़ितने को हमसे दूर कर दिया ताकि हम ह़म्दे अकबर और पूरे शुक्र और बड़े एहसान नेअमते उज़्मा के साथ मख़सूस हो जायें और हिस्सा हासिल करें जो कि इस्लाम है। फिर यह नेअमत इस क़ाबिल है कि तू उसकी शुक्रगुज़ारी से दिन रात में किसी वक़्त भी ग़फ़लत न करे अगर तू उसकी क़द्र को पहचानने से आजिज़ है तो जान ले कि अगर तू दुनिया की शुरूआत में पैदा कर लिया जाता और इस्लाम की नेअमत के शुक्रिया अदा करने में अव्वल वक़्त से लेकर हमेशा तक मसरूफ़ रहता तो तू उसका हक़ अदा न कर सकता बल्कि इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम के बाज़ हुकूक़ भी अदा न हुए।

मैं कहता हूँ जानना चाहिए कि यह मुक़ाम मेरी जानकारी के मुताबिक़ जो मैं इस नेअमत की क़द्र जानता हूँ इसका मुतहम्मिल नहीं हो सकता, अगर्चे इसके मुताल्लिक़ एक करोड़ वर्क़ भी लिखे जायें तो फिर भी मेरा इल्म इससे ज़्यादा होता, बावजूद इस एतराफ़ के कि जो कुछ मैं जानता हूँ वह न जानने के मुक़ाबिल में तमाम दुनिया के समन्दरों के मुक़ाबले में एक क़तरे की

हैसियत रखता है क्या तूने सय्यदुल मुरसलीनﷺ का ख़िताब करते हुए अल्लाह तआला का क़ौल नहीं सुना:-

مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمٰنُ

(इससे पहले न तुम किताब जानते थे न अहकामे शरा की तफ़्सील।)

(सूरह शूरा, आयत- 52)

'इला अन क़ाला' यहाँ तक कि फ़रमाया:-

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

(और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।)

(सूरह निसा, आयत-113)

और अल्लाह तआला ने एक क़ौम को मुख़ातिब करके फ़रमाया:-

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمٰنِ

(बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की।)

(सूरह हुजरात, आयत-17)

और क्या तूने रसूलुल्लाहﷺ का क़ौल नहीं सुना जबकि आपﷺ ने एक आदमी से सुना कि वह कह रहा था कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं कि उसने इस्लाम की दौलत बख़्शी। तो आपﷺ ने फ़रमाया तूने अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेअमत पर तारीफ़ की।

और जब याक़ूब عليه السلام के पास ख़ुशख़बरी लाने वाला आया तो आपने फ़रमाया कि तूने यूसुफ़(عليه السلام) को किस दीन पर छोड़ा। उसने कहा दीने इस्लाम पर। तो आप(عليه السلام) ने फ़रमाया अब नेअमत पूरी हो गई।

और कहा गया है कि इससे ज़्यादा कोई कलिमा अल्लाह तआला को महबूब नहीं और न इससे ज़्यादा शुक्रगुज़ारी में कोई कलिमा है। कि बन्दा कहे: तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हम पर एहसान फ़रमाया और दीने इस्लाम की रहनुमाई की।

और इससे होशियार रहना कि इस्लाम के शुक्राने में कभी ग़फ़लत न करना और इस्लाम, मारिफ़त, तौफ़ीक़ और इस्मत के जिस हाल पर तू फ़ाइज़ है। इससे धोखा न खा जाना। क्योंकि इसके बावजूद अमन और ग़फ़लत का यह मुक़ाम नहीं है क्योंकि तमाम उमूर का तअल्लुक़ अन्जाम से है।

सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाया करते थे - *" जो आदमी अपने दीन पर मुतमइन हो जाए उससे दीन छीन लिया जाता है।"*

और हमारे शैख़ رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाया करते थे कि- *"जब तू काफ़िरों का हाल और उनका हमेशा आग में रहना सुने तो अपने नफ़्स पर मुतमइन न हो क्योंकि मामला ख़तरनाक है और तू नहीं जानता कि अन्जाम क्या होगा, और तेरे मुताल्लिक़ ग़ैब में क्या फ़ैसला हो चुका है तू अपने औक़ात की सफ़ाई पर मग़रूर न हो कि उनके नीचे निहायत गहरी आफ़तें मौजूद हैं।"*

और बाज़ ने कहा ऐ इस्मत से धोखा खाने वाले गिरोह उसके नीचे तरह तरह की आफ़त है। अल्लाह तआला ने इब्लीस को तरह तरह की इस्मत से मुज़य्यन किया और वह हक़ीक़त में मलऊन था। और 'बलअम' को अपनी विलायत के नूर से मुज़य्यन किया हालांकि वह उसके नज़दीक हक़ीक़त में दुश्मन था।

हज़रत अली رضی اللہ عنہ से मरवी है कि आपने फ़रमाया कि- *"कितने ही लोगों को एहसान करके मोहलत दी जाती है और कितने ही आदमी अच्छे क़ौल से फ़ितने में मुब्तला हैं, और कितने ही आदमी ख़ुदा की पर्दापोशी में मुब्तला हैं।"*

ज़ुन्नून मिस्री رحمۃ اللہ علیہ से पूछा गया कि वह कौन सी ख़तरनाक चीज़ है जिससे बन्दा धोखा खा जाता है, तो कहा लुत्फ़ व करम और करामात से, इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

(जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अज़ाब की तरफ़ ले जायेंगे जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-182)

अहले मारिफ़त ने कहा कि हम उन पर नेअमतें पूरी करते हैं और उनको शुक्र अदा करना भुला देते हैं जैसा कि किसी शायर ने कहा है -

- *जब तुझ पर अच्छे दिन हों तो तू उनको अच्छा समझता है और उसका ख़ौफ़ नहीं रखता जो तक़दीर बुरे दिन ले आती है।*
- *और तेरी रातें सलामती से गुज़रती हैं तो तू उसका धोखा खा जाता है और रातों की सफ़ाई के वक़्त कुदूरतें पैदा हो जाती हैं।*

और जान लेना चाहिए कि जब तू बहुत ज़्यादा क़रीब हो जाए तो तेरा मामला बहुत ज़्यादा ख़ौफ़नाक और मुश्किल है और तेरा काम बहुत ज़्यादा सख़्त और बारीक है और तेरा ख़तरा बहुत बड़ा है कि कोई चीज़ जब इन्तिहाई बुलन्दी पर पहुँच जाती है तो जब वह नीचे गिरती है तो बहुत बुरी तरह से गिरती है, जैसा कि शेर कहा गया है जिसका तर्जुमा पेश है:

- *जब कोई परिन्दा उड़ कर बुलन्द चला जाता है तो जिस तरह से उड़ता है उसी तरह गिरता है।*

तो उस वक़्त मुतमइन होने और शुक्राने से ग़फ़लत बरतने और अपने हाल की हिफ़ाज़त में आजिज़ी और ज़ारी को छोड़ देने का कोई मुक़ाम नहीं।

इब्राहीम इब्ने अदहम رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाया करते थे कि हम कैसे मुतमइन हो सकते थे जब कि इब्राहीम ख़लील علیہ السلام यह अर्ज़ करते हैं:-

وَّاجْنُبْنِیْ وَبَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾

(और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा।)

(सूरह इब्राहीम, आयत-35)

और यूसुफ़ सिद्दीक़ علیہ السلام अर्ज़ करते हैं:-

تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا

(मुझे मुसलमान उठा।)

(सूरह यूसुफ़, आयत-101)

और हज़रत सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ हमेशा कहते रहते या अल्लाह बचा ले बचा ले गोया कि आप कश्ती में हैं जिस पर ग़र्क़ होने का अन्देशा है।

और हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ رحمۃ اللہ علیہ से रिवायत पहुँची है, आपने कहा मैंने हज़रत सुफ़यान सौरी رحمۃ اللہ علیہ को एक रात ग़ौर से देखा वह सारी रात रोते रहे मैंने

पूछा क्या गुनाहों पर रोते हो? तो आपने एक तिनका उठाया और कहा कि गुनाह अल्लाह तआला के नज़दीक इससे भी ज़्यादा हक़ीर है, मैं इससे डरता हूँ कि अल्लाह मुझसे इस्लाम न छीन ले और इससे ख़ुदा की पनाह। और मैंने बाज़ आरफ़ीन से सुना है कि कहते थे कि बाज़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अल्लाह तआला से बलअम और उसके मरदूद होने का मामला पूछा कि वह इन आयात और करामात के बाद कैसे मरदूद हो गया तो अल्लाह ने फ़रमाया जो कुछ मैंने उसको दिया था उस पर सारी ज़िन्दगी भर एक दिन भी शुक्र अदा न किया और अगर एक दफ़ा भी वह मेरा शुक्रिया अदा कर देता तो मैं उससे न छीनता।

फिर ऐ आदमी! होशियार हो और शुक्र के रुक्न की बहुत ज़्यादा हिफ़ाज़त कर और दीनी नेअमतों पर उसकी ह़म्द बयान कर कि सब नेअमतों से बढ़कर इस्लाम और मारिफ़त है। और सबसे छोटी नेअमत तस्बीह कहने की तौफ़ीक़ या बे मक़सद बात करने से परहेज़ है। मुमकिन है कि अल्लाह तआला अपनी नेअमतें तुझ पर पूरी करे और ज़वाल की कड़वाहट में तुझे मुब्तला न करे कि सबसे ज़्यादा तल्ख़ और सबसे ज़्यादा मुश्किल इज़्ज़त के बाद ज़िल्लत और क़ुर्ब के बाद दूरी और विसाल के बाद फ़िराक़ है। और अल्लाह तआला बन्दों पर करीम और मेहरबान है।

फ़स्ल

और क़िस्सा मुख़्तसर कि जब तू अल्लाह तआला के बड़े बड़े एहसानात और बड़ी बड़ी नेअमतों को अपने ऊपर देखे कि जिनको तेरा दिल शुमार भी नहीं कर सकता और तेरा ख़्याल उनका अहाता नहीं कर सकता यहाँ तक कि तूने इन मुश्किल घाटियों को अपने पीछे छोड़ दिया। और उलूम और बसीरतों को पा लिया। और बड़े गुनाहों के बोझ से पाक हो गया। और रुकावटों से आगे निकल गया और दुशवारियों को दूर कर दिया और बुरी चीज़ों से सलामत बच निकला और अल्लाह की रह़मतों पर फ़ाइज़ हो गया। तो कितनी ही शरीफ़ ख़सलतें और बुलन्द रुतबे तुझको हासिल हो गए कि जिनकी शुरूआत बसीरत और पहचान से हुई उनकी इन्तिहा क़ुर्ब और

बुज़ुर्गी पर हुई। फिर तू इसमें अपनी अक़्ल की मिक़दार और तौफ़ीक़ के मुताबिक़ ग़ौर करेगा और अपनी हिम्मत के मुताबिक़ अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करेगा तो तेरी ज़बान उसकी ह़म्द और सना में मशग़ूल हो जाएगी और तेरा दिल उसकी अज़्मत और रौनक़ से भर जाएगा और तू ऐसे मुक़ाम पर पहुँच जाएगा कि वह तेरे और तेरे गुनाहों के दरमियान हाइल हो जाए और तुझे उसकी ख़िदमत (इबादत) पर तेरी हिम्मत के मुताबिक़ आमादा करेगा और उसके इनाम और एहसान का हक़ अदा करने से अपनी ताक़त के मुताबिक़ कोताही का इक़रार करने पर उभारेगा और जब तू उसके शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए या ख़ामोश हो जाए या फिसल जाए तो तू उसकी तरफ़ गिरया व ज़ारी करे और कोशिश करे और वसीला तलाश करे और कहे कि ऐ अल्लाह! ऐ मेरे मालिक! जिस तरह तूने बग़ैर किसी मुस्तहिक़ होने के सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल से एहसान की शुरूआत की थी उसी तरह बग़ैर किसी मुस्तहिक़ होने के अपने फ़ज़्ल से इसी को इन्तिहा तक पहुँचा और उसको उसके औलिया की ज़बान में पुकार कि जिन्होंने उसकी हिदायत का ताज पाया और उसकी मारिफ़त की मिठास चखी फिर भी वह अपने ऊपर हाँक देने और बेइज़्ज़ती की तकलीफ़ और गुमराही और बात की वहशत और माज़ूली और ज़वाल की कड़वाहट से डरते रहे, वह दरवाज़े पर फ़रयाद करते हुए रोते और आजिज़ी करते हुए उसी की तरफ़ हाथ फैलाते रहे, और तन्हाई में चीख़ चीख़ कर दुआयें करते:-

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾

(ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बाद इसके कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।)

(सूरह आले इमरान, आयत-8)

मैं कहता हूँ इसका मतलब यह है और अल्लाह तआला ही बेहतर जाने कि हमने तुझसे नेअमत हासिल की और दूसरी नेअमत के हम

उम्मीदवार हैं कि तू ही जव्वाद और अता करने वाला है फिर जिस तरह तूने हमें इनाम की फ़ज़ीलत शुरूआत में बख़्शी है उसी तरह इत्माम की रहमत इन्तिहा में अता फ़रमा। क्या तूने ग़ौर नहीं किया कि सबसे पहली दुआ जो अल्लाह रब्बुल आलमीन ने अपने मुसलमान बन्दों को सिखाई है जिसको अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ के लिए इन्तिख़ाब फ़रमाया, वह अल्लाह तआला का यह क़ौल है:-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ‏ ﴿۵﴾

(हमें सीधा रास्ता चला।)

(सूरह फ़ातिहा, आयत-5)

यानी हमें हमेशा इस पर साबित क़दम रख इसी तरह हम भी उसकी जनाब में इल्तिजा करते हैं कि मामला बहुत अ़ज़ीम है। कहा गया है कि हुक्मा ने ग़ौर किया तो जहान की तमाम मुसीबतों और मेहनतों को पाँच चीज़ों में पाया

1. *मुसाफ़िरी में बीमारी*
2. *बुढ़ापे में फ़क़ीरी*
3. *जवानी में मौत*
4. *देखने के बाद अन्धा होना*
5. *मारिफ़त के बाद बेबसीरत हो जाना*

और इससे भी बढ़ कर किसी का यह क़ौल है यह शेर है जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *हर चीज़ का कोई न कोई एवज़ (बदल) है, जब उसको छोड़ दिया जाए लेकिन अगर तू ख़ुदा को छोड़ दे उसका कोई एवज़ नहीं।*

  और किसी और ने कहा है

- *जब दुनिया किसी आदमी का दीन ख़राब न करे तो जो कुछ भी उससे ज़ाय हो जाए वह नुक़सान देने वाला नहीं।*

और इसी तरह हर एक नेअमत का मामला है, जो वह तुझको इनाम फ़रमाये और उन घाटियों में से किसी घाटी के क़ता करने में ख़ुदा की ताईद

इसी तरह है ताकि जो उसने तुझे दिया है उसे हमेशा रखे और तुझे तेरी तमन्ना और तेरी ख़्वाहिश से भी ज़्यादा दे फिर जब तू इस मुक़ाम पर पहुँच जाए तो तूने इस ख़रतनाक घाटी को उबूर कर लिया और तूने वो निहायत अच्छे ख़ज़ाने हासिल कर लिए जो कि इस्तिक़ामत और ज़्यादत हैं, फिर मौजूदा नेअमतें जो उसने तुझे अता की हैं तेरे पास हमेशा रहेंगीं तुझे उनके ज़वाल का ख़तरा न होगा और जो नेअमतें उसने तुझे अता नहीं की हैं वह तुझे अता फ़रमाएगा हालांकि तू उनको अच्छी तरह माँग भी नहीं सकता और आरज़ू भी नहीं रखता, फिर तू उनके फ़ौत होने से न डर और इस वक़्त तो तू उन लोगों से हो जाएगा जो कि आरिफ़, आलिम, दीन के आमिल, गुनाहों से तौबा करने वाले पाक नुफ़ूस दुनिया से बेरग़बत और ख़ुदा की इबादत के लिए अलग होने वाले शैतान को मग़लूब करने वाले, दिल और आज़ा से पूरी तरह तक़्वा हासिल करने वाले, उम्मीदों को कम करने वाले, नासेह (नसीहत करने वाले), ख़ाशेअ (अल्लाह से डरने वाले) और तवाज़ो करने वाले, तवक्कुल करने वाले, अपने काम को ख़ुदा के सुपुर्द करने वाले, राज़ी बर रज़ा, सब्र करने वाले, डरने वाले, उम्मीद रखने वाले, मुख़्लिस, ख़ुदा की नेअमतों को याद रखने वाले और अपने मालिक रब्बुल आलमीन की नेअमतों का शुक्र करने वाले हैं। फिर तू इसके बाद उन लोगों में से हो जाएगा जो सीधी राह पर क़ायम रहने वाले मुअज़्ज़िज़ और सिद्दीक़ हैं इस कलाम में ग़ौर कर और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

फिर अगर तू कहे कि अगर मामला इस तरह का है तो इस माबूद की इबादत करने वाले और इस मक़सूद पर पहुँचने वाले बहुत थोड़े लोग होंगे और कौन आदमी ऐसी मशक़्क़तों की ताक़त रखता है और कौन इन शर्तों और सुन्नतों को हासिल कर सकता है तो मालूम होना चाहिए ख़ुदा तआला भी ऐसा ही फ़रमाता है:-

وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾

(और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।)

(सूरह सबा, आयत-13)

और फ़रमाया:-

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾

(मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।)

(सूरह यूसुफ़, आयत-38)

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾

(बेअक़्ल हैं।)

(सूरह अनकबत, आयत- 63)

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾

(नहीं जानते।)

(सूरह सबा, आयत-36)

फिर यह मामला उस आदमी पर निहायत आसान है जिस पर अल्लाह आसान कर दे। बन्दे के ज़िम्मे कोशिश करना है और अल्लाह के ज़िम्मे हिदायत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ

(और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।)

(सूरह अनकबूत, आयत-29)

और जब एक कमज़ोर बन्दा अपने फ़राइज़ को पूरा करने की कोशिश करता है तो रब्बे क़दीर, ग़नी और करीम और रहीम के मुताल्लिक़ तुम क्या ख़्याल करते हो।

फिर अगर तू कहे कि उम्र थोड़ी और यह घाटियाँ बड़ी तवील और सख़्त हैं फिर किस तरह उम्र बाक़ी रहेगी कि यह तमाम शर्तें पूरी हो सकें और यह घाटियाँ तय की जा सकें। तो मुझे अपनी उम्र की क़सम! यह घाटियाँ वाक़ई बड़ी तवील है और उनकी शर्तें भी बड़ी सख़्त हैं लेकिन जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को इन्तिख़ाब कर लेता है तो यह लम्बाई उस पर छोटी हो जाती है और यह सख़्तियाँ उस पर आसान हो जाती हैं यहाँ तक कि बन्दा

इनको पार करने के बाद कहता है कि यह राह कितनी क़रीब है, कितनी मुख़्तसर है, कितनी आसान और नर्म है, और मैं जब इस जंगल में खड़ा था तो मैंने यह शेर कहा था जिसका तर्जुमा पेश है:-

- *सीधे रास्ते का इल्म चाहने वाले के लिए वाज़ेह है और मैं दिलों को देखता हूँ कि वह सीधे रास्ते से अंधे हैं।*
- *और मैंने ताज्जुब किया हलाक होने वाले पर हालांकि उसकी निजात मौजूद थी और मैंने निजात पाने वाले पर भी ताज्जुब किया।*

यहाँ तक कि बाज़ ऐसे लोग हैं जो इन घाटियों को सत्तर साल में तय करते हैं और बाज़ बीस साल में और बाज़ दस साल में और बाज़ वो हैं कि जिनको यह एक साल में हासिल हो जाती हैं और बाज़ उनको एक महीने में तय कर लेते हैं बल्कि एक जुमले में बल्कि एक साअत में यहाँ तक कि बाज़ को ख़ास तौफ़ीक़ और इनायत से एक लहज़ा में हासिल हो जाती है। क्या तू साहिबे कहफ़ का वाक़िया याद नहीं करता कि उनकी मदद किस क़द्र मुख़्तसर थी जब उन्होंने अपने बादशाह दक़ियानूस के चेहरे में तग़य्युर देखा तो कहाः-

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰـهًا

(हमारा रब वह है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी माबूद को न पूजेंगे।)

(सूरह कहफ़, आयत-14)

और उस राह को तय किया तो वह अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करने वाले उसी पर भरोसा रखने वाले और इस राह पर क़ायम रहने वाले बन गए जब कि उन्होंने कहाः-

فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ

(तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा।)

(सूरह कहफ़, आयत-16)

और यह सब कुछ उनको एक घड़ी या एक लम्हे में हासिल हो गया। क्या तुम्हें फ़िरऔन के जादूगरों का वाक़िया याद नहीं कि उनकी मुद्दत एक लम्हा भर थी जब उन्होंने मूसा عليه السلام का मोजिज़ा देखा तो –

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوْسٰی وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

(बोले हम ईमान लाये जहान के रब पर जो रब है मूसा और हारून का।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-121,122)

उन्होंने एक ही पल में इस राह को देखा और उसे तय कर गए और ख़ुदा तआला को पहचानने वालों, अल्लाह तआला की तक़दीर पर राज़ी रहने वालों और उसकी मुसीबतों पर सब्र करने वालों और उसकी नेअमतों का शुक्र करने वालों और उसकी मुलाक़ात का शौक़ रखने वालों में से हो गए और पुकार उठे:-

لَا ضَیْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰی رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۵۰﴾

(कुछ नुक़सान नहीं हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं।)

(सूरह शूअ़रा, आयत-50)

हमसे बयान किया गया है कि इब्राहीम इब्ने अदहम رحمة الله عليه दुनिया में एक बादशाह थे। उन्होंने बादशाही छोड़ दी और इस राह का इरादा किया उनके लिए यह राह इतनी ही साबित हुई जितनी देर में वह बल्ख़ से मरू तक जाते थे। यहाँ तक कि वह उस मुक़ाम तक पहुँचे कि एक आदमी पुल पर से बहुत गहरे पानी में गिरा। इब्राहीम इब्ने अदहम رحمة الله عليه ने इशारा करके कहा ठहर जा। तो वह आदमी हवा ही में मुअल्लक़ ठहर गया और पानी से बच गया।

और राबिया बसरी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहा एक बूढ़ी लौंडी थी उसको बसरे के बाज़ारों में घुमाया जाता और बूढ़ी होने की वजह से उसको कोई न ख़रीदता। एक सौदागर को उस पर रहम आया उसने उसको सौ दरहम से ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। फिर उसने यह रास्ता इख़्तियार कर लिया, और इबादत पर मुतवज्जेह हुई एक साल भी नहीं गुज़रा था कि बसरे के ज़ाहिद, क़ारी और उल्मा लोग उसके मरतबे की बुलन्दी की वजह से उसकी ज़्यारत को आने लगे।

और जिस आदमी को ख़ुदा वन्द तआला की इनायत शामिले हाल न हो और उस पर फ़ज़्ल और हिदायत का मामला न किया जाए तो उसे उसके नफ़्स के सुपर्द कर दिया जाता है फिर बाज़ वक़्त वह एक ही घाटी की किसी वादी में सत्तर साल तक पड़ा रहता है और उसे तय नहीं कर पाता और कितनी दफ़ा चीख़ चीख़ उठता है कि यह राह कितनी अन्धेरी कितनी मुश्किल है और यह मामला कितना तंग और दुशवार है, फिर हालत एक ही लफ़्ज़ की तरफ़ लौटती है और वह है ग़ालिब जानने वाला आदिल और हकीम की तक़दीर।

फिर अगर तू यह सवाल करे कि उसको तौफ़ीक़ ख़ास से क्यूँ नवाज़ा गया, और उसको क्यूँ महरूम रखा गया हालांकि यह दोनों मुश्तरका तौर पर ग़ुलामी की रस्सी में बँधे हुए हैं। तो इस सवाल पर ख़ुदावन्द तआला के जलाल के पर्दों से आवाज़ आती है अदब मल्हूज़ रखो। और रबूबियत के असरार को पहचानो और उबूदियत की हक़ीक़त मालूम करो कि वहः-

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(उससे नहीं पूछा जाता जो वह करे और उन सबसे सवाल होगा।)

(सूरह अम्बिया, आयत-23)

मैं कहता हूँ दुनिया में इस राह की मिसाल आख़िरत में पुलसिरात की घाटियों और मुसाफ़िरों के उसको तय करने की है कि मख़लूक़ के अहवाल वहाँ मुख़्तलिफ़ हैं। उनमें से बाज़ पुलसिरात को इस तरह उबूर करेंगे जैसे चमकने वाली बिजली और बाज़ तेज़ व तुन्द आँधी की तरह और बाज़ तेज़ रफ़्तार घोड़े की मिस्ल और कुछ परिन्दों की तरह, कुछ पैदल चलते हुए कुछ घिसटते हुए यहाँ तक कि वो कोयले की तरह हो जायेंगे और कुछ उसकी आवाज़ें सुनेंगे और कुछ उसके आँकड़ों में गिरफ़्तार हो जायेंगे और उनको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। यही हाल इस राह का दुनिया में अपने मुसाफ़िरों के साथ है। फिर ये दोनों रास्ते हैं एक दुनिया का रास्ता एक आख़िरत का रास्ता। आख़िरत का रास्ता तो नफ़्स का रास्ता है कि वह उसकी हौलनाकियाँ आँखों वाले देखेंगे, और दुनिया का रास्ता दिलों का रास्ता है उसकी हौलनाकियाँ बसीरत और अक़्ल वाले देखते हैं। और

आख़िरत में ठहरने वालों के हालात मुख़्तलिफ़ होंगे क्योंकि दुनिया में भी उनके हालात मुख़्तलिफ़ होंगे फिर इस पर पूरी तवज्जोह कर और तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है।

फ़स्ल

फिर जानना चाहिए कि जो कुछ इस बाब में साबित है वह यह है कि यह रास्ता लम्बा और छोटा होने में उन मुसाफ़तों (दूरियों) की तरह नहीं है, जिनको आदमी क़दमों से तय करते हैं, फिर नफ़्स की क़ुव्वत और उसकी कमज़ोरी के मुताबिक़ उसको तय करते हैं बल्कि यह रास्ता रूहानी रास्ता है जिसे दिल तय करते हैं और फ़िक्र (सोच) से तय करते हैं, अपने अक़ाइद और बसीरत के मुताबिक़ तय करते हैं। और उसका अस्ल एक आसमानी नूर और ख़ुदावन्दी निगाह है जो किसी बन्दे के दिल पर पड़े फिर वह उसके साथ दोनों जहानों के मामले पर हक़ीक़त के साथ ग़ौर करता है। फिर यह नूर वह है कि बन्दा उसको सौ साल तक तलाश करता रहता है और उसे नहीं पाता और न उसका कोई निशान मिलता है। और यह बन्दे की तलब और कोशिश में कोताही और उस राह की नादानी की वजह से होता है। और कोई और उसको पचास साल के बाद पा लेता है। और कोई उसको दस साल में, कोई एक दिन में कोई रब्बुल इज़्ज़त की इनायत से एक पल में पा लेता है और वही हिदायत का वाली है लेकिन बन्दे को कोशिश का हुक्म दिया गया है। और हुक्म की तामील उस पर लाज़िम है। और अम्र मफ़हूम है। और परवरदिगार हाकिम आदिल की तक़दीर के मुताबिक़ है। वह जो चाहता करता है। और जो चाहता है उसका हुक्म देता है।

फिर अगर तू यह सवाल करे कि यह ख़तरा कितना बड़ा है और यह मामला कितना सख़्त है और बन्दा कमज़ोर कितना मोहताज है फिर यह सारा अमल और कोशिश और इन शर्तों का हासिल करना किस लिए है।

तो मैं कहूँगा मुझे अपनी उम्र की क़सम! तू अपने इस क़ौल में बिल्कुल सच्चा है कि मामला बड़ा सख़्त है और ख़तरा बहुत अज़ीम है

और इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:-

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۝۴

(बेशक हमने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया।)

(सूरह कबद, आयत-4)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝۷۲

(बेशक हमने अमानत पेश फ़रमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए और आदमी ने उठा ली बेशक वह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है।)

(सूरह अहज़ाब, आयत-76)

और इसलिए सय्यदुल मुरसलीनﷺ ने फ़रमाया कि- "***अगर तुम वह कुछ जानो जो मैं जानता हूँ तो तुम ज़्यादा रो और थोड़ा हँसो।***"

(मुसनद इमाम अह़मद)

और वह जो बयान किया जाता है कि एक आवाज़ देने वाला आसमान से आवाज़ देता है कि काश! मख़लूक़ पैदा न होती। और अगर पैदा होनी थी तो अपनी पैदाइश के मक़सद को समझती और जब मक़सद को समझ लिया तो काश! उसके मुताबिक़ अमल करती और सल्फ़ सालेह़ीन भी इसी तरह कहा करते थे।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ ने फ़रमाया कि- "*मैं पसन्द करता हूँ कि मैं कोई घास होता कि जानवर मुझे खा जाते*।" और ऐसा अज़ाब कि ख़ौफ़ से फ़रमाते।

और उमर फ़ारूक़े आज़म ؓ ने एक आदमी को सुना वह तिलावत कर रहा था:-

هَلۡ اَتٰى عَلَى الۡاِنۡسَانِ حِيۡنٌ مِّنَ الدَّهۡرِ لَمۡ يَكُنۡ شَيۡـًٔا مَّذۡكُوۡرًا ﴿۱﴾

(बेशक आदमी पर एक वक़्त वह गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था।)

(सूरह दहर, आयत-1)

तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया कि- *"काश! मामला वहीं ख़त्म हो जाता।"*

और अबू उबैदा इब्ने जर्राह ﷺ ने फ़रमाया कि- *"मैं पसन्द करता हूँ कि मैं अपने घर वालों का मेंढा होता। मेरा गोश्त लोगों में तक़्सीम हो जाता और मेरा शोरबा लोग पी जाते और मैं क़ियामत को दोबारा पैदा न होता।"*

और वहब इब्ने मुनब्बह ﷺ ने फ़रमाया कि- *"आदम का बेटा अहमक़ पैदा हुआ है, अगर यह अहमक़ न होता तो दुनिया में उसकी ज़िन्दगी कभी ख़ुशगवार न हो सकती।"*

और फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ ﷺ ने फ़रमाया कि- *"मैं किसी मुक़र्रब फ़िरश्ते नबी मुरसल और बन्दा-ए-सालेह पर रश्क नहीं करता, कि यह हज़रात क़ियामत और उसकी हौलनाकियाँ नहीं देखेंगे मैं तो सिर्फ़ उन पर रश्क करता हूँ जो पैदा नहीं हुए।"*

हज़रत अता सुलमी ﷺ ने फ़रमाया कि- *"अगर आग जला दी जाए और कहा जाए कि जो आदमी अपने आपको इसमें डाल देगा वह हमेशा हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा तो मुझे डर है कि मैं आग तक पहुँचने से पहले ख़ुशी से मर जाऊँगा।"*

तो मामला ऐ इन्सान! वाक़ई बड़ा सख़्त है जैसा कि तूने कहा है बल्कि वह तेरे वहम व गुमान से भी बहुत ज़्यादा सख़्त और अ़ज़ीम है लेकिन यह एक ऐसा मामला है जो तक़दीर में अज़ल से नाफ़िज़ हो चुका है और ग़ालिब जानने वाले की तदबीर ने इसको जारी किया है। तो अब बन्दे के लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि वह ख़ुदा तआला की इताअत और अल्लाह तआला की रस्सी को हमेशा हमेशा के लिए आजिज़ी और ज़ारी से थामे फिर मुमकिन है कि अल्लाह तआला उस पर रहम करे और अपने फ़ज़्ल से उस पर रहम करे।

बाक़ी रहा तेरा यह कहना कि यह सब कुछ क्यूँ है? तो यह एक ऐसा कलाम है कि जो तेरी अ़ज़ीम ग़फ़लत पर दलालत करता है। बल्कि दुरुस्त

यह था कि तू कहता कि जो कुछ बन्दा चाहता है उसके मुक़ाबले में इसकी हक़ीक़त क्या है? क्या तुझे मालूम है कि यह कमज़ोर बन्दा क्या चाहता है? इसका कमतर मुतालबा दो चीज़ें हैं पहली यह कि दोनों जहानों में सलामत रहे और दूसरी यह कि दोनों जहानों में बादशाही करे। अब दुनिया की सलामती तो इस तरह है कि दुनिया और उसकी आफ़तें और उस फ़ितने और ग़फ़लत के पर्दे इस तरह के हैं कि उससे मलाइका मुक़र्रिबीन नहीं बच सके यक़ीनन तूने हारूत और मारूत का वाक़िया सुना होगा यहाँ तक बयान किया जाता है कि जब बन्दे की रूह को आसमान पर ले जाया जाता है तो आसमानों के फ़िरिश्ते ताज्जुब से कहते हैं कि यह उस दुनिया से किस तरह बच कर आ गया जहाँ हमारे बेहतरीन फ़िरिश्ते भी तबाह हो गए, और आख़िरत अपनी हौलनाकियों और सख़्तियों में इस तरह की है कि जिससे अम्बिया और रसूल अलैहिमुस्सलाम भी चीख़ उठें "***मुझे बचा ले मुझे बचा ले मैं सिर्फ़ तुझसे अपनी जान की अमान चाहता हूँ***"

यहाँ तक बयान किया जाता है कि अगर किसी आदमी के पास सत्तर नबियों के अमल भी हों तो वह भी यही समझेगा कि निजात मुश्किल है फिर जो आदमी चाहे कि इन फ़ितनों से महफ़ूज़ रहे तो उसे चाहिए कि वह इस्लाम को अपने साथ लेकर निकले सलामती के साथ चला जाएगा उसे कोई मुसीबत न पहुँचेगी और आख़िरत के हौलनाक मन्ज़रों से बच कर जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाएगा उसे कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी। अब सोच कि यह मामूली काम है?

और बाक़ी रही हुकूमत और करामत तो हुकूमत यह है कि इन्सान का तसर्रुफ़ और मर्ज़ी नाफ़िज़ (जारी) हो और यह हक़ीक़त में दुनिया में तो ख़ुदावन्द तआला के दोस्तों और उसके बरगुज़ीदा लोगों, उसकी तक़दीर पर राज़ी रहने वालों के लिए है। कि जंगल और समन्दर और ज़मीन उनके लिए एक ही क़दम है। और पत्थर और ईंटें उनके लिए सोना है और जिन्न और इन्सान चरिन्दे और परिन्दे उनके ताबे हैं। वह जो कुछ भी चाहते हैं हो जाता है क्योंकि वह वही चाहते हैं जो अल्लाह चाहे। और जो अल्लाह चाहे वह हो जाता है। ये लोग किसी मख़लूक़ से नहीं डरते और उनसे तमाम मख़लूक़ डरती है ये अल्लाह तआला के सिवा किसी की ग़ुलामी नहीं करते और

कायनात की हर चीज़ उनकी ग़ुलामी करती है। और दुनिया के बादशाहों को इस रुतबे का थोड़ा सा भी कहाँ नसीब है बल्कि वह बहुत थोड़े और बहुत ज़लील हैं।

बाक़ी रही आख़िरत की बादशाही तो अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

(और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्तनत।)

(सूरह दहर, आयत-20)

और जिसको रब्बुल इज़्ज़त मुल्के कबीर फ़रमाये उसकी अज़मत का अन्दाज़ा करो। और यह तो तू जानता है कि दुनिया सारी की सारी थोड़ी है। और उसकी इब्तिदा से लेकर इन्तिहा तक सारी उमर भी बहुत थोड़ी है और हममें से किसी एक आदमी का हिस्सा इस थोड़े में से थोड़ा है। और फिर भी हममें से बाज़ आदमी इसको हासिल करने के लिए अपना माल और जान क़ुर्बान कर देते हैं यहाँ तक कि बाज़ वक़्त उसको थोड़े से थोड़ा हासिल कर लेते हैं और फिर उसकी मुद्दत भी थोड़ी होती है, और अगर उसे हासिल हो जाये तो लोग उसको माज़ूर समझते हैं बल्कि उस पर रश्क करते हैं और जो कुछ उसने उसके हासिल करने में अपनी जान और माल को ख़र्च किया है उसको ज़्यादा नहीं समझता, जैसा कि अमरा अलक़ैस ने कहा जिसका तर्जुमा पेश है:

- *मेरे साथी ने जब अपने सामने फाटक को देखा तो रोने लगा और उसने यक़ीन कर लिया कि हम क़ैसर से मुलाक़ात करने वाले हैं*
- *तो मैंने उससे कहा: तेरी आँखें न रोयें हम बादशाह से हीला करके दौलत हासिल करेंगे या मर जायेंगे तो दुनिया हमें माज़ूर समझेगी।*

फिर उस आदमी का क्या हाल होगा जो हमेशा रहने वाली जन्नत में बहुत बड़ी हुकूमत चाहता है। क्या वह इस मुक़ाबले में उन दो रकअतों को जो वह अल्लाह तआला के लिए पढ़ता है य वो दो दिरहम जो ख़र्च करता है। या दो रातें जो जागता है। उनको काफ़ी समझता है। हरगिज़ हरगिज़ नहीं बल्कि अगर उसके पास एक करोड़ बदन हों और हज़ार दर हज़ार रूहें हों

और हज़ार दर हज़ार उम्रें हों और हर उम्र दुनिया की उम्र के बराबर हो या इससे भी ज़्यादा और फिर वह इस मक़सदे अ़ज़ीज़ के इन तमाम को ख़र्च कर डाले तो भी यह बहुत थोड़ा है। अगर इसके बाद कभी वह अपने मक़सद पर पहुँच जाए तो यह अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ज़्ले अ़ज़ीम और आसानी से मिलने वाली नेअमत होगा।

सो ऐ मिस्कीन! इस ग़फ़लत की नींद से बेदार हो। फिर मैंने ग़ौर किया कि बन्दा जब अल्लाह तआला की इताअत करता है। और उसकी इबादत को लाज़िम समझता है। और अपनी उम्र भर इसी रास्ते पर चलता रहता है। तो जो कुछ अल्लाह तआला उसको इनायत फ़रमाता है वह चालीस करामतें और ख़िलअतें हैं। बीस तो उनमें से दुनिया में हैं और बीस उनमें से आख़िरत में, वो बीस जो दुनिया में हैं उनमें से:

पहली यह है कि अल्लाह तआला उसका तज़किरा करता है और उसकी सना कहते हैं और कितना मुअज़्ज़िज है वह बन्दा जिसकी सना कह कर अल्लाह रब्बुल आलमीन उस पर एहसान करे।

दूसरी यह है कि अल्लाह पाक उसे शुक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और इज़्ज़त व अज़मत से नवाज़ता है और अगर कोई तेरे जैसी आजिज़ मख़लूक़ तेरा शुक्रिया अदा करे और तेरी ताज़ीम करे तो तू उसको काफ़ी इज़्ज़त समझता है फिर अगर पहलों और पिछलों का माबूद ऐसा करे तो उसका अन्दाज़ा करो।

और **तीसरी** यह है कि अल्लाह तअ़ला उससे मुहब्बत रखता है अगर तेरे मुहल्ले रईस या शहर के हाकिम को तुझसे मुहब्बत हो तो तू इस पर फ़ख़्र करेगा और कई मुक़ाम पर उससे फ़ायदा उठाएगा फिर सोच कि रब्बुल आलमीन की मुहब्बत कैसी होगी।

चौथी यह है कि अल्लाह तआला उसका कारसाज़ हो जाता है उसके उमूर की तदबीर फ़रमाता है

और **पाँचवीं** यह है कि उसके रिज़्क़ का कफ़ील हो जाता है अल्लाह तआला बग़ैर किसी मेहनत व मशक़्क़त के रिज़्क़ को उसकी तरफ़ लाता रहता है।

छठी यह है कि वह उसका मददगार होता है और उसके हर दुश्मन को और हर बुराई का इरादा करने वाले को उससे रोकता रहता है।

सातवीं यह है कि वह उसका अनीस (दोस्त) हो जाता है, वह किसी हाल में भी वहशत महसूस नहीं करता और न तबद्दुल और तग़य्युर का उसे ख़ौफ़ होता है।

आठवीं नफ़्स की इज़्ज़त, उसे दुनिया और दुनिया वालों की ख़िदमत की ज़िल्लत नहीं पहुँचती बल्कि वह इस पर भी रज़ामन्द नहीं होता कि दुनिया के बादशाह और जाबिर लोग उसकी ख़िदमत करें।

और **नवीं** हिम्मत की बुलन्दी, वह दुनिया और दुनिया वालों की गन्दगी में आलूदगी से बुलन्द हो जाता है और उसके खेल तमाशा और ख़ुराफ़ात की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता।

और **दसवीं** दिल का ग़िना कि वह दुनिया के हर ग़नी से ज़्यादा ग़नी होता है। हमेशा पाकीज़ा नफ़्स और फ़राख़ सीना रहता है उसे कोई हादसा घबराहट में नहीं लाता और न किसी चीज़ के गुम होने की उसे फ़िक्र होती है।

ग्यारहवीं दिल का नूर है। वह अपने दिल के नूर के साथ उलूम और असरार और हिकमतों पर मुत्तेला होता है कि उनसे बाज़ की इत्तेला बड़ी मुद्दत और बड़ी कोशिश के साथ होती है

और **बारहवीं** शरह सदर है कि दुनिया के मुसीबतें और तकलीफ़ और लोगों की अय्यारियों और मक्कारियों से दिल तंग नहीं होता।

और **तेरहवीं** हैबत है, जो लोगों के दिलों में डाल दी जाती है कि सब नेक व बद उसका एहतराम करते हैं और हर फ़िरऔन व जाबिर उससे ख़ौफ़ खाता है।

और **चौदहवीं** दिलों की मुहब्बत है, अल्लाह तआला उसके लिए दिलों में मुहब्बत पैदा कर देता है कि तमाम दिल उसकी मुहब्बत पर मजबूर हो जाते हैं और तमाम लोग उसकी ताज़ीम पर बेइख़्तियार हो जाते हैं।

और **पन्द्रहवीं** बरकते आम्मा है जो उसके कलाम और नफ़्स या फ़ेल या कपड़े या मकान ग़र्ज़ हर चीज़ में पैदा हो जाती है। यहाँ तक कि लोग उसकी मिट्टी को मुतबर्रिक समझते हैं जो उसके पाँव के नीचे आ चुकी है और

उस जगह को जहाँ वह किसी दिन बैठा हो, और उस इन्सान से जिसने उसको देखा हो और उसके साथ कुछ सोहबत रखी हो।

और **सोलहवीं** जंगल और समुन्द्र ग़र्ज़ सारी ज़मीन उसकी फ़रमाबरदार होती है यहाँ तक कि अगर वह चाहे तो हवा में उड़ता है, पानी पर चलता है, या सारी ज़मीन को एक घड़ी में तय कर लेता है।

और **सत्रहवीं** हैवान की फ़रमाबरदारी होती है, ख़्वाह दरिन्दे हों या वहशी जानवर या कीड़े मकोड़े वग़ैरा। फिर वहशी जानवर उससे मुहब्बत रखते हैं और दरिन्दे उसे चाटते हैं।

और **अठारहवीं** ज़मीन के ख़ज़ानों की मिल्कियत है, वह जब भी इरादा करके ज़मीन पर हाथ रखता है तो उसे ख़ज़ाने मिल जाते हैं। जब अपने पाँव ज़मीन पर मारता है तो ज़रूरत के वक़्त पानी के चश्में उबलने लगते हैं, वह जहाँ भी उतरता है अगर उसका इरादा हो तो उसे खाना मिल जाता है।

और **उन्नीसवीं** अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दरवाज़े पर इयादत और वजाहत है, मख़लूक अल्लाह तआला की बारगाह में उसकी ख़िदमत करके वसीला ढूँढती है और अल्लाह तआला से उसकी वजाहत और बरकत से लोग हाजतें तलब करते हैं।

और **बीसवीं** अल्लाह तआला की जानिब में दुआ की क़ुबूलियत है, वह अल्लाह तआला से जो कुछ भी माँगता है उसको देता है और अगर किसी की सिफ़ारिश करता है तो उसकी सिफ़ारिश क़बूल होती है। और अगर अल्लाह तआला को क़सम देता है तो वह जिस तरह भी चाहे उसकी क़सम को पूरा कर देता है यहाँ तक कि अगर कोई उनमें से पहाड़ की तरफ़ इशारा करे तो वह अपनी जगह से हट जाता है, वह ज़बान से सवाल करने का मोहताज नहीं, अगर उसके दिल में किसी चीज़ का ख़्याल आ जाता है तो वह हाज़िर हो जाती है और वह हाथ से इशारा करने का भी मोहताज नहीं होता।

ये करामात तो दुनिया में हैं और वो जो आख़िरत में हैं तो:

और **इक्कीसवीं** यह है कि अव्वलन तो अल्लाह तआला उस पर मौत की सकरात को उस पर आसान कर देता है और यह वह चीज़ है जिससे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के दिल भी डरते हैं यहाँ तक कि उन्होंने अल्लाह

तआला से सवाल किया कि सकराते मौत को उन पर आसान करे यहाँ तक कि उनमें से बाज़ के नज़दीक मौत इससे भी ज़्यादा ख़ुशगवार होती है, जैसे प्यासे आदमी को साफ़ पानी मिल जाए, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ

(वह जिनकी जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरेपन में।)

(सूरह नहल, आयत 32)

और **बाइसवीं** ईमान और मारिफ़त पर साबित क़दमी है और यह वह चीज़ है जिसका इन्तिहाई ख़ौफ़ और घबराहट है और उस पर पूरी बेसब्री और रोना है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ

(अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात पर दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।)

(सूरह इब्राहीम, आयत-28)

और **तेइसवीं** फ़िरिश्ते और ख़ुशबू और बशारत और रज़ामन्दी और अमान का पहुँचना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٣٠

(न डरो न ग़म करो और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिसका तुम्हें वायदा दिया जाता था।)

(सूरह हा मीम सजदा, आयत-30)

और आख़िरत की आइन्दा हौलनाकियों से ख़ौफ़ नहीं खाता, और दुनिया में जो कुछ छोड़ गया उसका उसे ग़म नहीं होता।

और **चौबीसवीं** जन्नतों में हमेशा की रिहाइश और ख़ुदा तआला का जवारे रहमत है।

और **पच्चीसवीं** पोशीदगी में उसके रूह की जलवत है आसमान और ज़मीन के फ़िरिश्तों पर वह इज़्ज़त व एहतरात से उठाया जाता है और उसके

बदन को ज़ाहिर में जनाज़े की ताज़ीम हासिल होती है उस पर जनाज़े की नमाज़ के लिए लोगों की भीड़ लग जाती है उसकी तजहीज़ व तकफ़ीन (यानि कफ़न दफ़न) में लोग जल्दी करते हैं और उसको बहुत बड़ा सवाब समझते हैं और बहुत बड़ी ग़नीमत जानते हैं।

और **छब्बीसवीं** क़ब्र के सवाल व जवाब के फ़ितने से अमन है कि वह इस हौल से मुतमइन रहता है और उसे सही जवाब का इलक़ा होता है।

और **सत्ताइसवीं** क़ब्र की फ़राख़ी और उसकी रौशनी है वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में क़ियामत के दिन तक रहता है।

और **अट्ठाइसवीं** उसके रूह व जान का मानूस होना और मुअज़्ज़िज़ होना है, उसे सब्ज़ परिन्दों के जिस्म में रख दिया जाता है वह अपने नेक भाइयों के साथ रहता है और जो कुछ उनको अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से बख़्शा है उस पर ख़ुश रहता है।

और **उन्तीसवीं** इज़्ज़त और करामत के साथ उसका हश्र है कि उसको लिबासे फ़ाख़रा और ताज पहनाया जाएगा और बुराक़ पर सवार होगा।

और **तीसवीं** चेहरे का मुनव्वर और रौशन होना है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

(और कुछ मुँह उस दिन तरोताज़ा होंगे। अपने रब का देखते।)

(सूरह क़ियामह, आयत -22,23)

और फ़रमाया:-

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

(कितने मुँह उस दिन रौशन होंगे हँसते ख़ुशियाँ मनाते।)

(सूरत अबस, आयत-38, 39)

और **इकत्तीसवीं** क़ियामत की हौलनाकियों से अमन है,

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

(या जो क़ियामत में अमान से आएगा।)

(सूरत हा मीम सजदा, आयत-40)

और **बत्तीसवीं** दायें हाथ में नामा-ए-आमाल का मिलना है, और उनमें से बाज़ आदमी ऐसे भी होंगे जिन्हें हिसाब व किताब की ज़रूरत न होगी।

और **तेंतीसवीं** हिसाब की आसानी है।

और **चौंतीसवीं** नेकियों का बोझल हो जाना, और बाज़ उसके ऐसे भी होंगे जिनको वज़न के लिए खड़ा नहीं किया जाएगा।

और **पैंतीसवीं** हौज़े कौसर पर नबीﷺ के पास हाज़िर होना।

और **छत्तीसवीं** पुलसिरात से गुज़र जाना और आग से निजात पा जाना, यहाँ तक कि बाज़ उनमें से उसकी आवाज़ तक न सुनेंगे, और वह ऐसी नेअमतों में हमेशा रहेंगे जिनको वह चाहेंगे और उनके लिए आग बुझ जाएगी।

और **सैंतीसवीं** क़ियामत के मैदान में शफ़ाअत करना जैसे कि अम्बिया और रसूल शफ़ाअत करेंगे।

और **अड़तीसवीं** जन्नत में हमेशा का मुल्क।

और **उन्तालीसवीं** अल्लाह तआला की बहुत बड़ी रज़ामन्दी।

और **चालीसवीं** अल्लाह रब्बुल आलमीन की मुलाक़ात बिलाकैफ़ जो कि पहलों और पिछलों का माबूद बरहक़ है।

फिर मैं कहता हूँ कि मैंने उनको अपनी समझ और अपने इल्म की इन्तिहा के मुताबिक़ शुमार किया है। अगरचे मेरा इल्म निहायत नाक़िस और क़ासिर है। और फिर इसी पर मज़ीद यह है कि मैंने उनको निहायत मुख़्तसर ज़िक्र किया है। और उनको उसूलन और इजमालन ज़िक्र कर दिया है। और अगर मैं उनमें से बाज़ की तफ़्सील बयान करता तो यह किताब उसकी मुतहम्मिल न हो सकती। क्या तू ग़ौर नहीं करता कि मैंने हमेशा के मुल्क को एक ही ख़िलअत शुमार किया है। अगर मैं इसको तफ़्सील से बयान करता तो यही चालीस ख़िलअतों से ज़्यादा हो जातीं। जैसे हूर का नूर और महल्लात

और लिबास वग़ैरा की तफ़्सील फिर उनमें से हर एक ऐसी तफ़्सील पर मुश्तमिल है जिनको ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला ही जानता है। कि जिसने उनको पैदा किया है। और उनका मालिक है। और हमें इनकी मारिफ़त की कौन सी तवक़्क़ो हो सकती है।

जबकि ख़ुदावन्द तआला फ़रमाता है:-

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ

(तो किसी जी को नहीं मालूम जो आँख की ठंडक उनके लिए छुपा रखी है।)

(सूरह सजदा, आयत-17)

और फिर रसूलुल्लाहﷺ फ़रमाते हैं कि- "***उसमें वह चीज़ें पैदा की गई हैं जो न किसी आँख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं और न किसी इन्सान के दिल पर उनका गुज़र हुआ।***" (मोअजमुल कबीर)

मुफ़स्सिरीन अल्लाह तआला के इस क़ौल के मुताल्लिक़ कहते हैं:-

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ

(तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी।)

(सूरह कहफ़, आयत-109)

कि यह वो कलिमे हैं जिनको अल्लाह तआला अहले जन्नत के लिए जन्नत में लुत्फ़ और मेहरबानी कहेगा। और जिसकी यह क़ैफ़ियत हो तो हम उसके हज़ार दर हज़ार हिस्से को भी क्यूँकर पहुँच सकते हैं कि हम इन्सान हैं या उसके इल्म को मख़लूक़ क्यूँकर घेर सकती है। हरगिज़ नहीं बल्कि हिम्मतें जवाब दे जाती हैं और अक़्लें उनको समझने से क़ासिर हैं और हक़ यह है कि इसी तरह होना चाहिए और वह ग़ालिब जानने वाले की उसके फ़ज़्ले अज़ीम के तक़ाज़े के मुताबिक़ और उसकी क़दीम सख़ावत के मुवाफ़िक़ एक अता है। ख़बरदार! इस मतलूब अज़ीम के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए और कोशिश करने वालों को अपनी कोशिश ख़र्च करनी

चाहिए और जानना चाहिए कि यह सब कुछ उस चीज़ के मुक़ाबले में निहायत क़लील है। जिसके वह मोहताज हैं और जिसका वह उससे सवाल करते हैं। और जिसको माँगने के लिए वह दस्ते सवाल दराज़ करते हैं। मालूम होना चाहिए कि बन्दे के लिए चार चीज़ें निहायत ज़रूरी हैं-

1. ***इल्म***
2. ***अमल***
3. ***इख़्लास***
4. ***ख़ौफ़***

पहली के साथ वह रास्ते को मालूम करेगा वर्ना वह एक अंधा है फिर उनके मुताबिक़ अमल करेगा वर्ना वह रोक दिया जाएगा फिर अमल को ख़ालिस करेगा वर्ना वह नुक़सान उठाएगा, फिर वह हमेशा आफ़तों से डरता रहेगा यहाँ तक कि वह अमान हासिल कर ले वर्ना वह धोखे में पड़ा हुआ है।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री رحمة الله عليه ने बिल्कुल सच कहा कि- *"तमाम मख़लूक़ मुर्दा है सिवा उल्मा के और उल्मा सोए हुए हैं अलावा अमल करने वालों के, और अमल करने वाले सब धोखे में हैं मगर मुख़्लिस लोग और तमाम मुख़्लिस बहुत बड़े ख़तरे पर हैं।"*

मैं कहता हूँ चार आदमियों से इन्तिहाई ताज्जुब है एक वह अक़्लमन्द जो आलिम न हो क्या वह उन चीज़ों की मारिफ़त का एहतमाम नहीं करता जो आइन्दा पेश न आने वाली हैं? क्या वह इन चीज़ों को मालूम नहीं करता जिनको वह मौत के बाद देखने वाला है। उसको दलाइल और इबरतों और इन आयतों के सुनने और इन ख़्यालात से दिल की बेक़रारी और नफ़्स के तसव्वुरात से उनको मालूम करना चाहिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:-

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ

(क्या उन्होंने निगाह न की आसमानों व ज़मीन की सल्तनत में और जो जो चीज़ अल्लाह ने बनाई।)

(सूरह अअ़राफ़, आयत-185)

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया:-

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝٤ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥

(क्या इन लोगों को गुमान नहीं कि इन्हें उठना है एक अज़मत वाले दिन के लिए।)

(सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन, आयत-4,5)

और दूसरे उस आलिम से जो अपने इल्म के मुताबिक़ अमल नहीं करता क्या वह यक़ीनी तौर पर नहीं जानता कि उसके सामने बहुत बड़ी हौलनाकियाँ और मुश्किल घाटियाँ हैं और यही बहुत बड़ी ख़बर है जिससे तुम मुँह फेरते हो। तीसरे उस आमिल से जो मुख़्लिस न हो, क्या वह अल्लाह तआला के इस क़ौल पर ग़ौर नहीं करता।

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝١١٠

(तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।)

(सूरह कहफ़, आयत-110)

चौथे उस मुख़्लिस से जो डरने वाला न हो क्या वह अल्लाह पाक के इस मामले की तरफ़ ग़ौर नहीं करता जो वह अपने सूफ़ियों और वलियों और अपने इबादतगुज़ारों से करता है जो कि उसके और उसकी मख़लूक़ के दरमियान वास्ता हैं यहाँ तक कि वह अपनी सबसे ज़्यादा मुअज़्ज़िज़ मख़लूक़ को फ़रमाता है:-

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ

(और बेशक वही की गई तुम्हारी तरफ़ और तुम से अगलों की तरफ़।)

(सूरह ज़ुमर, आयत-65)

और इसी तरह की और भी आयात। यहाँ तक कि बयान किया जाता है कि रसूलुल्लाहﷺ फ़रमाया करते थे कि मुझे सूरह हूद और उस जैसी सूरतों ने बूढ़ा कर दिया।

फिर क़िस्सा मुख़्तसिर इनकी तफ़्सील वह है जो रब्बुल आलमीन ने अपनी किताबे अ़ज़ीज़ की चार आयतों में बयान कर दी है अल्लाह तआला फ़रमाता है:

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

(तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।)

(सूरह मोमिनीन, आयत-115)

फिर अल्लाह पाक ने फ़रमाया:-

وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ

إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

(और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।)

(सूरह हश्र, आयत-18)

फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ

(और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।)

(सूरह अनकबूत, आयत-69)

फिर इन तमाम चीज़ों को एक जामेअ आयत में बयान कर दिया है और वह सबसे ज़्यादा सच्चा कलाम फ़रमाने वाला है, इरशादे बारी तआला है:-

وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

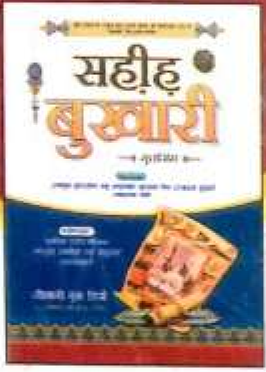
(और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक अल्लाह बेपरवाह है सारे जहान से।)

(सूरह अनकबूत, आयत-6)

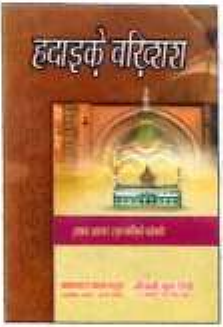
और हम अल्लाह तआला से अपने क़दम की लग़ज़िश और अपने क़लम की हर बे राहरवी से माफ़ी तलब करते हैं और उन तमाम अक़वाल से मग़फ़िरत के मुतामन्नी हैं जो हमारे आमाल के मुताबिक़ न हों, और हर उस चीज़ से मग़फ़िरत के तालिब हैं जिसका हमने दावा किया और उसको दीने इलाही के इल्म की हैसियत से ज़ाहिर किया हालांकि इसमें बहुत सी कोताहियाँ हैं और हम उससे हर उस ख़्याल से मग़फ़िरत के तालिब हैं जिसने हमको बनावटीपन पर तैयार किया और जिसका हमने अपनी किताब में इन्दराज किया या हर उस कलाम से जिसको हमने नज़्म किया, या हर उस इल्म से जिसका हमने नफ़ा दिया और हम उससे सवाल करते हैं कि वह हमें और ऐ भाईयों की जमाअत तुम्हें भी हमारे इल्म के मुताबिक़ अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और हम ख़ालिस उसकी रज़ामन्दी चाहें और सवाल करते हैं कि वह इस इल्म को हम पर वबाल न बनाए और इसको नेकियों के तराज़ू में रखे जब कि हमारे आमाल हमारी तरफ़ लौटाये जायें, यक़ीनन वह बड़ा जव्वाद निहायत करम फ़रमाने वाला है।

शैख़ ने फ़रमाया यही वह है जिसका हमने इरादा किया था कि आख़िरत के तरीक़े के सुलूक की कैफ़ियत की शरह में ज़िक्र करेंगे और हमने अपने मक़सूद को पूरा किया और तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं कि जिसके एहसान से नेकियाँ पूरी होती हैं और जिसके फ़ज़्ल से बरकात का नुज़ूल होता है और अल्लाह तआला अपनी बेहतरीन मख़लूक़ पर हर हाल में रहमतें नाज़िल फ़रमाये जिसने माअबूदे ह़क़ीक़ी की तरफ़ दावत दी यानी हुज़ूर सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम अह़मदे मुज्तबा हज़रत मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम और आपकी आल पर पाकीज़ा और बरकत वाली सलामती नाज़िल फ़रमाए। आमीन!

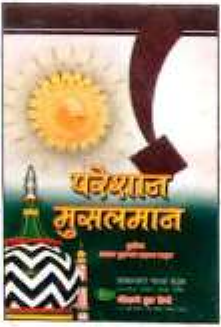
MINHAJ UL ABIDEEN











JILANI BOOK DEPOT
1229/CHOORI WALAN JAMA MASJID
DELHI-06, 9212346577,9350046577
jilani.book.depot@gmail.com jilanibooks

Design By
JILANI GRAPHICS

Rs 200/-